राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक : 9] बारहवीं विधान सभा के नवम् सत्र का सत्ताइसवां दिवस [संख्या : 18

शनिवार;

15 मार्च, 2008

राजस्थान विधान सभा की बैठक 11.00 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई ।

(श्री रामनारायण विश्नोई, उपाध्यक्ष, पदासीन)

श्री उपाध्यक्ष: राम-राम सा । राम-राम ।

अनेक माननीय सदस्य: राम-राम ।

स्थगन प्रस्तावों पर अध्यक्षीय व्यवस्था

श्री उपाध्यक्ष: स्थगन प्रस्तावों पर व्यवस्था । मुझे माननीय सदस्यों को सूचित करना है कि निम्नांकित स्थगन प्रस्तावों की सूचना प्राप्त हुई है :-

(1) श्री सी. डी. देवल एवं एक अन्य सदस्य की ओर से मंदिर माफी की जमीन पर खनन पट्टे आबंटन में हुए भ्रष्टाचार के संबंध में ।

(2) श्री अमराराम धोद, सदस्य की ओर से ग्राम सेवा सहकारी समिति कांसरड़ा में 40 लाख रुपये के गबन के संबंध में ।

उपरोक्त प्रस्ताव हाल ही में घटित घटना से संबंधित नहीं है कि सदन की पूर्व निर्धारित कार्यवाही को रोककर इन पर विचार किया जाय, अतः अनुमति देने में असमर्थ हूं ।

(3) श्री मांगीलाल गरासिया एवं 7 अन्य सदस्यों की ओर से विधान सभा क्षेत्र गोगुन्दा की नायब तहसील सायरा व मेरपुर द्वारा पंजीयन का कार्य बंद कर देने से उत्पन्न स्थिति के संबंध में ।

उपरोक्त प्रस्ताव भी ऐसा नहीं है कि सदन की पूर्व निर्धारित कार्यवाही को रोककर इस पर विचार किया जाये, अतः अनुमति देने में असमर्थ हूं । फिर भी माननीय सदस्य, श्री मांगीलाल गरासिया को अपने प्रस्ताव के विषय पर दो मिनट बोलने की अनुमति होगी ।

(श्री उपाध्यक्ष)

नियम 295 के अन्तर्गत प्राप्त विशेष उल्लेख की सूचनाएं

(1) श्री हरलाल सिंह खर्रा, सदस्य की ओर से श्रीमाधोपुर उप खण्ड मुख्यालय पर ए.सी.जे.एम. कोर्ट के स्थान पर ए.डी.जे. कोर्ट खुलवाने के संबंध में ।

(2) डा. जालम सिंह रावलोत, सदस्य की ओर से विधान सभा क्षेत्र शिव की कतिपय पंचायतों का पुनर्गठन करने के संबंध में ।

(3) श्री कन्हैया लाल पाटीदार, सदस्य की ओर से कनवाड़ा डेम की डूब क्षेत्र में आये गडारा गांव के अनुसूचित जाति के परिवारों को मुआवजा देने के संबंध में ।

(4) श्री धर्मेन्द्र कुमार मोची, सदस्य की ओर से विधान सभा क्षेत्र टिब्बी में फ्लोराइडयुक्त पेयजल की आपूर्ति से उत्पन्न स्थिति के संबंध में ।

(5) श्री हरिमोहन शर्मा, सदस्य की ओर से हिण्डौली में 132 के.वी. विद्युत ग्रिड सब-स्टेशन की स्वीकृति जारी करने के संबंध में ।

(6) डा. श्रीगोपाल बाहेती, सदस्य की ओर से विधान सभा क्षेत्र पुष्कर के अधिकांश विद्यालयों में अध्यापकों का अभाव होने के संबंध में ।

(7) श्री बद्रीलाल जाट, सदस्य की ओर से रावतभाटा के स्ववित्त पोषित महाविद्यालय का संचालन राजकीय स्तर पर स्वीकृत करने के संबंध में।

(8) श्री जीवाराम चौधरी, सदस्य की ओर से सांचौर उपखण्ड क्षेत्र में उप स्वास्थ्य केन्द्र खोलने एवं रिक्त पड़े ए.एन.एम. व जी.एन.एम. के पद भरने के संबंध में ।

(9) श्री मोहन लाल गुप्ता, सदस्य की ओर से जयपुर शहर के अग्निशमन केन्द्रों में पर्याप्त एवं प्रशिक्षित कार्मिक नियुक्त करने के संबंध में।

(10) श्रीमती अनिता भदेल, सदस्य की ओर से अजमेर में स्टेशन रोड से कचहरी रोड एवं आगरा गेट तक एलीवेटेड रोड के निर्माण के संबंध में ।

(11) श्री अर्जुन लाल जीनगर, सदस्य की ओर से विधान सभा क्षेत्र राशमी के उप केन्द्र व प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों के लिए भवनों का निर्माण कराने के संबंध में ।

(12) श्री अशोक नागपाल, सदस्य की ओर से विधान सभा क्षेत्र सूरतगढ़ की जैतसर मण्डी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में क्रमोन्नत करने के संबंध में ।

(श्री उपाध्यक्ष)

माननीय सदस्यों को उनके द्वारा दी गई सूचना को पढ़ने की अनुमति होगी । माननीय श्री मांगीलालजी गरासिया ।

स्थगन प्रस्ताव आदि पर चर्चा

श्री अमराराम (धोद): उपाध्यक्ष महोदय, आपकी व्यवस्था शिरोधार्य है। (व्यवधान)

श्री नवनीत नीनामा (घाटोल): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैंने परसों से 295 दे रखा है, कल भी नहीं आया । (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: परसों देखेंगे आपका ।

श्री अमराराम (धोद): बीकानेर में 500 से ज्यादा लोग बीमार हो गये। (व्यवधान)

श्री नवनीत नीनामा (घाटोल): कल भी नहीं आया ।

श्री उपाध्यक्ष: आप मेरे से बात कर लेना, परसों लगायेंगे । (व्यवधान)

बीकानेर में शुद्ध पेयजल उपलब्ध करवाने विषयक

श्री अमराराम (धोद): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, दूषित पानी से बीकानेर में रामपुरा कालोनी में 500 से ज्यादा लोग, जहां जयपुर में 12 लोग मारे गये, यही हालत आज बीकानेर में एक कालोनी के 500 लोग अस्पताल में भर्ती हैं । सरकार निश्चि‍त रूप से इस बात के लिए कि राजस्थान में शुद्ध पेयजल उपलब्ध नहीं कराकर बार-बार लोगों के रिक्वेस्ट करने के बाद में अकेले बीकानेर की रामपुरा कालोनी में 500 लोग पी.बी.एम. अस्पताल में, सेटेलाइट अस्पताल में लोगों की काफी गम्भीर हालत है ।

श्री उपाध्यक्ष: आप बिना परमिशन लिये बोल रहे हैं ।

श्री अमराराम (धोद): नहीं, आपके माध्यम से मैं तो सूचना देना चाहता हूं कि राजस्थान के लोगों के लिये शुद्ध पेयजल सरकार उपलब्ध नहीं करा पा रही है और जिससे 12 लोग राजधानी में मौत के घाट उतर गये और जिस तरह से बीकानेर में सैकड़ों लोग पी.बी.एम. अस्पताल में भर्ती हैं, जिनमें कई लोग ऐसी स्थिति में हैं, जिनकी जान जा सकती है । सरकार से बार-बार रिक्वेस्ट करने के बाद में भी शुद्ध पेयजल की व्यवस्था नहीं की जा रही है । (व्यवधान)

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव): जो माननीय सदस्य, बता रहे हैं, यह वास्तविकता नहीं है। एडिशनल चीफ, डाक्टर्स, सारे वहां उसी क्षेत्र में घूम रहे हैं। वास्तव में दो-तीन दिन पहले कोई यू.आई.टी. ने वहां जो एनक्रोचमेंट थे, वह तोड़ने से .. (व्यवधान)

श्री अमराराम (धोद): वास्तविकता नहीं है। (व्यवधान) नहीं, आप कहो कि एक भी दूषित पानी से बीमार नहीं हुआ ।

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव): नहीं, मैं जानकारी करके ही बता रहा हूं, बिना जानकारी नहीं बता रहा हूं । आपने जो चिन्ता जाहिर की है, वह मात्र अख़बार की खबर से बता रहे हैं ।

श्री अमराराम (धोद): उपाध्यक्ष महोदय, मंत्रीजी से कहलवाओ ना । (व्यवधान) माननीय उपाध्यक्ष महोदय, लोगों की जान को खतरा है। दूषित पानी देकर सरकार राजस्थान की जनता के साथ खिलवाड़ कर रही है ।

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव): मैं आज जो बता रहा हूं वह वहां से बातचीत करके बता रहा हूं । आप जो चिन्ता कर रहे हैं, हम भी चिन्तित हैं । क्योंकि बीकानेर का मामला था, अख़बार में छपा था, हमने बात की है । अभी एडिशनल चीफ और एस.ई. सारे उसी क्षेत्र में हैं और उन्होंने दावा किया है कि किसी घर में आप अगर गंदा पानी बता दें तो प्रशासन कह रहा है कि हमारी जिम्मेवारी है । (व्यवधान)

श्री अमराराम (धोद): एस.ई. के जाने से ठीक हो जायेगा?

श्री गोविन्दराम मेघवाल (संसदीय सचिव): 2-3 दिन पहले यू.आई.टी. के मकान तोड़ने से, नालियां बंद होने से छोटी-मोटी कोई गड़बड़ हुई, उसकी वजह से अखबारों में प्रचारित कर दिया गया ।

श्री अमराराम (धोद): छोटी-मोटी कह रहे हो, 300 से ज्यादा लोग अस्पतालों में भर्ती हैं ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, नियमानुसार प्रस्ताव लेकर आइये । सूचित कर दिया आपने । मंत्री महोदय देंगे जवाब आपकी सूचना के अनुसार । (व्यवधान) श्री मांगीलाल गरासिया ।

सूचना का प्रश्न

विश्वविद्यालय और सम्बद्ध महाविद्यालयों में छात्र संघ के चुनाव

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपकी परमिशन से आज राजस्थान के हजारों छात्र राजस्थान विधान सभा पर प्रदर्शन करने आये हैं और उनकी यह जायज मांग है कि राजस्थान

(मोहम्मद माहिर आजाद)

विश्वविद्यालय और दूसरे विश्वविद्यालय और सम्बद्ध महाविद्यालयों में छात्र संघ के चुनाव जो पिछले कई सालों से नहीं हुए हैं । वह यह चाहते हैं कि उनको भी लोकतांत्रिक प्रक्रिया से चुनाव में हिस्सा लेने का मौका मिले, उनकी प्रतिभा भी आगे आकर निखरे । केवल इसलिए कि छात्र संघ चुनावों में दादागिरी होती है, बदमाशी होती है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, लोक सभा और विधान सभा के चुनाव में भी कई जगह इस तरह की घटनाएं होती हैं, पुनर्मतदान की स्थिति आती है, इसलिए हम उन चुनावों को तो रोक नहीं सकते । आज, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से यह सूचना देना चाहता हूं सदन को और माननीय मंत्रीजी को भी, क्योंकि यहां संसदीय कार्य मंत्रीजी बैठे हुए हैं, यह खुद भी राजस्थान विश्वविद्यालय छात्र संघ के बरसों अध्यक्ष रहे हैं। हमारे शिक्षा मंत्रीजी छात्र संघ के अध्यक्ष रहे हैं, माननीय घनश्यामजी तिवाड़ी हैं, हमारे को-आपरेटिव मिनिस्टर साहब हैं, जुबेर खान भी रहे हैं, हम लोग रहे हैं, डा. जालम सिंह रावलोत भी रहे हैं, आपके रामलालजी शर्मा, ज्ञान सिंह चौधरी, डा. रघु शर्मा, प्रताप सिंह, राजपाल सिंह, अश्क अली टाक, कहने का मतलब मेरा निवेदन यह है कि उनमें से ही निखर कर लोग विधायक और सांसद बनते हैं, इसलिए अगर उस पर रोक लगा दी जाये तो हमारी जो नई प्रतिभा आगे आती है, उस पर नियन्त्रण लगा हुआ है । इसलिए मेरा माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से निवेदन है कि शिक्षा मंत्रीजी, आप स्वयं छात्र नेता रहे हो, हमारे साथ भी काम किया है, आप उनसे बात करें और कोई न कोई रास्ता निकालकर महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में छात्र संघ के चुनाव होने चाहिये ताकि उनके माध्यम से प्रतिभा निखर सके और लोगों को आगे बढ़ने का मौका मिले । सरकार इस संबंध में क्या सोचती है? मैं समझता हूं संसदीय कार्य मंत्रीजी और शिक्षा मंत्रीजी सदन के माध्यम से राजस्थान भर के नौजवान छात्रों को इस बात की उम्मीद है । आज राजेश चौधरी, जो राजस्थान कालेज के अध्यक्ष हैं, उनके नेतृत्व में आज हजारों छात्र यहां आये हैं। इसलिए मेरा आपसे निवेदन है अगर आपका लोकतांत्रिक प्रक्रिया में विश्वास है, छात्र संघ को सशक्त और प्रबल बनाना चाहते हो तो माननीय मंत्रीजी, कृपया सदन के माध्यम से आश्वस्त करें ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, कर लेंगे । (व्यवधान) माननीय सदस्य, आपने बात कह दी । माननीय सदस्य, आ गयी बात ।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं दो मिनट में बता देता हूं । मंत्रीजी उनसे मिल लेंगे,

(श्री घनश्याम तिवाड़ी)

छात्रों से बात करेंगे । स्थिति बिलकुल साफ है, जो मैं आपको निवेदन कर देता हूं कि राजस्थान उच्च न्यायालय ने एक स्वयं प्रसंज्ञान लेकर इन चुनावों पर रोक लगा दी थी । इस रोक के खिलाफ सभी छात्र नेता, जिसमें विद्यार्थी परिषद्, एन.एस.यू.आई., सभी शामिल थे, उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय में अपील की और सर्वोच्च न्यायालय ने भूतपूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त, लिंगदोह साहब थे, उनकी अध्यक्षता में एक कमेटी बना दी और इस विषय को सारा राष्ट्र का मानकर उन्होंने सब राजनीतिक दलों से सभी छात्र संगठनों से राय मांगी । और राय जानने के बाद में लिंगदोह समिति ने सिफारिशें करके भेज दीं जिसको सर्वोच्च न्यायालय ने स्वीकार कर लिया । उन सिफारिशें में डाइरेक्ट चुनाव न करा कर कुछ नोमिनेशन और कुछ इलैक्शन की पद्धति करके राज्यों को भेजी । जब वो भेजी तो विभिन्न छात्र संगठनों को बुलाया। तो विद्यार्थी परिषद भी और एन.यू.एस.आई. भी और एस.एफ.आई. ने भी, सभी ने कहा कि नहीं, हम डाइरेक्ट चुनाव के पक्ष में हैं ।

ऐसी स्थिति में एडवोकेट जनरल की राय ली गयी । उस राय के बाद में भी आया कि सर्वोच्च न्यायालय ने जब यह निर्णय कर दिया है तो उसके बाद में किस प्रकार से चुनाव कराये जा सकते हैं, यह सारी जांच उसके बाद में की है ।

तो छात्र संघों से, मिलने आये हैं तो उनको सारी स्थिति बता कर उस सर्वोच्च न्यायालय का जो फ्रेम वर्क आया हुआ है उस फ्रेम वर्क में हम क्या, कितनी मदद करके और कितना जनरल कर के और कितना नोमिनेशन कर के चुनाव करा सकते हैं, इस पर मंत्रीजी आज उनसे सबसे मिलेंगे। और मिल कर अगले आने वाले सत्र के बारे में निर्णय कर देंगे । (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: श्री मांगीलाल गरासिया । माननीय सदस्य, इस पर अब कोई बहस का विषय नहीं रह गया है । (व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़): माननीय मुख्य मंत्री महोदय, पिछली बार भी आपने यही बात कही थी ।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु ने छात्र संघ चुनाव कराने की घोषणा कर दी है इसलिए उसके परिप्रेक्ष्य में राजस्थान में क्यों नहीं हो सकती? (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: कुछ अंकित नहीं होगा, माननीय सदस्य ।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): वह उत्तर प्रदेश में और उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय के जो मार्गदर्शक सिद्धांत हैं, पहले उनके हिसाब से ही बात करके चुनाव कराने का तय किया है । राज्य सरकार को भी सर्वोच्च न्यायालय के मार्गदर्शन और नीति निर्धारण के आधार पर चुनाव कराने के सम्बन्ध में माननीय मंत्रीजी बातचीत करेंगे, राज्य सरकार की बिलकुल मंशा नहीं है कि चुनाव नहीं कराये जाएं । हमने लगातार चुनाव कराये हैं और सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बाद यह स्थिति हुई है ।

श्री जुबेर खान (रामगढ़):×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर):×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, डेपुटेशन मिलने, माननीय सदस्य, बहस No further discussion. कुछ भी अंकित नहीं होगा । (व्यवधान) माननीय सदस्य, डेपुटेशन बात कर लेगा मंत्री महोदय से, अभी बहस थोड़ी हो रही है कोई । माननीय सदस्य, नहीं । (व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़):×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर):×××

श्री उपाध्यक्ष: अंकित नहीं हो । (व्यवधान) बात हो जायेगी, डेपुटेशन मिलेगा, डेपुटेशन से बात करके...(व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर):×××

श्री जुबेर खान (रामगढ़):×××

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक):×××

श्री ओम बिरला (संसदीय सचिव):×××

श्री कालीचरण सर्राफ (शिक्षा मंत्री): जहां तक छात्र संघ के चुनाव का सवाल है...

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही):×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, बहस नहीं । (व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही):×××

श्री उपाध्यक्ष: कुछ भी अंकित नहीं होगा इसमें ।

श्री कालीचरण सर्राफ (शिक्षा मंत्री): जैसा माननीय मंत्री महोदय ने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय का मामला है और लिंगदोह कमेटी की रिपोर्ट का हम अध्ययन कर लेंगे । छात्र संघ का चुनाव निश्चित रूप से...(व्यवधान) सुनिये, सुनते क्यों नहीं हो? छात्र संघ का चुनाव नहीं कराने की राज्य सरकार

(श्री कालीचरण सर्राफ)

की कतई मंशा नहीं है । छात्र संघ के चुनाव प्रजातांत्रिक अधिकारों की रक्षा के लिए निश्चित रूप से होने चाहिए परन्तु सुप्रीम कोर्ट और लिंगदोह कमेटी की रिपोर्ट का अध्ययन करके निश्चित रूप से हम छात्र संघ के चुनाव करवाने की कोशिश करेंगे परन्तु इस सत्र में क्योंकि परिक्षाएं प्रारम्भ होने वाली हैं इसलिए इस सत्र में तो छात्र संघ के चुनाव करायेंगे नहीं, अगले सत्र में सारा अध्ययन करके सम्भव होगा तो छात्र संघ के चुनाव निश्चित रूप से होगा ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री मांगीलाल गरासिया ।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर):×××

श्री उपाध्यक्ष: कुछ भी अंकित नहीं होगा ।

श्री जुबेर खान (रामगढ़):×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर):×××

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव):×××

श्री दाताराम गुर्जर (खेतड़ी):×××

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही):×××

श्री अमराराम (धोद):×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, नहीं । (व्यवधान) आपको स्टूडेंट डेपुटेशन में साथ ले जाएं तो बात कर लेना ।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर):×××

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव):×××

श्री दाताराम गुर्जर (खेतड़ी):×××

श्री उपाध्यक्ष: कुछ भी अंकित नहीं होगा ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही):×××

श्री जुबेर खान (रामगढ़):×××

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव):×××

श्री कालीचरण सर्राफ (शिक्षा मंत्री): बात तो सुनिये, जुबेर खानजी । ऐसा है...

श्री उपाध्यक्ष: श्री मांगीलालजी गरासिया ।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर):×××

श्री जुबेर खान (रामगढ़):×××

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव):×××

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही):×××

स्थगन प्रस्ताव आदि पर चर्चा

गोगुन्दा विधान सभा क्षेत्र की नायब तहसील सायरा व मेरपुर द्वारा पंजीयन का कार्य बंद कर देने से उत्पन्न स्थिति के संबंध में

श्री मांगीलाल गरासिया (गोगुन्दा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे हजारों काश्तकारों के जनहित के मुद्दे पर बोलने के लिए समय दिया उसके लिए मैं आपका आभारी हूं ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, तहसील गोगुन्दा में नायब तहसील सायरा का जो मामला है, उस एरिया की 15 पंचायतें पड़ती हैं और 15 ही पंचायतों में नायब तहसील का एरिया, उप तहसील का एरिया हमारा जो सायरा लगता है और उसमें, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, उप तहसील कायम करने का आर्डर तो नायब तहसील सायरा कर दिया और अक्टूबर, 2002 से वहां पर सभी तरह का काम चल रहा है। और 2002 में जब काम प्रारम्भ कर दिया गया, सभी तरह की व्यवस्था वहां कायम कर दी गयी और मेरे माध्यम से वहां पर विधायक कोटे से पैसा भी उस नायब तहसील भवन बनाने के लिए दे दिया और जमीन भी आरक्षित हो गयी, कार्यालय चल रहा है। परन्तु, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी वर्तमान में उप तहसील को वापस पंजीयन का काम नहीं करने का सरकार का इशारा हो रहा है और, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मुझे बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि नायब तहसील वहां से कमी करने की कोई साजिश चल रही है जिससे उस सायरा एरिया में बहुत बड़ा जो काश्तकार भाइयों का जनहित का मामला है उनको ओखाड़ा, सायरा और उस एरिया से लोगों को तहसील गोगुन्दा आने-जाने में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा, यह मुझे लग रहा है ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह भी कहूंगा कि वहां पर जो पंजीयन का काम नहीं होगा तो कई लोगों की तकलीफें बढ़ जायेंगी, समस्याओं से जूझना पड़ेगा उन काश्तकारों को इसलिए, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं राज्य सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं, सायरा के साथ में जो हमारे दूरगामी क्षेत्र हैं, ट्रायबल सब प्लान का एरिया है कोटड़ा और कोटड़ा में नायब तहसील मेरपुर है और मेरपुर का मुख्यालय हमने देवला कर रखा है और देवला में भी

(श्री मांगीलाल गरासिया)

वहां पर 55 किलोमीटर कोटड़ा तहसील मुख्यालय पड़ता है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यहां पर 9 पंचायतें हैं इस क्षेत्र की नायब तहसील के एरिया में और इस तहसील एरिया में अधिकांश काम हमें नायब तहसील के माध्यम से मेरपुर हमारे काश्तकार भाई वहां पर काम निपटाते हैं । मैं, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से कहूंगा कि वहां पर भी पंजीयन का काम शुरू करवाने के लिए सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। और सायरा में भी पंजीयन का काम वहां पर शुरू हो सके ।

एक तरफ, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम सायरा को एक तहसील के रूप में देखना चाहते हैं और यहां पर यदि सायरा उप तहसील भी अगर हट जाती है या फिर कमी-बेसी आ जाती है और लोगों का पंजीयन का काम नहीं होता है तो उन काश्तकार भाइयों के लिए बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न हो जायेगी। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसलिए मैं निवेदन करूंगा कि नायब तहसील सायरा और मेरपुर में अधिकांश काम का गजट नोटिफिकेशन में जारी हो जाए, वहां पर राज्यादेश हो जाए और पंजीयन का काम वहां पर शुरू करा दिया जाए तो उन काश्तकारों के हितों का बहुत बड़ा रख-रखाव हो जायेगा, फायदा हो जायेगा । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसीलिए मैं चाहता हूं कि आज वहां पर उस नायब तहसील सायरा और मेरपुर में राज्यादेश नहीं होने से तकलीफों का सामना करना पड़ रहा है उन काश्तकारों को, और मेरा तो इतना निवेदन है कि इस एरिया के लिए, माननीय राजस्व मंत्रीजी विराज रहे हैं और, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से अनुरोध करूंगा कि आज ही आदेश जारी कर दें जिससे कि उन काश्तकारों का भला हो सके ।

मुझे आपने बोलने का समय दिया, उसके लिए मैं आपका आभारी हूं और, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा, राजस्व मंत्रीजी विराज रहे हैं और वो आज घोषणा कर दें कि उस एरिया के लिए आप काश्तकारों का जहां एक तरफ तो हमारी सरकार यह कह रही है कि हम काश्तकारों के हिमायती के रूप में हैं, काश्तकारों का भला करने के रूप में कार्य कर रहे हैं और एक तरफ यह पंजीयन रुक जाता है ।

श्री उपाध्यक्ष: कह दी बात ।

श्री मांगीलाल गरासिया (गोगुन्दा): तो मुझे लग रहा है कि उन काश्तकारों का बहुत बड़ा हित मारा जाएगा इसलिए उपाध्यक्ष महोदय, अनुरोध करूंगा कि राजस्व मंत्रीजी आज हमें इस बारे में आश्वस्त करें और घोषणा कर दें कि वहां पर पंजीयन करके उन हजारों काश्तकारों के जनहित के मामले में आप गौर फरमायेंगे । यही मेरा अनुरोध है, उपाध्यक्ष महोदय, धन्यवाद ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री हरलाल सिंह खर्रा ।

श्री मांगीलाल गरासिया (गोगुन्दा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह सरकार का तो हो जाय, माननीय हमारे राजस्व मंत्रीजी विराजे हैं ।

श्री उपाध्यक्ष: अब आप मंत्रीजी से मिल लेना ।

श्री रामनारायण डूडी (राजस्व मंत्री): आपने सरकार का ध्यान आकर्षित कर दिया है और उसमें अभी तक तो यह भी पता नहीं है आपने बताया है कि वह उप तहसील है, नायब तहसील हैडक्वार्टर है, किस प्रकार का है, इसको दिखवा लेंगे । आप बैठिये ।

श्री मांगीलाल गरासिया (गोगुन्दा): नायब तहसील है इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूं ।

श्री रामनारायण डूडी (राजस्व मंत्री): आपने जो भी बात रखी है उसको एक्जामिन करवा लेंगे । क्या मामला है ।

श्री मांगीलाल गरासिया (गोगुन्दा): पंजीयन का काम तुरन्त शुरु करवाओ, खाली पंजीयन के आदेश करने हैं ।

नियम 295 के अन्तर्गत विशेष उल्लेख

श्रीमाधोपुर उपखण्ड मुख्यालय पर अपर सत्र न्यायालय खोलने बाबत

श्री हरलाल सिंह खर्रा (श्रीमाधोपुर): उपाध्यक्ष महोदय, श्री माधोपुर में 5.11.2001 में ए डी जे कोर्ट कैम्प चालू किया गया था1 वर्तमान में वहां ए सी जे एम कोर्ट दो, एम जे एम कोर्ट तथा एस डी एम कोर्ट संचालित है । बजट 2007-08 में एक ए सी जे एम कोर्ट श्रीमाधोपुर में खोलने का प्रावधान रखा गया था जो विचाराधीन है । वर्तमान में ए डी जे कैम्प कोर्ट में कुल 1070 मुकदमे 31.12.2007 तक लम्बित हैं जो ए डी जे कैम्प कोर्ट द्वारा समय-समय पर निर्णित होना सम्भव नहीं हैं ।

अतः जनहित में इसी सत्र में श्रीमाधोपुर उपखण्ड मुख्यालय पर ए सी जे एम कोर्ट के स्थान पर फुल ए डी जे कोर्ट (अपर सत्र न्यायालय) खोलने का कष्ट करें ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री जालम सिंह रावलोत ।

पंचायत समिति शिव, बाड़मेर एवं सम के पुनर्गठन की मांग

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव): उपाध्यक्ष महोदय, विधान सभा क्षेत्र शिव में पंचायत समिति शिव का पूरा भाग तथा पंचायत समिति बाड़मेर एवं पंचायत समिति सम (जैसलमेर) का बड़ा हिस्सा आता है । पंचायत समिति शिव, पंचायत समिति सम एवं पंचायत समिति बाड़मेर भौगोलिक रूप में बहुत बड़ी है । इन तीनों ही पंचायत समितियों के लम्बे चौड़े क्षेत्रफल के कारण जनता एवं प्रशासनिक तंत्र को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है । उक्त तीनों ही पंचायत समितियों में ग्राम पंचायतों के निरीक्षण एवं विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन में बहुत कठिनाइयों को झेलना पड़ता है । इसके अलावा गरीब ग्रामीणों को किसी भी योजना या कार्य का लाभ उठाने के लिए न सिर्फ समय अपितु आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है । उदाहरण के तौर पर पंचायत समिति शिव की राजबेरा ग्राम पंचायत मुख्यालय पंचायत समिति मुख्यालय से साठ किलोमीटर पूर्व की ओर है तथा सुन्दरा पश्चिम की ओर 170 किलोमीटर है यानि पंचायत समिति शिव की पश्चिम से पूर्व की दूरी 230 किमी है । इसी तरह पंचायत समिति सम से रामगढ़ पंचायत (उत्तर की ओर) झिंझनीयाली (दक्षिण की ओर) की पंचायत समिति मुख्यालय से दूरी 280 किमी है तथा पंचायत समिति बाड़मेर भी बहुत ही बड़ी है ।

अतः आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध है कि पंचायत समिति शिव, पंचायत समिति सम एवं पंचायत समिति बाड़मेर का पुनर्गठन शिव में हरसाणी या गडरा, बाड़मेर में रामसर तथा सम में फतेहगढ़ या झिंझनीयाली को पंचायत समिति के रूप में पुनर्गठित (जनहित में) किया जावे ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री कन्हैयालाल पाटीदार ।

कनवाड़ा (झालावाड़) डेम के डूब में आए परिवारों को मुआवजा दिलाये जाने बाबत

श्री कन्हैया लाल पाटीदार (पिड़ावा): उपाध्यक्ष महोदय, नियम 295 के अन्तर्गत कनवाड़ा (झालावाड़) डेम के डूब क्षेत्र में आये गडारा गांव के गैर आबादी में बसे अनुसूचित जाति के परिवारों को मकानों का मुआवजा दिलाये जाने हेतु विशेष उल्लेख है । विधान सभा क्षेत्र झालरापाटन के गांव करवाड़ा में एक लघु सिंचाई परियोजना का निर्माण हुआ है। उसके डूब क्षेत्र में मेरे विधान

(श्री कन्हैया लाल पाटीदार)

सभा क्षेत्र पिड़ावा के गांव गडारा का आबादी क्षेत्र भी आता है । भूमि की अनुपलब्धतावश गडारा गांव के अनुसूचित जाति के पच्चीस तीस परिवारों ने गांव से लगी हुई चरागाह की भूमि में आज से आठ दस वर्ष पूर्व अपने मकान बना लिये थे । संबंधित ग्राम पंचायत कनवाड़ी ने वह भूखण्ड (दो तिहाई बीघा) जिसमें अनुसूचित जाति के लोगों ने मकान बनाये थे। चरागाह से आबादी में कन्वर्ट कराने हेतु प्रस्ताव लेकर जिला कलक्टर झालावाड़ के यहां से उक्त भूमि के कन्वर्जन की कार्यवाही नहीं की गई । अब जब उन अनुसूचित जाति के गरीब परिवारों के मकान डूब क्षेत्र में आ गये हैं और मुआवजा देने का समय तब शेष गांव के लोगों को मकानों का मुआवजा दे दिया गया और अनुसूचित जाति के लोगों का मुआवजा यह कहकर रोक दिया गया कि आपके मकान गैर आबादी भूमि के हैं इसलिए आपको मुआवजा नहीं दिया जा सकता।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसमें न तो उन गरीबों का कोई दोष है और न ही ग्राम पंचायत का क्योंकि इन्होंने समय रहते उक्त भूखण्ड को आबादी विस्तार हेतु जिला प्रशासन से मांग लिया था । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, उन अनुसूचित जाति के गरीब लोगों ने अपने खून पसीने की कमाई से मकान बनाये थे, उन्हें मुआवजा नहीं दिया जाना उनके साथ अन्याय है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीया मुख्य मंत्री महोदया और जल संसाधन मंत्री महोदय से अनुरोध करना चाहूंगा कि वह गरीब कम से कम अपने मकानों को अन्यत्र बना सकें । इतना मुआवजा दिलाये जाने का कष्ट करें ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसी डेम कनवाड़ा के डूब क्षेत्र मेरे विधान सभा क्षेत्र का गांव ढाबला की आया है यहां स्थित मन्दिर माफी की भूमि का मुआवजा भी नहीं दिया जा रहा है जबकि गांव वालों ने गांव की एक कमेटी बना कर कमेटी को मुआवजा देने हेतु प्रार्थना पत्र दिया है। जबकि केवल गांव की कमेटी को ढाबली गांव में मन्दिर माफी की भूमि का मुआवजा दिया गया है । अत: मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्य मंत्री महोदया और सिंचाई मंत्री महोदय से अनुरोध करना चाहूंगा कि ढाबला ग्राम में मन्दिर माफी की भूमि का मुआवजा गांव की कमेटी को दिलाया जाय । धन्यवाद ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री धर्मेन्द्र कुमार मोची (अनुपस्थित)

श्री हरिमोहन शर्मा ।

हिण्डौली में 132 के.वी. विद्युत ग्रिड सब-स्टेशन

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हिण्डौली विधान सभा क्षेत्र कृषि प्रधान क्षेत्र है । यहां पर अधिकांश स्थानों पर कुओं से सिंचाई की जाती है । वर्तमान में ये कुएं काफी गहरे हो गये हैं इसलिए इन किसानों को लगातार बिजली उपलब्ध कराना क्षेत्र के किसानों के हित में है ।

वर्तमान में हिण्डौली क्षेत्र में दस स्थानों पर 33 के वी विद्युत सब स्टेशन स्थापित हैं जिनमें ग्राम रानीपुरा, गोठडा, अलोद, दरा का नया गांव, दबलाना, धनावा, सथूर, बसौली, हिण्डौली एवं पेंच की बावड़ी में हैं । इनका कुल विद्युत लोड 37 मेगावाट है। वर्तमान में हिण्डौली क्षेत्र में 132 केवी का विद्युत स्टेशन नहीं होने के कारण वोल्टेज में कोई सुधार नहीं है। क्षेत्र में विद्युत लाइन पच्चीस तीस किमी. की दूरी से आ रही है जिसका खर्च भी अधिक आता है और इसमें विद्युत की छीजत भी अधिक हो रही है । 132 केवी स्टेशन नहीं होने के कारण क्षेत्र में विद्युत सप्लाई की भी कोई सुनिश्चिितता नहीं है और जी एस एस बूंदी लोडेड हो रहा है जिससे समुचित मात्रा में विद्युत सप्लाई नहीं हो पा रही है।

पूर्व में भी माननीय मुख्य मंत्रीजी से एवं माननीय संबंधित मंत्रीजी से व्यक्तिगत रूप से पत्रों द्वारा एवं मौखिक रूप से अनुरोध किया जा चुका है । साथ ही विभाग द्वारा भी हिण्डौली में 132 केवी विद्युत ग्रिड स्टेशन की स्थापना के सम्बन्ध में प्रस्ताव तैयार कर भिजवा दिये हैं और विभागीय अधिकारी भी यहां पर 132 केवी विद्युत स्टेशन की स्थापना को उपयुक्त मानते हैं। विभाग को हिण्डौली में 132 केवी विद्युत स्टेशन की स्थापना के लिए उपयुक्त स्थान भी विभागीय अधिकारियों को दिखा दिया गया है। लेकिन न जाने किन कारणों से उक्त 132 केवी विद्युत स्टेशन की हिण्डौली मुख्यालय पर स्थापना की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति जारी नहीं की जा रही है । इससे हिण्डौली क्षेत्र के किसानों को मिलने वाला लाभ नहीं मिल पा रहा है ।

यह किसानों की उपयुक्त व उचित मांग होने के बावजूद भी अभी तक भी इस ग्रिड की स्वीकृति नहीं देना जन भावनाओं के विपरीत है । अतः मेरा अनुरोध है कि इस वर्ष में ही 132 केवी विद्युत ग्रिड स्टेशन की स्वीकृति जारी करने का कष्ट करें।

इसमें सभी राजनीतिक दल के हमारे प्रभारी मंत्री ओमजी बिड़ला सहित सब ने इस बात की मांग की है कि हिण्डौली में 132 केवल ग्रिड-स्टेशन होना नितान्त आवश्यक है ।

श्री उपाध्यक्ष: आ गयी बात आपकी ।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): माननीय मंत्रीजी अगर इस पर कुछ आश्वासन दे दें तो आपकी कृपा होगी । (व्यवधान)

श्री धर्मेन्द्र कुमार मोची (टिब्बी): उपाध्यक्ष महोदय, 295 मेरा भी है।

श्री उपाध्यक्ष: श्री धर्मेन्द्र कुमार मोची ।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): आपने कल कहा था ना मीटिंग बुलाकर इस पर विचार करेंगे । तो यह तो बोलो । उससे भी पीछे क्यों हट रहे हो?

श्री उपाध्यक्ष: विचार तो स्वीकृत करने का था अभी...(व्यवधान)

श्री धर्मेन्द्र कुमार मोची (टिब्बी): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, प्रक्रिया एवं कार्य संचालन सम्बन्धी नियम...(व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): एक सैकिण्ड । मंत्रीजी बोलने के लिये खड़े हो गये । वह बोलना चाह रहे थे । (व्यवधान) नहीं, आपने बिठा दिया... (व्यवधान) यह बिलकुल अनुचित है । माननीय मंत्रीजी खड़े हो रहे हैं और संसदीय कार्य मंत्रीजी उन्हें बार-बार बिठा रहे हैं । यह गलत है, सौ प्रतिशत गलत है । वह अपनी मर्जी से जवाब दे रहे हैं और इस प्रकार से संसदीय मंत्री उनको जवाब नहीं देने दे रहे हैं । यह सही नहीं है । यह कतई अनुचित है । (व्यवधान) वह खड़े हों और...(व्यवधान) वह बात करना चाहते हैं और संसदीय कार्य मंत्रीजी जानबूझकर राजनीतिक रूप से उनको सही जवाब देने से रोक रहे हैं । यह कैसे मान लें...(व्यवधान)

श्री धर्मेन्द्र कुमार मोची (टिब्बी): मंत्रीजी से पहले तो मैं भी खड़ा हो गया । आप ऐसा क्यों कर रहे हो? क्या बात हो गयी? (व्यवधान) मेरा 295 है...(व्यवधान) मेरा 295 है, पहले मुझे तो खड़े हो जाने दो।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): माननीय मंत्रीजी को आप बोलने नहीं दे रहे हो और यह नाथू सिंहजी थे...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): वह खड़े हो गये तो आप जवाब दिलवाओ...(व्यवधान) हां का दिलवा दो आप, आप ना का ही दिलवा दो लेकिन वह खड़े हो गये तो जवाब दो आप...(व्यवधान) आप जवाब दो । वह खड़े हो रहे हैं जवाब देने के लिये । वह खड़े हो रहे हैं।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य...(व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): वह तो खड़े इसीलिये हुए थे यह कहने के लिये कि 295 में मंत्री जवाब नहीं देते हैं । यह कहने के लिये खड़े हुए थे ।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): यह आप आज तक भी, आप अब तक भी अपनी स्थिति को नहीं समझ रहे हैं । कितना ही चमचागिरी कर लो लेकिन जो स्थिति बनती जा रही है ना, उससे उबर नहीं पाओगे और ऐसे बीच में आज तक जो...(व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): मैंने तो कल भी माननीय उपाध्यक्ष महोदय से निवेदन किया था कि हमारी सबकी सुरक्षा करने का काम आसन का है। और माननीय सदस्य जो हिण्डौली से आने वाले, उनको बाइपास हुआ है और बहुत जोर-जोर से बोलते हैं । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जरा आप उनकी...(व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): 20 साल हो गये बाइपास हुए अभी तक तो सही सलामत हूं । आप क्यों चिन्ता कर रहे हो?

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): हां तो खतरा ज्यादा है ।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): आप और जनता का...(व्यवधान) यह तो जनता का काम करते-करते पूरे भी हो जायेंगे खाद्य एवं आपूर्ति मंत्रीजी ।

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): आप चाहते हो क्या यह और बाइपास होती रहे? आप दुबारा बाइपास कराना चाह रहे हो क्या? आप वह बाइर्पास दुबारा कराना...(व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): यह आपको बाइपास करने वाले हैं...(व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): मरो तो कोई बड़े काम के लिये । छोटे-मोटे काम के लिये क्यों मरते हो? छोटे-मोटे काम के लिये क्यों मरते हो? कोई बड़े काज के लिये मरो । बड़े काज के लिये मरो...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: आसन के...(व्यवधान) आपका...(व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): डरने की कोई जरूरत नहीं है।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): अगर विस्तृत व्याख्या की आवश्यकता है तो सांवर लालजी को खड़ा करें?

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): काहे के लिये?

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): विस्तृत व्याख्या अगर आप चाहते हो तो सांवर लालजी को खड़ा करें? यह, प्रवचन अगर चाहता है सदन तो सांवर लालजी बता सकते हैं आया है जो जायेगा । शाश्वत है, शाश्वत सत्य है ।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): आप तो उनको खड़ा होने से मत रोको इतनी सी कृपा करो ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): अब आपसे रिकवेस्ट कर दी है तो दिलवा ही दो इनको । इनका जवाब दिलवा दो...(व्यवधान) दे दो... (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य...(व्यवधान)

श्री धर्मेन्द्र कुमार मोची (टिब्बी): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पहले... (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): बोल लेने दो ना पहले क्या होता है... (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: करेंगे बस । आप मिल लेना । करेंगे बस । अब आप तो चैम्बर में मिल लेना ।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): ऊर्जा मंत्रीजी, अगर ऊर्जा मंत्री इतना कमजोर होगा...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, अब कुछ भी अंकित नहीं होगा । (व्यवधान) माननीय सदस्य, कुछ भी अंकित नहीं होगा...(व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर):×××

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमने इतने 132 के बना दिये हैं कि राजस्थान में जितनी जो आवश्यकता थी बन चुके हैं और कहीं भी हिण्डौली नहीं, कोई भी क्षेत्र के अन्दर अगर रिक्वायरमेंट होगी उसकी भी लोड स्टडी करके हम तो चाहते हैं हमारा सिस्टम स्ट्रेंथन हो तो खाली हिण्डौली के लिये नहीं पूरे राजस्थान के लिये जहां भी रिक्वायरमेंट होगी, हम बनायेंगे । अगर वहां पर लोड है तो हम देख लेंगे ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री धर्मेन्द्र कुमार मोची ।

फ्लोराइड युक्त पेयजल से उत्पन्न स्थिति

श्री धर्मेन्द्र कुमार मोची (टिब्बी): महोदय, निवेदन है कि मेरे निर्वाचन क्षेत्र टिब्बी के अन्तर्गत फ्लोराइड युक्त पेयजल की आपूर्ति की जा रही है परन्तु 89 गांवों/ढाणियों/चकों में तो शुद्ध पेयजल की स्कीमें तैयार कर कार्य चालू किया गया । उनमें से कुछ बकाया स्कीमें बनाकर विभाग से पी पी सी एवं एफ सी की बैठकों में स्वीकृति हेतु विचाराधीन चल रही है । मेरा आपसे निवेदन है कि निम्न पेयजल स्कीमें स्वीकृत कर मेरे निर्वाचन क्षेत्र को फ्लोराइड युक्त पेयजल से मुक्ति मिल सके ।

1. ग्राम 1 आर डब्ल्यू एम रावतसर 49.50 लाख
2. -- 10 के डब्ल्यू डी – 6 के डब्ल्यू एम 175.00 लाख
3. -- 6-8 डी बी एल (डबली) टिब्बी 198.88 लाख
4. कस्बा रावतसर 99.07 लाख
5. 7 आर पी ए टिब्बी 110.00 लाख
6. 27-30 एन जी सी (पन्नीवाला) टिब्बी 140.00 लाख

इन योजनाओं को स्वीकृत कर फ्लोराइड युक्त पेयजल से मुक्ति दिलायें ।

इसके साथ-साथ पेयजल से संबंधित एक गम्भीर समस्या से कस्बा रावतसर बार-बार जूझता है । मेगा हाइवे रोड कस्बे के बीचों बीच गुजरती है । रोड़ बहुत बढ़िया बनायी गयी है परन्तु रोड के नीचे शहर की मुख्य पेयजल पाइप विद्यमान हैं एवं लगभग 10-12 स्थानों से मुख्य पाइप लाइन सड़क के नीचे से गुजरती है । सड़क के नीचे पाइपें लम्बी दूरी तक हैं । मेगा हाइवे मार्ग बनने से बार-बार पाइपें टूटती रहती हैं जिसमें शहर में पेयजल आपूर्ति में बार-बार बाधाएं आती हैं। भविष्य में उक्त मार्ग पर भारी वाहन (ओवर लोड) ट्रकों का आवागमन बढ़ेगा एवं पेयजल की मुख्य पाइप लाइन बार-बार टूटेगी (ब्रेकेज) होगी । ऐसी स्थिति में निवेदन है कि उक्त सड़क के नीचे विद्यमान पाइपों के स्थान पर सुरक्षित स्थान पर पाइप डालकर पेयजल की व्यवस्था में सुधार करवाया जावे ताकि बार-बार आने वाली बाधा से मुक्ति मिल सके एवं शहर की पेयजल सप्लाई सुचारू रूप से होती रहे । धन्यवाद ।

श्री उपाध्यक्ष: डा. श्रीगोपाल बाहेती-(अनुपस्थित)। श्री बद्री लाल जाट।

रावतभाटा, जिला चित्तौड़गढ़ में महाविद्यालय का राजकीय स्तर से संचालन

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): महोदयजी, उपरोक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान में वर्तमान सरकार के कार्यकाल में जितना विकास हुआ है जो ऐतिहासिक है ।

गत सरकार के कार्यकाल की अपेक्षा अपेक्षाकृत अधिक कार्य हुए हैं । सैकड़ों प्राथमिक विद्यालयों को उच्च प्राथमिक स्तर पर क्रमोन्नत किया है । इसी प्रकार सैकड़ों की संख्या में प्रत्येक स्तर का विद्यालय क्रमोन्नत किये हैं । स्कूल भवनों का निर्माण, कक्षा कक्षों का निर्माण, विद्यालयों में सुविधाओं का निर्माण, किचन शेड्स, रैम्पस का निर्माण व अन्य योजनाओं के माध्यम से निर्माण कार्य कराये हैं । निःशुल्क पाठ्य पुस्तकों का वितरण किया गया है । छात्र-छात्राओं को अलग-अलग दिवस के लिये निर्धारित गरम स्वादिष्ट भोजन उपलब्ध कराया गया है । नये इंजीनियरिंग कालेज, पोलोटैक्निक कालेज, एम बी ए संस्थान, फार्मेसी संस्थान खोले हैं तथा सीटों में वृद्धि की तथा महाविद्यालयों में व्यावसायिक पाठ्यक्रम खोले हैं तो कि सैकड़ों की संख्या में खोले हैं । इसी प्रकार स्ववित्त पोषित योजना में महाविद्यालय खोले हैं । उसी योजना में रावतभाटा, जिला चित्तौड़गढ़ में भी महाविद्यालय खोला गया है । राजस्थान के लिये कभी भी धन की कमी नहीं आने दी जायेगी ऐसा हमारा विश्वास है ।

चूंकि रावतभाटा क्षेत्र माड़ा क्षेत्र में आता है, वित्त व्यवस्था करने में काफी परेशानी आ रही है। इसके चलते उक्त महाविद्यालय का संचालन राजकीय स्तर से किये जाने की स्वीकृति दी जाना आवश्यक है ।

अतः सदन के माध्यम से निवेदन है कि रावतभाटा, जिला चित्तौड़गढ़ में वर्तमान में संचालित (स्व वित्त पोषित रूप से) महाविद्यालय को राजकीय स्तर से संचालन करने की स्वीकृति जारी करने की कृपा करावें ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री जीवाराम चौधरी ।

सांचौर उप खण्ड क्षेत्र में विभिन्न ए एन एम, जी एन एम के रिक्त पद भरने व नये उप स्वास्थ्य केन्द्र खोलने विषयक

श्री जीवाराम चौधरी (सांचौर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं सांचौर उपखण्ड क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर उप स्वास्थ्य केन्द्र खोलने एवं रिक्त पड़े ए एन एम व जी एन एम पदों के भरने के क्रम में बोलने जा रहा हूं ।

(श्री जीवाराम चौधरी)

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सांचौर उपखण्ड क्षेत्र एक वृहद क्षेत्र है जो भौगोलिक रूप से भी अलग-अलग खंडित है। सभी गांव-ढाणियां दूर-दूर तक फैले हुए हैं। साधारणतया: यातायात साधनों का भी अभाव रहता है । वर्तमान समय में चिकित्सा सुविधा अत्यावश्यक है। इसे हम मूल सुविधा में प्रथम गिन सकते हैं ।

वर्तमान समय में सांचौर उपखण्ड क्षेत्र में 91 उप स्वास्थ्य केन्द्र कार्यरत हैं जिसमें 13 पद कई समय से रिक्त चल रहे हैं तथा कई केन्द्रों पर समय पर ए एन एम व जी एन एम अपनी सेवाएं नहीं देती हैं । इसके अलावा सांचौर क्षेत्र में 57 स्थान ऐसे हैं जो राजस्व गांव होने के अतिरिक्त वहां प्रत्येक गांव की जनसंख्या औसतन 3000 है एवं ये उक्त 57 गांव/स्थान उप स्वास्थ्य केन्द्र खोलने की सभी शर्तों के अनुपालन में योग्य हैं।

अत: माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके मार्फत सरकार से निवेदन करता हूं कि सांचौर उपखण्ड क्षेत्र में विभिन्न ए एन एम, जी एन एम पदों को भरने एवं 57 गांव/स्थानों पर उप स्वास्थ्य केन्द्र खोलने की स्वीकृति प्रदान करावें । धन्यवाद ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री मोहन लाल गुप्ता- (अनुपस्थित)।

श्रीमती अनिता भदेल ।

अजमेर में स्टेशन रोड से कचहरी रोड व आगरा गेट तक एलीवेटेड रोड का निर्माण

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): विधान सभा के प्रक्रिया नियम 295 के अंतर्गत निवेदन है कि अजमेर शहर को बसे हुए वर्षों बीत चुके हैं । शहर के अंदरूनी हिस्सो में जो मार्ग बने हुए हैं वे तत्कालीन आवश्यकताओं को देखते हुए बनाये गये थे । उस समय सीमित जनसंख्या तथा सीमित ही यातायात के साधन थे । उस समय किसी परिवार में साइकिल होना बहुत बड़ी बात थी । समय गुजरता गया और अजमेर की जनसंख्या में बेतहाशा वृद्वि हुई है । अजमेर में दरगाह व पुष्कर होने के कारण बाहर से आने वाले तीर्थ यात्रियों में भी दिन-प्रतिदिन वृद्वि होती जा रही है । जहां पहले प्रत्येक घर में साइकिल होना बड़ी बात थी वहीं आज हर घर में दो पहिया और चार पहिया

(श्रीमती अनिता भदेल)

वाहन होना आवश्यकता हो चुकी है । अजमेर में यातायात विभाग में लाखों वाहन पंजीकृत हैं, इन वाहनों के चलने के लिए रास्ते वही हैं जो अजमेर के बसावट के समय थे ।

अतः आवश्यकता बन चुके वाहनों को अजमेर के मार्गों पर चलना एक चुनौती बनता जा रहा है । यहां आए दिन दुर्घटनाएं होती रहती हैं । आज वाहनों को मार्गों पर चलाने के लिए वैकल्पिक व्यवस्था की नितांत आवश्यकता हो गयी है । अतः मेरा विनम्र आग्रह है कि अजमेर में यातायात के बड़े और बढ़ते जा रहे दबाव की उचित व्यवस्था हेतु स्टेशन रोड से कचहरी रोड व आगरा गेट तक एलीवेटेड रोड का निर्माण करवाने की स्वीकृति प्रदान करें ताकि अजमेर की यातायात व्यवस्था सुगम बन सके। माननीय मुख्य मंत्रीजी के अजमेर आगमन पर भी विषय उठाया गया था । जिस पर माननीया मुख्य मंत्रीजी ने भी सहमति जताई थी। मेरा आग्रह है कि माननीय मुख्य मंत्रीजी द्वारा कही गयी बात की क्रियान्विति यदि शीघ्र करवायी जायेगी तो अजमेर की आम जनता को हम राहत प्रदान कर सकेंगे, धन्यवाद ।

श्री उपाध्यक्ष: ठीक है ।

डा. श्रीगोपाल बाहेती (पुष्कर): उपाध्यक्ष महोदय, मैंने 295 लगाया था, सॉरी, मैं उठा दूं, दो मिनट में मुझे वापस जाना है ।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): उपाध्यक्ष महोदय, यह गलत है, इसमें सज़ा मिलनी चाहिए । जो माननीय सदस्य प्रश्न लगाये, 295 लगाये और नहीं हो, उनको सज़ा देनी चाहिए उनको किसी भी प्रकार से पुरस्कृत नहीं करना चाहिये ।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): ना, उपाध्यक्ष महोदय, धर्मेन्द्र मोची जी का क्या हुआ था? धर्मेन्द्र मोचीजी भी नहीं थे, बाद में आये थे, आसन ने मौका दिया था...(व्यवधान)

यह बेचने के बांट दूसरे और खरीदने के दूसरे थोड़े ही चलेंगे।

श्री रामचन्द्र सराधना (जमवारामगढ़): आप तो सीनियर आदमी हो, उलझते क्यों हो? क्यों उलझते हो आप?

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): यह तो प्रभा ठाकुरजी का फार्म भरवाने गये थे, इनके जिले की हैं वह...(व्यवधान)

श्री रामचन्द्र सराधना (जमवारामगढ़): मत उलझिये, मत उलझिये... (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: ठीक है ।

डा. श्रीगोपाल बाहेती (पुष्कर): उपाध्यक्ष महोदय, मैं 295 के माध्यम से मेरी बात रखना चाहता हूं ।

श्री उपाध्यक्ष: श्रीगोपाल बाहेती ।

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): उपाध्यक्ष महोदय, मंत्री महोदय विराजमान हैं अगर वह इस विषय में कुछ कहना चाहते हैं तो प्लीज आप अलाऊ करें ।

श्री उपाध्यक्ष: कह दिया ना आपने ।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): जो लेट आते हैं उनको दंडित किया जाना चाहिये ।

पुष्कर विधान सभा क्षेत्र में स्कूलों की स्थिति

डा. श्रीगोपाल बाहेती (पुष्कर): उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान विधान सभा की प्रक्रिया के नियम 295 के तहत मैं राजस्थान सरकार का ध्यान पुष्कर विधान सभा क्षेत्र की स्कूलों की स्थिति की ओर आकर्षित करना चाहता हूं ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, क्षेत्र की अधिकांश स्कूलों में अध्यापकों का अभाव है, स्थिति यह है कि पूरा साल बिना अध्यापकों के बीत गया और अभी परीक्षाएं चल रही हैं और ग्रामीण क्षेत्र की स्कूलों के विद्यार्थी बिना शिक्षकों के ही अपनी पढ़ाई कर रहे हैं । सरकार की अध्यापकों की भर्ती की बार-बार घोषणाओं के बाद भी स्कूलों में अध्यापकों के पद रिक्त पड़े हैं और अल्पसंख्यक बोर्ड, अध्यापक विशेषकर उर्दू विषय के अध्यापक तो स्कूलों में नहीं हैं । इसी प्रकार अंग्रेजी, गणित सहित कई महत्वपूर्ण विषयों के अध्यापक स्कूलों में हैं ही नहीं ।

उपाध्यक्ष महोदय, विडम्बना है कि ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों को न तो अध्यापक मिले, न पढ़ाई का माहौल मिला और तो और मुख्य मंत्रीजी के फोटो सहित रात को ग्रामीण क्षेत्र में बिजली देने की घोषणा की कि हम रात को विद्युत ज्योति देते हैं और बच्चों, आप ज्ञान ज्योति जलाओ, यह विज्ञापन मुख्य मंत्रीजी के जन्म दिन पर छपा । इतने बड़े +++ का शिकार ग्रामीणों को

(डा. श्रीगोपाल बाहेती)

होना पड़ा । अतः मैं माननीय उपाध्यक्ष महोदय से निवेदन करना चाहता हूं कि इस अन्याय को बंद कराकर स्कूलों में रिक्त पद भरने का कष्ट करें ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री अर्जुन लाल जीनगर ।

श्री शांतिलाल चपलोत (मावली): यह +++ शब्द असंसदीय है ।

श्री वासुदेव देवनानी (राज्य मंत्री, शिक्षा): यह +++ शब्द सही नहीं है, असंसदीय है ।

श्री उपाध्यक्ष: वह निकल जायेगा, वह हो जायेगा । डिलीट कर दिया जाये ।

श्री वासुदेव देवनानी (राज्य मंत्री, शिक्षा): अध्यापकों के बारे में भी जो बातें कही हैं वह ठीक नहीं है ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री अर्जुनलाल जीनगर ।

उप स्वास्थ्य केन्द्र व प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों के भवन निर्माण

श्री अर्जुन लाल जीनगर (गंगरार): उपाध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियम 295 के अंतर्गत निवेदन करना चाहता हूं कि मेरे विधान सभा क्षेत्र में कई स्थानों पर उप स्वास्थ्य केन्द्र किराये के मकानों में संचालित हैं । किराये के भवनों में उप स्वास्थ्य केन्द्र संचालित होने से कई समस्याएं आती हैं ।

अतः राशमी तहसील में भवन विहीन अडाना, सोमरवालों का खेड़ा, साखनी, बावलास, चित्तौड़िया एवं गंगरार तहसील में भवन विहीन उप स्वास्थ्य केन्द्रों में मेंडीखेड़ा, जवासीया, आजोलिया का खेड़ा, कोजन्दा, सुवानीया में उप स्वास्थ्य केन्द्र भवन निर्माण के लिये तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पहुना में चारदिवारी व वार्ड निर्माण के लिये आवश्यक धनराशि उपलब्ध कराने का श्रम करावें ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री अशोक नागपाल । (अनुपस्थित)

श्री समर्थ लाल मीणा । राजगढ़ में सब तहसील रैणी को तहसील बनाने के संबंध में ।

पर्ची के माध्यम से उठाये गये मुद्दे

राजगढ़ में सब तहसील रैणी को तहसील बनाने के सम्बन्ध में

श्री समर्थ लाल (राजगढ़): उपाध्यक्ष महोदय, राजगढ़ तहसील में जो सब तहसील रैणी है, उसको तहसील बनाने के लिए मैं राज्य सरकार से और रेवेन्यु मिनिस्टर को इस सदन के माध्यम से यह निवेदन करना चाहता हूं कि भौगोलिक स्थिति के आधार पर रैणी ऐसी जगह पर स्थित है, जहां करीब 126 गांव पहले थे और अब 142 गांव वहां हो गये हैं। और यह पूरी तरह से पहाड़ियों से घिरा हुआ इलाका है । क्योंकि सारे दफ्तर राजगढ़ में हैं, इसलिए वहां तक पहुंचने पर दूर के जो गांव हैं, जो सीमा पर बसे हुए गांव हैं उनको 40-45 किलोमीटर चलकर के वहां आना-जाना पड़ता है । ट्राइबल एरिया होने से, गरीब इलाका होने के नाते लोगों को बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ता है ।

उपाध्यक्ष महोदय, इसलिए मेरा यह निवेदन है कि आपने शायद पिछले वर्ष भी सब तहसीलों को तहसील नहीं किया और इस वर्ष भी अभी तक सब तहसीलों को तहसील करने की कोई घोषणा नहीं हो पायी है। तो क्या राज्य सरकार की मंशा है, क्योंकि राज्य सरकार का एक पत्र वहां गया था और हमारे अधिकारी, जो रेवेन्यु सर्किल के अंदर रहते हैं, तहसीलदार, एस.डी.ओ, कलक्टर उनके माध्यम से रेवेन्यु बोर्ड को यह पत्र गया है कि रैणी को सब तहसील से तहसील बनाया जाये। और रेवेन्यु बोर्ड के माध्यम से राज्य सरकार के पास वह पत्र विचाराधीन है ।

उपाध्यक्ष महोदय, उसमें सभी प्रकार की जो परिकल्पनाएं हैं, सब तहसील को तहसील बनाने के लिए वह उसके अंदर मौजूद हैं, सारे आधार मौजूद हैं। इसलिए इन आधारों पर रैणी को सब तहसील बनाया जाना चाहिए। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि जब माननीय मुख्य मंत्रीजी का एक बार वहां प्रवास हुआ था उस प्रवास के दौरान भी उन्होंने सहानुभूति पूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया था और उस आश्वासन को दिये हुए चार वर्ष हो गये । यह पांचवां वर्ष चल रहा है। इसलिए मैं सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि जब सारी फार्मेलिटीज सब तहसील को तहसील बनाने की पूरी कर चुके हैं तो उसको तहसील क्यों नहीं बनाया जा रहा है? माननीय मंत्रीजी यहां मौजूद हैं। मैं उनसे भी निवेदन करना चाहता हूं कि वह काश्तकार पेशे से आते हैं । मैं भी काश्तकार पेशे से आता हूं और अधिकतर माननीय सदस्य

(श्री समर्थ लाल)

इस सदन के अंदर जो आ रहे हैं, वह काश्तकार पेशे से आते हैं अथवा काश्तकारों की सहायता से आते हैं । इसलिए जो सब तहसील रैणी है उसको तहसील बनाया जाना बहुत ही अत्यावश्यक है ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री अर्जुन लाल मीणा । जनजाति उप योजना टीएसपी में स्केल नं. 1 से 9 तक आरक्षण संबंधी चर्चा के लिए ।

टी.एस.पी. क्षेत्र में स्केल नं. 1 से 9 तक आरक्षण

श्री अर्जुन लाल मीणा (सलूम्बर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि संविधान के निर्माताओं ने भारत में और राजस्थान में रहने वाले अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों के लिए, भारत में अनुसूचित जनजाति के लोगों के लिए, साढ़े सात प्रतिशत आरक्षण और राज्य में बारह प्रतिशत आरक्षण, और अनुसूचित जाति के लिए 16 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था की । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, दक्षिणी राजस्थान का वह एरिया जिसको हम जनजाति उपयोजना क्षेत्र बोलते हैं, टी एस पी एरिया, वहां के लोगों के लिए, वहां के अभ्यार्थियों के लिए राज्य सेवाओं में स्केल नम्बर 1 से 9 तक सीधी भर्ती के लिए 45 प्रतिशत आरक्षण की जो व्यवस्था की गई है, मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी और केबिनेट के समस्त मंत्रियों को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन लोगों को, जो लोग देश के आजाद हुए आज 50-60 साल हो गए हैं, मात्र 2 आर ए एस बने हैं। अभी तक पूरे राजस्थान में अनुसूचित जनजाति के 74 आर ए एस हैं उनमें से मात्र 2 टी एस पी क्षेत्र से आर ए एस बनकर तैयार हुए हैं। यह जो व्यवस्था माननीय मुख्य मंत्रीजी ने और भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने 1 से 9 नम्बर स्केल तक, जिसमें वाणिज्यिक कर निरीक्षक, आबकारी निरीक्षक, थानेदार, नायब तहसीलदार, अध्यापक, लेखाकार, कनिष्ट लेखाकार की भर्तियों में जो 45 प्रतिशत के रिजर्वेशन का जो प्रावधान कर लागू किया गया है। माननीय मंत्रीजी, मैं आपका ध्यान अभी कल दिनांक 14.3.2008 को आर ए एस का जो परीक्षा परिणाम निकला है उसकी ओर दिलाना चाहता हूं । उसमें आर पी एस सी ने जो रिजल्ट डिक्लेयर किया है उसमें यह लिखा है कि 15 दिन के अंदर-अंदर टी एस पी क्षेत्र के लोगों के लिए एसी और एसटी अभ्यार्थियों को टी एस पी क्षेत्र का मूल निवास प्रमाण पत्र पेश करना पड़ेगा । मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या सरकार अभी जो

(श्री अर्जुन लाल मीणा)

रिजल्ट घोषित किया हुआ है उनके कट आफ मार्क्स दे दिए गए हैं? क्या सरकार उन लोगों का रिजल्ट, जिनको प्रतिनिधित्व नहीं मिला है, दुबारा परीक्षा परिणाम घोषित करेगी या उन्हीं में से जिनका परीक्षा परिणाम आ गया है, टी एस पी के लोगों को जो नायब तहसीलदार हैं, जो निरीक्षक हैं, कामर्शियल टैक्स ऑफिसर हैं, भर्ती उन्हीं लोगों में से ली जाएगी?

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन है कि जब भैरोंसिंहजी शेखावत मुख्य मंत्री थे तो उन्होंने ही सर्वप्रथम 1 से 6 स्केल तक इसको लागू किया । उनके कार्यकाल में नंदलालजी मीणा जब मंत्री थे तो उन्होंने 1 से 6 तक इसका लाभ दिया। इससे आज शिक्षा विभाग में, मैं निवर्तमान शिक्षा मंत्री माननीय घनश्यामजी तिवाड़ी को धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने शिक्षा विभाग में एक भी पद बैकलाग का खाली नहीं रखा थर्ड ग्रेड अध्यापकों का, सारे के सारे पद भर गए, 519 पद खाली हैं, अभी अभ्यर्थी मिल नहीं रहे हैं ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि हमारे यहां टी एस पी क्षेत्र में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय है, वहां एक भी पद लैक्चरर का कॉलेज में अनुसूचित जनजाति का नहीं है । कल मंत्री महोदय जब अपने विभाग की डिमाण्ड का उत्तर दे रहे थे तो उन्होंने घोषणा की कि एस सी और एस टी के जितने बैकलाग के पद खाली पड़े हैं उन सबको, 200 लेक्चरर के पदों पर भर्ती की जाएगी । मैं यह जानना चाहता हूं कि इन 200 पदों में से मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में क्या टी एस पी क्षेत्र के उन लोगों की प्राथमिकता तय की जाएगी ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि पिछले साल सुप्रीम कोर्ट का, आंध्र प्रदेश का कोई एक राइडर आया था आर पी एम टी में, मैं निवर्तमान शिक्षा मंत्री माननीय घनश्यामजी तिवाड़ी, कनकमलजी कटारा और माननीय मुख्य मंत्रीजी को धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने एडवोकेट जनरल से राय लेकर आर पी एम टी में पांच प्रतिशत का जो रिजर्वेशन लागू किया। उस वजह से टी एस पी क्षेत्र में एम बी बी एस में 26 डाक्टर तैयार हुए। वह 26 डाक्टर उस टी एस पी क्षेत्र में जो जनजाति बहुल क्षेत्र है उसमें डाक्टर बनाए जाएंगे तो वहां पर डाक्टर नहीं मिलने, मुख्यालयों पर नहीं रहने की जो समस्या है उसका समाधान हो पाएगा । मैं आपके माध्यम से यही निवेदन कर अपनी बात को विराम देता हूं । धन्यवाद ।

श्री नन्दलाल मीणा (जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सलूम्बर से आने वाले माननीय सदस्य ने जनजाति उपयोजना क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के लिए विशेष आरक्षण के बारे में सदन में चर्चा प्रस्तुत की । मैं इस पर यह निवेदन करना चाहता हूं कि संविधान में प्रदत्त अधिकार के आधार पर बारह प्रतिशत अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षण था परन्तु लम्बे समय से आरक्षण की पालना योग्य उम्मीदवारों के अभाव में उनको नियुक्तियां नहीं मिल रही थी । इन सबको देखते हुए 1996 में राजस्थान के मुख्य मंत्री श्रद्धेय भैरोंसिंहजी शेखावत ने इस शिड्यूल्ड एरिया के लिए स्केल नम्बर 1 से 6 तक के पदों के लिए आरक्षण 12 प्रतिशत से बढ़ाकर 45 प्रतिशत किया। यह पहला मौका था जब राजस्थान की भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने अनुसूचित जनजाति क्षेत्र के लिए विशेष भर्ती अभियान के जरिये नियुक्तियों का प्रावधान किया । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, नियुक्तियों का तो प्रावधान कर दिया परन्तु बी एड, नर्सिंग, फूड क्राफ्ट इन्स्टीट्यूट, आयुर्वेद जैसी स्केल नम्बर 1 से 6 तक के पदों के लिए जनजाति विकास विभाग के माध्यम से विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था की और जो बैकलाग था उसको भरा गया। परन्तु इस बार माननीय मुख्य मंत्रीजी ने और उस वक्त के अनुसूचित जनजाति विकास विभाग के मंत्री भाई कनकमलजी कटारा ने यह और अनुभव किया कि जो आरक्षण 1996 में स्केल नम्बर 1 से 6 तक लागू किया हुआ था वह अपर्याप्त है। एस टी के अभ्यार्थियों को जो शिड्यूल्ड एरिया में रहते हैं उनके साथ शायद सही ढंग से न्याय नहीं हो रहा है। इस बात को दृष्टिगात रखते हुए माननीय मुख्य मंत्रीजी ने वर्ष 2007 के अक्टूबर-नवम्बर में एक और महत्वपूर्ण निर्णय लिया कि शिड्यूल्ड एरिया के लिए स्टेट सर्विसेज के अलावा सभी सर्विसेज में 45 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया जाएगा ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कल ही मेरी उच्चाधिकारियों से बात हुई है सभी पदों पर राज्य स्तरीय पदों को छोड़कर 45 प्रतिशत आरक्षण हुआ है तो बहुत से हमारे नवयुवक जो प्रशिक्षित होकर आ रहे हैं, प्रशिक्षण की व्यवस्था कम है तो हम अगली जुलाई से 45 प्रतिशत आरक्षण की पूर्ति हो इसके लिए किन-किन संस्थाओं और किन-किन विभागों के बैकलाग के साथ-साथ इन पदों को भरने की व्यवस्था की जाएगी। प्रशिक्षण की क्या व्यवस्था होगी, क्या स्पेशल ट्रेनिंग सेंटर बनाए जाएंगे इस बारे में कल मेरी चर्चा हुई है और मैं बहुत जल्दी विधान सभा सत्र के बाद सभी टी एस पी एरिया के

(श्री नन्दलाल मीणा)

विधायकों और शासन सचिवों से बैठकर चर्चा करके त्वरित गति से किस तरह से प्रशिक्षित किया जाए इसकी व्यवस्था की जाएगी ।

श्री उपाध्यक्ष: धन्यवाद, श्री तगारामजी । मानव रहित रेलवे सम पार को खुलवाने के सम्बन्ध में । (व्यवधान) केन्द्र का मामला है ।

मानव रहित रेलवे समपार को खुलवाने के सम्बन्ध में

श्री तगाराम चौधरी (बाड़मेर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे पर्ची पर मानव रहित दो रेलवे समपार तैयार किए हुए, उन्हें खुलवाने के सम्बन्ध में चर्चा करने के लिए अनुमति दी है, मैं आपका बहुत आभारी हूं ।

(समय : 12.00 बजे)

मान्यवर, लूणी मनावा रेलमार्ग पहले ब्राडगेज लाइन नहीं थी बाद में ब्राडगेज बना । उससे पहले बाड़मेर जिले में अनेक जगह समपार थे उनको शनैः-शनैः रेलवे ने बंद कर दिया । यह बड़े आश्चर्य की बात है कि बायतू और कवास के मध्य 22 किलोमीटर की दूरी में एक भी समपार नहीं है । पहले थे, लेकिन उनको बंद कर दिया गया । हमने, आम जनता ने, जन-प्रतिनिधियों ने बहुत प्रयत्न किया तो दो समपार मानवरहित, एक बणियासंधा धोरा के पास में और एक निमाणिया ढाणी के पास में कवास और बणियासंधा धोरा के बीच में और बायतू और बणियासंधा धोरा के बीच में दो मानव रहित समपार रेलवे ने बनाकर तैयार तो कर दिये हमारी मांग पर, जनता की मांग पर । तैयार कर रहे थे उस समय कह रहे थे अब खोलते हैं, जल्दी खोलते हैं, तैयार हो रहा है। कभी कहते थे कि सूचकों के लिए बोर्ड नहीं लगे । सारे लगा दिये, रोड बना दी, वहां पर रोड के बीच में रेलवे के बीच में जिस तरह से सीमेंट की ईंटें लगा दी, चकरेल लगा दी, कोई चीज बाकी नहीं है, परन्तु फिर भी वहां दो समपार हैं वे चालू नहीं कर रहे हैं, पता नहीं क्या दिक्कत आ रही है । आप देखेंगे कि 22 किलोमीटर की दूरी जिसमें एक तरफ से दूसरी तरफ कोई जा नहीं सकता, मनुष्य भी नहीं जा सकता । मैं कहूंगा दोनों जगह जैसे बणियासंधा धोरा के पास वाला समपार है वहां तो भारड़का से तिलवाड़ा की बहुत लम्बी रोड है, सड़क बनी हुई है उनके ऊपर भी बनायी हुई है, परन्तु वो भी नहीं खोल रहे हैं और निमाणियों की ढाणी से गुढ़ामालानी का पुराना राजमार्ग था, पहले भी वहां पर समपार था, वहां पर बनाया हुआ था, दोनों ही नहीं खोल रहे हैं । आम जनता के लिए इससे बड़ी भारी कठिनाई क्या हो

(श्री तगाराम चौधरी)

सकती है? 22 किलोमीटर का चक्कर लगाकर आना पड़ता है । पता नहीं वे समपार क्यों रुके हुए हैं । रेलवे की मनमर्जी है, किसके कारण से रुके हैं । किसी तरह से वे चालू कराये जाएं ।

मैं आपके माध्यम से सार्वजनिक निर्माण मंत्री महोदय से निवेदन करूंगा कि आप इसमें विशेष रुचि लेकर ये दोनों समपार रेलवे से पत्र-व्यवहार करके खुलाएं । यदि रेलवे की कोई ऐसी मांग भी करे कि मानव सहित समपार खोलें और इसमें राज्य सरकार मदद करे तो फिर उसके लिए माननीय सार्वजनिक निर्माण मंत्री महोदय से निवेदन करूंगा आप इसमें विशेष रुचि लेकर ऐसी समस्या को दूर कराने के लिए आप प्रयास करें ।

यही नहीं, बाड़मेर जिले में आमतौर पर और भी लम्बी-लम्बी दूरी है जहां पर समपार है ही नहीं । बड़े ताज्जुब की बात है रेलवे वालों से पता किया तो वे कहते हैं पूरे भारत में एक किलोमीटर में एक समपार तो है ही, इतनी लम्बी दूरी 22 किलोमीटर की, उसमें दो बनाकर ही बंद कर दिये यह आश्चर्य की बात है और जनता के साथ न्याय तो नहीं है ।

माननीय प्रतिपक्ष के नेता भी आज पधार गये, उनका भी सहयोग मिलना चाहिए । अब अपन इस सदन में विकास की बात करते हैं तो आप कहते हैं भारत सरकार से मदद लेनी चाहिए और भारत सरकार मदद दे रही है। तो भारत सरकार की मदद कह तो रहे हैं कि हमको नहीं कहते, हम दिला दें, अब मैं कहूं कि माननीय प्रतिपक्ष के नेता महोदय भी वहीं के रहने वाले हैं जहां का मैं हूं और वही क्षेत्र है जिसमें वो दो समपार बनाये और बनाकर बंद किये हुए बैठे हैं । उनको चालू कराया जाए । मैं सदन का ज्यादा समय नहीं लेता हुआ एक बार फिर निवेदन करूंगा कि इस प्रकार की सुविधा उनको बनाकर बंद कर दी यह बड़े ताज्जुब की बात है । मुख्य मंत्री महोदय भी मेरे लड़के के निधन पर वहां पधारी थीं उस समय भी वहां सभी उपस्थित थे, उन्होंने मुख्य मंत्री महोदय को निवेदन किया था कि यह समपार वाली दिक्कत है, बने हुए हैं उनको तो चालू कराओ । मैं पूरे सदन से निवेदन करूंगा कि इसमें मदद करें, बड़ा पुनीत काम है, नहीं तो परेशानी होती है, धन्यवाद ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): उपाध्यक्ष महोदय, बाड़मेर से आने वाले माननीय सदस्य ने मानव रहित समपार का काम पूरा नहीं होने की तरफ ध्यान आकर्षित किया है । उपाध्यक्ष महोदय, रेलवे मंत्रालय ने विगत वर्षों के अंदर विशेष तौर पर पिछले वर्ष से यह निर्णय लिया कि इन

(श्री राजेन्द्र राठौड़)

मानव रहित समपारों पर दुर्घटनाओं की संख्या बढ़ती जा रही है । कहीं-कहीं बड़ी-बड़ी दुर्घटना हो गई । यथासम्भव मानव रहित समपार का संचालन नहीं हो, फिर भी माननीय सदस्य ने कहा है, मैं व्यक्तिगत रूप से इसको दिखाऊंगा, रेलवे मंत्रालय से पत्राचार भी करेंगे और अगर मानव रहित समपार नहीं हो तो मानव सहित समपार कैसे बन सके, उसमें कितना एस्टीमेट आएगा, राज्य सरकार पर कितना बर्डन आएगा इन सारी चीजों को दिखवाकर प्रयास करेंगे ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री के.डी. बाबर, बाबा डा. भीमराव अंबेडकर की मूर्ति प्रत्येक जिला मुख्यालय, उपखण्ड मुख्यालय एवं प्रसिद्ध स्थानों पर स्थापित करने के सम्बन्ध में ।

बाबा डा. भीमराव अंबेडकर की मूर्ति प्रत्येक जिला मुख्यालय, उपखण्ड मुख्यालय एवं प्रसिद्ध स्थानों पर स्थापित करने के सम्बन्ध में

श्री केसर देव बाबर (लक्ष्मणगढ़): उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने की अनुमति दी इसके लिए धन्यवाद । मैं इस विषय पर सबसे पहले इस प्रदेश की तेजस्वी और यशस्वी मुख्य मंत्रीजी को धन्यवाद देना चाहूंगा जिन्होंने वर्ष 2007-08 के बजट में घोषणा की कि डा. भीमराव पीठ और पार्क की स्थापना जयपुर में की जाएगी । उन्होंने घोषणा ही नहीं की वहां पर 75 बीघा जमीन को आरक्षित किया गया और 14 अप्रैल को उस पीठ का शिलान्यास किया गया । इसके लिए समुचित बजट की व्यवस्था की गई और 14 अप्रैल को विधान सभा के सामने एक दलितों का भव्य संगम किया गया जिसमें लाखों लोग यहां शामिल हुए और हमारे मुख्य मंत्रीजी को धन्यवाद दिया ।

उपाध्यक्ष महोदय, बाबा साहब की अंबेडकर जयंती 14.4.2007 को जो मनायी गई वह सरकारी स्तर पर मनायी गई । पहली बार सरकारी स्तर पर इतना बड़ा भव्य संगम दलितों का किया गया इसके लिए मैं हमारे मुख्य मंत्रीजी को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहूंगा । अभी 14 अप्रैल आने वाली है, बाबा साहब का जन्म-दिवस है इसके ऊपर इस अंबेडकर पीठ में प्रशासनिक भवन का शिलान्यास किया जाएगा और सरकारी तौर पर 14 अप्रैल, 2008 को भी बीकानेर के मुख्यालय में एक भव्य संगम दलितों का होगा उसमें भी लाखों लोग एकत्रित होंगे । इसके लिए मैं हमारे मुख्य मंत्रीजी को धन्यवाद देना चाहूंगा जिन्होंने बाबा साहब की हर साल जयंती मनाने की घोषणा की है ।

(श्री केसर देव बाबर)

उपाध्यक्ष महोदय, बाबा साहब अंबेडकरजी भारतीय संविधान के रचयिता थे । ये राष्ट्र पुरुष भी थे । बाबा साहब मानव धर्म में विश्वास रखते थे, समाज सुधारक थे, विधि के ज्ञाता थे और एक अच्छे राजनयिक थे । उनके विचार संवेदनशील थे । वे एक प्रखर समाजशास्त्री थे । उनके सम्मान में जो आने वाली युवा पीढ़ी है, जो दलित लोग हैं उनका ध्यान हमेशा रहे इसके लिए मेरा निवेदन है कि उनकी मूर्ति चाहे वो राजधानी का बड़ा दफ्तर हो, चाहे जिला मुख्यालय हो या उपखण्ड स्तर हो, चाहे तहसील स्तर पर हो, जब इस देश की सर्वोच्च पंचायत लोकसभा में बाबा साहब की मूर्ति है। इसलिए मेरा आपसे निवेदन है, आपके माध्यम से सरकार से निवेदन है कि विधान सभा परिसर, जिला मुख्यालय हो, उप खण्ड मुख्यालय हो, तहसील मुख्यालय हो, चाहे सर्किट हाउस हो, चाहे बड़ा छात्रावास हो, वहां पर बाबा साहब की मूर्ति लगे और आने-जाने वाले लोग सब देखें । यह जो आदर्श पुरूष हैं, इनके आदर्शों पर अपन चलें ताकि यहां के जो दलित लोग हैं उनका और भला हो सके । आज मैं यहां से बोल रहा हूं, यह देन भी बाबा साहब की है । बाबा साहब ने जब संविधान की रचना रची, तब उन लोगों की कल्पना की जो बिलकुल गरीब लोग हैं, चाहे वह किसी भी कौम के, चाहे वह कोई भी हों, उनको सम्मान मिले, उनके मान सम्मान में कहीं कोई दिक्कत नहीं आए इसलिए संविधान में आरक्षण की व्यवस्था की ।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से मांग करता हूं सरकार से कि कम से कम जिला मुख्यालयों पर सरकारी तौर पर, सरकारी खर्चे से बाबा साहब की मूर्ति लगे और जो बड़े भवन हैं, चाहे वह जयपुर का हाई कोर्ट हो, चाहे विधान सभा परिसर हो, उन पर भी सरकारी खर्चे पर लगे और बाकी जो तहसील लेवल के या उप खण्ड स्तर पर विधायक कोष या सांसद कोष से छूट हो, एमएलए कोटे से छूट हो कि वह बाबा साहब की मूर्ति लगा सकें । ऐसी यदि व्यवस्था होगी तो प्रत्येक विधायक चाहेगा कि बाबा साहब की मूर्ति लगे। और मैं तो यह भी कहता हूं कि हम गांव-गांव में मूर्ति लगाएंगे बाबा साहब की यदि सरकार छूट करती है तो मैं मेरे कोष से 20 लाख रुपये की पहली राशि खर्च करूंगा, विधायक कोष से तहसील स्तर पर जो भी छोटे कस्बे हैं वहां बाबा साहब की मूर्ति लगाएंगे । (व्यवधान) आपने नहीं लगाई इसीलिए यह तो रोना है । आपने शासन किया 50 साल तक देश पर, इस प्रदेश पर

(श्री केसर देव बाबर)

और जो कांग्रेस दलितों की मसीहा बनती घूम रही है और इन्होंने उपाध्यक्ष महोदय,। (व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): मूर्ति लगाने पर रोक है क्या कहीं? (व्यवधान)

श्री केसर देव बाबर (लक्ष्मणगढ़): ये बोलते हैं, इन्होंने सिर्फ डराया।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): कहीं रोक नहीं है । लगाओ न आप, कौन मना कर रहा है ?...(व्यवधान) साढ़े चार साल में तो लगी नहीं और अब चुनाव आ रहा है जब आपको बाबा साहब याद आ रहे हैं ।

श्री केसर देव बाबर (लक्ष्मणगढ़): हमने अम्बेडकर पीठ बनाई ।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): आप वैसे याद नहीं करते हो, साढ़े चार साल में क्यों नहीं यह बात कही?

श्री केसर देव बाबर (लक्ष्मणगढ़): अम्बेडकर पार्क बनाया ।...(व्यवधान) और जयपुर में हमने मान सम्मान दिया । (व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): साढ़े चार साल में क्यों नहीं यह बात कही? (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: अंकित नहीं हो । माननीय सदस्य...(व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर):×××

श्री केसर देव बाबर (लक्ष्मणगढ़): राजनीति आप लोगों ने की, उपाध्यक्ष महोदय, राजनीति इन लोगों ने की...(व्यवधान) उपाध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करूं आपसे...(व्यवधान)

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (सरकारी उप मुख्य सचेतक):×××

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी):×××

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (सरकारी उप मुख्य सचेतक):×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर):×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य ।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर):×××

श्री उपाध्यक्ष: आप बीच में काहे के लिए, माननीय सदस्य, आप बीच में क्यों...(व्यवधान)

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): × × ×

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): × × ×

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य को अपनी बात समाप्त करने दीजिए।...(व्यवधान)

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): × × ×

श्री केसर देव बाबर (लक्ष्मणगढ़): एक मिनट, उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करूं...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य के अलावा अंकित नहीं हो रहा है...(व्यवधान) कुछ अंकित नहीं होगा यह ।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): × × ×

श्री उपाध्यक्ष: कोई अंकित नहीं होगा । (व्यवधान)

श्री केसर देव बाबर (लक्ष्मणगढ़): मैं, उपाध्यक्ष महोदय, आपसे निवेदन करूं कि बाबा साहब की मूर्ति लगाने की मांग कर रहा हूं, इनको जलन क्यों हो रही है, इनको पीड़ा क्यों हो रही है ? देखिए, उपाध्यक्ष महोदय, मैं बताऊं आपको, एक मिनट...(व्यवधान)

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): × × ×

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, कोई अंकित नहीं होगा आपका...(व्यवधान)

श्री तगाराम चौधरी (बाड़मेर): × × ×

श्री उपाध्यक्ष: क्यों नहीं, दी थी उनको । मांग कर दी उन्होंने...(व्यवधान)

श्री केसर देव बाबर (लक्ष्मणगढ़): उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करूं कि यह लोग करते हैं...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: उनको समाप्त करने दीजिए ।

श्री केसर देव बाबर (लक्ष्मणगढ़): यह लोग लिखते हैं कि राजीव गांधी पाठशाला, आपने कभी लिखी है अम्बेडकर पाठशाला ?

श्री तगाराम चौधरी (बाड़मेर): × × ×

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, तगारामजी बैठिए आप । तगारामजी आप स्थान ग्रहण कीजिए, बैठिए, कहने दीजिए माननीय सदस्य को...(व्यवधान)

श्री केसर देव बाबर (लक्ष्मणगढ़): कांग्रेस की टोपी लगाओ...(व्यवधान)

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी):×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, बैठो ।

श्री केसर देव बाबर (लक्ष्मणगढ़): उपाध्यक्ष महोदय, हमेशा कांग्रेस की जो भावना रही है, वह ओनली गांधी टोपी की भावना रही है । यह गांधीजी की माला पहनते हैं और गांव में जाकर वोट मांगते हैं। सिर्फ, ओनली एक ही बात है इनकी और एस.सी., एस.टी. वालों को क्या कहते हैं कि भाई, अगर शासन में बी.जे.पी. आ जाएगी तो तुम्हारा भला होने वाला नहीं है, तुम्हारा बहुत बुरा होगा । मैं मुख्य मंत्रीजी को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं, और बहुत-बहुत साधुवाद देता हूं कि इन्होंने इस राजधानी में हमारे बाबा साहब के नाम से अम्बेडकर पीठ और पार्क की स्थापना की ।

उपाध्यक्ष महोदय, एक छोटी सी मेरी बात और है, इस मामले में क्या है कि प्रशासनिक लेवल पर यदि कोई व्यक्ति मूर्ति लगाना चाहे बाबा साहब की तो सरकार से अनुमति लेने में बहुत टाइम लगता है । मैं आपसे निवेदन करूं सीकर जिले के जिला मुख्यालय पर हम मूर्ति लगाना चाह रहे हैं और आवेदन किये हमारे को 6 माह हो गये लेकिन वह फाइल कभी पीडब्ल्यूडी के पास जाती है, कभी नगरपालिका के पास जाती है, कभी वह कलक्टर के पास जाती है। इसलिए मेरा सरकार से आग्रह है कि उस फाइल को जल्दी से जल्दी मंजूरी मिले और उसको ही नहीं, इस अम्बेडकर की मूर्ति लगे चाहे और कोई महापुरुष की मूर्ति लगे, यदि कोई सज्जन लगाना चाहे उसका हां और ना में उत्तर 15-20 दिन में मिल जाना चाहिए। वह 6-6 महीने तक उसका उत्तर नहीं मिलता है, उससे वह काम खराब हो जाता है। इसलिए मेरी सीकर जिले की जो फाइल है, सीकर जिला मुख्यालय पर देवीपुरा से मीनाक्षी रोड पर भजन कांटा के पास जो तिराहा है, जोधपुर जो रोड जाता है, वहां पर मूर्ति लगाना चाहते हैं। मूर्ति बनी हुई तैयार भी है और वह फाइल यहां सम्भागीय आयुक्त के पास भी विचाराधीन है, मैं खुद भी गया था तो उन्होंने कहा, इसमें यह कमी है। यह कमी है, कमी है तो इसमें ना कर दो कि हम नहीं लगा सकते हैं या लगाने की जो बात है उसका जल्दी से जल्दी सरकार कोई इस तरह का एक सरलीकरण आदेश पारित करे जिससे 15-20 दिन में ही मूर्ति लगाने की अनुमति कोई लेना चाहे, उसको मिले। और मैंने जो मेरे विचार प्रकट किये हैं, इनकी तरफ से मैं चाहूंगा, उपाध्यक्ष महोदय, कि सरकार की तरफ से कोई जवाब आए । धन्यवाद ।

श्री उपाध्यक्ष: धन्यवाद । विधायी कार्य ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): उपाध्यक्ष महोदय, लक्ष्मणगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य ने संविधान निर्माता बाबा साहब अम्बेडकर की मूर्ति जिला स्तर पर जहां जिन जिलों में नहीं है, वहां लगाने की बात कही है और साथ में यह भी कही कि विधायक विकास कोष से बाबा साहब अम्बेडकर की मूर्ति लगाने के लिए स्वीकृति जारी करें। पिछले दिनों माननीय मुख्य मंत्रीजी से माननीय विधायकों का शिष्ट मंडल मंत्री महोदय की अगुवाई में मिला था। इस पर गम्भीरता से विचार करके प्रयास यह होगा कि मुख्य मंत्री जब रिप्लाई करें उसमें या उससे पहले कोई न कोई व्यवस्था करके मुख्य मंत्रीजी को पूरे सदन की भावनाओं से अवगत कराऊंगा। और एक निवेदन भी करेंगे कि सब लोगों की सामूहिक तौर पर यह मांग है कि बाबा साहब कि मूर्ति जिन जिलों में नहीं लगी, उन जिलों में मूर्ति लगे । इस पर निश्चित तौर पर कोई न कोई कार्यवाही करेंगे ।

विधायी कार्य : विधेयक का पुर:स्थापन

राजस्थान अभिधृति विधेयक, 2008

श्री उपाध्यक्ष: श्री रामनारायण डूडी, प्रभारी मंत्री राजस्थान अभिधृति विधेयक, 2008 को पुर:स्थापित कराने की आज्ञा के लिए प्रस्ताव करेंगे ।

श्री रामनारायण डूडी (राजस्व मंत्री): उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से राजस्थान अभिधृति विधेयक, 2008 को पुर:स्थापित कराने की आज्ञा के लिए प्रस्ताव करता हूं ।

श्री उपाध्यक्ष: प्रश्न यह है कि राजस्थान अभिधृति विधेयक, 2008 को पुर:स्थापित करने की आज्ञा प्रदान की जाए?

(स्वीकृत)

विधेयक को पुर:स्थापित करने की आज्ञा प्रदान की गई ।

प्रभारी मंत्री विधेयक को पुर:स्थापित भी करेंगे ।

श्री रामनारायण डूडी (राजस्व मंत्री): उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से राजस्थान अभिधृति विधेयक, 2008 को पुर:स्थापित करता हूं ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री लक्ष्मीनारायण दवे, सहायता मंत्री प्रस्ताव करेंगे कि राज्य में अकाल की स्थिति पर विचार किया जाए ।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि राज्य में अकाल की स्थिति पर विचार किया जाए ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री गजेन्द्र सिंह, ऊर्जा राज्य मंत्री प्रस्ताव करेंगे कि राज्य में बिजली की स्थिति पर विचार किया जाए ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह प्रस्ताव करता हूं कि बिजली की स्थिति पर विचार किया जाए ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री चुन्नीलाल धाकड़ ।

राज्य में अकाल एवं बिजली की स्थिति पर विचार

श्री चुन्नीलाल धाकड़ (बेगूं): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बिजली जो आज बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है उस पर चर्चा के लिए आपने मुझे सदन में समय दिया इसके लिए मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं और आपका आभारी हूं । उपाध्यक्ष महोदय, बिजली की स्थिति हमारी सरकार आने के पहले क्या थी इस पर भी हमें गौर करना चाहिए । जो कांग्रेस किसानों के नाम पर वोट बटोरती है और किसानों का हमदर्द होने का दम भरती है उस कांग्रेस के राज में बिजली की क्या स्थिति थी? किसान अपनी फसल को पिलाने के लिए लालायित था और बिजली एक-डेढ़ घंटा और वो भी बार-बार ट्रिपिंग होकर आती थी उससे किसान का खेत कभी नहीं पीता था । वो बिजली भी जब रात को कड़कड़ाती सर्दी में जब लोग रज़ाई से मुंह बाहर नहीं निकाल सकते, ऐसी स्थिति में किसानों को रात को पाणत करने को मजबूर करती थी। यह थी कांग्रेस के राज में बिजली की स्थिति । उपाध्यक्ष महोदय, बिजली के सम्बन्ध में जो कुछ भी गांवों के लोग आज महसूस कर रहे हैं और पुराने टाइम पर किसान को खेती के लिए जब बिजली नहीं मिलती थी परन्तु घर में रोटी खाने के लिए, अपने प्रकाश के लिए भी लकड़ी के प्रकाश से या चिमनी या लालटेन के उजाले से रोटी खाते थे, कभी उन्होंने महसूस किया ही नहीं कि बिजली के उजाले में भी हम रोटी खायेंगे और खा सकते हैं ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जब ट्रांसफार्मर जल जाते थे उस हालत में इनके जगह-जगह +++ बैठे होते थे और वो +++ लिये कभी किसी को ट्रांसफार्मर नहीं देते थे । इनके सबके, +++ और वह जो रिश्वत ली जाती थी उसको सब दलालों के माध्यम से बांट-बूंट कर खाते थे । कभी भी किसान को समय पर ट्रांसफार्मर नहीं दिया, किसान की फसल सूखती गई । 3-3, 4-4 महीने तक ट्रांसफार्मर नहीं मिलते थे और किसानों ने अपनी फसल पैदा करने

(श्री चुन्नीलाल धाकड़)

के लिए जनरेटर खरीदे । घर में पैसे नहीं हैं, हजारों लोगों ने जनरेटर खरीदे । मेरे इलाके की स्थिति मैं बताता हूं कि रोज आये दिन लोग आगरा जाते थे और जनरेटर खरीदते और डीजल से वे फसल की सिंचाई करते थे । ऐसी हालत में घर की जो औरते हैं उनके गहने भी गिरवी रखकर के वो जनरेटर खरीदते थे । यह हालत थी कांग्रेस के राज में । जो कुछ अपनी फसल का पैसा होता है उससे भी उसका पूरा नहीं पड़ता था और वह सारा खर्चा डीजल और जनरेटर खरीदने में चला जाता था । यह हालत थी कांग्रेस के राज की । आज जब माननीय मुख्य मंत्रीजी वसुंधरा राजेजी ने यह स्थिति सम्भाली, राजस्थान की बागडोर सम्भाली, तब किसानों की वास्तविक पीड़ा को महसूस किया और उन्होंने व्यवस्था की। पहले किसानों के जो कनेक्शन थे वो कनेक्शन 2003 तक उनकी स्थिति यह थी कि बिजली की स्थिति थी वो भी बहुत कम थी । 4984 मेगावाट बिजली थी जिसको हमारे राज में 6395 मेगावाट तक पहुंचाया है या उत्पादन किया है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन को बताना चाहता हूं कि हमारे राज में बिजली में वृद्धि हुई है। और अभी 2008-09 में हमारा लक्ष्य है कि 2019 मेगावाट बिजली का और उत्पादन हो। और इस लक्ष्य के लिए हम बराबर प्रयत्नशील हैं । हमने श्यामाप्रसाद मुखर्जी विजय ज्योति फीडर सुधार योजना के अन्तर्गत गांवों में शहरों के बराबर बिजली देने के प्रयत्न किये । गांव वाले भी यह महसूस करें कि हम भी इस स्वतंत्र भारत के लोग हैं, हम कोई गुलाम नहीं हैं जो शहरों और हमारे बीच में भेद हो। शहर जैसी बिजली हमें भी मिले, यह उनकी उम्मीद थी और इसको पूरी करने के लिए इस श्यामाप्रसाद मुखर्जी विजय ज्योति फीडर सुधार अभियान के अन्तर्गत 19 हजार गांवों को शहरों के बराबर बिजली उपलब्ध कराई जा रही है। और जुलाई, 2008 तक प्रदेश के सभी 34 हजार गांवों को शहरों के समान बिजली उपलब्ध करा दी जाएगी । हमने बिजली के लिए 2008-09 में 6212 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है जो हमारी कुल योजना का 40 प्रतिशत है ।

हमने कुटीर ज्योति योजना के अन्तर्गत, पिछली कांग्रेस की सरकार के समय में 65137 कनेक्शन हुए थे जबकि हमने 3 लाख 50 हजार कनेक्शन दिये हैं, यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है । माननीय मुख्य मंत्रीजी, "मुख्य मंत्री सबके लिए विद्युत योजना" के तहत एक किलोमीटर 11 के.वी. से दूरी वाले

(श्री चुन्नीलाल धाकड़)

गांवों को डीएल कनेक्शन के लिए, घरों के कनेक्शन के लिए 3500 रुपये में कनेक्शन देने का जो निश्चय किया है वह वास्तव में उन गांवों की पीड़ा के प्रति अपनी सद् भावना दर्शायी है । यह एक बहुत बड़ा कार्यक्रम हुआ है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि पिछली सरकार के टाइम पर 31 मार्च, 2003 तक एग्रीकल्चर के जो एक लाख 70 हजार 740 कनेक्शन बकाया थे उन आवेदनों में से अब तक शेष रहे 66 हजार कनेक्शन हैं जिनके अप्रैल से अक्टूबर, 2008 तक की अवधि में डिमांड नोट जारी कर दिये जाएंगे और मार्च 2009 तक सब को कनेक्शन दे दिये जाएंगे । 2004 से दिसम्बर, 2007 के कनेक्शन सभी एक लाख 52 हजार 2009 में दे दिये जाएंगे, यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी । इसके बाद आन-डिमांड कनेक्शन मिलेंगे, यह बिजली की स्थिति है । आज किसान यह महसूस कर रहा है कि वास्तव में हमारी कोई पीड़ा की पहचान की है, हमारी किसी को अगर पीड़ा है तो वह भारतीय जनता पार्टी को है । कांग्रेस के राज को आज रह-रह करके लोग धिक्कार रहे हैं कि कांग्रेस के राज में किसानों की बहुत बड़ी दुर्दशा रही है और अब हमारी स्थिति सुधरी है । आपने समय दिया उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री रामलाल शर्मा ।

श्री रामलाल शर्मा (चौमूं): उपाध्यक्ष महोदय, आज सदन में बिजली के ऊपर चर्चा हो रही है और इस चर्चा में मुझे आपने समय दिया उसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद । उपाध्यक्ष महोदय, आज इस सदन में लगभग 90 प्रतिशत माननीय सदस्य ग्रामीण क्षेत्र के अन्दर उन मतदाताओं के वोटों से चुनकर के आते हैं और उन मतदाताओं की पीड़ा की चर्चा आज इस सदन में हो रही है । उपाध्यक्ष महोदय, सरकार बनने के बाद में जितना काम विद्युत के क्षेत्र में वसुंधराजी की सरकार ने किया, निश्चित रूप से यही कार्य यदि 15-20 साल पहले कांग्रेसनीत सरकार कर लेती तो आज किसान की दशा और ही दिखाई देती । उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा कि आज राजस्थान के अन्दर जो क्रांतिकारी कार्य विद्युत के क्षेत्र में हुए हैं, आज राजस्थान आत्मनिर्भर बनने की स्थिति में है । आज पूरे राजस्थान में आगामी वर्षों में मुझे लगता है कि लगभग 5 हजार मेगावाट बिजली की

(श्री रामलाल शर्मा)

आवश्यकता पूर्ति के जो लक्ष्य लेकर के चल रहे हैं और इस लक्ष्य की पूर्ति भी आगामी वर्ष के अन्दर होगी तो राजस्थान के अन्दर विद्युत की जो वर्तमान में समस्या है वह छोटी-मोटी समस्या भी नहीं रहेगी । तो लगभग सात नये विद्युत संयंत्र के माध्यम से 1,525 मेगावाट उत्पादन वर्तमान में किया जा रहा है और इस मेगावाट उत्पादन के साथ-साथ आगामी वर्ष के अन्दर 4,500 मेगावाट क्षमता का राज्य के द्वारा निजी क्षेत्र से और केन्द्र के द्वारा उत्पादन का जो लक्ष्य रखा गया है, उस लक्ष्य को पूरा करने के लिए चाहे वह गिराल की योजना हो, चाहे धौलपुर गैस की योजना हो, चाहे छबड़ा की योजना हो, उन सब योजनाओं के तहत विद्युत उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के लिए क्षेत्र जा रहा है ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज विद्युत के क्षेत्र में 2011 तक का लक्ष्य लेकर काम किया जा रहा है, उस लक्ष्य में लगभग 4,600 करोड़ रुपये की लागत से विभिन्न तीन-चार चरणों के अन्दर पैसा खर्च होगा और वह पैसा खर्च होने के बाद में विद्युत के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कार्य और माना जायेगा।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसके साथ-साथ पिछले दिनों बिजली के क्षेत्र के अन्दर फीडर सुधार का कार्यक्रम किया गया और 11 के.वी. के फीडरों का नवीनीकरण किया गया और नये जी.एस.एस. बनाये गये ।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करूंगा कि लगभग पूरे प्रदेश में 8,475 फीडर बने हुए हैं जो 11 के.वी. के हैं । इसमें से लगभग 4,000 फीडरों का सुधार करके लगभग नौ से दस प्रतिशत विद्युत में बचत की गई है जो विद्युत छीजत होती थी, उस बचत के माध्यम से आज ग्रामीण क्षेत्र के अन्दर लगभग 14,354 गांवों के अन्दर 24 घंटे विद्युत की सप्लाई देने का काम शुरू हुआ है ।

उपाध्यक्ष महोदय, विद्युत के क्षेत्र में नये जी.एस.एस. बने हैं और उन जी.एस.एस. की संख्या भी मैं आपके माध्यम से बताना चाहूंगा । 400 के.वी. के दो जी.एस.एस., 220 के.वी. के नौ जी.एस.एस., 132 के.वी. के 46 जी.एस.एस. और 33 के.वी. के 676 जी.एस.एस. बनकर आज तैयार हो गये हैं और मुख्य मंत्रीजी ने पिछली बार अपनी बजट घोषणाओं में घोषणा की है कि आगामी बजट वर्ष के अन्दर लगभग 400 के.वी. के दो जी.एस.एस., 220 के.वी. के चार जी.एस.एस., 132 के.वी. के 12 जी.एस.एस. और 33 के.वी. के 180 जी.एस.एस. तैयार किये जायेंगे ।

(श्री रामलाल शर्मा)

उपाध्यक्ष महोदय, मेरा एक निवेदन है कि विद्युत क्षेत्र के अन्दर फीडर सुधार कार्यक्रम के बाद में किसानों के भी डोमेस्टिक कनेक्शन और एग्रीकल्चर कनेक्शन को अलग-अलग किया गया है। और वह अलग करने की वजह से जो ग्रामीण क्षेत्र के अन्दर कई गांव अंधेरे में डूबे रहते थे, सूर्यास्त के बाद में बिजली की कोई व्यवस्था नहीं थी, उन गांवों के अन्दर बिजली की सप्लाई मिल रही है। छात्रों को पढ़ने के लिए बिजली मिल रही है, घरेलू उपयोग के लिए सुबह चार से छह बजे तक, दो घंटे बिजली मिल रही है ।

इसके साथ ही कुछ सुझाव मैं आपके माध्यम से देना चाहूंगा। उपाध्यक्ष महोदय, आज ग्रामीण क्षेत्र में विद्युत क्षेत्र के अन्दर निश्चित रूप से सुधार हुआ है । उस सुधार के अन्तर्गत ही कुछ छोटी-छोटी समस्याएं आज भी रह रही हैं । उपाध्यक्ष महोदय, एक सबसे बड़ी समस्या यह है कि नया सैट-अप लग रहा है, नये ट्रांसफार्मर जो लग रहे हैं, उन ट्रांसफार्मर में छोटे से तार की कमी की वजह से लगभग 20-25 किलोमीटर उस किसान को ट्रांसफार्मर को एक्स.ईएन. आफिस में लाना पड़ता है जहां उनका डिवीजन कार्यालय खुला हुआ है ठीक करने के लिए । उपाध्यक्ष महोदय, मेरा एक सुझाव है, उन ट्रांसफार्मर को उपखण्ड कार्यालय में ही यदि ठीक करवाया जाता है तो यह मैं समझता हूं कि किसानों को एक राहत पहुंचाने का काम होगा, लगभग 15-20 किलोमीटर की दूरी उनकी कम होगी ।

एक दूसरा सुझाव मेरा यह है उपाध्यक्ष महोदय, कि प्रत्येक 33 के.वी. का जो जी.एस.एस. बना हुआ है, उस जी.एस.एस. पर यदि चैन-पुली रख दी जाये तो वह ट्रांसफार्मर ऊंचाई पर होने की वजह से किसानों को काफी समस्या आती है नीचे उतारते समय यदि ट्रांसफार्मर जल जाता है तो उनको लगभग 8-10 किलोमीटर दूर जाकर चैन-पुली लानी पड़ती है। इसलिए मेरा सुझाव है कि प्रत्येक 33 के.वी. के जी.एस.एस. के ऊपर किसानों को ट्रांसफार्मर जलने की स्थिति में चैन-पुली की सहायता से वह उतार सके तो प्रत्येक 33 के.वी. के जी.एस.एस. के ऊपर चैन-पुली उपलब्ध रहनी चाहिए ।

एक सुझाव और मैं देना चाहता हूं माननीय उपाध्यक्ष महोदय । कुछ कनेक्शन ऐसे थे, वह कनेक्शन नगरपालिका क्षेत्र में स्थित हैं लेकिन आज उनको बिजली की सप्लाई ग्रामीण क्षेत्र से दी जा रही है । इसमें मेरा एक निवेदन है, निश्चित रूप से मैं इस बात को मानता हूं कि उन कनेक्शनों को

(श्री रामलाल शर्मा)

जब जारी किया गया था तो सभी वरीयता को तोड़कर जारी किया गया था और फार्म हाउस योजना के अन्दर 4,900 रुपये की टैरिफ के अन्दर उनको जारी किया गया था। लेकिन मेरा आपसे एक निवेदन है उपाध्यक्ष महोदय, 2003-2004 के अन्दर जब यह कनेक्शन रिलीज किये गये थे और मुख्य मंत्रीजी ने घोषणा की थी कि 2003 के पहले जितने भी एग्रीकल्चर कनेक्शन थे, उनको अक्टूबर-नवम्बर तक डिमांड नोट जारी कर दिया जायेगा ।

उपाध्यक्ष महोदय, फार्म हाउस योजना एक नाम है, कामर्शियल यूज के अन्दर वह कृषि कनेक्शन काम में नहीं आ रहा है। ग्रामीण क्षेत्र का किसान जो नगरपालिका क्षेत्र में रहता है और नगरपालिका क्षेत्र में रहने की वजह से खेती के काम में उन कनेक्शनों का उपयोग करता है क्योंकि वह कामर्शियल यूज नहीं है, चाहें तो आप जांच करवा लें। इसलिए मेरा आपके माध्यम से निवेदन है कि ऐसे कनेक्शन जो नगरपालिका क्षेत्र में हैं और जिन्हें ग्रामीण फीडर से सप्लाई की जा रही है, 24 घंटे के लिए कृषि कनेक्शन जोड़ दें, बिजली से जोड़ दें तो उनका टैरिफ चाहे 4,900 रुपये ले लें, मेरा आपके माध्यम से निवेदन है कि ऐसे कनेक्शन जिनको ग्रामीण क्षेत्र से विद्युत सप्लाई हो रही है, मात्र 6-7 घंटे बिजली की सप्लाई हो रही है, उन कृषि कनेक्शनों को सामान्य श्रेणी में ही किया जाये ।

एक और सुझाव माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से देना चाहूंगा, विद्युत के बिलों के सम्बन्ध में मुख्य मंत्रीजी ने घोषणा की थी कि फ्लैट रेट ही ली जायेगी । कुछ क्षेत्रों के अन्दर तो यह फ्लैट रेट से लिया जा रहा है लेकिन जिन क्षेत्रों के अन्दर बिल मीटर से ही चार्ज हो रहे हैं, मेरा आपके माध्यम से निवेदन है कि उन क्षेत्रों के अन्दर भी बिजली के बिल किसानों की सुविधा के लिए फ्लैट रेट से ही लिया जाये ।

उपाध्यक्ष महोदय, पिछले वर्ष ओलावृष्टि हुई थी और अब की बार पाला पड़ा। पहली बार सरकार ने संवेदनशील होकर सभी किसानों का सहानुभूति से ध्यान रखते हुए इसका लाभ मिले और सब किसानों को इस प्राकृतिक आपदा को झेलने में सहयोग करने के लिए प्रदेश की माननीय मुख्य मंत्रीजी ने पहली बार 107 करोड़ रुपये की, जो सीआरएफ नोर्म्स में नहीं था, लेकिन एक विशेष पैकेज ओलावृष्टि के समय दिया। और अब की बार पाला की स्थिति में भी राजस्थान सरकार ने, माननीय मुख्य मंत्रीजी ने 126 करोड़

(श्री रामलाल शर्मा)

रुपये की घोषणा की है राहत पहुंचाने के लिए । मैं उसके लिए माननीय मुख्य मंत्री को धन्यवाद देना चाहूंगा । साथ ही मेरा इतना निवेदन जरूर है उपाध्यक्ष महोदय, इसकी गिरदावरी ठीक समय पर होकर किसानों को सही समय पर पैसा मिले, उनको राहत मिले। और निश्चित रूप से पिछली बार ओलावृष्टि के दौरान जिन क्षेत्रों में ओलावृष्टि हुई थी, आज वह सब किसान खुश इस बात से हैं कि पहली बार कोई सरकार किसानों पर सहानुभूति रखकर उनकी मदद करने के लिए आगे आई है और वैसी ही सहानुभूति इस पाले के अन्दर भी रखकर प्रदेश की मुख्य मंत्रीजी ने किसानों के प्रति संवेदनशीलता बताई है । निश्चित रूप से आज किसान जिस तरीके से मुख्य मंत्रीजी का आभार प्रतिपादित करता है, भविष्य के अन्दर भी वह सहानुभूतिपूर्वक सरकार के किये गये कार्यों के लिए धन्यवाद देगा ।

उपाध्यक्ष महोदय, एक आखिरी सुझाव मैं आपके माध्यम से और देना चाहता हूं । आज गिरदावरी जिंसों के आधार पर है । सरसों और जौ के अन्दर काफी नुकसान हुआ है, उसकी गिरदावरी रिपोर्ट आने के बाद जितनी जल्दी हो सके, उनको मुआवजा जल्दी से जल्दी दिया जाये । वह किसान जो झोपड़ी के अन्दर अंतिम छोर पर बैठा हुआ है, जिसकी पीड़ा हम सब जानते हैं, क्योंकि 40 साल तक कांग्रेस ने उसको डर दिखाकर, बुनकर समाज को डर दिखाकर, खादी-चरखा यह सब तो हमने उपलब्ध कराया है । यह किसान जो हम सबसे जुड़ा हुआ है, उसको जाति के नाम पर, धर्म के नाम पर, क्षेत्र के नाम पर बांटकर और उसका वोट लेकर आते हैं और इस सदन के अन्दर उनकी समस्याओं पर कोई नहीं बोलता है । मेरा आपसे निवेदन है कि जिस तरीके से राजस्थान की सरकार ने किसानों के प्रति संवेदनशीलता जाहिर की है, आने वाले समय के अन्दर हम सब मिलकर उस किसान की दशा बदलने का काम करेंगे । आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद, जयहिन्द ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री वीरेन्द्र बेनीवाल ।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): उपाध्यक्ष महोदय, आज राज्य में अकाल एवं बिजली की स्थिति पर चर्चा में आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए आपको धन्यवाद ।

उपाध्यक्ष महोदय, अकाल के हालात पर चर्चा कर देना, यह अगर मकसद है तो इस मकसद से कुछ हासिल होने वाला नहीं है । हालात सही रूप

(श्री वीरेन्द्र बेनीवाल)

में सामने आये और उन हालातों पर राज्य सरकार संवेदनशील होकर कार्य करे और पीड़ित आम जन को राहत पहुंचे, अगर यह मकसद है तो इस चर्चा को करने से कुछ सार्थकता साबित होगी । इसलिए मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, और यह कहने के पीछे मेरे कुछ कारण भी हैं। उपाध्यक्ष महोदय, जब खरीफ की फसल के खराबे का आकलन किया गया और उसके आधार पर अकाल राहत कार्य प्रारम्भ किये गये । गिरदावरी सही दर्ज नहीं हुई, इस बात को लेकर सभी स्तर पर आपत्तियां रहीं। लेकिन उन आपत्तियों पर किसी भी प्रकार का राज्य सरकार की ओर से राहत प्रदान करने का कोई सिलसिला प्रारम्भ नहीं हुआ । इसके साथ-साथ ऐसे क्षेत्र विशेष जिनको प्रशासन ने और राज ने माना कि यह पचास प्रतिशत से अधिक खराबे के क्षेत्र हैं वहां पर भी अपनी संवेदनहीनता का परिचय देते हुए अकाल राहत कार्य प्रारम्भ नहीं कराये गये । इस हेतु जिला प्रशासन से लेकर राज्य स्तर पर बारम्बार ध्यान आकर्षित किये जाने के बाद उन अकाल राहत कार्यों को प्रारम्भ करने का कार्य इस मार्च माह के प्रथम सप्ताह में शुरू किया गया । तो मैं, उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से माननीय मंत्री महोदय से यह जानना चाहूंगा कि जब आपने गांवों को चिह्नित कर लिया और वहां पर राहत कार्य प्रारम्भ करने की आपने घोषणा कर दी कि हम 11 जनवरी से राज्य के सभी पचास प्रतिशत से अधिक खराबे वाले गांवों में राहत कार्य प्रारम्भ कर देंगे। तो उन कुछ गांवों में काम क्यों नहीं प्रारम्भ हुए? और अगर प्रारम्भ नहीं होने की सूचना आप तक आई और आपने वह सूचना आने के बाद अपनी ओर से कार्यवाही करी और उन कार्यों को प्रारम्भ किया तो उस अंतराल के बीच में जो वहां के आमजन को राहत के नाम पर जो सुविधाएं मिलनी चाहिए थी उन सुविधाओं को महरूम करने पर आपने किस अधिकारी के खिलाफ क्या कार्यवाही करी, यह एक प्रश्न है ।

इसके साथ-साथ, उपाध्यक्ष महोदय, एक सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि जब गिरदावरी सही नहीं हुई, यह बात बार-बार उठती है तो इसका समाधान क्या हो, एक मिनट आजाद साहब, इसका समाधान क्या हो, इस बात के ऊपर जब तक हम चिंतन नहीं करेंगे और कोई ऐसा रास्ता नहीं निकालेंगे तब तक यह लड़ाई हर समय रहेगी। और क्षेत्र विशेष के अंदर खराबा होने के बावजूद उस स्थिति का सही चित्रण नहीं होने की समस्या हमारे सामने रहेगी । मैं, उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से माननीय मंत्री महोदय से यह निवेदन

(श्री वीरेन्द्र बेनीवाल)

करना चाहूंगा कि अगर हम गिरदावरी दर्ज करने का जो समय है उस समयावधि में स्थानीय हमारे कर्मचारी द्वारा जो अपने क्षेत्र विशेष का चित्रण किया जा रहा है अगर उसकी सूची समय रहते वहां पर लगाई जावे तो उस ग्राम पंचायत विशेष का उस स्थानीय पटवारी के क्षेत्राधिकार विशेष की सही सूचना समय रहते आमजन के बीच में आयेगी। और उसके ऊपर वह संबंधित उच्चाधिकारी जो हैं हमारे, वह उस पर कार्यवाही करें, इस हेतु आमजन भी ध्यान दे। और उच्चाधिकारियों द्वारा समय-समय पर केवल एक टोकन रूप से गिरदावरी का पुनर्मूल्यांकन करने की जो एक प्रक्रिया बनी हुई है, जो राज की मंशा पर रहती है उसके ऊपर भी एक प्रश्नचिन्ह लगे और कम से कम हमारी गिरदावरी सही नहीं दर्ज होने का एक विवाद समय रहते समाप्त हो सके । मैं इस बात को इसलिए माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मंत्री महोदय तक पहुंचाना चाहता हूं, क्योंकि पूर्व के हमारे आपदा प्रबंधन मंत्री माननीय किरोड़ी लालजी ने इसी सदन में गत समय यह कहा था कि खराबे का चित्रण करके चूंकि हम केन्द्र से राशि की मांग कर चुके हैं इसलिए अब इस पर पुनर्विचार किया जाना सम्भव नहीं है, और समयावधि बीत जाने के बावजूद भी इस पर पुनर्विचार किया जाना सम्भव नहीं है । तो जब यह बात आ रही है तो क्यों नहीं, निश्चित समय के अंदर हम इस पर चिंतन करते और क्यों नहीं हम आम आदमी की जो वास्तविक स्थिति है उसको यहां पर लाने का प्रयास करते? तो मैं आशा करता हूं कि माननीय मंत्री महोदय इस पर ध्यान देंगे और आप आज की चर्चा के प्रत्युत्तर में इसको भी शामिल करेंगे, ऐसी मैं आशा करता हूं ।

इसके साथ-साथ माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह भी कहना चाहूंगा कि अगर आज की इस चर्चा का मकसद यह है कि आने वाली एक अप्रैल से पूरे राज्य में केन्द्र की सरकार और हमारे प्रधान मंत्री महोदय मनमोहन सिंहजी के देन के रूप में जो राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का अभिनव कार्यक्रम प्रारम्भ हो रहा है और उसके चलते हर गांव के आमजन को मांगने पर रोजगार उपलब्ध करवाये जाने की प्रक्रिया प्रारम्भ होने वाली है, अगर उस बात को दृष्टिगत रखते हुए अब जाकर आप अकाल की चर्चा करा रहे हैं तो यह चर्चा कराना निरर्थक है । यदि आपकी सोच उससे ऊपर हट कर वास्तविक रूप से क्षेत्र के पीड़ित व्यक्ति को सुविधा उपलब्ध करवाने की है तो उस बात की सार्थकता साबित होगी, ऐसा मैं आपके माध्यम से निवेदन करना

(श्री वीरेन्द्र बेनीवाल)

चाहता हूं। और अगर ऐसा सोच है तो मैं यह भी कहना चाहूंगा कि विगत वर्षों में हमारे राज्य के अंदर आज की इस धर्मपरायण सरकार ने अगर सबसे ज्यादा कष्ट दिया है तो हमारे पशुधन को दिया है और गाय माता को दिया है। बारम्बार खराबे की स्थितियां आने के बावजूद पशु शिविरों की संख्या नहीं बढ़ाई गई, चारा डिपो नहीं खोले गये और जो अनुदान राशि दी जानी चाहिए थी, उस अनुदान को बढ़ाने की बात तो की गई लेकिन वह अनुदान सही रूप से नहीं पहुंच पाया । आज की स्थिति भी यही है, आज की फसलों की स्थिति किसी से छिपी नहीं है । इस बात से पीड़ित होकर के राज्य सरकार ने 126 करोड़ की घोषणा भी की जो पीड़ित पक्षों को राहत पहुंचाने के नाम पर की गई, लेकिन इस घोषणा का लाभ किसको मिलेगा उपाध्यक्ष महोदय । आज फसलों की जो स्थिति है वह यह है कि फसल चौपट हो चुकी है, उस खाली हरे-हरे जो डंठल हैं उनको देख कर अगर हम यह माने कि खेत में किसान की फसल नष्ट नहीं हुई है तो यह सोच है हमारे निचले स्तर के कर्मचारी का और हमारे राज्य स्तर पर बैठे हुए मंत्री महोदय और मुख्य मंत्री महोदय का । यदि इस बात को सही माना जाता है और वर्तमान समय में जो गिरदावरी दर्ज होकर के सामने आ रही है तो मेरा, उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से माननीय मंत्री महोदय से निवेदन है कि जिस तरीके से राज्य के अंदर.. (व्यवधान) मैं वही निवेदन कर रहा हूं, अधिकांश क्षेत्रों के अंदर 17 प्रतिशत, 18 प्रतिशत, 20 प्रतिशत, यह खराबा जो दर्ज करके ऊपर भेजा जा रहा है, जो इस बात की तसदीक करता है कि खराबा पचास प्रतिशत से नीचे रखा जाय। तो उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री महोदय और सरकार से निवेदन करना चाहूंगा कि किसान जिसकी फसल 70 से 80 प्रतिशत, 90 प्रतिशत और शत-प्रतिशत नष्ट हो गई है और आप उस खेत के अंदर अगर 17 प्रतिशत और उस गांव के अंदर 17 प्रतिशत खराबा दर्ज कर रहे हैं तो आप ऐलान कर दीजिये कि उस गांव में जितनी फसल होगी उस फसल को खरीदने के लिए तैयार हैं। और अगर फसल नहीं है तो उसका मुआवजा देने के लिए तैयार हैं । आपको समस्या कहां है? आपके पास में गिरदावरी है, किसान का नाम है, उसकी स्थिति आपके सामने आ रही है, आप कह रहे हैं 17 प्रतिशत खराबा है तो आप तो उस गिरदावरी के आधार पर उसको भुगतान कर दीजिये। फसल आप खरीद लीजिये, जितनी फसल होगी आपके सामने आ जायेगी ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): क्या सुझाव है, वाह ।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर)ः सुझाव तो जैसा है माननीय, करना, नहीं करना आपके हाथ की बात है ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री)ः इम्प्रेक्टिकल बात है ।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर)ः इम्प्रेक्टिकल, आपकी गिरदावरी ही गलत है, इम्प्रेक्टिकल बात की बात आप कर रहे हैं, आप अपनी गिरदावरी की बात करिये ना । अगर आपकी गिरदावरी सही है तो हमारी बात हम करें ही क्यों? (व्यवधान) सही फरमा रहे हैं मंत्रीजी । इसी के साथ-साथ मैं निवेदन करना चाहता हूं कि आज यह घोषणा की गई कृषि कुओं के क्षेत्र में बिजली का बिल माफ कर दिया जायेगा और उसमें हमने लघु कृषक, एक उसके अंदर कंडीशन रख दी, उपाध्यक्ष महोदय, राज्य के हालात को देखते हुए उस घोषणा को नहीं किया गया, यह मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं। अगर यह सोच करके घोषणा की गई होती तो इस बात को भी ध्यान में रखा होता कि अगर क्षेत्र विशेष, राज्य के ऐसे बहुत से क्षेत्र होंगे, जिला बीकानेर की तो यह स्थिति है ही है। मैं आपको निवेदन करना चाहता हूं, जहां कृषि कुए लगी हुई मोटर तीस से पैंतालीस होर्स पावर की है, क्या यह सम्भव है कि एक किसान जो इतना गहराई से पानी खींच करके सिंचाई कर रहा है वह सात से आठ बीघा का ही मालिक होगा और अगर सात से आठ बीघा का मालिक होगा तो क्या वह उससे अपने परिवार का लालन-पालन करने की स्थिति में रहेगा? यह इस बात को ध्यान में रखते हुए इस बात की घोषणा की गई कि हमें राहत अगर देनी है तो उसका केवल नाम है। यदि ऐसा नहीं है तो मैं निवेदन करुंगा उपाध्यक्ष महोदय आपके माध्यम से मंत्री महोदय इसको संशोधित करते हुए हमारे जिला बीकानेर की तहसील डूंगरगढ़, तहसील बीकानेर, तहसील लूणकरणसर के भी जो ऐसे क्षेत्र हैं जहां के किसान की भूमि ज्यादा है लेकिन उसकी फसल का खराबा हुआ। उसके भी बिल को आप माफ करने की घोषणा करें तो इसकी कुछ सार्थकता होगी । ऐसा मैं निवेदन करना चाहता हूं । इसी के साथ-साथ उपाध्यक्ष महोदय मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं आज आने वाले समय में राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत जो कार्य प्रारम्भ होंगे, आप अकाल राहत के कार्यों को तो करेंगे ही और आपकी जो वर्तमान में गिरदावरी जो होकर के आ रही है इस पर अपनी जवाबदेही निचले स्तर के कर्मचारी की और आपके जिला कलक्टर तक की तय करेंगे। और यदि आप इसके अंदर आपके स्तर पर भी कुछ इस प्रकार की जांच स्थान-स्थान पर कराए कि वह गिरदावरी सही है कि नहीं है । तभी कुछ

(श्री वीरेन्द्र बेनीवाल)

स्पष्टता आ पाएगी और इसके साथ-साथ आप अगर यह रोजगार गारंटी योजना के जो कार्य प्रारम्भ कर रहे हैं, इन कार्यों के अंदर और कुछ कर पाए तो यह आपकी सोच का कुछ विषय है ही। साथ में अगर आप इसमें विधायक कोष को भी समायोजित कर पाए, अगर ऐसा सम्भव हो तो यह भी एक विधायक कोष से जो राशि उपलब्ध कराई जा रही है उसके अंदर भी एक सहयोग होगा, ऐसा मैं कहना चाहता हूं ।

मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं माननीय उपाध्यक्ष महोदय कि आज चूंकि फसल वर्तमान में नष्ट हो चुकी है, ग्रामीण तबक़े के हालात बहुत खराब हैं। सरकार वर्तमान हालात में खेतों के अंदर जो फसल है, उस फसल की स्थिति को देखते हुए तत्काल प्रभाव से राहत कार्य प्रारम्भ करें, बिजली के बिलों को माफ करें, पशु शिविर खोलें, चारा डिपो प्रारम्भ करें और आपके किए गए वायदे दस हजार तक के कर्जों को माफ करने के, उसकी भी क्रियान्विति करें...(व्यवधान) वादा नहीं किया तो कोई बात नहीं, वायदे किए वह कौन-कौन से पूरे कर दिए मंत्री महोदय? इसके साथ-साथ माननीय उपाध्यक्ष महोदय मैं यह कहना चाहता हूं आज के हालात के अंदर पशुओं को बचाना असम्भव महसूस हो रहा है क्योंकि हमारे राज्य में अधिकांश स्थानों पर आज फसल चौपट है, किसान बर्बाद हो चुका है। और हम आज भी केवल चर्चा तक सीमित हैं, यह बहुत दुःख का विषय है और इस राज में संवेदनशीलता की बात करने वाली संवेदनहीनता को दर्शाता है ।

मैं इसके साथ-साथ माननीय उपाध्यक्ष महोदय चूंकि अकाल की स्थिति किसी से छिपी नहीं है । इस पर जितनी भी बात की जाए वह अंतहीन है, सार में मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि राज की वर्तमान स्थिति को देखते हुए राज अपने धर्म को निभाये, यह मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं । इसके साथ-साथ चूंकि आज इस बात के साथ में बिजली की भी बात चर्चा के लिए रखी गई है। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि राज की आज की स्थिति किसी से छिपी नहीं है, बार-बार यह बात की जा रही है कि हमने ऊर्जा के क्षेत्र में बहुत तरक्की की है, हमने नई-नई यूनिट स्थापित की हैं और प्रोडक्शन बहुत आगे बढ़ गया है । अगर किसी यूनिट विशेष में कोई समस्या आ गई है तो उसमें माननीय मंत्री महोदय ने पिछले समय में बताया था यह छोटी-मोटी प्राब्लम्स आती रहती हैं जिसके चलते कई बार कामों में विलम्ब भी हो जाता है । मैं यह निवेदन करना चाहता हूं एक लम्बा चौड़ा बजट आज

(श्री वीरेन्द्र बेनीवाल)

आपने इसमें प्रावधान तो कर दिया 6211 करोड़ और 55 लाख का, फेज तो आने वाले समय में बोलने वाले बोलेंगे...

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): नहीं, मैंने कहा सुस्ती आने लग गई है... (व्यवधान)

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): सुस्ती सभी को आ रही है, आपको कुछ ज्यादा आ रही है क्योंकि आपको समय नजर आ रहा है आने वाला। उधर का ही बता रहा हूं सुस्ती का...(व्यवधान) आपको तो मंत्री महोदय कुछ लग ही नहीं रहा है, आपको तो कोई बात निवेदन करते हैं तो आप तो एक रटी-रटाई भाषा में ही रहते हैं। तो मेरा निवेदन था उपाध्यक्ष महोदय राशि का प्रावधान कर देने मात्र से और यह बात कर देने मात्र से विद्युत उत्पादन के लिए हमने ऊर्जा के क्षेत्र में राजस्थान सरकार के सकारात्मक अनुमान जो थे, उनकी न सिर्फ हमने 31 मार्च, 2007 तक समाप्त हुए वित्तीय वर्ष में दसवीं पंचवर्षीय योजना अवधि के दौरान राज्य के लिए विद्युत उत्पादन की क्षमता में वृद्धि हेतु जो अनुमान थे, उनसे भी अधिक हमने विद्युत उत्पादन कर दी । यदि आपने वास्तव में ऐसा किया तो आपकी जो घोषणा थी कि हम ग्रामीण क्षेत्र में इतने घंटे की विद्युत आपूर्ति करेंगे? उसका क्या हुआ? (व्यवधान) हां, मिल तो रही है, बिलकुल मिल रही है जितने घंटे गए थे, उतनी आपूर्ति मिल रही है...(व्यवधान) वह तो आने वाले आपका इन सब बातों का आकलन करने का समय आ ही रहा है, वह पता लगा जाएगा किसको कितनी मिल रही है? यदि यह बिजली की आपूर्ति इतनी होती और आपकी की गई घोषणा के बाद आपके द्वारा बढ़ाया गया उत्पादन निश्चित रूप से वह आपकी की गई घोषणा से ज्यादा विद्युत आपूर्ति आप कराते और अगर यह दोनों काम आप करते तो आज जो पाला पड़ने के कारण फ़सलें नष्ट हुई हैं और इसका जो प्रतिशत सामने आया है यह अगर कृषि कुओं के क्षेत्र में विद्युत आपूर्ति पूरी हुई होती तो यह फसल यह खराबा इसका प्रतिशत यह कभी भी निकल करके नहीं आता। और किसान की फसल बच पाती और किसान अपने परिवार के साथ में आज जो कष्ट का समय देख रहा है, यह स्थिति उसकी नहीं बन पाती । उत्पादन के क्षेत्र में आपने आज यह बात फरमायी...(व्यवधान) आपकी बात से मैं भी सहमत हूं । अब वह ढंग का सुझाव तो वो हुआ जिसको यह मान लें, आप कितनी ही ढंग की बात करें, उसको मानने के लिए जो तैयार नहीं है....

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): मैं यह कहना चाहता हूं कि आप इधर से मांग लेना और उधर से रिक्वेस्ट करूंगा ।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): आपकी रिक्वेस्ट से क्या बनेगा?

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): मैं आपसे तो कर सकता हूं कि आप करवाएं, दायीं साइड वाले सब सहमत हो तो बायीं साइड से सहमति का प्रयास करेंगे ।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): माननीय सदस्य की बात को मानते हुए मैं सार में यही निवेदन करना चाहूंगा कि आज जब हमारा उत्पादन बहुत बढ़ गया और हम यह बात करते हैं, हम मार्च, 2003 तक के तो सभी कृषि कनेक्शन जारी कर देंगे। विद्युतीकरण की बात आ गई कि हम गांवों में भी शहरों की जैसे विद्युत आपूर्ति कराएंगे। यह सब बातें आ रही हैं तो आज जो आरजीजीवाई के अंतर्गत जो कार्य हो रहे हैं, उन कार्यों को लेकर आज जो रोष है, इसका क्या कारण है? आज स्थिति यह है कि माननीय मुख्य मंत्रीजी भी घोषणा करती है वह राज्य के जो हमारे लगभग 22 लाख बीपीएल पूर्व की सूची के आधार पर थे और वर्तमान में वह घटकर के 17 लाख कुछ हजार रह गए। उन सभी को कनेक्शन उपलब्ध करवाने का जो उनका वादा था, उस वादे का क्या हुआ? क्या यह सही है कि उस वादे की पूर्ति नहीं कर सकते? महज राजनीतिक आधार पर विद्युतीकरण के कार्य चल रहे हैं । माननीय मंत्री महोदय सभी ढाणियों को विद्युतीकृत करने के लिए आपकी जो योजना बनाई, इस योजना की क्रियान्विति करने के लिए राजनीतिक आधार पर ही कार्य हो रहे हैं । आपने ठेका प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी।

(समय : 13.00 बजे)

जो एजेंसीज ने काम लिये हैं उन्होंने काम आगे सबलेट कर दिये हैं और जिनको सबलेट किये हैं वो और आगे सबलेट कर रहे हैं और उन कामों को करने के लिए वो स्थानीय स्तर पर जहां पर अतिरिक्त राशि जुटा पा रहे हैं वहां पर तो कुछ कार्य कर रहे हैं वरना जहां से अधिक राशि मिल रही है वहीं पर आपका ये सिस्टम डाइवर्ट कर रहे हैं । यह वहां की स्थिति है । घरेलू कनेक्शन आप उपलब्ध करवा रहे हैं और आने वाले समय में भी उपलब्ध करवायेंगे । कुछ समय पहले हमारे यहां पर विधान सभा में एक मुद्दा रहा था जिसके चलते हमने बात की थी कि 5 एचपी तक के कृषि कनेक्शन प्राथमिकता से उपलब्ध करवाये जाएं ।

(श्री वीरेन्द्र बेनीवाल)

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, स्थिति का हम थोड़ा सा अगर चित्रण करें, आप स्वयं उपाध्यक्ष महोदय, काश्तकार हैं। आप महसूस कर सकते हैं कि एक किसान जिस किसान को अनुदान पर डिग्गी बनाने के लिए राशि तो उपलब्ध करा दी गयी है और उस अनुदान को प्राप्त करने के नाम पर और उस डिग्गी में जल संग्रहण करके जब फसल की उपज प्राप्त करने के लालच में वो उलझ जाता है और डिग्गी बन जाने के बाद जब वो उसमें जल संग्रहण कर लेता है तब वो जानता है कि मेरे को चूंकि कृषि कनेक्शन नहीं मिला इसलिए मुझे मजबूरीवश डीजल इंजन लगाना पड़ेगा । वो उस डीजल इंजन का जब उपयोग करके उस जल से अपने खेत को सींचने का कार्य करता है तो उसकी जो लागत आती है वो इतनी होती है कि उसको वो पोसा नहीं सकती तो जब ये स्थिति है तो क्यों नहीं हम जब अनुदान किसान को देने की बात करते हैं तो उसके साथ में ये कंडीशन भी क्यों नहीं लगाते कि हम क्षेत्र विशेष में अगर चयनित करेंगे तो सौ ही जनों का करेंगे। और वो सौ वो व्यक्ति होंगे जिनको हम उसके साथ में कृषि कनेक्शन भी उपलब्ध कराने की स्थिति में हैं तो निश्चित रूप से यह किसान के साथ न्याय होगा। और आज जो हम इस देश की उपज बढ़ाने की बात करते हैं तो उसके लिए एक सही कदम होगा लेकिन उस हमारे उठाये गये मुद्दे पर चर्चा होने के बावजूद आज दिन तक राज्य फैसला नहीं कर पाया जबकि इससे बड़ा लोक कल्याणकारी निर्णय मेरे ख्याल में किसान के हित में कोई नहीं हो सकता। लेकिन सरकार आज इस बात को कह करके कि हमने इसके लिए कोई एक शायद समिति का गठन कर दिया है। तो समिति का गठन करने से किसान को कुछ मिलने वाला नहीं है। माननीय मंत्री महोदय, किसान को तो आप जब कभी भी अनुदान के ऊपर इस तरह की डिग्गी और स्प्रिंकलर सिस्टम जिस किसी ने लिया है उसको प्राथमिकता से अगर आप कनेक्शन उपलब्ध करायेंगे तभी उसको कुछ सहारा लगेगा । यह मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं ।

इसके साथ-साथ मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि उपाध्यक्ष महोदय, आज जगह-जगह पर आप 33 केवी जीएसस, 132 केवी जीएसस, 220 केवी जीएसस ये घोषणा तो कर रहे हैं लेकिन इसका लाभ किसको मिल रहा है ? क्या उन क्षेत्र विशेष में जहां का जनप्रतिनिधि आपकी पार्टी का है वहां पर इनकी घोषणा कर देने से आप कोई बहुत बड़ा कार्य करने वाले हैं या जहां आवश्यक है आज तक आवश्यकता का सही चिन्हीकरण नहीं कर पाए।

(श्री वीरेन्द्र बेनीवाल)

और अगर गलती से किसी स्थान विशेष पर आवश्यकता होने के बाद भी ऐसी कोई घोषणा हो गई तो उस घोषणा की क्रियान्विति आज दिन तक नहीं हो पायी । मैं एक उदाहरण दे करके कहना चाहता हूं उपाध्यक्ष महोदय, मेरे विधान सभा क्षेत्र का एक गांव सेरेरा है वहां अनेक वर्ष पहले 33 केवी जीएसएस स्वीकृत हुआ। लेकिन उसका कार्य प्रारम्भ नहीं होने देने के पीछे जो लोग थे उन लोगों के चलते वो कार्य पूर्ण नहीं हो पाया। और अब जा करके अनेक वर्ष बीतने के बाद शायद वो कार्य पूर्ण हो पाया होगा ऐसा भी मेरे को संशय है ।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): आप इलाके में गये नहीं शायद । हो गया वो ।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): इलाके में तो जाते ही नहीं और हो गया का सर्टीफिकेट आप दे दीजिये । आपसे ले लेंगे ।

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव): आप कलक्टर को पूछते, बिजली के अधिकारी को पूछ लेते मोबाइल से पता लग जाता । सदन को तो सही जानकारी देते ।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): हां, बिलकुल सही है । यह तो अभी चित्रण सामने आ जाएगा न कि कब स्वीकृत हुआ और क्यों नहीं हुआ ।

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव): मैं आपके इस आरोप का खंडन करता हूं और एक उदाहरण देता हूं प्रतिपक्ष के नेता के यहां इस बार आठवीं स्कूल खोली गयी हैं 55 और मेरे यहां खोली हैं 45 । तो यह कोई पक्षपात है क्या? बिलकुल न्यायोचित काम किया। वहां 55 की जरूरत थी 55 खोले गये और मेरे को 45 स्कूलें दी हैं । इस तरह से सभी डिपार्टमेंट में हुआ है ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य ।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): माननीय सदस्य, बिजली के उदाहरण पर आ जाएं और मुझे मत दीजिये आप तो चेयर को दीजिये तो मेहरबानी होगी । इसके साथ-साथ उपाध्यक्ष महोदय, यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि वर्तमान में कनेक्शन उपलब्ध कराने के लिए एक योजना और बनायी गयी है जिसके तहत पांच सौ मीटर और पांच सौ मीटर से ऊपर एक किलोमीटर तक और एक किलोमीटर से ऊपर की तीन स्टेजेज आपने अभी बना रखी हैं। और उसके साथ अभी आपने जो घोषणा की है वो घोषणा एक

(श्री वीरेन्द्र बेनीवाल)

अलग है लेकिन आज एस्टीमेट बनकर निचले स्तर से ऊपर तक जाते हैं, कार्य स्वीकृत नहीं हो पाते । मैं निवेदन करूंगा उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मंत्री महोदय से कि जो प्रायोरिटीज के ऊपर एस्टीमेट्स जाते हैं उन प्रायोरिटीज को ध्यान में रख कर अगर एक टाइम बाउंड कनेक्शन रिलीज करने की प्रक्रिया हम प्रारम्भ करें तो वास्तविक रूप से आपकी मंशा सही रूप से प्रदर्शित होगी । फाइलें लगाने के बाद वर्षों बीत जाने के बावजूद भी कनेक्शन नहीं मिल पाना सैंक्शन नहीं आ पाना, यह इस बात को दर्शाता है जिस पर माननीय कुछ सदस्य अपनी उत्तेजना भी व्यक्त कर रहे हैं जो जाहिर करता है कि वास्तव में कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ तो है ही । मैं इसी क्रम में निवेदन करना चाहता हूं कि आज ग्रामीण क्षेत्र के अन्दर कुटीर ज्योति जो कनेक्शन हैं वो भी पर्याप्त संख्या में उपलब्ध नहीं करवाये जा रहे हैं और स्थानीय स्तर पर उन पर वो त्वरित कार्यवाही नहीं की जा रही है जो जिस सोच के साथ में यह कुटीर ज्योति योजना लागू की गई थी । मैं यह भी कहना चाहता हूं कि आज की स्थिति ऐसी है कि वर्षों पुराने रेवेन्यु विलेज जो पर्याप्त जनसंख्या होने के बावजूद भी आवेदन किये जाने के बावजूद भी वहां पर कनेक्शन उपलब्ध नहीं करवाये जा रहे हैं । जो अपने आप में एक विचारणीय विषय है।

क्षेत्रीय जलप्रदाय योजनाएं जो हमारी प्राथमिकता है उपाध्यक्ष महोदय, उन योजनाओं को भी विद्युत की आपूर्ति करवाने में हर समय संकट का सामना करना पड़ता है । आज अगर हम इस प्राथमिकता के ऊपर भी गौर नहीं करें और हम इस सोच में पड़े रहे कि हमें जब तक पीएचईडी डिपार्टमेंट राशि मुहैया नहीं करायेगा तब तक हम उसको चौबीस घंटे विद्युत उपलब्ध कराने की अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन नहीं करेंगे तो एक यह अनुचित बात है । हमारी आम जन के प्रति कोई जिम्मेदारी है, आम जन को राहत पहुंचाने के प्रति कोई जिम्मेदारी है । यदि विभागीय स्तर पर इस प्रकार की योजनाओं को चौबीस घंटे विद्युत आपूर्ति करायी जाए तो हमारे ग्रामीण क्षेत्र के एक बहुत बड़े कष्ट का निवारण होगा। यह मैं कहना चाहता हूं। अधिकांश गांवों में दूर-दूर तक...

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, कंक्लूड कीजिये ।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): जी, उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक अंतिम एक मिनट में अपनी बात को रखूंगा । मैं सार में यही निवेदन करूंगा

(श्री वीरेन्द्र बेनीवाल)

कि हमारी प्राथमिकता जहां कहीं पर भी गांवों में जल उपलब्ध कराने के प्रति है हम उसकी विभागों की लड़ाई को छोड़कर और उसके ऊपर मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए इन योजनाओं को चौबीस घंटे विद्युत आपूर्ति कराने के लिए कोई कदम उठायेंगे । ऐसी मैं आशा करता हूं ।

इसके साथ-साथ उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जो कृषि कनेक्शन तो रखते हैं कृषि कुओं के क्षेत्र भी हैं लेकिन उन क्षेत्रों में एक ही फसल प्राप्त की जा पाती है क्योंकि वहां के कुओं की स्थिति ऐसी है । फसल एक प्राप्त करने के नाम पर उनको बारह महीनों के कृषि कनेक्शन का बिल भरना पड़ता है जो किसान के साथ नाइंसाफी है । मैं आशा करूंगा माननीय मंत्री महोदय, इस पर ध्यान देंगे और इसमें निवेदन करना चाहूंगा कि राज्य में ऐसे बहुत से इलाके होंगे जहां पर इस प्रकार की समस्या होगी। और मैं मेरे ही जिले की बात बताना चाहूंगा मेरे ही जिले के तहसील लूणकरणसर के ऐसे बहुत से गांव हैं शेखसर, खोड़ाला, करणीसर, सूई, मनाफरसर और इसके आसपास का इलाका है जो एक फसलीय क्षेत्र है। लेकिन किसान को वहां पर पूरे वर्ष बिजली का बिल भरना पड़ता है ।

श्री उपाध्यक्ष: मीटर लगने के बाद तो क्या समस्या रहेगी? जितनी बिजली कंज्यूम करेंगे उतना आएगा ।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): अभी फ्लेट रेट है साहब, वहां पर अभी फ्लेट रेट है...(व्यवधान) है लेकिन फ्लेट रेट है । आप उसको इस बंधन में क्यों डालना चाहते हैं? आप उसकी समस्या को समझें । यह मैं निवेदन करना चाहता हूं और जो फ्लेट रेट अभी ली जा रही है इसके अन्दर अगर ऐसी जगहों पर कुछ राहत दी जाए तो यह वास्तव में किसान को सीधा लाभ होगा यह मैं कहना चाहता हूं ।

इसके साथ पुनः मैं इस बात को दोहराना चाहता हूं कि वर्तमान में की गई घोषणा को हमारे जिले और राज्य में इसी प्रकार के और जिलों के हालात को देखते हुए अगर कुछ निर्णय किये जायें तो यह ठीक होगा । वर्तमान समय में अनेकों जगहों पर गांवों को विद्युतीकृत करने का जो काम चल रहा है इसके साथ अनेकों स्थानों पर यह जो तार चोरी की जो घटनाएं होती हैं इस तार चोरी की जिम्मेदारी आम उपभोक्ता की नहीं है, किसान की

(श्री वीरेन्द्र बेनीवाल)

नहीं है । ऐसे हर क्षेत्र को जो तार चोरी की घटनाओं के बाद आज पुनः उनको नहीं जोड़ा गया ऐसे क्षेत्रों को प्राथमिकता से जोड़ा जाये । आरजीजीवाई की योजना जिस मकसद से लागू की गई है उस मकसद की पूर्ति की जाये । अगर आज आप विद्युत का उत्पादन इतना बढ़ा चुके हैं तो आम जन को मांगने के साथ ही क्यों नहीं कनेक्शन उपलब्ध करवा पाते इस पर विचार किया जाये । कृषि कनेक्शन के क्षेत्र में आप जो विद्युत आपूर्ति कराने के जो दावे कर रहे हैं जो कि खोखले हैं इनकी हकीकत को और धरातल को देखते हुए आप इस पर कार्यवाही करें और किसान को कम से कम 8-10 घंटे बिजली उपलब्ध करायें यह मैं निवेदन करना चाहता हूं । आज आप इतना बड़ा भारी प्रोजेक्ट लेकर चल रहे हैं इसका अगर सही लाभ आम जन को नहीं मिल पायेगा तो यह सब बेमानी है । पूर्व का राज आया और चला गया, आपका आया और जाने के दरवाजे पर खड़ा है । आप आज दिन तक अगर यही बात करते रहे कि पूर्ववर्ती सरकार ने यह नहीं किया, उन्होंने यह नहीं किया, आज आपका समय भी निकल जायेगा । मैं आशा करता हूं कि कुछ इस प्रकार के लोक हितकारी निर्णय आप करेंगे जिसका लाभ सीधा किसान को मिले और किसान यह महसूस कर सके कि इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में उसकी देखने और सुनने वाला कोई है और उसको राहत प्रदान करने वाला कोई है, बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री नवनीत नीनामा ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): उपाध्यक्ष महोदय, एक नाम बीच में ही पुकार लिया करो, आज तो कम से कम थोड़ा रहम करो ।

श्री उपाध्यक्ष: (व्यवधान) जल्दी करा देंगे । जल्दी करा देंगे ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): रात के 8 बजे के बाद तो हमें भी पता है कि नम्बर आयेगा ।

श्री जीतमल खांट (बागीडोरा): उपाध्यक्ष महोदय, अगर आप व्यवस्था करते हैं...(व्यवधान)

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): उपाध्यक्ष महोदय, दो इधर से, एक इधर से फिर एक इधर से ।

श्री जीतमल खांट (बागीडोरा): उपाध्यक्ष महोदय, पांच मिनट अगर हमें बोलने का मौका नहीं मिलता है तो फिर इस डिबेट में भाग लेने की हमको क्या जरूरत है?

श्री उपाध्यक्ष: आज बिना मौका दिये एक आदमी को नहीं जाने देंगे ।

श्री जीतमल खांट (बागीडोरा): उपाध्यक्ष महोदय, अगर हमको अंत में 1-2 मिनट का मौका मिलता है तो हम क्या बोलें?

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य बीच में मौका देंगे । आज बीच में मौका दिया जायेगा । (व्यवधान) माननीय सदस्यों से निवेदन है कि 10 मिनट में अपने वक्तव्य को समाप्त कर दें तो सब माननीय सदस्यों को मौका मिल जायेगा ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): उपाध्यक्ष महोदय, दो दिन से मुखबंद का प्रयोग कर रहे हैं ।

श्री उपाध्यक्ष: आज सब को मौका मिलेगा ।

श्री नवनीत नीनामा (घाटोल): उपाध्यक्ष महोदय, आज अकाल और विद्युत पर चर्चा हो रही है । मान्यवर, मैं सदन को व आपको जानकारी देना चाहता हूं कि अकाल पड़ता क्यों है, इसके पड़ने के क्या कारण हैं यह भी हमें सोचना पड़ेगा । इस संसार में गरीब किसान और अकाल का जोड़ा है ।

(समय : 13.13 बजे)

(मोहम्मद माहिर आजाद, सभापति, पदासीन)

जब सम्पन्न लोग अपनी सुविधा के लिये गरीब व्यक्ति को अपने पास बुलाकर अपनी सुविधा व व्यवस्था मजदूरी के रूप में कराते हैं, मान्यवर, जब मानव ने अपनी सुविधा के लिये मकान व सड़क की योजना बनाई तब जंगल को काटना शुरू किया गया । तब जो जंगल व पानी का जोड़ा था वह टूटने लगा और अकाल पड़ने लगा । मान्यवर, जहां पर जंगल है वहां पर मनुष्य अकाल का अनुभव नहीं करता है । उदाहरण के लिये हम एक ट्राइबल कमेटी लेकर दक्षिण में गये थे पोर्टब्लेयर जैसे स्थान पर जहां जंगल में व्यक्ति रहते हैं । उन्हें हमने पूछा और जानकारी ली तो वह किसी प्रकार की समस्या का अनुभव ही नहीं करते हैं । सिर्फ वह सामने आकर खडे हो जाते हैं । उन उसको ठंड लग रही, न उसको गर्मी, न भूख की बात, न प्यास की बात, न कोई शिकायत है । यह सारी समस्याएं कुछ हमने अपने आप भी खड़ी की हैं

(श्री नवनीत नीनामा)

और खड़ी करके उसको निपटाने का प्रयास करते हैं उसी को कानून और व्यवस्था का नाम दिया गया है ।

श्री सभापति: माननीय संसदीय कार्य मंत्रीजी अपने स्थान पर विराजिए और जो डिबेट चल रही है उसको नोट करने का काम कीजिए ।

श्री नवनीत नीनामा (घाटोल): मान्यवर, अभी केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा रतनजोत के पौधे लगाकर वन पौधारोपण की योजना लागू की है । उत्तर व पश्चिमी राजस्थान में वन नहीं है वहां बबूल और रेगिस्तान है । वहां पर यह पौधे लगाने की जो योजना है वह लागू की जाये । मेरा आग्रह है कि रतनजोत के पौधे दक्षिणी राजस्थान में जहां उदयपुर, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा वहां वर्तमान में जंगल है उन स्थानीय जंगलों में जो पौधे हैं उनकी रक्षा करने की जरूरत है । वहां इन पौधों को लगा कर जो पैसा खर्च किया जा रहा है वह नहीं करना चाहिये ऐसा मेरा सुझाव है ।

श्री अमराराम (धोद): सभापति महोदय, माननीय सदस्य अपने बहुमूल्य सुझाव दे रहे हैं और कोई भी मंत्री यहां लिखने वाला नहीं है । वह बिजली पर नहीं बोल रहे हैं वह अकाल पर बोल रहे हैं और उनके सुझाव को नोट करने वाला कोई मंत्री नहीं हैं यहां पर । आप अभी तो गपशप कर रहे थे।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): यह तीन जगह नोट हो रहा है ।

श्री जीतमल खांट (बागीडोरा): बांसवाड़ा क्षेत्र के हमारे लोकप्रिय और सीनियर विधायक हैं।

श्री सभापति: आप विराजिए, माननीय उप मुख्य सचेतकजी अधिकारियों से नोट का मतलब नहीं है सरकार की तरफ से कोई मंत्री नोट करें ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): सभापति महोदय, मैं नोट कर रहा हूं ।

श्री सभापति: नहीं अभी तक तो नहीं कर रहे थे अब कर लीजिए ।

श्री जीतमल खांट (बागीडोरा): इतने बहुमूल्य सुझाव दे रहे हैं ।

श्री सभापति: अब नोट कर रहे हैं । प्राकृतिक आपदा मंत्रीजी किसी जरूर काम से गये हैं पहले वह नोटिंग ले रहे थे अब संसदीय कार्य मंत्रीजी ले रहे हैं ।

श्री नवनीत नीनामा (घाटोल): मेरा आग्रह है कि दक्षिणी राजस्थान में जो रतनजोत के पौध लगाने की योजना है उसे बंद किया जाये और यह रेगिस्तान में लगाये जायें तो ठीक है । वहां पर हमारे जो जंगल है चरागाह की जमीन है, वन विभाग की जमीन है वहां पर चरागाह की भूमि पर खाकरा, सादर, बांस यह पौधे लगाये जायें इससे पशुओं को जिंदा रहने के लिये पाला मिलेगा । इससे पशु जिंदा रहेंगे और पशु जिंदा रहने से जो अभी हमारे भारत में जो वैज्ञानिक खाद का तरीका अपनाया गया है, यूरिया खाद से जमीन बेकार हो रही है, कठोर बन रही है । आज अकाल पर बहस है यह अकाल ऐसा पड़ेगा कि जहां खेत में जमीन कठोर होने की वजह से फसल पकना अपने आप बंद हो जायेगी । इसलिए मेरा आग्रह है कि दक्षिणी राजस्थान में जो पौधे लगाये जा रहे हैं वह रतनजोत के नहीं लगाये जाकर करबांस, खाकरा, सादर ऐसे पाले दार पौधे लगाये जायें ताकि पशुओं को खाने के काम आये और वहां हमारा आधार बने ।

मान्यवर, राजस्थान में सीमित जल संसाधन है, पानी की कमी है । राज्य में खेती करने के लिये स्थिति बिगड़ती जा रही है जहां पानी नहीं है । हमारे राजस्थान में हाल में 22 प्रतिशत जमीन पीवत हो रही है और 78 प्रतिशत जमीन असिंचित है ।

मेरा आपसे आग्रह है कि जहां पर अभी रोजगार गांरटी योजना में जल के ठहराव के लिए जो एनीकट व तालाब बनाये जा रहे हैं, जहां तक मौके पर जानकारी ली है दक्षिण राजस्थान, बांसवाड़ा, डूंगरपुर क्षेत्र में । वहां पर अभी गारंटी रोजगार योजना में छोटे-छोटे एनीकट बनाये जा रहे हैं मेरा आपसे आग्रह है कि छोटे नहीं बनाये जाकर उन बड़े-बड़े खोरों को जो जंगल में पहाड़ियों के बीच में, बड़े-बड़े एनीकट, बड़े तालाब का निर्माण कराया जाए ताकि वहां पानी रूके। क्योंकि छोटे एनीकट सब के सब बारिश में बह गए और उसी जगह पर फिर से यह काम शुरू हुआ है तो यह सरकार का पैसा व्यर्थ जा रहा है । अतः मौकों पर जानकारी ली जानी चाहिए क्योंकि यह एनीकट छोटे बनाये जाते हैं । जब बारिश होती है तो उनकी कोई रखवाली तो करता है नहीं । जब रात को बारिश होती है कोई ढोर से लेकर ऊपर खड़ा नहीं, पानी कितना आया, एनीकट कितने बने और वह हैं किसके, यह जिम्मेदारी तो किसी की है ही नहीं। इसलिए इस पर विशेष ध्यान दिया जाए । जो एनीकट बनाये जाएं उसका पानी का भराव क्या होगा, उसका निकास क्या होगा उस

(श्री नवनीत नीनामा)

पर निगरानी रखी जाए तभी जाकर वह पैसा जो खर्च किया गया है उसका उपयोग हो सकता है, ऐसा मेरा आग्रह है ।

अभी जल ग्रहण कार्य किया जा रहा है, यह हर ग्राम पंचायतों के द्वारा कराया जा रहा है अपने गांव में । मेरा आग्रह है कि इस प्रकार जो छोटी संस्थाएं काम तो करती हैं, वह सरपंच, ग्राम पंचायत अपनी योग्यातानुसार काम कर लेता है लेकिन करोड़ों रूपया नाजायज चला जाता है । उस पर ओवरसीयर इंजीनियर को देखकर व्यवस्थित ढंग से पैसा लगाया जाए तो पानी का भराव रहेगा और पानी का स्तर ऊंचा आयेगा ऐसा मेरा आग्रह है ।

मान्यवर, मौके पर पानी होने के बावजूद अकाल है आपके माध्यम से ऐसी स्थिति मैं आपके बीच में, सदन को जानकारी देना चाहता हूं। निवेदन इस प्रकार है कि बांसवाड़ा जिला, विधान सभा क्षेत्र घाटोल गंगोडा गांव के अंदर एक तालाब बना हुआ है जहां माही डेम का, पानी की नहर उस तालाब के नीचे निकल गई और सारा रकबा पीवत हो रहा है लेकिन बोरदा नाम का जो तालाब है वहां पानी भर दिया जाता है और उसमें दुफवाडा गांव में किसानों की खरीफ की फसल हर साल सड़ जाती है । जिला कलक्टर साहब को, तहसीलदार और सिंचाई के अधिकारियों को बार-बार मैंने मौके पर जानकारी दी लेकिन उसका कोई निर्णय नहीं हो रहा है। दुफवाडा गांव की जमीन 2937 बीघा में हर साल खरीफ की फसल डूबकर सड़ जाती है। किसानों व अधिकारियों में नाजायज विवाद हो रहा है, अतः मेरा आग्रह है कि उस मौके की जांच करके किसी ओवरसीयर इंजीनियर को भेजकर, उस तालाब को रखना है या नहीं रखना है ऐसा सोचा जाए। तालाब रखना ही है, पानी अंदर भरा रखना है तो उस गांव को उठाने के लिए दूसरी जगह पानी की व्यवस्था कराई जाए क्योंकि वह किसान फसल होने के बावजूद, जमीन पास में है, पानी पास में है फिर भी हमेशा उसके गांव में अकाल पड़ता है ।

श्री सभापति: माननीय नीनामाजी, समाप्त कीजिए कृपया ।

श्री नवनीत नीनामा (घाटोल): मान्यवर, अभी तो मैंने शुरूआती ही की है ।

श्री सभापति: एक मिनिट में अपनी बात समाप्त कीजिए कृपया ।

श्री नवनीत नीनामा (घाटोल): मान्यवर, मेरा आग्रह है कि दक्षिण राजस्थान, बांसवाड़ा में माही डेम नाम का तालाब बना हुआ है और वहां पर उस तालाब से 2.50 लाख हैक्टेयर जमीन आज भी पानी से पीवत से वंचित है। पानी बहकर गुजरात की ओर चला जाता है । अतः मेरा आग्रह है कि अभी हाल ही, गत वर्ष माननीय मुख्य मंत्री महोदय द्वारा 27-28 अप्रैल, 2006 में बांसवाड़ा जिले का टयूर किया और वहां बोरखेडा नाम के स्थान पर रात्रि विश्राम करके वहां के किसानों की जानकारी ली और 48 करोड़ रुपये की स्वीकृति देकर, नहरों का सर्वे कराया गया, सर्वे तो कराया गया लेकिन उस सर्वे के अनुसार अभी नहरों का काम शुरू नहीं हुआ । उन नहरों का काम शुरू करके जो नीचे के गांव है उन गांवों में पानी पहुंचाया जाए तो किसान अपने खेत में फसल पकाकर अकाल का मुकाबला कर सकता है । अतः मेरा आग्रह है कि यह गांव है हुलियावाड़ा...(व्यवधान)

श्री सभापति: श्री सुशील कटारा ।

श्री नवनीत नीनामा (घाटोल): झरकनिया, हानगढा, खमेरा...

श्री सभापति: माननीय नीनामाजी, समाप्त कीजिए । (व्यवधान)

श्री नवनीत नीनामा (घाटोल): मान्यवर, मेरा आग्रह है कि मैं ज्यादा बोल ही नहीं पाया हूं, मेरा निवेदन है मुझे दो मिनिट ही दे दें ।

श्री सभापति: एक मिनिट में खतम कीजिए, आप सुझाव देकर जल्दी से ।

श्री नवनीत नीनामा (घाटोल): अभी रोजगार गांरटी के काम चल रहे हैं । मेरा आपसे आग्रह है कि पीपलखूंट, कुशलगढ़ और आनन्दपुरी ऐसे क्षेत्र हैं, सूखे क्षेत्र हैं, वहां पर केशवबाड़ी योजना के अन्तर्गत कुओं का काम शुरू किया गया गारंटी रोजगार योजना में । जहां पर हमने सर्वे कराई वहां ओवरसीयर इंजीनियर का कहना है कि 25,000 रुपये में वह कुआ, अपूर्ण कुए को लिया गया है, 14 से 15 फीट गहरा कुआ है उस कुए को लिया गया है । उसका मूल्यांकन किया गया तो वह कुआ 15 फीट से बढ़कर 25,000/- 22 फीट तक ही गहरा जाता है । स्थाई रूप से खेती करने योग्य नहीं बनता है, तो मेरा आपसे आग्रह है कि 25 हजार से बढ़ाकर 50 हजार तक रुपये गारंटी रोजगार योजना में स्वीकार करके जो सूखा एरिया है, वहां कुए स्थाई रूप से कराये जाएं ताकि वहां का किसान सही ढंग से अपना कुए पक्के बनाकर उपज कर सके । (व्यवधान)

श्री सभापति: धन्यवाद । सुशील कटाराजी । नीनामाजी, आप बिराजें।

श्री नवनीत नीनामा (घाटोल): विद्युत के सम्बन्ध में मेरा निवेदन है... (व्यवधान)

श्री सभापति: माननीय नीनामाजी, अब बिराजें आप । सुशील कटारा जी आप शुरू कीजिए, नहीं मैं अगले वक्ता का नाम पुकारूं ।

श्री नवनीत नीनामा (घाटोल): पीपलखूंट में (व्यवधान) एक मिनिट, पीपलखूंट में....

श्री सभापति: आपको बोलते हुए 17 मिनिट हो गए । (व्यवधान) नीनामा जी कृपया । सुशील कटाराजी आप बोल रहे हैं, मैं दूसरे का नाम पुकारूं ?

श्री सुशील कटारा (चौरासी): माननीय सभापति महोदय... (व्यवधान)

श्री नवनीत नीनामा (घाटोल): तालाब पांच करोड़ की योजना का...

श्री सभापति: नीनामाजी का अब रिकार्ड नहीं होगा ।

श्री नवनीत नीनामा (घाटोल):×××

श्री सुशील कटारा (चौरासी): माननीय सभापति महोदय, (व्यवधान) अकाल और बिजली पर चर्चा हो रही है।

श्री नवनीत नीनामा (घाटोल):×××

श्री सुशील कटारा (चौरासी): इस चर्चा में भाग लेते हुए मैं अपनी बात को रखना चाहूंगा । (व्यवधान) आदरणीय नीनामाजी आपने कह दिया ।

श्री सभापति: नीनामाजी आपका अब रिकार्ड नहीं हो रहा है ।

श्री नवनीत नीनामा (घाटोल):×××

श्री सभापति: आप बोल चुके काफी समय ।

श्री नवनीत नीनामा (घाटोल):×××

श्री सभापति: आप अपना कागज मंत्रीजी को दे दीजिए ।

श्री सुशील कटारा (चौरासी): पक्ष और विपक्ष के....

श्री सांवर लाल (सिंचाई मंत्री): माननीय सभापति महोदय, माननीय सदस्य को अपने एरिया की चिंता है, नया बांध बना है, पानी है और उस पानी को छोड़ना है तो छोड़ देंगे इसमें कोई दिक्कत नहीं है ।

श्री सभापति: आसन समय से पाबंद है । आप उनकी समस्या समझ गये, आप समाधान कर दीजिए ।

सूचना

रामपुरा बस्ती, बीकानेर में दूषित पानी से बीमार मरीजों को दवाइयां एवं मुआवजा देने विषयक

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): माननीय सभापति महोदय, आन ए पाइंट ऑफ इनफोरमेशन..

श्री सभापति: कटाराजी, एक मिनिट ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): सभापति महोदय, बीकानेर शहर में रामपुरा बस्ती में दूषित पानी के कारण करीब 200 से अधिक आदमी बीमार हो गये और वहां पर हास्पिटल में जगह नहीं है । (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): सभापति महोदय, धोद से आने वाले माननीय सदस्य ने यह बात आज सदन में कह दी थी । इन्होंने उठा लिया था मामला । (व्यवधान) माननीय सभापति महोदय, सुबह भी बात हो गई थी ।

श्री सभापति: एक मिनिट सुन लीजिए । नई सूचना अगर आप देना चाहें तो दे दीजिए।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): मैं नई सूचना दे रहा हूं। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): या तो समय पर सदन में आना चाहिए (व्यवधान) या तो समय पर सदन में आना चाहिए।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): ऐसा है आप सब जानते हैं कि मेरी (व्यवधान) संसदीय कार्य मंत्रीजी आप जानते हैं कि हमारी पार्टी की... (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): हमारी परम्परा रही है...

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): माननीय ओफिशियल कैंडीडेट ने नोमीनेशन भरा था मैं उस समय मौजूद नहीं था। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): हमारी परम्परा रही है कि एक विषय जो सदन में एक बार आ जाए उसी विषय को दुबारा...(व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): मैं नई सूचना दे रहा हूं आपको। (व्यवधान)

श्री सभापति: नई सूचना दे रहे हैं । (व्यवधान) सुन लीजिए।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): नई सूचना दे रहा हूं।

श्री सुशील कटारा (चौरासी): माननीय सभापति महोदय, मेरा समय...

श्री सभापति: एक मिनिट बैठ जाइये ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): ऐसा है कि आज सवेरे जब हमारी आफिशियल केंडीडेट ने नोमीनेशन भरा था, आप जानते हैं कि उसमें दस आदमियों को (व्यवधान) जरूरी है

श्री सभापति: आप क्या नई सूचना है वह दीजिए ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): मेरी सूचना यह है कि वहां अस्पताल में जो भर्ती लोग हैं उनकी दवाइयों के पैसे लग रहे हैं, उनका मुफ्त इलाज किया जाए । (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): सभापति महोदय, यह कौन से नियम के तहत बोल रहे हैं । (व्यवधान) सभापति महोदय, आप विद्वान हैं। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): जो लोग वहां पर बीमार हैं, उनको उचित मुआवजा दिया जाए और उसके साथ-साथ... (व्यवधान)

श्री सभापति: एक मिनट में दे देते, सारी बात कह देते वह । (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): नहीं, आपके पास सारी इंफार्मेशन है । (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): परम्परा यह है, अपने यहां यह व्यवस्था भी है कि कोई भी माननीय सदस्य... (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): आप सभापति की व्यवस्था को चैलेंज दे रहे हैं क्या? (व्यवधान) मैं सूचना दे रहा हूं । (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): माननीय सभापतिजी से कह रहा हूं । (व्यवधान) माननीय सभापतिजी से कह रहा हूं । अपने यहां व्यवस्था यह है कि कोई भी माननीय सदस्य अपनी बात कहेंगे तो आसन की परमीशन से, किसी न किसी, जो अपनी प्रक्रिया और नियम है उन नियमों के तहत बात करेंगे । तो मैं यह पूछना चाहता हूं... (व्यवधान)

श्री सभापति: नहीं, पाइण्ट आफ इंफार्मेशन के तहत कोई सूचना दे रहे हैं, एक मिनट सुन लीजिये । (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): पाइण्ट आफ इंफार्मेशन के लिये यह है कि तत्काल कोई जो तथ्य... (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): तत्काल, मैंने अभी फोन पर बात की है, उस आधार पर कह रहा हूं । (व्यवधान)

श्री सभापति: आप सुन तो लें, एक मिनट । अगर नहीं होगी तो उसको...

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): नहीं, वह तो चर्चा हो ही चुकी, उसका क्या करेंगे । (व्यवधान)

श्री सभापति: नहीं, चर्चा नहीं होगी । (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): एक मिनट । आपने आसन से व्यवस्था दे दी, शिरोधार्य है । परन्तु पाइण्ट आफ इंफार्मेशन में यह होता है कि अब उनके पास इंफार्मेशन है, अब वह कहते हैं कि अस्पताल में लोग भर्ती हो गये । मैं पूछना चाहता हूं कितने लोग भर्ती हो गये?

श्री सभापति: पहले तो उनको उनकी बात कहने दीजिये, संसदीय कार्य मंत्रीजी ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): मैं कहता हूं, उनको किसी चीज की जानकारी नहीं है, चूंकि बीकानेर में नाम छपवाना है अखबारों में, इसलिये कर रहे हैं ।

श्री सांवर लाल (सिंचाई मंत्री): सभापति महोदय, इतने गम्भीर होते तो फार्म तो दूसरे ही भरवा देते । पहले बीच में आ जाते तब तो हम मानते कि सेंसेटिव हैं और उनको बहुत चिन्ता है बीकानेर की जनता की । इनको सूचना मिलने के बाद भी एक घण्टे तक वहां बैठे रहे फार्म भरने के लिये । (व्यवधान) अब जब कोई मौका.. ?

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): नहीं, नहीं । (व्यवधान) अब आपको कोई वक्तव्य देना हो तो आप दे दीजिये । (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): तब आपको अपने नेताओं की मिजाजपुर्सी करनी थी । तब जो लोग भर्ती थे, उनकी चिन्ता नहीं हुई ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): आपको मालूम नहीं है, नोमिनेशन के वक्त में जिनके दस्तख्त होते हैं, उनको वहां हाजिर रहना पड़ता है । (व्यवधान)

श्री सभापति: नहीं, आप आसन से बात करें ना । (व्यवधान) आपको अपनी सूचना देनी है ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): वह तो सवा 12 बजे ही हो गया । नामिनेशन पेपर तो सवा 12 बजे ही भरा जा चुका । (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन को यह सूचित करना चाहता हूं कि वहां पाइप लाइन नहीं बदली जा रही है । तत्काल पाइप लाइनें बदली जाएं और आसपास की जो मुक्ता प्रसाद कालोनी और वहां पर बंगला नगर वगैरह, वहां पर भी यह प्राब्लम उठ रही है । उन सब जगह पर तत्काल पाइप लाइन बदलाई जाए । (व्यवधान)

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): सभापति महोदय, यह पाइण्ट आफ इंफार्मेशन है क्या?

श्री सभापति: आप बैठिये, आप बैठिये । आप एक मिनट बैठिये, प्लीज ।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): पाइण्ट आफ इंफार्मेशन का मतलब यह होता है कि तत्काल घटना की सूचना दे दी ।

श्री सभापति: सूचना सुन लें आप । (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): तत्काल कोई घटना हुई हो । (व्यवधान)

श्री सभापति: तत्काल कोई घटना हुई है । (व्यवधान)

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): यह पाइण्ट आफ इंफार्मेशन है, बाकी सारे..। (व्यवधान)

श्री सभापति: आप विराजिये । आप विराजिये, प्लीज । आसन पांवों पर, आप बैठिये ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): इन्दिरा गांधी नहर परियोजना का जो पानी... (व्यवधान) इन्दिरा गांधी नहर परियोजना का... (व्यवधान)

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): आप सुनिये, सभापति महोदय .. (व्यवधान) यह पाइण्ट आफ इंफार्मेशन है क्या?

श्री सभापति: आप बैठिये । पहले आप बैठिये । यह आसन का काम है, आप बैठिये । (व्यवधान)

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): वह क्या कर रहे हैं, वह भी खड़े हैं । (व्यवधान)

श्री सभापति: अब आप विराजें । (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): इन्दिरा गांधी नहर परियोजना का जो पानी आ रहा है उस पानी में... (व्यवधान) कहीं मिलावट है, रास्ते में जालंधर, लुधियाना और कई स्थानों पर फैक्ट्रियों का पानी रेजिडुअल के रूप में आ रहा है ।

श्री सभापति: बीकानेर से आने वाले माननीय सदस्य, आपकी सूचना सदन को हो गई । पाइप लाइन योजना तो पुरानी बात है । अगर कोई अस्पताल में बीमार हो, उसकी चिकित्सा नहीं हो रही है, उसकी देखरेख नहीं हो रही हो... (व्यवधान) और जांच नहीं हो रही हो, वह आप कह सकते हैं । (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): हां, यह, यह, यह बात है । व्यवस्था दे दी सभापतिजी ने । (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): उनकी देखरेख नहीं हो रही है । उनकी दवाइयों के पैसे, उनको उचित मुआवजा दिया जाए जिनका अस्पताल में इलाज हो रहा है, उनका निःशुल्क इलाज कराया जाए और इसके साथ-साथ... (व्यवधान)

श्री सभापति: श्री सुशील कटाराजी ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): माननीय मंत्रीजी को वक्तव्य देना चाहिए । इन्दिरा गांधी नहर के पानी में भी जगह-जगह मिलावट है ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): कोई वक्तव्य नहीं ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): फैक्ट्रियों का रेजिडुअल उसमें मिलकर आ रहा है । (व्यवधान)

श्री सभापति: माननीय सदस्य, आपने अपनी बात कह दी है।

श्री सुशील कटारा (चौरासी): माननीय कल्लाजी, आपने इंफार्मेशन दे दी है, आप विराजिये । (व्यवधान)

श्री सभापति: उपाध्यक्षजी के वेश्म में अपनी बात कर लीजिये । (व्यवधान) आप माननीय उपाध्यक्षजी के वेश्म में बात कर लीजिये ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): हां, तो आप इसके बारे में भी कुछ वक्तव्य दें ।

श्री सुशील कटारा (चौरासी): माननीय सदस्य, आपने दे दी, विराजिये।

श्री सभापति: माननीय मंत्रीजी, कुछ कह रहे हैं, विराजिये । माननीय जल संसाधन मंत्रीजी ।

श्री सांवर लाल (सिंचाई मंत्री): सभापति महोदय, माननीय सदस्य की चिन्ता है वास्तव में, अगर इन्सान बीमार होता है, किसी कारण से होता है, इसके बारे में जन-प्रतिनिधि क्या, आम जनता में भी एक तरह से होता है कि क्या चीज हो रही है, जिसकी वजह से है । माननीय सदस्य को बड़ी चिन्ता है और जब तब खड़े होते हैं, मुआवजा देना चाहिए, मुफ्त इलाज कराना चाहिए । जैसे इनके राज में कुछ करा कर बैठे हैं । वस्तुत स्थिति की जानकारी ध्यान में रखनी चाहिए । जब मैं कुर्सी पर हूं तब मैंने क्या कराया और जब मैं नहीं हूं, तब कौनसा काम वे नहीं कर रहे हैं, उसके लिये पाबन्द करें । नई शुरूआत करायें, यह तो वसुंधराजी की मेहरबानी है कि कई चीजें कर रही हैं । पाला पड़ गया तो मुआवजा दे दिया । आपने दिया है क्या कभी ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): हमारे समय पाला पड़ा ही नहीं । (व्यवधान)

श्री सांवर लाल (सिंचाई मंत्री): दिया हो तो बता दो ना, एक-दो आंकड़ा । (व्यवधान) मेरा निवेदन यह है कि हम जिम्मेदार लोग हैं । (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): जिम्मेदारी से बात ही नहीं करते हैं ।

श्री सांवर लाल (सिंचाई मंत्री): जिम्मेदारी के साथ में वही चीज यहां पर बोलनी चाहिए जो हम अगर हुकूमत में आये तो कर सकते हैं । यही हमने किया है । ये ऐसी चीज जो सुझाव हो, आज जो भी यह चीज, यह हुआ, सारा रिकार्ड है सरकार के पास भी है, सब लोगों के पास भी है । (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): बताओ ना ।

श्री सांवर लाल (सिंचाई मंत्री): निश्चित रूप से हमारा प्रयास है कि पानी शुद्ध मिलना चाहिए । अभी आई.जी.एन.पी. का पानी आता है । यह कह

(श्री सांवर लाल)

रहे हैं कि वहां पर मिल गया, वहां पर यह । पानी तो जालंधर का गन्दा पानी आज से थोड़े आ रहा है । यह हमेशा से आ रहा है । मुख्य मंत्री बनने के बाद जब पंजाब के चुनाव हुए, हम गये तो वहां के वाटर रिसोर्सेज मिनिस्टर ने कहा कि वास्तव में यह पानी वहां से आता है और पंजाब में इसका ट्रीटमेंट प्लाण्ट लगा रहे हैं जिससे शुद्ध पानी आयेगा अब । अब बीकानेर में भी आर.यू.आई.डी.पी. ने कुछ काम कराये थे जिससे कुछ तोड़-फोड़ हुई है जिसकी वजह से एरिये के अन्दर पानी, नालियों में पानी रुक गया । वह गन्दा पानी रुकने की वजह से गली नम्बर एक और दस के अन्दर जो सर्विस लाइन होती है, मुख्य रूप से उसके अन्दर उपभोक्ता उसको चेंज कराता है । तो उसमें कुछ छेद है तो उसमें पानी चला गया । जैसे ही सरकार को पता चला, हमारे अधिकारियों को, 11 तारीख से ही नमूने लेने और उसको बदलवाने का काम भी किया और साफ-सफाई भी करवा दी । 90 प्रतिशत सफाई उस क्षेत्र की हो चुकी है । माननीय सदस्य, काफी लोग अस्पताल में इलाज के लिये आये हैं । परन्तु केवल 5 आदमी भर्ती हुए, उसमें से एक को छुट्टी दे दी और चार की स्थिति भी ठीक है और उनको भी छुट्टी दे दी जाएगी । अब जहां तक मुफ्त इलाज होना चाहिए तो अगर उनकी फाइनेंशियल केपेसिटी ऐसी है कि अगर छोटा-मोटा खर्चा भी नहीं कर सकें तो सरकार की तरफ से हम दिलवा देंगे दवाई, उसमें कोई दिक्कत नहीं है । दूसरा जो भी सेम्पल लिये हैं, आपकी जानकारी में लाना मेरा फर्ज बनता है कि बैक्टीरिया के 11 तारीख को 4 सेम्पल लिये, उसमें जीरो मिला, कोई भी जीवाणु नहीं पाया गया । 12 तारीख को 5 लिये उसमें भी नहीं पाया । 13 तारीख को 7 लिये वह भी बिलकुल ठीक था । 14 और 15 तारीख को जो सेम्पल लिये, इनका रिजल्ट अब आयेगा। इसके साथ ही क्लोरीन के 40 लिये एक दिन, 30 लिये, 50 लिये, सौ-सौ लिये, तो इनमें लगभग क्लोरीन पाई गई । तो इसलिये ऐसी कोई चिन्ता वाली स्थिति नहीं है । सरकार की जानकारी में है और हम बिलकुल मुस्तैद हैं । कलक्टर से भी हम बराबर सम्पर्क में हैं । हमारे अधिकारियों से भी हैं और मेडिकल के जो सी.एम.एच.ओ. हैं, उनके दफ्तर की रिपोर्ट भी हमारी आई है । उन्होंने भी कुछ सेम्पल लिये तो वह सेटिस्फेक्टरी पाई गई तो मैं आप सब के माध्यम से बीकानेर की जनता को विश्वास दिलाता हूं कि सरकार कोई ऐसी दुर्घटना नहीं होने देगी और बराबर लगे हुए हैं और व्यवस्था दुरुस्त होगी ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): एक, खाली एक जानकारी चाहूंगा कि क्या आप दौरा करके...

श्री सभापति: अब सरकार की तरफ से ...(व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): इन्दिरा गांधी नहर परियोजना में जहां-जहां रास्ते का गन्दा पानी मिल रहा है उसको हटाने का प्रयास करेंगे । (व्यवधान)

श्री सुशील कटारा (चौरासी): सभापति महोदय, अब 4 बार हो गई । (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): चाहे वह पंजाब में जालंधर, लुधियाना की फैक्ट्रियों का जो पानी आ रहा है... (व्यवधान)

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): अब आप देखिया ना, सभापति महोदय । (व्यवधान) इतने सीनियर सदस्य होकर, यह तो इनकी आदत हो गई । (व्यवधान)

श्री सभापति: बीकानेर से आने वाले माननीय सदस्य, आप बैठिये । (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): उसको इन्दिरा गांधी नहर परियोजना से निकालने का प्रयास करेंगे । (व्यवधान)

श्री सांवर लाल (सिंचाई मंत्री): अब सारे प्रयास, मैंने कहा ना, हम कर देंगे । (व्यवधान)

श्री सभापति: नहीं, नहीं, आपकी पूरी जानकारी हो गई । सुशील कटाराजी को बोलने दें । (व्यवधान)

श्री सांवर लाल (सिंचाई मंत्री): और जो यह आप कह रहे हो, प्रयास करना चाहिए, हमारा फर्ज है, हम करते रहे हैं और करेंगे । (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): आपकी तरह थोड़े ही हैं । (व्यवधान)

श्री सुशील कटारा (चौरासी): माननीय सभापति महोदय, इतनी बार तो स्कूलों में ही उठक-बैठक नहीं करवाई थी । इतनी बार बैठना पड़ रहा है । (व्यवधान)

श्री सभापति: नहीं, मैं आपका समय अब लिख रहा हूं, यहां से । (व्यवधान)

श्री सुशील कटारा (चौरासी): माननीय सभापति महोदय, सत्तापक्ष और प्रतिपक्ष, सभी माननीय लोग समय-समय पर शैरो-शायरी करते हैं, सब वरिष्ठ

(श्री सुशील कटारा)

लोग तो, मैंने सोचा कि आज जवान जो हैं, वह भी एक-आध शायरी करें । (व्यवधान) सीख रहे हैं, धीरे-धीरे सीख रहे हैं ।

माननीय सभापति महोदय, परिन्दे, हौसले कायम उड़ान में रखना, पैरों में जान, नजर आसमान में रखना ।

मुख्य मंत्रीजी के लिये और सभी केबिनेट के मंत्रियों के लिये, क्योंकि सब ने बजट अपना पेश कर दिया है । (व्यवधान) वह अपना वहीं, ठीक था ।

माननीय सभापति महोदय, परिन्दे, हौसला कायम उड़ान में रखना, पैरों में जान, नजर आसमान में रखना । आप बोलते हैं..

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): पैरों की जगह पंखों में जान रखना ।

श्री सुशील कटारा (चौरासी): पैरों में, पैरों में । पैरों में जान, नजर आसमान में रखना । आप बोलते हैं, सभी के लिये, मिसरी सी घुल जाती है । सभी के लिये है । तो मिसरी सी घुल जाती है । यही मिठास हमेशा जबान में रखना ।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): महावीरजी के लिये है ।

श्री सुशील कटारा (चौरासी): सभी के लिये है, हां, उनके लिये भी है ।

श्री सभापति: अब सीकर से आने वाली माननीय सदस्या कह रही हैं कि इसका जवाब दें तो इस शेर का जवाब सुन लीजिये ।

श्रीमती राजकुमारी शर्मा (सीकर): मैंने नहीं बोला, मैंने कब बोला ।

श्री सभापति: खम्में आसमां का नजारा करो तुम, जमाने में झुक कर गुजारा करो तुम, और झुकेगा वही, जिसमें कि जान है, अकड़ तो खालिस मुर्दे की पहचान है ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): वाह-वाह, वाह-वाह ।

राज्य में अकाल एवं बिजली पर विचार

श्री सुशील कटारा (चौरासी): माननीय सभापति महोदय, जिस क्षेत्र से मैं आता हूं, डूंगरपुर जिले से, चौरासी विधान सभा क्षेत्र से वहां पर 90 प्रतिशत जनजाति क्षेत्र है और इस क्षेत्र में आदिवासी बाहुल्य लोग रहते हैं । सभापति महोदय, मैं मुख्य मंत्रीजी को और ऊर्जा मंत्रीजी को धन्यवाद देना चाहूंगा कि पिछले चार सालों में उन्होंने मेरे विधान सभा क्षेत्र में हर गांव में, हर फले में

(श्री सुशील कटारा)

लाइट पहुंचाने का काम किया है । मेरे वहां पर उन्होंने जी.एस.एस. के भी, 2-3 जी.एस.एस. भी नये लगाये हैं, जिससे उस जनजाति क्षेत्र में लोगों को काफी फायदा मिल रहा है ।

चुण्डावाला, विकास नगर, बेड वगैरह 2-4 जी.एस.एस. लगाये गये हैं। मैं ऊर्जा मंत्रीजी को और मुख्य मंत्रीजी को धन्यवाद देना चाहूंगा । मैं निवेदन करना चाहता हूं माननीय सभापति महोदय, कि जनजाति क्षेत्र की आबादी पूरी तरह से बिखरी हुई रहती है और पिछले वर्षों में हमेशा कांग्रेस का राज रहा है पर उस क्षेत्र में कभी भी विधायक मद से या बहुत एक-दो जगह कहीं या दूसरे टी.ए.डी. मद से कभी भी कांग्रेस ने बिजली, घरेलू कनेक्शन लगाने का काम नहीं किया है । इन चार सालों में मैं गुजरात बार्डर पर रहता हूं और शाम पड़े देखते हैं तो गुजरात के पूरे एरिये में लाइट ही लाइट दिखती है और उधर से देखते हैं तो राजस्थान का जो बार्डर है, चौरासी विधान सभा क्षेत्र वहां अंधेरा ही अँधेरा छाया रहता था पर इन चार सालों में अगर अपन वहां देखें, अभी रात को देखें तो जिस तरह आकाश में तारे चमक रहे हो, इस तरह इन चार सालों में राजस्थान की सरकार ने वहां जनजाति क्षेत्र में लाइट लगाने का काम किया है । वहां की जनता की तरफ से मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी को और ऊर्जा मंत्रीजी को धन्यवाद देना चाहूंगा कि वहां के बच्चे जो चिमनी में पढ़ते थे, जो महिलाएं रात को चिमनी में अंधेरे में खाना बनाती थीं, आज एक सरकार की तरफ से लगाये गये बल्व के अन्दर वहां पर खाना बनाती हैं और बच्चे पढ़ते हैं । आजकल एग्जाम चल रहे हैं और बच्चों को बराबर वहां पर लाइट उपलब्ध हो रही है । लगातार मैं सम्पर्क में रहता हूं कि उस पहाड़ी एरिये में बिखरी हुई आबादी में क्योंकि एक साथ वहां पर 10 लोगों की बस्ती भी, 10 लोगों की बस्ती भी शामिल नहीं मिलती है । वहां सब अलग-अलग बिखरी आबादी में लोग रहते हैं । उनको ऐसी सुविधा माननीय मुख्य मंत्रीजी और ऊर्जा मंत्रीजी ने दी है । मैं माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से सरकार की बहुत सारी उपलब्धि जो है, जिसमें से मैं कुछ उपलब्धियां माननीय सभापति महोदय, बताना चाहूंगा कि राजस्थान में पांचों विद्युत निगमों में लगभग 20 वर्षों से भर्तियां नहीं हो रही थीं । इस बार नये पद सृजित करके हजारों लोगों को इसमें नौकरियां दी हैं । मैं माननीय मुख्य मंत्री महोदय को धन्यवाद देना चाहूंगा, माननीय सभापति महोदय, कृषि कनेक्शन में भी कृषि कनेक्शन नीति, 2004 इसको जारी किया, जिससे समय-समय पर किसानों को

(श्री सुशील कटारा)

आवश्यक संशोधन करके उनको लाभ पहुंचाने का काम माननीय मुख्य मंत्री महोदया और ऊर्जा मंत्रीजी ने किया है । इसी तरह ग्रामीण क्षेत्र में 11 के.वी. फीडरों के नवीनीकरण के कार्य, सभी 8475 फीडरों के नवीनीकरण के कार्यक्रम को प्रारम्भ किया । 2007-08 तक इनको पूरा, इनका लक्ष्य पूरा हो जाएगा । इसी तरह लगभग 3914 करोड़ रुपये व्यय होना सम्भावित है जो पूरे राजस्थान में इससे सबको फायदा होगा ।

माननीय सभापति महोदय, दिसम्बर, 2003 से अक्टूबर, 2007 तक 1431 करोड़ रुपये की अतिरिक्त बिजली कृषि क्षेत्र को खरीद कर उपलब्ध करायी गयी है, जिससे राजस्थान के सभी किसानों को, राजस्थान के सभी घरेलू कनेक्शन के सभी लोगों को काफी फायदा होगा ।

माननीय सभापति महोदय, मैं मुख्य मंत्रीजी को और ऊर्जा मंत्रीजी को धन्यवाद देना चाहूंगा कि इन्होंने 400 के.वी. के 2, 220 के.वी. के 9 और 132 के.वी. के 46 जी.एस.एस. चालू किये हैं, जिससे राजस्थान की जनता को काफी फायदा होगा ।

माननीय सभापति महोदय, निजी क्षेत्र में भी काफी प्रोत्साहन मिला है। निजी क्षेत्र में इस पावर को जालिपा-कपूरडी में 1000 मेगावाट का संयंत्र लगाने का कार्य प्रगति पर है तथा 135 मेगावाट क्षमता की प्रथम इकाई से अक्टूबर, 2008 तक विद्युत उत्पादन प्रारम्भ हो जाएगा । इसी तरह और भी निजी क्षेत्र में कई काम माननीय मुख्य मंत्रीजी ने और ऊर्जा मंत्रीजी ने किये हैं, जिससे इस राजस्थान की जनता को काफी फायदा होगा ।

माननीय सभापति महोदय, राजस्थान की सरकार ने कई नीतिगत निर्णय भी लिये हैं। जैसे कि राज्य में ऊर्जा क्षेत्र की वर्तमान एवं आगामी आवश्यकता को देखते हुए योजनाबद्ध तरीके से ऊर्जा उत्पादन में वृद्धि की योजना स्थापित करके राजस्थान को ऊर्जा उत्पादन में 2008 तक आत्मनिर्भर बनाने का जो फैसला किया है, जिससे राजस्थान की जनता को काफी फायदा होगा ।

माननीय सभापति महोदय, राज्य क्षेत्र में 1525 मेगावाट क्षमता के 7 नये विद्युत संयंत्रों की स्वीकृति दी गयी है जिससे भी राजस्थान की जनता को काफी फायदा होगा । राज्य क्षेत्र में छबड़ा-द्वितीय चरण में 500 मेगावाट

(श्री सुशील कटारा)

क्षमता की तापीय विद्युत परियोजना की स्थापना का निर्णय भी काफी फायदेमंद रहेगा ।

माननीय सभापति महोदय, राज्य क्षेत्र में 4600 करोड़ रुपये की लागत से 1000 मेगावाट की क्षमता की कालीसिंध विद्युत तापीय परियोजना की स्थापना का निर्णय भी बहुत लाभदायक, हमारी राजस्थान की जनता के लिए फायदेमंद होगा । मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी और माननीय ऊर्जा मंत्रीजी को धन्यवाद देना चाहूंगा कि कवाई में 1000 मेगावाट तथा छबड़ा तृतीय चरण 500 मेगावाट आदि कार्य प्रारम्भ करने की योजना है । सूरतगढ़ में कोटा तापीय जो आदि बहुत सारे ऐसे कार्य हैं जो राजस्थान की भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने यहां पर किये हैं ।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा कि हमारे पूरे उदयपुर सम्भाग में बिखरी आबादी रहती है, जनजाति की। वहां पर छोटे-छोटे जी.एस.एस. और लगाये जाएं और गुजरात की तरह प्रत्येक बी.पी.एल. परिवार को, इस सरकार ने काफी बी.पी.एल. परिवारों को कनेक्शन दे दिये हैं और बहुत कम मात्रा में, 20 परसेंट ही लोग रह गये होंगे तो शायद आने वाले 2008-09 तक सभी कनेक्शन पूरे हो जाएंगे ऐसा मुझे पूरा विश्वास है और माननीय सभापति महोदय, मैं ऊर्जा मंत्रीजी से यह निवेदन करना चाहूंगा कि जनजाति क्षेत्र के लोग काफी गरीब हैं और विद्युत के बिल जमा नहीं करवा पाते हैं । उनके विद्युत बिल जो कम आते हैं, लगभग 100 रुपया, 50 रुपया या उससे ज्यादा आता है तो उसकी राशि में कहीं छूट प्रदान की जाए । उस क्षेत्र के लोगों को काफी फायदा होगा ।

माननीय सभापति महोदय, अकाल की बात मैं करूंगा क्योंकि जनजाति क्षेत्र में हमेशा अकाल पड़ता है और वहां की हमारी एक कहावत है कि कांग्रेस और काल, अकाल दोनों साथ-साथ रहते हैं । इनका जोड़ा है । जब जब भी कांग्रेस का राज आता है तो राजस्थान में हमेशा अकाल पड़ता है । ऐसा वहां की हमारे जो उदयपुर सम्भाग की जनजाति क्षेत्र की मान्यता है । माननीय सभापति महोदय, आपदा मंत्री भी यहां पर विराजे हैं और पिछले साल डूंगरपुर-बांसवाड़ा में बरसात बहुत ज्यादा हुई थी । वहां पर जनजाति क्षेत्र के लोगों के यह मकान कच्चे होते हैं, कालेप्स होते हैं, मिट्टी के बने हुए होते हैं । माननीय मुख्य मंत्रीजी को मैं धन्यवाद देना चाहूंगा कि उस समय इतनी

(श्री सुशील कटारा)

भीषण परिस्थिति में उन्होंने छह हजार, दस हजार रुपये लोगों को राहत पहुंचा कर वहां के लोगों को फायदा पहुंचाया । वहां के लोग हमेशा मुख्य मंत्रीजी को धन्यवाद देते हैं । उस अकाल की विभीषिका में हमें अकाल पर क्यों चर्चा करनी पड़ रही है? क्योंकि इतने पचास वर्ष तक, 45 साल तक कांग्रेस का राज रहा है और इनके कार्यकाल को धीरे-धीरे मिटाने के लिए यह अकाल पर चर्चा करनी पड़ रही है कि आने वाले भविष्य में लोगों को इस तरह अकाल से कहीं सामना नहीं करना पड़े ।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहूंगा कि जब-जब भी जनजाति क्षेत्र में अकाल पड़े हैं तो वहां के लोगों को रोजगार में जिस तरह मुख्य मंत्रीजी ने 73 रुपये से बढ़ा कर 100 रुपया अभी मजदूरी की है, उसी तरह रोजगार गारंटी में 100 दिन का है जो गर्मियों में ही पूरे हो जाते हैं तो उसमें भी पचास-एक दिन की वृद्धि करायें और जिस तरह केशव बाड़ी योजना से वहां कुएं खुदवाने का जो काम हाथ में लिया है, माननीय मुख्य मंत्रीजी ने, उसी तरह से आवासों के लिए भी अगर थोड़ी-थोड़ी राशि उन्हें उपलब्ध करायी जाए तो निश्चित रूप से...(व्यवधान)

श्री सभापति: कृपया, समाप्त करें ।

श्री सुशील कटारा (चौरासी): बस एक मिनट में समाप्त कर रहा हूं ।

श्री सभापति: जी ।

श्री सुशील कटारा (चौरासी): माननीय सभापति महोदय, तो आवास के लिए भी राशि उपलब्ध करायी जाए तो निश्चित रूप से वहां की जनता को फायदा होगा ।

माननीय सभापति महोदय, उस क्षेत्र की जनता हमेशा राजस्थान सरकार को और माननीय मुख्य मंत्रीजी को हमेशा याद करेगी क्योंकि उन्होंने उस क्षेत्र में हमें अकाल और आपदा में और बिजली के मामले में बहुत-बहुत कार्य कराये हैं । इन्हीं बातों के साथ मेरी बात को यहीं समाप्त करूंगा । आपने समय दिया, उसके लिए धन्यवाद ।

श्री सभापति: माननीय श्री रिछपाल सिंह मिर्धा ।

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा (डेगाना): सम्माननीय सभापति महोदय, आज सदन में प्राकृतिक आपदा और बिजली पर चर्चा चल रही है । मैं आपके माध्यम से अपने कुछ विचार सदन में रखना चाहूंगा । राजस्थान में अकाल

(श्री रिछपाल सिंह मिर्धा)

पिछले लगातार करीब-करीब 10 साल से अकाल की स्थिति बनी हुई है और राजस्थान में माननीय सभापति महोदय, छप्पनिया जैसे अकाल पड़े । उस अकाल में लोगों ने खेजड़ी के छोड़े खाए ओर जो भरूट में जो बीज निकलता है उसको पीस कर अपना टाइम पास किया ।

मैं मुख्यतया पश्चिमी राजस्थान में बाड़मेर, नागौर, बीकानेर, इन जिलों में अकाल की स्थिति है और विशेषकर मैं नागौर जिले से हूं, मैं मेरे क्षेत्र डेगाना के संबंध में मेरी बात रखना चाहूंगा । नागौर जिले में करीब-करीब सभी तहसीलों में - डेगाना, मेड़ता, परबतसर, डीडवाना, नावां, खींवसर सभी जगह, सभापति महोदय, अकाल की स्थिति बनी हुई है और आज तक मैंने जो सदन में बातें कहीं, मैंने कभी आरोप-प्रत्यारोप किसी पर नहीं किये । पिछले वर्ष माननीय मंत्रीजी, जो अभी मंत्री नहीं हैं, अकाल राहत के काम खोले थे । हमने जब निवेदन किया कि लेबर सीमा बढ़ाई जाये, बढ़ाई भी थी पर इस साल जो अकाल की स्थिति बनी हुई है और जिस तरीके से सरकार को काम करना चाहिये, वह कार्य अभी अकाल राहत में शुरू नहीं कर पाई । आज राजस्थान में अकाल के बावजूद कई तरह की समस्याएं राजस्थान के किसानों पर आ पड़ीं और अकाल का ज्यादा असर ग्रामीण इलाके में, जो लोग हैं और जो सावणूं खेती करते हैं, उस पर ज्यादा अकाल का असर आता है, न कि शहरी लोगों पर आता है । शहर में अकाल हो तो कोई फर्क नहीं पड़ता है चाहे सुकाल हो भी तो कोई फर्क नहीं पड़ता । सावणूं खेती करने वाले पर पड़ता है। नहरी इलाके की खेती करते हैं उन पर भी ज्यादा अकाल का असर नहीं आता। मैं आपके माध्यम से राज्य सरकार से यह निवेदन करना चाहूंगा कि जिन जिलों में अकाल है, उनमें सरकार ने जो अकालग्रस्त गांव घोषित किये हैं, उनमें मेरे क्षेत्र में मात्र 10 गांव घोषित हुए हैं अकाल में । मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्रीजी से यह निवेदन करना चाहता हूं करीब 70-72 गांवों में अकाल की स्थिति थी । अब सरकार के अकाल नापने का थर्मामीटर कौनसा है, यह मेरे को जानकारी नहीं है । गिरदावरी किस तरीके से होती है, किस तरीके से अकाल में जो गांव घोषित किये जाते हैं, उनमें अकाल होना चाहिये । 50 प्रतिशत से ज्यादा खराबा मेरे क्षेत्र के गांवों में हैं । परबतसर में है, डीडवाना में है, मेड़ता में है, सब गांवों में खराबा है, फिर भी इस सब के बावजूद गिरदावरी सही नहीं होने की वजह से अकाल का सही आकलन नहीं हो पाया । आज तक अकाल के काम शुरू नहीं कर पाये ।

(श्री रिछपाल सिंह मिर्धा)

मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्रीजी से यह मांग करता हूं कि नागौर जिले में पशुधन भी अधिक संख्या में हैं। इसलिए आप कृपा करके अब यह मार्च खत्म होने जा रहा है, अप्रैल से अकाल राहत के कार्य चला दें, जरूरतमंद को मजदूरी दिला दें और पशुओं के लिए चारा डिपो भी खोल दें। और दो-तीन सुझाव हैं, जो अकाल राहत के कार्य चलाते समय चारा डिपो खोले जाते हैं, सभापति महोदय, उनमें भी भ्रष्टाचार कर जाते हैं । चारा डिपो जो गाड़ियां चारा लेकर आती हैं, कई बार स्कूटर नम्बर लगाकर, अन्य नम्बरों से चारा परिवहन में...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): स्कूटरों के नम्बर लगाये, वह समय कौनसा था?

श्री सभापति: इन्होंने यह नहीं कहा किसका समय है । ऐसा कोई भी करे, गलत है । (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): और वह एफ.आई.आर. दर्ज हुई थी 200 से ज्यादा, वह किसका समय था? (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): नहीं, लेकिन आपके समय यह भी हुआ है कि अकाल होते हुए खसरा गिरदावरी को गलत करवा दिया और क्रोप का पैटर्न गलत दर्ज करवा दिया और बाद में मान लिया । राजनैतिक आधार पर अकाल घोषित कर दिया । (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): हमने कृषि बीमा योजना चालू तो की । यहां चिल्ला-चिल्लाकर मर गये थे, उधर बैठते थे जब । (व्यवधान)

श्री सभापति: हिण्डौली से आने वाले माननीय सदस्य, बैठें । (व्यवधान)

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा (डेगाना): वह कही है, कहूंगा न आपकी । (व्यवधान)

श्री सभापति: डेगाना से आने वाले माननीय सदस्य, अपनी बात जारी रखें । (व्यवधान)

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा (डेगाना): सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं जिस किसी ने भ्रष्टाचार किया, मैं आपके समय का नहीं कह रहा हूं, पिछले शासन का नहीं कह रहा हूं, मैं तुलना नहीं

(श्री रिछपाल सिंह मिर्धा)

कर रहा हूं पर जिस किसी ने अकाल में भ्रष्टाचार किया, उनके घर जाकर देख लो आप, किसी को तो लकवा हो गया, किसी को ब्रेन हेमरेज हो गया, किसी की टांग कट गयी । ऐसी हालत हो गयी उनकी । मैं किसी व्यक्ति विशेष पर आरोप नहीं लगा रहा हूं । (व्यवधान)

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): वह यहां नहीं, बिहार के अंदर है।

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा (डेगाना): बिहार की तो आप जानो, मैं राजस्थान की बात कर रहा हूं और विशेषकर मेरे नागौर जिले की कर रहा हूं । सभापति महोदय, बिहार की इतनी बड़ी राजनीति में मैं नहीं जाना चाहता । मैं तो यहां रोज आये दिन किसानों की चर्चा होती है । इसी सदन में किसानों के बड़े-बड़े सारगर्भित भाषण देते हैं । हम किसानों को इस योजना से यह लाभ देंगे, अनेकानेक योजनाएं चलती हैं । मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं किसानों को मात्र उसका 15 प्रतिशत फायदा नहीं मिलता । चाहे सरकार किसी की भी रही हो, आपके माध्यम से यह भी सुझाव देना चाहता हूं कि अकाल में अलग-अलग जिलों में अलग-अलग तरह के काम उपयोगी हैं । जैसे हमारे जिले में ज्यादातर पक्के कार्य लिये जायें तो वह उपयोगी है और उसी में ही मेरे इलाके में जो तालाब, खुदाई के 4-5 ऐसे छोटे बांध हैं, उनकी चादर उठाने व तालाबों की पाळों के ऐसे काम अकाल में करवाये जायें और आज मात्र 10 गांव घोषित हुए हैं । औसत से कम वर्षा हुई है, सभापति महोदय, पिछले दो सालों में, तो मैं आपके माध्यम से यही निवेदन करना चाहता हूं कि अच्छे काम कराये जायें और समय रहते अब राहत कार्य खोल दिये जायें ।

पंजीकृत गौ-शालाओं को अनुदान जारी रखा जाये । हमारे नागौर जिले में पशुधन का विशेष महत्व है । इस बात को मैं सदन में कई बार कह चुका और भी आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि पंजीकृत गौ-शालाओं को अनुदान देकर हमारी जो नागौर नस्ल की गाय और बछड़े हैं, उनको बचाने का काम सरकार करे ।

तीन साल के बछड़े पर जो रोक थी, उसको सरकार की तरफ से ऐसी सूचना मिली है, मेरी जानकारी में मैं अभी नहीं कह सकता, क्या किया?

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): सूचना ही नहीं, मंत्रिमण्डल ने फैसला ले लिया और उसका अब हम इसी सदन में करेंगे । (व्यवधान)

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा (डेगाना): अगर दो साल की उसकी उम्र कर दी है तो मैं इसके लिये सरकार को मेरी तरफ से धन्यवाद देना चाहता हूं । हमारे नागौर का यह एक बहुत अहम मुद्दा था कि नागौर में बड़े पशु मेले लगते थे और मेले करीब पिछले पांच साल से खतम हो गये । सभापति महोदय, अब दो साल का जो किया, दो साल तक की उम्र के बछड़ों को बाहर भेजने का कर दिया, हमारे नागौर का बछड़ा आज तक कभी कटने नहीं गया। सभापति महोदय, कटने के लिये दूसरे बछड़े जाते होंगे, मैं यह नहीं कहता कि नहीं कटते पर नागौर की नस्ल का बछड़ा नागौर में परबतसर, डीडवाना, नागौर, इन मेलों में एक लाख से ऊपर तक बैलों की जोड़ी बिकी हुई है और यह बछड़े, यह बैल कटने के लिये नहीं जाते हैं । यह नस्ल अब बचेगी, अगर यह हो गया दो साल वाला तो इससे हमारे पशुधन को काफी राहत मिलेगी । (व्यवधान)

श्री सभापति: जब आपका नम्बर आये तब बोलिये । (व्यवधान)

श्री जीतमल खांट (बागीडोरा): माननीय सभापति महोदय, मैं एक निवेदन करूंगा ।

श्री सभापति: नहीं-नहीं, आपका बोलने वालों में नाम है ।

श्री जीतमल खांट (बागीडोरा): नहीं-नहीं, सभापति महोदय, मेरा एक निवेदन है । (व्यवधान)

श्री सभापति: आपका नम्बर आये तब बोल दीजिये न ।

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा (डेगाना): सुझाव रख दो ।

श्री सभापति: नहीं-नहीं ।

श्री जीतमल खांट (बागीडोरा): आपका समर्थन है मेरा ।

श्री सभापति: वह समर्थन सरकार भी इनकी समस्या के प्रति ... (व्यवधान) आप खत्म कर चुके क्या?

श्री जीतमल खांट (बागीडोरा): बांसवाड़ा, डूंगरपुर और उदयपुर, उन जिलों के सारे आदिवासी लोग जब यहां बैल खरीदने के लिए जाते हैं ... (व्यवधान)

श्री सभापति: माननीय श्री अर्जुन मीणा । (व्यवधान) नहीं, यह गलत बात है । आप अपनी बात चालू रखिये । इनका नम्बर है बोलने का। (व्यवधान) माननीय जीतमलजी, आपका नम्बर आये तब बोल दीजिये न। (व्यवधान)

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा (डेगाना): यह इसी संबंध में कह रहे थे ।

श्री सभापति: आप अपनी बात कहिये । जब सरकार ने यह कह दिया कि सरकार आपकी चिन्ता के प्रति समाधान करने के लिए प्रयत्नशील है, फिर क्या बात रह गयी? (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): मंत्रिमण्डल में फैसला हो गया ।

श्री सभापति: फैसला हो गया मंत्रिमण्डल में । उस काम को करने का धन्यवाद दे दिया, फिर समर्थन की जरूरत कहां है? (व्यवधान)

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा (डेगाना): धन्यवाद दिया और मुख्य सचेतक साहब के सामने दिया, कैसे नहीं दिया?

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): आपने धन्यवाद मुख्य मंत्रीजी को दिया है ।

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा (डेगाना): सरकार को दिया है ।

श्री सभापति: माननीय रिछपालजी, अपनी बात कहिये, सुझाव दीजिये। आपका समय जा रहा है ।

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा (डेगाना): माननीय सभापति महोदय, मेरा समय वैसे भी मैं कम बोलता हूं और खास मुद्दे की बात बोलता हूं ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): टोंक की नस्ल को बचाने का ...(व्यवधान)

श्री सभापति: टोंक में भी है क्या नस्ल? (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): टोंक की नस्ल के बारे में आपको पता है । (व्यवधान)

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा (डेगाना): सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से बिजली के संबंध में कुछ सुझाव देना चाहूंगा । हमारे नागौर में 33 के.वी. जी.एस.एस. बने हैं, फिर भी अभी उनकी कमी है । ऐसे जी.एस.एस. की जहां आवश्यकता है, वह जी.एस.एस. 33 के.वी. के बनाये जायें ।

सभापति महोदय, कर्मचारियों की इन कम्पनियों में बहुत भारी कमी है । एक हैल्पर चार-चार फीडर पर देखता है और अभी पिछले पांच-सात दिनों में मेरे इलाके में भेंरूदा में इस बिजलीघर के एक हैल्पर की मृत्यु हो गयी । मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्रीजी से यह निवेदन करना चाहूंगा कि उसको उचित मुआवजा दिया जाये और उसके परिवार को, मरा है तो उसकी जगह

(श्री रिछपाल सिंह मिर्धा)

नौकरी उसके लड़के को दे दें और यह जो अनावश्यक चैकिंग बिजली वाले करते हैं, उसके संबंध में मैं निवेदन करना चाहूंगा कि जो चोरी करते हैं, आज आपके इंडस्ट्रीज में करोड़ो-अरबों रुपये बकाया पड़े हैं और राजस्थान में किसान कितनी बिजली लेता है, कितना पैसा उसमें बकाया है । सबसे ज्यादा चोरी दिखती है किसान की कि किसान चोर है । किसान चोर नहीं है । सभापति महोदय, किसान की मजबूरी है, क्योंकि आज जो अनावश्यक चैकिंग कर रहे हैं, वह घर बैठे लोड बढ़ा देते हैं । तकनीकी इंजीनियर चेयरमैन के पद पर होने चाहिये । मैं यह नहीं कहता कि आई.ए.एस. अधिकारियों को आप कम्पनी के चेयरमैन मत रखो ।

(समय : 14.00 बजे)

तकनीकी इन्जीनियर जो चेयरमैन बनेंगे, उनको बिजली के बारे में पूरी जानकारी है नीचे से लगा कर ऊपर तक की, बिजली कैसे पैदा होती है, क्या बिजली का उपयोग है । मेरा यह सुझाव है कि तकनीकी अधिकारियों को इन कम्पनियों के बड़े पदों पर रखा जाए ।

माननीय सभापति महोदय, नये मीटर जो अभी लगे हैं वो ज्यादा जम्प करते हैं, उसमें चार तरह की बत्ती जलती है, लाल जलती है, हरी जलती है और एक पीली जलती है । इस तरीके से वो जम्प कर रहे हैं ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): चार नहीं तीन ।

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा (डेगाना): तीन होगी, एक ज्यादा बतायी मैंने। एक कम कर देता हूं । तो यह तीन बत्ती वाला मीटर राजस्थान के किसानों के लिए दुखदायी हो रहा है तो इसमें जो यह लोढ बढ़ाने का काम इनके आफिसों में हो रहा है उसकी आप जांच करा लें, जिसके दस होर्स पावर की मोटर है उसका दस से बिल दें और जो शीतलहर और पाले में हैं, माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से माननीय मंत्री महोदय से निवेदन करूंगा कि उनके बिल तो आप माफ कर दें, यह आपकी बड़ी कृपा होगी राजस्थान के किसानों पर और नागौर जिले के किसानों पर ।

माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से माननीय ऊर्जा मंत्रीजी से मांग करता हूं कि एक 32 का जी.एस.एस. मेरे इलाके में डेगाना में बना दें तो इसका फायदा आपको तीन तहसीलों में मिलेगा, उसकी बिजली की व्यवस्था भी ठीक होगी, अच्छे वोल्टेज मिलेंगे, उसका फायदा किसानों को भी मिलेगा ।

(श्री रिछपाल सिंह मिर्धा)

सभापति महोदय, मैं इतना ही आपके माध्यम से ऊर्जा मंत्रीजी को सुझाव देना चाहता हूं । सभापति महोदय, आपने जो समय दिया उसके लिए आपका आभार व्यक्त करते हुए जय हिन्द । जय भारत ।

श्री सभापति: माननीय श्री अर्जुन लाल मीणा ।

श्री अमराराम (धोद): माननीय सभापति महोदय, बीच में से, उपाध्यक्षजी ने व्यवस्था दी थी...(व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): माननीय सभापति महोदय, सातवें माननीय सदस्य बोल रहे हैं, कम से कम एक नाम तो इधर से... (व्यवधान) नहीं, नहीं, गलत बात है ।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): यह बीच वालों ने क्या गुनाह कर दिया?

श्री सभापति: इसके बाद । (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): सभापति महोदय, इसके बाद में। (व्यवधान)

श्री सभापति: यह सही है, आप बिराजें ।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): नहीं, पहले । दो, एक-एक, दो, यह चलना चाहिए ।

श्री सभापति: ठीक है, बैठिये । बिराजिये आप कृपया । (व्यवधान) माननीय अर्जुन लालजी मीणा, आप अपना वक्तव्य प्रारम्भ करें ।

श्री अर्जुन लाल मीणा (सलूम्बर): माननीय सभापति महोदय, आज बिजली, अकाल पर चर्चा हो रही है, मैं आपके माध्यम से यह निवेदन करना चाहता हूं कि अभी हाल ही में राजस्थान में फसल गिरदावरी हो रही है राजस्थान में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक वाले खराबे के 12 जिले जो घोषित किये हैं जिसमें 4309 गांवों को अभावग्रस्त घोषित किया गया है और, माननीय सभापति महोदय, यह राजस्थान में पहली बार हमारी भारतीय जनता पार्टी की यशस्वी माननीय मुख्य मंत्री वसुन्धरा राजेजी ने जो इन किसानों के लिए जिनके शीतलहर से और पाले से खराबा हुआ है 126 करोड़ रुपये की जो पैकेज की घोषणा की है, निश्चित रूप से जो सी.आर.एफ. के नोर्म्स में नहीं है, शीतलहर और पाला सी.आर.एफ. के नोर्म्स में नहीं होते हुए भी राजस्थान के किसानों को राहत देने के लिए जो 126 करोड़ की घोषणा की है, मैं निश्चित रूप से उन सब किसानों की तरफ से, राजस्थान की उस जनता की तरफ से धन्यवाद देना चाहता हूं ।

(श्री अर्जुन लाल मीणा)

माननीय सभापति महोदय, मैं यह भी आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि दक्षिणी राजस्थान में अधिकतर जो जनजाति बंधु हैं, अधिकतर जिनके पास खेती की होल्डिंग्स कम है, एक बीघा दो बीघा से ज्यादा नहीं है वे 12 महीने में मुश्किल से तीन महीने खेती करते हैं बाकी समय में वे लोग गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश अपनी आजीविका चलाने के लिए बाहर चले जाते हैं और राजस्थान सरकार ने, माननीय मुख्य मंत्रीजी ने पहली बार जो न्यूनतम मजदूरी श्रमिकों को मिलती है 73 रुपये उसको बढ़ा कर 100 रुपये की जो घोषणा की है, मैं धन्यवाद देना चाहता हूं माननीय मुख्य मंत्रीजी को जो एक श्रमिक के लिए 100 रुपये की घोषणा की है । मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं ।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि पिछले साल हमारे दक्षिणी राजस्थान में उदयपुर, डूंगरपुर और बांसवाड़ा जिले में अतिवृष्टि हुई थी और अतिवृष्टि से फसल नष्ट हुई । हमारे जो जनजाति बंधु हैं उनके अधिकतर मकान केलु पोश होते हैं और अधिकतर लोगों के मकान अधिक बारिश होने की वजह से सब के मकान गिर गये थे । मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं, माननीय मुख्य मंत्रीजी के निर्देशानुसार राज्य सरकार संवेदनशीलता को देखते हुए उनको एक महीने के अन्दर-अन्दर जिन आदिवासी भाइयों के केलु पोश मकान गिर गये 6,000 से लगा कर 10,000 तक लगभग उस मेरे सलूम्बर विधान सभा क्षेत्र की बात कर रहा हूं, उनको दो करोड़ का लोगों को भुगतान किया, दो करोड़ राशि अकेले सलूम्बर विधान सभा क्षेत्र में भुगतान किया । यह अपने आप में एक उदाहरण है और यह संवेदनशील सरकार का एक उदाहरण पेश किया है ।

माननीय सभापति महोदय, मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि आज जो बिजली पर चर्चा हो रही है, हमारे दक्षिणी राजस्थान में किसानों के पास होल्डिंग कम है। उनको विद्युत कनेक्शन, जो एस.सी. और एस.टी. के किसान भाई हैं या घरेलू कनेक्शन लेना चाहते हैं उनको हाथों-हाथ, आज ही आइये और आज ही आप कनेक्शन ले जाइये, उनको किसी भी तरह की कनेक्शन लेने में कोई समस्या नहीं है। लेकिन मैं, सभापति महोदय, आपके माध्यम से माननीय ऊर्जा मंत्रीजी से निवेदन करना चाहता हूं कि सामान्य कैटेगिरी के जो हमारे किसान भाई हैं, जिनके पास भी ज्यादा होल्डिंग्स नहीं है, पांच बीघा से, दस बीघा से ज्यादा जमीन किसी के पास नहीं है, वो लोग

(श्री अर्जुन लाल मीणा)

लाइन में लगे हुए हैं, उनको दो-तीन साल लग जाते हैं। मेरा निवेदन है कि उनके भी जो टी.एस.पी. क्षेत्र के अन्दर सामान्य श्रेणी के किसान भाई रहते हैं उनके भी कनेक्शन में प्राथमिकता तय की जाए ताकि उन लोगों को भी हाथों-हाथ कनेक्शन मिले । और वो अपने मुश्किल से साढ़े तीन और पांच हार्स पावर की मोटर लगाते हैं, उससे ज्यादा वहां चलती ही नहीं है, इतनी ज्यादा उनके पैदावार नहीं होती है, खेती नहीं होती है और न होल्डिंग्स है, तो मेरा निवेदन है कि उन सामान्य श्रेणी के किसानों के लिए भी कोई ऐसी व्यवस्था हो जाए ताकि उनको भी कनेक्शन मिलें ।

माननीय सभापति महोदय, अभी पिछले चार साल में जो हमारे पांच डिस्कॉम बने हुए हैं, जयपुर है, जोधपुर है, अजमेर है, बीकानेर है और कोटा है इन डिस्कॉम में जे.ईएन., ए.ईएन. और हमारे टैक्निकल पद खाली पड़े थे। माननीय मंत्री महोदय ने अभी हाल ही में विज्ञापन जारी किया है आर.पी.एस.सी. के माध्यम से, विभाग के माध्यम से जे.ईएन. की, ए.ईएन. की पोस्ट भरने का जो काम इन्होंने हाथ में लिया है, निश्चित रूप से, सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री महोदय को और यशस्वी माननीय मुख्य मंत्रीजी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि हमारे उस क्षेत्र के जो जे.ईएन. और ज्यादातर जो उन लोगों का 45 परसेंट का रिजर्वेशन उसमें भी किया गया है, उनको निश्चित रूप से लाभ मिलेगा और मैं आशा करता हूं कि यह पद शीघ्र ही भर कर और बिजली विभाग में जो स्टाफ की कमी है उसकी पूर्ति की जायेगी ।

माननीय सभापति महोदय, हमारे उस क्षेत्र में जो टी.ए.डी. विभाग है, जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग है यह विभाग भी बिजली क्षेत्र में भी काम करता है और बजट एलोकेशन करता है । पिछले साल, मेरे विधान सभा क्षेत्र की बात कर रहा हूं, लगभग 25 गांव ... (व्यवधान)

श्री सभापति: माननीय सदस्य, श्री बंशीलालजी खटीक, वो सुझाव दे रहे हैं ऊर्जा मंत्रीजी को, बहुमूल्य सुझाव, आप कृपया डिस्टर्ब मत करें, अपनी सींट पर जाएं ।

श्री अर्जुन लाल मीणा (सलूम्बर): जनजाति मंत्रीजी ने जो ढाणी हैं जिनमें ज्यादातर वहां जनजाति क्षेत्र, बिखरी हुई आबादी है, दस-दस मकान और एक अलग-अलग मकान, बिखरी हुई आबादी में रहते हैं, जनजाति कोटे से

(श्री अर्जुन लाल मीणा)

जो बस्ती थी, जनजाति बस्तियां थीं, जो विद्युत लाइन नहीं थी, जनजाति कोटे से लगभग 25 गांवों को मेरे विधान सभा क्षेत्र में बस्ती विद्युतीकरण के माध्यम से बिजली पहुंचायी गयी और पूरे दक्षिणी राजस्थान में जहां-जहां भी जनजाति बंधुओं के लाइट नहीं है, घरेलू कनेक्शन नहीं है इस सत्र में भी काफी, लगभग चार-पांच करोड़ का बजट रखा है बिजली क्षेत्र में कनेक्शन जोड़ने का । मैं निश्चित रूप से माननीय मुख्य मंत्री महोदय को, जनजाति मंत्रीजी को भी धन्यवाद देना चाहता हूं कि इस माध्यम से । जिन आदिवासियों को एक लट्टू जलाने का बिजली कनेक्शन मिलता है या अपने घर में रोशनी लाने के लिए जो बिजली कनेक्शन लेता है उनको इसका लाभ मिलेगा और माननीय मुख्य मंत्रीजी ने घोषणा करी है कि बी.पी.एल., ज्यादातर आदिवासी परिवार बी.पी.एल. परिवार में आते हैं, निश्चित रूप से इस योजना से उनको लाभ मिलेगा ।

माननीय सभापति महोदय, अभी जो नीतिगत फैसले लिये गये हैं उसे जितने भी हमारे यहां राज्य सरकार ने ऊर्जा क्षेत्र में आने वाले आगामी आवश्यकता को देखते हुए योजनाबद्ध तरीके से ऊर्जा उत्पादन में वृद्धि में स्थापित राजस्थान को ऊर्जा पर आत्मनिर्भर बनाने की जो घोषणा करी है । मैं समझता हूं अभी हमारे क्षेत्र में बिजली की कोई समस्या नहीं है, आराम से पांच-छह घंटे से ज्यादा जरूरत एक किसान को नहीं पड़ती है, उनके होल्डिंग्स कम हैं ।

इसलिए उस क्षेत्र में बिजली के नाम से कोई धरने प्रदर्शन नहीं हो रहे हैं । किसी भी तरह से जनता में एजीटेशन नहीं है । बिजली बराबर मिल रही है और घरेलू कनेक्शनधारियों को, आजकल बोर्ड की परीक्षा चल रही हैं, बच्चों को भी सुबह शाम रात को पढ़ने के लिए बराबर बिजली मिलती है । इसलिए बिजली की क्षेत्र में कोई समस्या नहीं है । मैं अपनी बात को समाप्त, आप सभी वरिष्ठ साथियों ने शेरो-शायरी से समाप्त किया था, मैं भी प्रयास करता हूं कि कोई मेरी तरफ से एक

सेवा करने को राजस्थान की आये हैं ये, दीन दुखियों के आंसू उठाये हैं ये
मुख्य मंत्रीजी आपके हाथ हैं ये, आदिवासियों के दुखड़े मिटाये हैं ये ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): धन्यवाद ।

श्री सभापति: माननीय श्री बहादुर सिंहजी गोदारा ।

श्री बहादुर सिंह गोदारा (नोहर): माननीय सभापतिजी, आज अकाल और बिजली पर चर्चा हो रही है । मैं भी इसमें एक सरकार को सुझाव देना चाहता हूं कि सही मायने में राजस्थान में अकाल कोई समस्या नहीं है, अकाल पड़ता नहीं है अकाल गेरा जाता है। मैं पिछले दिनों मेरे एक बहुत ही छोटे से पिछड़े हुए गांव में किसान के यहां बैठने के लिए गया तो उस किसान ने मुझसे कहा, अनपढ़ आदमी था, उसने कहा बहादुर सिंहजी, अकाल पड़ते नहीं अकाल तो गेरे जाते हैं । मैंने कहा कैसे कि मेरे खेत में 132 क्विंटल लूंग हुआ है । मैंने सौ क्विंटल लूंग चालीस हजार का बेचा है और बत्तीस क्विंटल लूंग में मैं मेरे खेत का और कचरा मिलाकर के चार मेरे पशु जिवा लूंगा । ऐसा ही मैंने पिछले साल किया था, ऐसा ही मैंने इस साल किया है और ऐसे ही मैं अगले साल करूंगा । एक बूंद नहीं पड़ेगी तब भी मेरे यहां इतना हो जाएगा ।

इसलिए अकाल पड़ते नहीं अकाल तो गेरे जाते हैं । अकाल यह इस प्रशासन की देन हैं, एग्रीकल्चर डिपार्टमैंट की देन हैं, हार्टीकल्चर डिपार्टमैंट की देन हैं । एक हमारा कल्पतरु खेजड़ी इतना उपयोगी वृक्ष है अगर हम इसकी उपयोगिता का फायदा उठा लें, यह बढ़ता हुआ रेगिस्तान रुक जाएगा, बिगड़ता हुआ पर्यावरण सुधर जाएगा और चारे की जो भंयकर किल्लत है इस रेगिस्तानी क्षेत्र में है वह भी मिट जाएगी । खेजड़ी जैसा चारा, पौष्टिक चारा किसान की खेती में और कोई पैदा नहीं होता । खेजड़ी के पत्तों का भाव क्या है चार रुपये, पांच रुपये किलो, दस साल की एक खेजड़ी के ऊपर बीस पच्चीस किलो लूंग उतर जाता है, दस पन्द्रह किलो अनाज की कीमत के बराबर होता है, एक पैसा लगता नहीं और पन्द्रह किलो अनाज एक खेजडी के ऊपर लग जाय इससे बड़ी बात और क्या हो सकती है । चाहे बरसात एक बूंद नहीं हो, भंयकर सूखा, उसमें भी खेजड़ी हरी रहती है ।

आज भी आप जाकर देखेंगे तो आपको और सारी फसलें बरबाद मिलेंगी इस भंयकर सर्दी की वजह से लेकिन खेजड़ी लहलहाती हुई मिलेगी । इतना ही नहीं माननीय सभापतिजी, हमारे कुछ किसानों का यह भी कहना है कि दुनिया में हिन्दुस्तान के बड़े से बड़े पूंजीपति की लड़की की शादी में और कोई सब्जी बनेगी नहीं बनेगी लेकिन सांगरी की सब्जी जरूर बनेगी और उस सांगरी का भाव क्या है सौ रुपये से लेकर ढाई सौ रुपये किलो । सौ रुपये से लेकर ढाई सौ रुपये किलो की सब्जी इस खेजड़ी पर पैदा होती है और दस पन्द्रह किलो अनाज की कीमत के बराबर इसका चारा पैदा होता है और यह सबसे पौष्टिक चारा होता है ।

(श्री बहादुर सिंह गोदारा)

आज हम जानते हैं कि गुजरात और राजस्थान की स्थिति यह है कि खेती के भरोसे कर्जदार होता जा रहा है किसान, सुसाइड करता जा रहा है किसान । लेकिन जिस दिन डेयरी को हाथ में ले लिया, डेयरी का अगर काम हमारे यहां थोड़ा सा आगे बढ़ जाएगा तो किसान को सुसाइड करने की जरुरत नहीं पड़ेगी और बारह महीने हरा चारा देने वाली यह खेजड़ी और पनपा दी जाय किसान के खेत में तो हमारे यहां रेगिस्तान मिट जाएगा, अकाल भी मिट जाएगा, किसानों की यह कर्जे की स्थिति जो है वह भी सुधर जाएगी ।

अकाल सहायता में जितना पैसा सरकार खर्च करती है, एक साल के अकाल सहायता के खर्चे के बराबर अगर किसान को अनुदान देकर किसान के खेत में अगर रॉ खेजड़ी लगा दी जाय अच्छी नस्ल की और वह एक जिले के अन्दर अगर बीस पच्चीस खेजड़ी भी लगा दी जाय तो इस भंयकर शीतलहर को भी यह खेज़डियां रोकेंगी पांच साल के बाद, जिससे आये साल फसल जल जाती है और तूफान भी आते हैं उनको भी यह खेजड़ी रोकने लायक बन जाएगी । आज इसकी लकड़ी की कीमतें दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं।

इतना ही नहीं माननीय सभापतिजी, आज इस तरह के डवलपमेंट भी दुनिया में हो चुके हैं कि हमारा जो यह कचरा है, इस कचरे के ईंधन से भी बिजली पैदा की जा सकती है । हमारी खेजड़ी की यह जो टहनियां हैं अगर इसको सही ढंग से इस्तेमाल कर लिया जाय तो इससे इतनी बिजली पैदा की जा सकती है कि किसान की आवश्यकता पूरी हो सकती है बगैर एक पैसा खर्च किये । तो यह हमारा कल्प वृक्ष इतना बहुआयामी उपयोगी है । अगर सरकार इसकी तरफ ध्यान दे और अगर हमारा एग्रीकल्चर, हार्टीकल्चर डिपार्टमेंट इसकी तरफ ध्यान दे, इसकी उपयोगिता को समझाकर, किसान को अगर उपयोगिता समझाई जाय तो बगैर कोई पैसा खर्च किये हुए किसान इस खेजड़ी को अपने खेत में लगा कर आपके पर्यावरण की समस्या, आपके बढ़ते हुए रेगिस्तान की समस्या, चारे की कमी यह सारी की सारी समस्याओं का समाधान अकेली खेजड़ी निकाल सकती है ।

मैं ज्यादा नहीं कहना चाहता । मेरा तो यह सुझाव है कि सरकार को इसके ऊपर गम्भीरता से सोचना चाहिए और किसान को अनुदान देकर के किसान के खेत में लाइन में अच्छी किस्म की खेजड़ियां लगाई जाए। पांच साल के बाद अगर आप इसके रिजल्ट का अनुमान लगायेंगे तो आपको यह

(श्री बहादुर सिंह गोदारा)

महसूस होगा कि आपने इन्वेस्टमैंट कुछ भी नहीं किया और आज जो यह पैदावार बन रही है खेजड़ी की वह उस इन्वेस्टमैंट के मुकाबले में कहीं सौ गुना ज्यादा होगी । इसलिए यह घाटे का सौदा नहीं है सरकार के लिए, एग्रीकल्चर डिपार्टमैंट के लिए, हार्टीकल्चर डिपार्टमैंट के लिए ।

तो मेरा यह सुझाव है कि सरकार को इसके बारे में बड़ी गम्भीरता से सोचना चाहिए और किसान को अनुदान देकर उनके खेतों में यह खेजड़ी रों में लगाई जानी चाहिए । खेजड़ी के नीचे का और मैं बता दूं, सभापतिजी, खेजड़ी के नीचे फसल बड़ी अच्छी होती है, जमीन उपजाऊ बनती है और जो कोरापन होता है जमीन का वह भी मिट जाता है । इसलिए यह बहुआयामी है । धन्यवाद ।

श्री सभापति: माननीय श्री श्रवण कुमारजी सीट पर पधारें । समाप्त कर दिया आपने । माननीय श्री मंगलारामजी गोदारा ।

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): माननीय सभापतिजी, आज अकाल और बिजली पर चर्चा हो रही है । आपने समय दिया उसके लिए धन्यवाद । मेरे यहां बीकानेर जिले में भंयकर अकाल पड़ता है और इस साल भी भंयकर अकाल था उसके बावजूद भी एक दो गांव अकाल में लिये बाकी सारे गांव जमाने में दिखाये हैं और बार-बार वहां पूछने पर यह जवाब मिलता है कि आपके इन गांवों में जमाना है तो हमने यह पूछा कि जमाना कैसे है बरसात तो हुई नहीं तो जवाब यह मिलता है कि आपके यहां हरियाली है । माननीय सभापति जी, मेरे यहां जैसे एक गांव में 200 ट्यूबवैल हैं और 400 घरों की आबादी है, 200 ट्यूबवैलों पर तो हरियाली है बाकी दौ सो जो घर हैं बरसात हुई नहीं, उनके एक पाव दाना नहीं हुआ, एक पाव। और वहां भी गिरदावरी के टाइम में यह दिखाया जाता है कि वहां जमाना है, उनके हालत चिन्ताजनक है। मेरा मंत्री महोदय से निवेदन है कि वहां अकाल राहत के कार्य खोले जाए, और कुछ न कुछ व्यवस्था करें । गिरदावरी पहले हुई वह इसी तरीके से और अभी जो गिरदावरी हुई है उसी में से 17 परसेण्ट खराबा दिखाया है पूरी तहसील में जब कि चने में माननीय सभापति महोदय, चने की जो फसल है फसल बढ़िया खड़ी है । बाकी चने में गेगरी एकदम नहीं है । जो चना चार क्विंटल बीघे का होना था वह आज 50 किलो और 20 किलो चना उतरेगा । वहां गिरदावरी की है वह खाली हरियाली देख कर की है । हरियाली

(श्री मंगलाराम गोदारा)

जिस जगह है वहां इसमें अनाज है नहीं । यही हालत गेहूं की है, यही हालत जीरे की है, यही हालत सरसों की है । गिरदावरी है वह 17 परसेण्ट, कहीं 20 परसेण्ट, कहीं 10 परसेण्ट, कहीं 50 परसेण्ट जब कि खराबा है वास्तविकता यह है कि 80 और 90 परसेण्ट खराबा हुआ है ।

बिजली के जो बिल माफ किये हैं उनमें भी लघु सीमान्त कृषक के । हमारे यहां तो कोई लघु सीमान्त कृषक हैं ही नहीं और उनका भी कोई है एक आधा तो खराबा नहीं दिखाया है । जो घोषणा की है वह एकदम सरासर ऐसी घोषणा है कि पैसे इनके खजाने में ही रहेंगे क्योंकि किसी किसान को पैसे नहीं मिलेंगे । हालत आज किसान की यह है बिजली के बारे में कि बिजली मिल नहीं रही है । तीन चार घंटे मुश्किल से बिजली मिल रही है और फसलें पाले की तरफ से चौपट हो गयी थी उन फसलों में अगर बिजली मिलती तो वह फसलें कुछ उनके अन्दर लग सकता था...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): माननीय सभापति महोदय, अगर माननीय सदस्य सूची दे दें कि कौन-कौन से ऐसे गांव हैं जहां सिर्फ तीन चार घण्टे ही बिजली मिल रही है तो उसकी तहकीकात करा लेंगे । मतलब आप कभी डूंगरगढ़ से बाहर गांव में तो जाते नहीं हैं इसलिये आप कागज लेकर बस यूं ही बोलना प्रारम्भ कर दिया...(व्यवधान)

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): कागज लेकर प्रारम्भ नहीं किया है...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): आप सूची दे दें । उन गांवों के नाम बतायें वह...(व्यवधान) हां बता दीजिये ।

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): मैं सूची दूंगा । मैं पक्की सूची दूंगा और यहां बताऊंगा...(व्यवधान) एकदम सही बताऊंगा और वहां से टेलीफोन करके बताऊंगा कि क्या...(व्यवधान)

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): माननीय सभापति महोदय, डूंगरगढ़ में एयरपोर्ट तो है नहीं जो माननीय सदस्य सीधे वहीं लैंड करते हों । जाते हैं तो गांव के बीच में से ही जाते होंगे । माननीय मंत्री महोदय जो कहना चाह रहे हैं...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): झगड़ा इतनी सी बात का है कि आप नाम बता दो । (व्यवधान)

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): जिन गांवों में लाइट नहीं आती, उनमें जाते हो अगर तो बतायें नाम । नाम बतायें...(व्यवधान)

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): मैं नाम बताऊंगा । आप नाम नोट कर लो...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): मंत्रीजी अपने रिप्लाई के अन्दर पूरी बात कह देंगे । रिप्लाई के अन्दर कह देंगे । नाम बता देना आप।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): नोट कर लो...(व्यवधान)

श्री सभापति: आप बिराजिये । आप अपनी बात जारी रखिये। (व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): आप यह कहना चाहते हो क्या, आप यह कहना चाह रहे हो 8 घंटा बिजली आती है । आप नोट करा देना...(व्यवधान)

श्री सभापति: आप सूची दे देना मंत्रीजी को।

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): यहीं नोट करा दूंगा।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): आठ घण्टे नहीं आती तो साढ़े छह, सात घंटा जरूर आती है।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): आठ घंटा नहीं, पांच घंटा...(व्यवधान) पांच घण्टा आती है...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): पूरे राजस्थान के 42,000 गांवों में आती है । आपके कहने से थोड़ी आती है...(व्यवधान)

श्री अमराराम (धोद): चार, मंत्रीजी, आठ घंटे नहीं...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): रिकार्ड बिजली महंगी खरीद कर किसानों को राजस्थान सरकार दे रही है...(व्यवधान)

श्री सभापति: संसदीय कार्य मंत्रीजी, कृपया इनको पूरा करने दें।

श्री अमराराम (धोद): जो बची हुई है बिजली उसको और जला दिया आपने...(व्यवधान)

श्री सभापति: माननीय अमरारामजी, बिराजिये । (व्यवधान)

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): मुद्दे की बात सीधी सी यह है कि जिन गांवों में नहीं आती है माननीय मंत्री महोदय को, जहां बाधित होती है,

(श्री राकेश मेघवाल)

एक घंटे में जांच करके आपको अपने रिप्लाई में जवाब दे देंगे...(व्यवधान) असत्य बोलो तो धापकर क्यों बोल रहे हो? थोड़ा बहुत लोग आटे में नमक डालें इतना असत्य बोलो...(व्यवधान)

श्री सभापतिः परबतसर से आने वाले माननीय सदस्य, आप बिराजिये।

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): मंत्री महोदय, हम बात सही कह रहे हैं । असत्य नहीं बोल रहे हैं...(व्यवधान) असत्य आप बोल रहे हैं । सरकार बोल रही है असत्य...(व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): किसान वर्ग का...(व्यवधान) आपको शर्म नहीं है क्या...(व्यवधान) यह गरीब वर्ग का आदमी है । गरीब वर्ग को जानता है । झोपड़ी में रहता है और किसान वर्ग का आदमी है । आपने कहां देखी गरीबी? आप लोगों को मालूम है कि बिजली कैसे आती है? आप तो कह दोगे उद्धरण रख दो...(व्यवधान)

श्री महीपाल यादव (बानसूर): यह सिविल लाइन में आती है बिजली । और कहीं नहीं आ रही है । (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): राजस्थान के गांवों में आती है । राजस्थान के गांव...(व्यवधान) क्या बात करते हैं...(व्यवधान)

श्री महीपाल यादव (बानसूर): चार घंटे से आठ घंटे, चार घंटे से ज्यादा नहीं है । पूछ लो आप...(व्यवधान)

श्री सभापतिः माननीय श्री मंगलारामजी गोदारा की बात अंकित होगी।...(व्यवधान)

श्री अमराराम (धोद):×××

श्री श्रवण कुमार (पिलानी):×××

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (उप मुख्य सचेतक):×××

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री):×××

श्री सभापतिः मंगलारामजी गोदारा की बात अंकित करें...(व्यवधान) मंगलारामजी गोदारा का अंकित करें...(व्यवधान)

श्री अर्जुन सिंह देवड़ा (रानीवाड़ा):×××

श्री श्रवण कुमार (पिलानी):×××

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री):×××

श्री सभापति: पिलानी से आने वाले माननीय सदस्य बिराजिये । पंचायत राज मंत्रीजी बिराजिये आप...(व्यवधान)

श्री रामचन्द्र जारोड़ा (मेड़ता):×××

श्री सभापति: आप बैठिये । उनको अपनी बात कहने दीजिये । मेड़ता से आने वाले माननीय सदस्य, आप बैठिये...(व्यवधान)

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): माननीय सभापति महोदय, मंत्री महोदय कह देंगे तो मैं प्रत्येक गांववाइज सूची दे दूंगा । प्रत्येक फीडरवाइज सूची दे दूंगा...(व्यवधान)

श्री सभापति: ठीक है । आप अपनी बात कहिये ।

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): कितनी बिजली मिलती है और मंत्री महोदय बात कर लेंगे टेलीफोन से कि कितनी बिजली वहां मिलती है...(व्यवधान)

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव):×××

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): अभी बता दूंगा । मैं अभी बता दूंगा । मैं प्रत्येक गांव में घूमता हूं । प्रत्येक सीमा में घूमता हूं...(व्यवधान)

श्री सभापति: उनको कहने दीजिये । अब कहने दीजिये ना...(व्यवधान)

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव):×××

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): आपको एक घंटे में, मुझे जानकारी है मैं प्रत्येक गांव में फिरता हूं । हमेशा उन्हीं गांवों में फिरता हूं । पूरे क्षेत्र में फिरता हूं । मंत्रीजी कह रहे हैं ना गांवों में नहीं फिरते हैं...(व्यवधान)

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव):×××

श्री सभापति: यह विवाद का विषय नहीं है । आठ घंटे बिजली मिलनी चाहिये, वह अपनी बात कह रहे हैं । आप नोट कर लीजिये ।

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): माननीय सभापति महोदय, बिजली की घोषणा कर रखी है सात घंटे की और सात घंटा मेरे विधान सभा क्षेत्र में पूरे में अगर बिजली मिलती हो तो या तो मंत्रीजी इस्तीफा दें या मैं इस्तीफा दूं...(व्यवधान)

श्री सभापति: आप दोनों ही मत दीजिये । अपनी बात कहिये।

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): सात घंटे अगर बिजली मिलती हो तो मंत्रीजी इस्तीफा दें या फिर मैं दूं इस्तीफा...(व्यवधान)

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा):×××

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): सात घंटे की घोषणा कर रखी है मंत्री महोदय आपने इसलिये मैंने कहा कि सात घंटे का । आपने घोषणा सात घण्टे की कर रखी है । बिजली तीन-चार घंटा ही मिलती है...(व्यवधान)

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री):×××

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर):×××

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): गलत नहीं कहा तीन-चार घंटे ही मिलती है । अभी भी यह कह रहे हैं...(व्यवधान) माननीय सभापति महोदय, बिजली की हालत भयंकर खराब है । मंत्रीजी सीरियस हैं । मंत्रीजी बिजली देना भी चाहते हैं, बाकी सरकार नहीं देना चाहती है ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी):

श्री सभापति: आप बिराजिये । अंकित नहीं हो रहा है । सिर्फ उनकी ही बात अंकित हो रही है ।

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): माननीय सभापति महोदय, आज हालत किसान की यह है कि इधर तो शीतलहर से मारा गया, फसल चौपट हो गयी, बरसात हुई नहीं और मंत्री महोदय से मैं कल भी मिला था । बिजली विभाग की तरफ से 240 ट्यूबवैलों के बिल निकाले हैं डबल-डबल बिल निकाले हैं । 25 का ट्रांसफार्मर लगा हुआ है और बिल निकाले हैं 60 और 70 के । क्या मंत्रीजी, 25 के ट्रांसफार्मर से 60 और 70 की मोटर चल सकती है? मंत्रीजी मानते हैं नहीं चल सकती । मंत्रीजी ने कहा कि नहीं चल सकती । 40 का ट्रांसफार्मर है वहां 80 का बिल निकाला है। मेरे सामने प्रूफ है । मंत्रीजी को मैंने कल, परसों दिया था और मंत्रीजी ने कहा मैं इंक्वायरी कराऊंगा । मेरा मंत्रीजी से निवेदन है कि जिन किसानों के ट्रांसफार्मर 25 का लगा हुआ है, 40 का लगा हुआ है, 25 का जिस किसान के ट्रांसफार्मर लगा हुआ है उसके अगर 50 और 60 का लोड बताये और 40 का ट्रांसफार्मर लगाये उनके अगर 70 और 80 का लोड बताये तो मंत्रीजी, उन ट्यूबवैलों को चैक करायें । उन अधिकारियों को पाबन्द करें और उन अधिकारियों को दंडित करें कि आइन्दा ऐसा काम नहीं करें । जिस किसान ने 40 का ट्रांसफार्मर लगा रखा है और 80

(श्री मंगलाराम गोदारा)

का आप लोड बता रहे हैं, 80 का लोड बता करके दो-दो लाख रुपये किसान के निकाल रखे हैं । 240 ट्यूबवैलों का सर्वे करवा कर प्राइवेट कम्पनी से सर्वे करा कर और सारे ट्यूबवैल का बिल निकाल दिया जैसे ट्रांसफार्मर 25 का था निकाल दिया 60 का, ट्रांसफार्मर 40 का था और निकाल दिया 80 का, तो मेरा निवेदन है सरकार से कि आप उन किसानों को अकाल और पाले से जो मार पड़ी है उससे भी बचायें । जो बिजली के बिल फालतू निकाले हैं, इतना लोड बढ़ा कर निकाले हैं वह भी आप संभाले और वहां की हालत यह है डूंगरगढ़ की कि हर किसान को आतंकित कर रखा है बिजली विभाग ने । कहीं 80 का बिल निकाल रहे हैं, कहीं दो लाख रुपये का निकाल रहे हैं, कहीं पांच लाख रुपये निकाल रहे हैं । हालत भयंकर खराब है इसीलिये मेरा निवेदन है सरकार से कि उस स्थिति को संभाले और वहां किसान को बचाये । हालत इतनी खराब है ।

आप बात कह रहे हैं कि हम कनेक्शन देंगे, सारे कनेक्शन, मुख्य मंत्रीजी ने घोषणा की है । बढ़िया काम है । मंत्रीजी ने घोषणा की है कि हम पूरे जो 65,000 कनेक्शन थे वह सारे दे देंगे । मेरा सरकार से निवेदन है कि विशेष श्रेणी की जो किसानों ने फाइलें लगायी और किसान सोच रहे थे कि हमें तीन महीने में कनेक्शन मिल जायेगा क्योंकि विशेष श्रेणी की यह नीति बनी हुई है कि तीन महीने में आपको कनेक्शन देंगे । विशेष श्रेणी की मेरे यहां पर 866 फाइलें लगी हुई हैं, 866 फाइलों में से एक भी कनेक्शन नहीं मिला। और मंत्रीजी का यह जवाब है सरकार का, मैंने एक क्वेश्चन लगाया था, अतारांकित क्वेश्चन है, उसमें जवाब है कि निगम के वित्तीय संसाधन एवं वर्तमान में विद्युत की उपलब्धता को देखते हुए वर्ष 2007-08 की विशेष श्रेणी में कृषि कनेक्शनों को जारी करना सम्भव नहीं है । मंत्री महोदय, आप तो परसों कह रहे थे कि कनेक्शन जल्दी करवा देंगे और आपके एक प्रश्न के उत्तर में यह आया है कि अभी सम्भव नहीं है तो मंत्री महोदय यह विशेष श्रेणी की जो फाइलें लगी थी, उसी समय किसानों को मना कर देना चाहिये था । आज किसानों ने टयूबवैल बना लिये, 6-7 लाख टयूबवैल में लगते हैं । मेरे वहां पर 6-7 लाख टयूबवैल में लगते हैं और किसानों ने इस आधार से टयूबवैल बना लिया कि तीन महीनों में कनेक्शन मिलेंगे, पैसा लगा दिया और आज उनकी हालत यह है कि वह एक टाइम की रोटी नहीं खा सकते ।

(श्री मंगलाराम गोदारा)

सभापति महोदय, यही हालत शहीद कोटे की है, आप बात करते हैं कि हम बिजली देते हैं, खूब देते हैं बिजली, बार्डर पर जो शहीद हुए हैं, उनकी औरतें दर-दर की भटकें खा रही हैं । वह शहीद की औरतें, विधवाएं उनके कनेक्शन भी आपने रोक रखे हैं । आप क्या कनेक्शन देंगे, काहे का कनेक्शन देंगे, सौ, सवा सौ मेरे यहां फाइलें लगी हुई हैं शहीद कोटे की । वह सारे शहीद कोटे के कनेक्शन आज तक नहीं मिले । तीन साल से वह औरतें भटक रही हैं, जो विधवा औरते हैं और उनके पति शहीद हुए बार्डर पर, बार्डर पर सीने में गोली खाकर के वह शहीद हुए और सरकार ने घोषणा की कि शहीद कोटे के कनेक्शन हम हैंड टू हैंड देंगे । आज बात कर रहे हैं कि 65 हजार कनेक्शन दे देंगे, इसलिए मेरा सरकार से अनुरोध है कि कम से कम विशेष श्रेणी और जो शहीद कोटे के कनेक्शन हैं, कब तक दे देंगे, यह सरकार घोषणा करे कि हम एक महीने में या दो महीने में उनके डिमांड निकालेंगे । 28 हजार कनेक्शन हैं विशेष श्रेणी के पूरे राजस्थान में, 28 हजार से ऊपर हो गये और शहीद कोटे के मेरे यहां 125-30 कनेक्शन हैं । बाकी पूरे इलाके की यही हालत है कि कहीं वोल्टेज नहीं है ।

सभापति महोदय, जैसे बिजली की मांग करते हैं तो मंत्रीजी कहते हैं कि दे रहे हैं, इन्होंने सात घंटों की घोषणा कर रखी है, मैं तीन-चार घंटे की बात कर रहा हूं । यह बिजली चार-पांच घंटे देते हैं और यह वोल्टेज कम देते हैं और वोल्टेज कम देते हैं तो किसान का टयूबवैल नहीं चलता है । तीन-चार घंटे ही मिलती है ।

सभापति महोदय, आप आज भी चैक करा लें, अधिकारी इनको गुमराह कर रहे हैं, इनके जो अधिकारी हैं, वह इनको गुमराह कर रहे हैं सरकार को और वह क्या है कि लाइट तो तीन-चार घंटे दे देते हैं, वह भी लगातार ट्रिपिंग आती रहती है क्योंकि वह वोल्टेज कम देते हैं । वोल्टेज कम देने से मोटर चलती नहीं है, टयूबवैल पर जैसे कहीं 40 की मोटर लगी हुई है, कहीं 30 की है, कहीं 35 की मोटर लगी हुई है, कहीं 20 की है, 25 की है ।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, कृपया अब समाप्त करें ।

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): एक मिनट में, सभापति महोदय, मैं कभी बोलता ही नहीं, मैं मेरी बात सिर्फ एक मिनट में समाप्त करता हूं, इसलिए मैं इस शहीद कोटे के और विशेष श्रेणी के कनेक्शनों की मंत्री महोदय

(श्री मंगलाराम गोदारा)
से और सरकार से निवेदन करता हूं कि जल्दी से जल्दी इनको चालू करें और मैं जो सरकार कनेक्शन नहीं दे रही है और विशेष श्रेणी और विशेषकर शहीद कोटे के कनेक्शन रोकने पर मैं एक महीने तक अन्न नहीं लूंगा । इसकी मैं घोषणा करता हूं । चूंकि जो किसान हैं वह दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं और वह भूखे बैठे हैं, इसलिए मैं एक महीने तक अन्न नहीं लूंगा । आपने समय दिया इसके लिए धन्यवाद, जय हिन्द ।

श्री सभापति: श्री नरेन्द्र नागर ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): सुन लिया ना, कितना बड़ा पाप पड़ेगा और हाई कोर्ट ने आपको आदेश दिया है कि आपके अधिकारी आपके बस में नहीं हैं। तार खिंचवाओ, अख़बार पढ़ा है क्या आपने? अधिकारियों के लिए... (व्यवधान) आदेश दिया है कि अधिकारियों पर लगाम कसो...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र नागर (खानपुर): सभापति महोदय, बिजली और अकाल पर चर्चा हो रही है, आज अख़बार में आया है...(व्यवधान)

श्री सभापति: माननीय सदस्य, आपका नाम है बोलने वालो में, आप अपनी बारी आयेगी तब बोलना...(व्यवधान) श्री नरेन्द्र नागर ।

श्री नरेन्द्र नागर (खानपुर): सभापति महोदय, बिजली और अकाल पर चर्चा हो रही है । इस चर्चा में भाग लेते हुए मैं कुछ आपको तुलनात्मक आंकड़े प्रस्तुत कर रहा हूं ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): सभापति महोदय, अगर माननीय सदस्य ने दोनों टाइम अन्न त्यागा है और सदन में घोषणा की है तो फिर मेडिकल का इंतजाम करवायें । दोनों टाइम त्याग है न...(व्यवधान)

श्री अमराराम (धोद): यह लेंगे ही नहीं...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): लेंगे ही नहीं, अनिश्चितकाल के लिए...(व्यवधान)

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): मैं अन्न नहीं खाऊंगा एक महीने तक...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): हैं?

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): मैं घोषणा करता हूं कि एक महीने तक अन्न नहीं लेऊंगा...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): एक महीने तक आप अपने घर में खायेंगे, आपने यह घोषणा की थी...(व्यवधान) इन्होंने कहा है कि मैं एक महीने खाना अपने घर में ही खाऊंगा, इसका मतलब हमेशा बाहर खाते हैं...(व्यवधान) यह काहे की घोषणा हुई...(व्यवधान)

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): नहीं, नहीं, यह नहीं है...(व्यवधान)

श्री सभापति: आपके यहां खा लेंगे, आपको क्या दिक्कत आ रही है?

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): हां, मेरे यहां स्वागत है।

श्री सभापति: आपके पुराने जिले के हैं...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): यह कोई घोषणा हुई कि एक महीने तक घर में खाना नहीं खाऊंगा...(व्यवधान)

श्री सभापति: आपके यहां खा लेंगे, क्या दिक्कत है, बैठिये माननीय सदस्य ।

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): मैं कहीं नहीं खाऊंगा।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, मंगलारामजी आप बिराजिये...(व्यवधान)

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): सभापति महोदय, मैं कहीं नहीं खाऊंगा...(व्यवधान) एक महीने तक कहीं नहीं खाऊंगा...(व्यवधान) और मंत्री जी को अगर शक है तो मंत्रीजी मेरे साथ चलें और साथ रहें...(व्यवधान)

श्री सभापति: आप यह कह रहे हैं कि अन्न त्याग कर रहा हूं, फलाहार करेंगे । आपने तो कहा है कि घर पर नहीं खाऊंगा...(व्यवधान)

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): मेरे साथ रहें और साथ बैठें, आप भी अन्न छोड़ें किसानों के प्रति...(व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): माननीय मंत्रीजी यह भिंडी खायेंगे और साबूदाना खायेंगे...(व्यवधान)

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): आप भी अन्न छोड़िये, एक महीने तक मेरे साथ बैठें आप...(व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): भिंडी और साबूदाना खायेंगे...(व्यवधान)

श्री सभापति: बैठे, बैठें, माननीय सदस्य...(व्यवधान) नरेन्द्र नागर जी।

एक माननीय सदस्य: यह फलाहार करेंगे फलाहार...(व्यवधान) यह संयमजी हमेशा ही बोलते रहते हैं ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): माननीय सदस्य के स्वास्थ्य को देखते हुए आप उनसे यह वापस लेने की अपील करें...(व्यवधान)

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): हंगामी लालजी तो कभी बोले नहीं और यह संयमजी हमेशा ही बोलते रहते हैं, बहुत गड़बड़ हो जायेगी ।

श्री सभापति: मेरी तरफ से आप कर लेते...(व्यवधान)

श्री जीतमल खांट (बागीडोरा): हम सब जने कह रहे हैं...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): बात करिये आप...(व्यवधान)

श्री जीतमल खांट (बागीडोरा): हम सब जने कह रहे हैं आप वापस ले लें...(व्यवधान)

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): राजस्थान की कल्याणकारी सरकार किसानों के लिए कर रही है सब कुछ...(व्यवधान)

श्री सभापति: भई, यह भी तो कहा जा सकता है मंत्रीजी की तरफ से कि आपको ऐसी नौबत ही नहीं आयेगी । किसानों के लिए यह भी तो जवाब हो सकता है । नरेन्द्र नागरजी, आप बोलें ।

श्री नरेन्द्र नागर (खानपुर): सभापति महोदय, पिछली सरकार ने पांच साल के शासन काल में 111777 कृषि कनेक्शन हुए और 4 साल के हमारे शासनकाल में 130244 कृषि कनेक्शन दिये गये । कृषि कनेक्शन देने में जो सरलीकरण किया गया है, पिछली सरकार में डिमांड नोट जो आया करता था वह किसानों को खंभों के आधार पर कि कितनी उनकी केबल लगेगी, कितना उनके तार लगेंगे, उसके आधार पर दो-दो लाख रुपये तक डिमांड नोट आया करता था । अब सरकार ने यह तय किया और डिमांड नोट की राशि प्रति एच.पी. के हिसाब से आयेगी ताकि पिछली सरकार के कार्यकाल में किसानों का जो शोषण होता था, अधिकारी डिमांड नोट को खंभे ज्यादा बताकर, किसानों को डराकर किसानों को लूटा जाता था । इससे किसानों को फायदा हुआ है ।

(श्री नरेन्द्र नागर)

सभापति महोदय, साथ ही इस सरकार ने अनुसूचित जाति के लोगों को कुओं पर इन चार साल के शासनकाल में 29486 कनेक्शन दिये हैं जब कि पिछली सरकार के पांच साल के शासनकाल में 13464 कनेक्शन दिये गये थे। इस सरकार के चार साल के शासन काल में कुटीर ज्योति के कनेक्शन 322886 दिये गये हैं जबकि पिछली सरकार के शासनकाल में 65137 कनेक्शन दिये गये थे । पिछली सरकार के समय में 400 गांवों में 24 घंटे बिजली आया करती थी, इस सरकार के चार साल के शासन काल में 18960 गांवों को 24 घंटे बिजली से जोड़ा गया है । यह सरकार की महत्वपूर्ण उपलब्धि है ।

सभापति महोदय, पिछली सरकार के पांच साल के शासन काल में 400 के.वी. का एक स्टेशन खोला गया था और वर्तमान सरकार के चार वर्षों के शासन काल में दो 400 के.वी. स्टेशन खोले गये । पिछली सरकार के पांच साल के शासन काल में 220 के.वी. के 11 सब-स्टेशन खोले गये थे और इस सरकार के चार साल के शासन काल में 11 सब-स्टेशन खोले गये हैं ।

सभापति महोदय, इस सरकार के चार साल के शासन काल में 132 के 47 सब-स्टेशन खोले गये और पिछली सरकार के शासन काल में 63 सब स्टेशन खोले गये थे । 33 के.वी. के पिछली सरकार में 614 सब स्टेशन खोले गये थे और इस सरकार के चार साल में 736 सब स्टेशन 33 के.वी. के खोले हैं ।

सभापति महोदय, विद्युत उत्पादन के क्षेत्र में इन सालों में बहुत महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की गयी है । पिछले शासन काल में पांच वर्षों में 1628 मेगावाट उत्पादन हुआ और वर्तमान सरकार के चार साल के शासन काल में 1411 मेगावाट का उत्पादन हुआ । साथ ही इस सरकार के बनने के बाद ट्रांसफार्मर का जो पिछली सरकार के समय में किसान को जलने के बाद चक्कर लगाने पड़ते थे । सरकार ने एक योजना बनाकर 72 घंटे में ट्रांसफार्मर बदल दिया जाएगा, इस प्रकार की एक योजना लागू की है ताकि किसानों को समय पर ट्रांसफार्मर मिल सके, 72 घंटे में ट्रांसफार्मर देकर इस सरकार ने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है ।

(श्री नरेन्द्र नागर)

पिछली सरकार ने फीडर सुधार कार्यक्रम पर ध्यान नहीं दिया, इस सरकार के बनने के बाद माननीय मुख्य मंत्रीजी और ऊर्जा मंत्रीजी ने 4 हजार करोड़ रुपए की लागत से 8475 फीडर सुधार का जिम्मा लिया और उनमें से 4916 का कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है और बाकी का काम अभी चल रहा है।

मैं इस सरकार का आभार व्यक्त करना चाहता हूं और धन्यवाद देना चाहता हूं कि माननीय मुख्य मंत्रीजी और ऊर्जा मंत्रीजी ने झालावाड़ जिले में काली सिंध पर विद्युत तापीय परियोजना की स्थापना के लिए 4600 करोड़ रुपए की लागत, और उसकी क्षमता 1 हजार मेगावाट होगी, इससे पूरे हाड़ौती को इसका फायदा मिलेगा ।

माननीय सभापति महोदय, मैं तुलनात्मक रूप से मेरे विधान सभा क्षेत्र की बात रखूंगा । कांग्रेस के पिछले 55 साल के शासन काल में मेरे यहां 33 केवल के मात्र 5 सब-स्टेशन थे और इस सरकार ने 4 साल के शासन काल में 33 के वी के 8 सब-स्टेशन नए खोले हैं । 132 के वी का एक सब स्टेशन खोला है । किसानों को पिछली सरकार के समय जो धरना प्रदर्शन करना पड़ता था चार साल में इस सरकार के आने के बाद वास्तव में मैं मानता हूं कि कहीं धरना प्रदर्शन नहीं हुआ है । पिछली सरकार के शासन काल में लोगों को बिजली के कनेक्शन के साथ वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में एक जनरेटर सैट रखना पड़ता था और किसानों को कुल 6 घंटे ही बिजली आपूर्ति की जाती थी । इस सरकार के बनने के बाद किसानों ने वास्तव में अपने जनरेटर सैट बेच दिए हैं और आज बिजली के माध्यम से खेती करते हैं। इन चार साल में समय पर बिजली आने के कारण किसानों की माली हालत भी ठीक हुई है । पिछली बार स्थिति यह थी कि 33 केवी सब स्टेशन पर जो इस प्रकार बिजली बार-बार ट्रिपिंग करती थी, इस सरकार के आने के बाद फीडर सुधार कार्यक्रम लागू होने के बाद ओ सी बी हर फीडर पर लगा दी गई है ताकि कहीं थोड़ी बहुत ट्रिपिंग आने के बाद आटोमेटिक लाइट उसमें आ जाती है क्योंकि रात में कभी लाइट जाने के बाद वहां पर कर्मचारी सो जाता था और उसमें दो-दो घण्टे तक लाइट नहीं आती थी । अब सभी फीडर पर ओ सी बी लगा दी गई है । इस सरकार ने जो बढ़िया काम किए हैं उनके लिए मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी और ऊर्जा मंत्रीजी का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद देता हूं साथ ही माननीय सभापति महोदय, आपका भी आभार व्यक्त करता हूं और धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे समय दिया ।

श्री सभापति: डाक्टर जालम सिंह रावतलोत ।

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव): माननीय सभापति महोदय, चार साल पहले जब हमारी सरकार ने कार्यभार सम्भाला उस समय विद्युत के क्षेत्र में क्या स्थिति थी यह बताने की जरूरत नहीं है, पूरे राजस्थान में बिजली को लेकर त्राहि-त्राहि मची हुई थी, किसी भी नई परियोजना का शुभारम्भ तत्कालीन सरकार ने नहीं किया था, तीन घंटे बिजली किसानों को दी जाती थी जिससे फसलें नष्ट हो जाती थी, पढ़ने वालों को पढ़ाई के लिए बिजली चाहिए वह भी उनको नहीं मिल रही थी । जब माननीय मुख्य मंत्रीजी ने काम सम्भाला तो सबसे पहले उन्होंने इस ओर ध्यान दिया कि यदि राजस्थान को विकसित राज्यों में क्रम संख्या एक पर ले जाना है तो सबसे ज्यादा जरूरत है बिजली उत्पादन की । इस सरकार के कार्यकाल में बिजली का उत्पादन बढ़ा है और उपभोक्ताओं को हर तरह से राहत मिलती है । किसानों को सात-आठ घण्टे हमेशा बिजली मिलती रही है । मुख्य रूप से जब हमारी सरकार ने कार्य भार सम्भाला उस समय बिजली का उत्पादन था 4984 मेगावाट वह बढ़कर 6395 मेगावाट हो गया है यानि 2019 मेगावाट बिजली उत्पादन में वृद्धि हुई है ।

माननीय सभापति महोदय, मेरे विधान सभा क्षेत्र में गिरल लिग्नाइट प्रोजेक्ट जो इनके कारण से अटका हुआ था उसका शुभारम्भ एक साल पहले हुआ । 26 साल से अटकी हुई धौलपुर परियोजना का भी शुभारम्भ हुआ, बिजली उत्पादन होने लगा । बरसिंगसर परियोजना भी अटकी हुई थी उसका भी शुभारम्भ हुआ ।

माननीय सभापति महोदय, मैं यह बताना चाहता हूं कि बिजली उत्पादन को लेकर हमारी सरकार यहां तक ही सीमित नहीं है 1200 मेगावाट की काली सिंध योजना, 500 मेगावाट की छबड़ा द्वितीय परियोजना के लिए स्वीकृति दी जा चुकी है और 2008-09 में इसका काम प्रारम्भ होकर 2011-12 तक यह परियोजना भी पूर्ण हो जाएगी । मैं आपके माध्यम से यह निवेदन करना चाहता हूं कि राज पिछले पांच साल में इनके पास भी था और सवा चार साल से हमारी सरकार राज कर रही है, उस समय कुल मिलाकर किसानों को जिस दर से विद्युत दी जाती थी वह 50 पैसे से बढ़ाकर 90 पैसे कर दी, यानी 85 प्रतिशत की विद्युत दर किसानों के लिए बढ़ाई जो 85 प्रतिशत थी और वर्तमान सरकार ने अपने सवा चार साल के कार्यकाल में एक पैसे की भी

(डा. जालम सिंह रावलोत)

बढ़ोत्तरी नहीं की, यह हमारी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि है । 206 करोड़ रुपए हर साल सरकार ने खुद ने वहन किए, किसानों को एक पैसा भी नहीं देना पड़ा। हमारी सरकार ने जो काम किए हैं उसमें तुलनात्मक विवरण मैं आपके सामने रख रहा हूं ।

ग्रामों का विद्युतीकरण 5 साल में कांग्रेस के राज में हुआ 2760 गांवों का और हमने 2055 का किया, कुओं का विद्युतीकरण पिछली सरकार के पांच साल में 11777 का और 4 साल के हमारे राज में 1 लाख 30 हजार 244, हरिजन बस्तियों का विद्युतीकरण 774 उनके राज में, हमारे राज में 422, अनुसूचित जाति के कुओं का विद्युतीकरण 13464 कांग्रेस के राज में और हमारे राज में डबल से ज्यादा 29486 । कुटीर ज्योति योजना में उनके राज में 65137 और हमारे टाइम में लगभग छह-सात गुना ज्यादा 3,22,886 हैं। 33 केवी के विद्युत सब स्टेशन 5 साल के उनके राज में 614 तो हमारे चार साल में 736, 400 केवी सब-स्टेशन के कार्य, उनके टाइम में केवल 1 हमने दो किए, दोनों ही मेरे बाड़मेर और जैसलमेर में शुभारम्भ किया इसके लिए माननीय मुख्य मंत्रीजी और विद्युत मंत्रीजी का बहुत-बहुत आभार व्यक्त करना चाहता हूं । 220 केवी के कार्य, 5 साल में 11 तो 4 साल में हमारे भी 11 हैं, 132 केवी के 5 साल में 63 और हमारे चार साल के राज में 47 हैं ।

बिजली संकट की बात कांग्रेस के सदस्य लगातार कहते रहे हैं कि बिजली का उत्पादन नहीं हो रहा है, राजस्थान में बिजली की स्थिति देश भर में सबसे खराब है । मैं निवेदन करना चाहता हूं कि हमारी तुलना यदि उत्तर भारत के राज्यों से करें क्योंकि हम इसी ग्रिड में आते हैं, उत्तर भारत में सबसे ज्यादा बिजली की आपूर्ति की व्यवस्था यदि कहीं सही है, सुव्यवस्थित ढंग से है, चाहे किसानों को हो चाहे सामान्य उपभोक्ताओं को हो, चाहे विद्यार्थियों को हो, सबसे ज्यादा बिजली की आपूर्ति उत्तर भारत में राजस्थान में हो रही है । इसके लिए मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी और ऊर्जा मंत्रीजी को हार्दिक साधुवाद देना चाहता हूं । यह मैं नहीं कह रहा हूं, यह 20 सूत्री कार्यक्रम के तहत जो जनवरी, 2008 तक का मूल्यांकन है उसमें उत्तर भारत में केवल हमारे राज्य राजस्थान को 'ए' कैटेगिरी मिली है बाकी सब हमारी तुलना में बहुत पीछे हैं। दिल्ली में इन दिनों भारी कटौती हो रही है, वहां पांच-छह घंटे बिजली मिल पा रही है, उत्तर प्रदेश में छह-सात घण्टे भी नहीं, उत्तरांचल में चार-पांच घण्टे भी नहीं मिल रही है, हरियाणा में चार से छह घंटे के बीच में ही बिजली आपूर्ति

(डा. जालम सिंह रावलोत)

हो रही है, मध्य प्रदेश की स्थिति भी लगभग ऐसी ही है। इसलिए जो लोग बिजली को लेकर हमारी सरकार की आलोचना करते हैं वह केवल अखबारों में छपने के लिए और आगामी चुनावों में अपनी स्थिति को मतदाता के सामने रखने के लिए कि हमने तो बिजली की मांग उठाई है। आज का मतदाता समझदार है और एक-एक चीज की जानकारी उसको वर्तमान में मोबाइल के माध्यम से, संचार तंत्र के माध्यम से मिल रही है कि कौनसी सरकार क्या काम कर रही है और किस सरकार ने क्या काम किया । इस प्रकार बिजली क्षेत्र के अंदर हमने बहुत शानदार काम किए हैं उसके लिए निश्चित रूप से हमारी माननीय मुख्य मंत्रीजी और हमारे माननीय ऊर्जा मंत्रीजी को मैं साधुवाद देना चाहता हूं ।

माननीय सभापति महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि केन्द्र की यूपीए सरकार ने जो एक बड़ा काम हाथ में लिया है निश्चित रूप से उन्होंने अच्छा काम हाथ में लिया है, राजीव गांधी विद्युतीकरण योजना का लेकिन उन्होंने इस हिसाब से शुरूआत की है और जो लक्ष्य रखे गए हैं राजीव गांधी विद्युतीकरण योजना में यह लक्ष्य है कि देश भर के सभी गांवों में बिजली पहुंचानी है । देश में रहने वाले सभी गांवों में हर घर के सामने बिजली का खम्भा पहुंचेगा चाहे वह कनेक्शन लेता है, नहीं लेता है वह उपभोक्ता पर है और रहने वाले भारत के नागरिक पर डिपेंड करेगा । लेकिन राजीव गांधी विद्युतीकरण योजना के तहत जो लक्ष्य हैं, हर गांव में बिजली पहुंचाना, हर घर के आगे खम्भा पहुंचाना और हर बी.पी.एल. परिवार को बिजली पहुंचाना । ये जो तीन महत्वपूर्ण लक्ष्य रखे हैं, बहुत शानदार लक्ष्य हैं, बहुत अच्छे लक्ष्य रखे हैं । सपना यह है कि अगली बार वापस केन्द्र में चुनाव हो तो कांग्रेस अपने दम पर केन्द्र में सत्ता में आ सके । लेकिन इसके माध्यम से केवल मुंगेरी लाल के सपने ही सिद्ध होने वाले हैं क्योंकि आपने घोषणा तो कर दी है लेकिन इसके लिए कोई वित्तीय प्रावधान केन्द्र सरकार ने नहीं किया है । मैं केवल अपने राज्य राजस्थान की बात करूं तो इन लक्ष्यों की पूर्ति हो उसके लिए राजस्थान को 17 हजार करोड़ रुपये की राशि की आवश्यकता है और 17 हजार करोड़ रुपये के मुकाबले केन्द्र सरकार ने जो हमारे स्टेट को रुपया दिया है वह केवल 425 करोड़ रुपये दिये हैं । सभापति महोदय, राजस्थान को 17 हजार करोड़ रुपये की जरूरत है और जरूरत किस बात के लिए है? हर गांव तक बिजली पहुंचाना, हर घर के आगे खम्भा पहुंचाना और हर बीपीएल

(डा. जालम सिंह रावलोत)

परिवार को लाभान्वित करना । लेकिन पैसे नहीं मिल रहे हैं तो कैसे होगा । मैं निवेदन करना चाहता हूं कि जिस तरीके का काम हमारा विद्युत क्षेत्र में हुआ है, ऐसा ही काम हमारी सरकार ने सवा चार सालों में सभी क्षेत्रों में किया है । मैं निवेदन करना चाहता हूं कि हमारी केन्द्र की सरकार है वो हर क्षेत्र में हमारे राजस्थान स्टेट के साथ में सौतेला व्यवहार कर रही है ।

माननीय सभापति महोदय, अब अकाल की बात करूं तो अकाल और कांग्रेस का पर्याय रहता ही है । लेकिन सही बात यह है कि जब से हमारी सरकार ने राज सँभाला है, चाहे भैरोंसिंहजी का राज हो, चाहे वसुंधराजी का राज हो, तुलनात्मक रूप से हमारे यहां अकाल का प्रभाव कम रहा है । पिछली बार जो अतिवृष्टि और बाढ़ हुई थी और अतिवृष्टि और बाढ़ की स्थिति में हमारे यहां पर जो काम हुआ है वह उल्लेखनीय काम हुआ है । सभापति महोदय, आप तो बाड़मेर और जैसलमेर का लम्बा-चौड़ा अनुभव रखते हैं, आपने कई बार टूर किये हैं, वहां की स्थिति बड़ी विकट है । माननीय सोनिया गांधीजी ने आज से तीन साल पहले अकालग्रस्त क्षेत्र सम का टूर किया था, हमने उस समय कहा था कि आप अकाल में मदद करो तो तीन साल पहले अकाल में राजस्थान की सरकार को केन्द्र सरकार ने कोई मदद नहीं की जबकि उससे पहले का उदाहरण है कि माननीय अटल बिहारीजी के राज में इतना गेहूं और इतना पैसा अकाल के नाम पर आया था कि हमारे राजस्थान के हर गरीब के घर में 40-50 गेहूं की बोरी मिल जाती थी । लेकिन सोनियाजी ने जैसलमेर, बाड़मेर में जो उनका टूर जैसलमेर में हुआ था, बाड़मेर-जैसलमेर के हम सब लोगों ने उनसे यह अपेक्षा की थी कि अकाल में मदद करो पर हमें अकाल में मदद नहीं मिली । फिर एक साल बाद, आज से दो साल पहले जो बाढ़ की स्थिति बनी बाड़मेर और जैसलमेर में और विशेषकर बाड़मेर में तो उस समय सोनिया गांधीजी का वापस टूर हुआ । देशभर के सब बड़े लोग पधारे और राजस्थान की माननीय मुख्य मंत्रीजी ने बाढ़ की स्थिति को किस तरीके से सँभाला वह मुझे कहने की जरूरत नहीं है । हमारे राजस्थान सरकार के सभी मंत्रीगण, राजस्थान में हमारी पार्टी के सभी विधायकगण, सबको एक-एक पंचायत, एक-एक गांव दिया और 15 दिन रहकर बाढ़ की स्थिति को सँभाला गया था और बाढ़ के समय में पुनर्वास के सारे काम हुए । लेकिन उस समय एक जरूरत महसूस की गई थी कि जिस तरीके

(डा. जालम सिंह रावलोत)

से बाड़मेर तबाह हुआ था, जिस तरीके से जैसलमेर तबाह हुआ था, राजस्थान सरकार को 3200 करोड़ रुपये की जरूरत थी लेकिन 3200 करोड़ रुपये के मुकाबले हमको केवल 100 करोड़ रुपये मिले । सोनिया गांधीजी के सामने बाड़मेर की जनता ने जबरदस्त विरोध प्रदर्शन किया था कि आप एक साल पहले जब पधारीं थीं तब अकाल में आपने मदद नहीं की और हमें ऐसा लगता है कि राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी का राज है और उदाहरण आपके सामने है कि पिछली बार अकाल में आपने मदद नहीं की तो अब बाढ़ के समय हमको मदद नहीं करने वाली हैं लेकिन फिर भी वो चाहती थी कि इतनी बड़ी विभीषिका हुई है कि निश्चित रूप से मदद मिलेगी । मदद नहीं मिलने के बावजूद भी मैं राजस्थान की सरकार को हार्दिक साधुवाद देना चाहता हूं कि बाढ़ के समय जिस तरीके की मदद हुई वह अपने आप में अनुकरणीय काम हुआ है ।

श्री सभापति: माननीय डाक्टर साहब, समाप्त कीजिये कृपया ।

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव): सभापति महोदय, दो मिनट में अपनी बात पूरी करता हूं । क्योंकि उस समय बड़ी संख्या में मकान ध्वस्त हो गये थे, हमने 5 हजार मकान, सरकार के द्वारा लगभग 1700 मकान और स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से 4300 मकानों की व्यवस्था करके बाढ़ पीड़ितों को मकान दिया गया । जो जरूरत थी वो सब जरूरत बाढ़ पीड़ितों को मिली । लेकिन उस सब के बावजूद भी हमारी सरकार ने जो शानदार काम किया वह यह किया कि बाढ़ के समय लगभग एक लाख मकान ध्वस्त हो गये थे, हमने माननीय मुख्य मंत्रीजी से निवेदन किया कि व्यक्तिगत आवास योजना बाढ़ पीड़ित क्षेत्र में चूंकि कुछ हुआ नहीं इसलिए समस्त बाढ़ पीड़ित इलाका अकाल पीड़ित इलाका भी हो गया और अकाल राहत में जो काम होने थे उसके लिए व्यक्तिगत आवास योजना हमारी सरकार ने शुरू की । मैं आपके माध्यम से सरकार को यह धन्यवाद देना चाहता हूं कि जो एक लाख समथिंग मकान ध्वस्त हो गये थे उनमें से 80 प्रतिशत लोगों को इंदिरा गांधी आवास जैसे मकान बनाकर दिये हैं । 80 हजार लोगों को बीपीएल के बंधुओं की भांति एक-एक मकान बनाकर देना, कितना बड़ा काम हुआ है, आप कल्पना करें । एक तो व्यवहार केन्द्र का था कि सोनिया गांधीजी पधारी थीं उन्होंने बाढ़ में कोई मदद नहीं की और हमने, हमारी सरकार ने, हमारी पार्टी ने, हमारे

(डा. जालम सिंह रावलोत)

कार्यकर्ताओं ने बाढ़ में जिस तरीके से संभाल की और बची-खुची जो जरूरत थी वह हमने अकाल राहत के माध्यम से मकान बनाकर की । यह काम शानदार किया है ।

माननीय सभापति महोदय, बाड़मेर, जैसलमेर पशुपालन क्षेत्र है । वहां हमारी सरकार ने पिछली बार भी पशुपालन क्षेत्र में चूंकि वहां चारा डिपो खोले जाते हैं, वहां पशु शिविर प्रारम्भ किये जाते हैं, पिछली बार हमारे बाड़मेर जिले में 792 पशु शिविर स्वीकृत किये गये और एक लाख 25 हजार पशुओं का उसमें 6 महीने तक संरक्षण पूरा का पूरा सरकार के द्वारा किया गया था । यही स्थिति हमारे जैसलमेर जिले की थी । जैसलमेर जिले में 500 पशु शिविर खोलकर लगभग 65 हजार पशुओं का संरक्षण किया और पशु शिविरों का संचालन हमारी सरकार ने पिछले चार सालों से लगातार किया । इसलिए जो जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर और बीकानेर का कुछ इलाका है वहां पशुपालन मुख्य व्यवसाय है । पशुओं को बचाने का जो शानदार काम हमारी सरकार ने किया है इसको लेकर मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी को और पूर्व अकाल राहत मंत्री जी को.....

श्री सभापति: अब आप भी शानदार काम कीजिये, बैठिये । श्री महिपाल सिंह यादव । अब आप समाप्त कीजिये ।

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव): माननीय सभापतिजी, सिर्फ आधा मिनट में एक सुझाव देना चाहता हूं जो इसी को लेकर है, कोई पोलिटिकल बात नहीं है । सभापति महोदय, जो सीआरएफ के नार्म्स हैं उनमें भूमि कटाव का विषय हो, चाहे फसल का नुकसान हो, चाहे मृत पशुओं के लिए पेमेंट हो, पहले हमारे यहां समयावधि फिक्स नहीं थी । अब केन्द्र सरकार ने यह नियम बना दिया कि 30 दिन के अन्दर पेमेंट करो । अभी बाड़मेर जैसी बाढ़ दुबारा आई नहीं, यदि आये तो 30 दिन में तो उनका पेमेंट कैसे सम्भव है? यदि 30 दिन में सरकार पेमेंट नहीं कर पाती है तो वह पेमेंट ऐसे की ऐसे रुक जाता है। मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि इस साल जो प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों ने पशु शिविर के लिए कहा कि पशु शिविर चालू नहीं हुए, चारा डिपो चालू नहीं किये हैं, मैं हमारे अकाल राहत प्रबन्धन मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने पहले से ही पशु शिविर की मांग के बिना पशु शिविर चालू किये और लोगों को रोजगार देने के लिए राहत के सारे काम चालू किये। धन्यवाद, जय हिन्द ।

श्री सभापति: माननीय श्री महिपाल सिंह यादव । कृपया 10 मिनट में आप अपनी बात समाप्त कीजिये ।

श्री महीपाल यादव (बानसूर): माननीय सभापतिजी, आज सभी माननीय सदस्यों ने अकाल और बिजली पर बड़े अच्छे सुझाव दिये हैं । मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्रीजी से निवेदन करना चाहता हूं कि पाले और सर्दी से जो पूरे राजस्थान में फसल नष्ट हुई है उसके नष्ट होने पर किसान आज ऐसे चौराहे पर खड़ा है कि वह आत्महत्या करने को मजबूर है । यही एक ऐसी फसल है जिस पर किसानों की उम्मीदें टिकी हुई थीं । चाहे अपने बच्चों की पढ़ाई का सवाल हो, बच्चों की ब्याह-शादी का सवाल हो लेकिन आज प्रकृति की मार से किसान बहुत परेशान है और सरकार को इस मामले में संवेदनशील होना चाहिए । मेरा तो सिर्फ एक सुझाव यही है कि ईमानदारी से अगर आप गिरदावरी करवा दें तो यह किसान के लिए बहुत बड़ी बात होगी। हमारे अलवर और भरतपुर दो जिले ऐसे हैं, माननीय सभापतिजी, आप भी भरतपुर जिले से आते हैं, वहां का किसान 80 प्रतिशत सरसों पैदा करता है और सरसों की स्थिति यह है कि वह 50 से 70 प्रतिशत खराब हो चुकी है, कहीं-कहीं 80 प्रतिशत भी खराब है, कहीं बिलकुल साफ हो गई और अलवर जिले में तो अब जाकर के यह गिरदावरी शुरू हुई है यह बहुत दुर्भाग्य की बात है ।

श्री सभापति: एक मिनट । माननीय श्री बहादुर सिंहजी गोदारा, मोबाइल पर बाहर जाकर के बात कीजिये नहीं तो मोबाइल को जब्त कर लिया जाएगा । (व्यवधान) आप पुराने सदस्य हैं । वो बुजुर्ग सदस्य हैं, समझ गये, अब नहीं करेंगे ।

(समय : 15.00 बजे)

श्री महीपाल यादव (बानसूर): तो मैं माननीय सभापतिजी, मैं यह कह रहा हूं कि अलवर और भरतपुर जिले के 70 फीसदी...(व्यवधान)

श्री सभापति: नहीं, उन्होंने कहना मान लिया, बंद कर दिया, अब आइंदा करेंगे और आइंदा करेंगे तो परमानेंट जब्त करके आपको दे दिया जाएगा । (व्यवधान) धन्यवाद ।

श्री महीपाल यादव (बानसूर): अब यह समय आपको काटना पड़ेगा, माननीय सभापतिजी ।

श्री सभापति: हां, काट देंगे ।

श्री महीपाल यादव (बानसूर): तो मैं आपके माध्यम से सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि हमारे हरियाणा और राजस्थान में भी यह परम्परा होनी चाहिए कि हरियाणा और पंजाब में जो सरकारें हैं, वहां पर किसानों को प्रकृति से कोई भी आपदा हो जाती है तो वहां प्रति एकड़ घोषणा की जाती है कि इतने हजार रुपये किसान को मिलेंगे तो इस सरकार को अगर यह किसानों के प्रति थोड़ी भी अगर संवेदनशील है तो यहां भी हमको कम से कम 5 हजार रुपये प्रति एकड़ किसान को देना चाहिए । जहां वास्तव में खराबा हुआ है, सभी माननीय सदस्यों ने यहां तक कहा है कि 70-80 फीसदी नुकसान किसानों का हुआ है। और यह सरकार चूंकि किसानों के प्रति कभी संवेदनशील रही नहीं है और न इनके मेनिफेस्टो में यह किसान की बात करें। लेकिन अगर यह करना चाहते हैं तो दो ही काम कर दें, ईमानदारी से गिरदावरी करवा लें और दूसरा पांच हजार से छह हजार के बीच में प्रति एकड़ किसान को मुआवजे की आप घोषणा करें तो ठीक है वरना तो फिर यह सदन में जो सुझाव आ रहे हैं उनका कोई मतलब नहीं है ।

अब, मैं बिजली के बारे में माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि बानसूर में मात्र 132 केवीए का जीएसएस लगा हुआ है, उस पर अधिकारियों ने 25 एमवीए के ट्रांसफार्मर की मांग काफी दिनों से चल रही है क्योंकि वहां सिस्टम खराब हो चुका है लेकिन सरकार कह रही है कि हम 33 केवीए के जीएसएस खूब बना रहे हैं, 400 के बना रहे हैं, अब आप एक 25 एमवीए का ट्रांसफार्मर भिजवा दें तो बड़ी कृपा होगी ताकि वहां का सिस्टम सही हो सके और हरसोरा, गूंता, शाहपुर, बामनवास तीन जीएसएस हमारे 33 केवीए के हैं उस पर काफी समय से 3.15 की डिमांड है क्योंकि ओवरलोडेड हैं तो अगर माननीय मंत्रीजी आप इस हरसोरा, गूंता, शाहपुर और बामनवास 33 केवीए जीएसएस पर यह ट्रांसफार्मर लगा दें तो निश्च‍ित रूप से वहां के किसानों को लाभ होगा ।

तीसरा मेरा सवाल यह है कि हमारे यहां पर दौलतसिंह की ढाणी, बानसूर में बाबरिया भूपसेड़ा और खोरी यह चार जीएसएस प्रस्तावित हैं 33/11 केवीए जीएसएस के उसमें बार-बार आब्जेक्शन लग कर आते हैं, वह सुधार भी कर देते हैं लेकिन अभी तक उनकी स्वीकृति जारी नहीं हुई है तो मेरा आपसे निवेदन है क्योंकि आप बहुत ही एक्टिव मंत्री हैं और काफी रुचि भी रखते हैं तो मैं समझता हूं कि आप इन चारों जीएसएस की स्वीकृति जारी जरूर करेंगे।

(श्री महीपाल यादव)

चौथा, ट्रांसफारमर्स के लिए किसान बार-बार चक्कर काटते हैं, अभी 5 एचपी के ट्रांसफारमर्स पर रोक लगी हुई है । हमारे अलवर जिले में किसान जाते हैं, ए.ईएन. साहब कहते हैं कि सरकार ने रोक लगा रखी है तो 5 एचपी के ट्रांसफार्मर की वजह से किसान वहां रोज चक्कर लगा कर थक चुका है, 20 दिन से मैं बराबर सम्पर्क में हूं, किसान जाते हैं उनका एक ही जवाब होता है कि हमारे अधिकारियों ने यह कहा है कि सरकार ने मना किया है, अभी कोई पांच का नहीं मिलेगा । पूरे जिले की स्थिति बता रहा हूं मैं अलवर की और राजस्थान का मुझे पता नहीं है तो इस हालात में किसान परेशान हैं इसलिए यह समस्या भी आप दूर करें ।

(समय : 15.04 बजे)

(श्री बीरूसिंह राठौड़, सभापति, पदासीन)

पांचवां, मेरा सवाल है कि ट्रांसफारमर्स चाहे वह एफआरपी में बदलें, हाई वोल्टेज की वजह से जल जाते हैं, लाइनें फाल्ट हो जाती हैं । अब उस स्थिति में किसान उस ट्रांसफार्मर को अपने साधन से लाद कर और ए.ईएन. आफिस ले जाए, कितना खर्चा होता है, किसान का कभी आपका वहां मीटर वाला नहीं मिलता है, कभी बेल्डिंग वाला नहीं मिलता है, तो, माननीय सभापति महोदय, मैं यह प्रेक्टिकल सुझाव आपको दे रहा हूं जिससे लोग किसान परेशान है । आप यह व्यवस्था करें, चाहे बिजली बोर्ड की तरफ से करें, चाहे ठेकेदार की तरफ से करें, चाहे कम्पनी वालों की तरफ से करें । आप यह व्यवस्था करें कि वहां पर बेल्डर जाए और वहां पर उसकी बेल्डिंग करे, मीटर लगाए, सील लगाए वरना तो किसान इस समय बड़ा परेशान है । फसल के टाइम में फसल के बीच में ट्रांसफार्मर उतार नहीं सकते इसलिए माननीय मंत्री जी, यह मैंने बहुत महत्वपूर्ण सुझाव आपको दिया है तो इसकी व्यवस्था मौके पर ही कराने की करें ताकि किसान लूट से बच सके ।

तीसरा सुझाव है कि सरकार के प्रगति प्रतिवेदन में कहा है कि हमने अलवर जिले में 47 गांव, 60 साल की आजादी के बाद, 47 गांव हैं, जो कि आज तक उसमें बिजली का खंभा आसपास तक भी नहीं पहुंचा है । आपके प्रगति प्रतिवेदन में आपने स्वयं स्वीकार किया है और आपने कहा है कि हम इनको सब को विद्युतीकृत कर देंगे, मार्च 7 से और 8 के बीच आज मार्च 8 भी जा रहा है सिर्फ आपने एक गांव में बिजली पहुंचाई है । उसमें भी कभी

(श्री महीपाल यादव)

पूर्ण रूप से व्यवस्था नहीं हो पाई लेकिन खंभे आपके गढ़ गये, लीडें टंक गई, ट्रांसफार्मर भी लगा है, एक बार जल भी गया लेकिन 46 गांवों को अगर यही आपकी चाल रही वर्क की तो 46 वर्ष लग जाएंगे । आपने एक साल में मात्र एक गांव किया है । यह मैं नहीं कह रहा हूं । आपके प्रगति प्रतिवेदन रिपोर्ट में आपने कहा है तो आप इन 46 गांवों को करें, जिले का यह तो कह सकते हैं कि अलवर जिले में कोई गांव नहीं बचा है ।

सातवां मेरा सुझाव है कि आपने जब राज संभाला, आपने घोषणा की माननीय तिवाड़ीजी ने भी कहा किसान आओ और पूरी बिजली पाओ और पांच हजार रुपये 5200 रुपये जमा कराओ, 12 हजार रुपये जमा कराओ, आज करोड़ों रुपये किसान का आपने ठग लिया, जमा करा लिया, आपने आज तक उनको एक को भी कनेक्शन दिया । माननीय तिवाड़ीजी पर तो हमको तरस आता है । आपने एक बार तो जोश दिखाया लेकिन फिर ठंडे पड़ गये, अगर आप उस जोश को उस चाबी को फैंक देते तो आपका सितारा बहुत ऊँचा बुलंद होता लेकिन पता नहीं, आप किस लोभ में रह गये तो मैं माननीय मंत्रीजी, आपने 6 महीने में 2003 तक के कनेक्शन आपने देने की बजट में घोषणा की है । आपने यह कह दिया, आप 4 साल में तो आपका कट आफ डेट 93 पहुंचा है, आपके पास क्या जादू है कि आप उसको 2003 तक के कनेक्शन आप इन 6 महीने में दे देंगे । इस तरह की यह झूठी और थोथी घोषणाएं, चुनावी घोषणाएं नहीं करनी चाहिए । आप यह कह देते कि हम 95 तक के सब-कनेक्शन दे देंगे । आपने 2003 का इसमें जिक्र किया है, आपने 4 साल में 93 तो आपसे क्रॉस हुआ नहीं और आप इसमें 6 महीने में आप 2003 तक का आपने यह झूठी घोषणा करके बजट में और एक झूठी वाहवाही लूटने की कोशिश की है । चौथा, मेरा माननीय सभापतिजी, आपके माध्यम से मंत्रीजी से निवेदन है कि फार्म हाउस और स्पेशल श्रेणी में आपने पैसे करोड़ों रुपये जमा करा लिए, तीन चार साल से उस पैसे पर आप कुंडली मारे हुए बैठे हो लेकिन आप उसकी स्पष्ट घोषणा करो । आज तिवाड़ीजी का तो कथन व्यर्थ हो गया, आप भी कभी ऐसा कथन मत करना ताकि उसकी समय तिथि निर्धारित करवाओ, कहीं ऐसा नहीं हो कि मंदिर वहीं बनाएंगे, तिथि नहीं बताएंगे, कभी ऐसी स्थिति इसमें भी पैदा कर दो । तो मेरा आपसे नम्र निवेदन है, आप इसकी तिथि की घोषणा करो । आपने न तो ब्याज दिया किसानों को, न पैसा लौटाया, करोड़ों रुपये, आप खा कर बैठे हो, स्पष्ट घोषणा

(श्री महीपाल यादव)

करें इसमें । माननीय सभापति महोदय, कुटीर ज्योति योजना की स्थिति यह है कि जनता ठेकेदारों के हवाले कर दी आपने, किसान जाता है, गरीब जाता है जे.ईएन. ए.ईएन. के पास वह कहता है ठेकेदार के पास जाओ, ठेकेदार कहता है पांच सौ रुपये लाओ, कभी पांच हजार लाओ और करोड़ों रुपये लोगों के ठगे जा रहे हैं, उनको कनेक्शन नहीं मिला है । यह स्थिति आपने अलवर जिले की पूरी स्थिति मैं आपको बताना चाहता हूं, आपने प्रगति प्रतिवेदन में लक्ष्य रखा है कि हम 6 हरिजन बस्तियों को विद्युतीकृत करेंगे और आपने एक साल में आपका रिजल्ट है मात्र एक गांव को आपने किया है, आप हरिजन बस्तियों में लाइन ही नहीं देना चाहते हैं । एक साल में जब आपने एक गांव किया है तो 6 वर्ष लगेंगे इन 6 गांवों को करने में और बाकी गांव तो बचे ही रहेंगे इसलिए माननीय सभापतिजी, यह ठेकेदारों वाला भी कोई शिकंजा कसो नहीं तो लोग, मैंने पांच-पांच हजार रुपये करवाये हैं, ठेकेदारों से, गरीब हरिजनों से ले लिये थे, तुम्हारे खंभा खड़े कर देंगे, कभी लीड के नाम से पैसे ले लेते हैं ।

यह मैं आपको प्रेक्टिकल सुझाव दे रहा हूं । माननीय सभापति महोदय, एफआरपी सिस्टम में आपने अपने प्रगति प्रतिवेदन में यह बताया है कि हमने 4305 गांवों को 2007 तक विद्युतीकृत किया है । यह बड़ी खुशी की बात है, यह बहुत अच्छी योजना है, लेकिन इसमें 1500 करोड़ रुपये आपने खर्च कर दिये । पुरानी सर्विस लाइनों पर एफआरपी सिस्टम किया है, रोज लाइनें टूटती हैं, मैं आपको मौके पर चलकर मेरे क्षेत्र में बता सकता हूं । एफआरपी सिस्टम का मतलब होता है आपको नयी लाइनें डालनी चाहिए थीं । पुरानी लाइनों पर वह सिस्टम कर दिया । कहीं ओसीबी नहीं लगी है । ओसीबी नहीं होने से हालत यह हो गई पूरे गांव में टीवी, रेफ्रिजरेटर जल गये, मकानों पर आग लग गई । सिस्टम आपने कर दिया, आपने पूरा कर दिया, आप इसकी जांच कराओ कितनी ओसीबी नहीं है, कितने पर जीओज् नहीं लगे हैं । आपने लोगों को मौत के हवाले कर दिया । 1500 करोड़ रुपया आपने कह दिया कि हमने खर्च कर दिया, 1500 करोड़ और आप करने जा रहे हैं जिसकी गति भी बहुत धीमी है । यह सिस्टम बहुत अच्छा है इससे वोल्टेज में सुधार हुआ है, लेकिन जो खामियां हैं, पूरे गांव के गांव में लोग मरने से बचे हैं, घायल हो गये, उनका अस्पतालों में इलाज चल रहा है क्योंकि वह सिस्टम पूरा नहीं हुआ ।

(श्री महीपाल यादव)

मेरा दूसरा सुझाव यह है कि 4125 फीडर और करने जा रहे हैं जिसमें 18613 गांव आपने लिये हैं । तो 6 महीने में आप कर नहीं सकते । मेरा सुझाव है कि आप पुरानी सर्विस लाइनों की जगह नयी लाइनें डलवाएं और जो टेक्नीकल स्टाफ की कमी है, हेल्पर्स की कमी है, जेईएन की कमी है, जहां 5-5 जेईएन चाहिए वहां पर आपके दो-दो जेईएन काम कर रहे हैं । आप जेईएन की भर्ती करें ।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, समाप्त करें ।

श्री महीपाल सिंह यादव (बानसूर): माननीय सभापतिजी, मेरे तो बीच में व्यवधान आ गया था इसलिए दो मिनट और ।

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): धीमी गति का बुलेटिन आपका चल रहा है और आप कह रहे हो व्यवधान किया । किसी ने अभी तक व्यवधान किया ही नहीं ।

श्री महीपाल सिंह यादव (बानसूर): आप तो बाद में आये हो । माननीय मंत्रीजी, मैं भरतपुर जिले की बात कर रहा था, सरसों नष्ट हो गई और आपकी बात कर रहा था ..(व्यवधान) 4-5 हजार रुपया बीघे का दिलाओ किसानों को, अगर आप किसान हितैषी हो ।

माननीय सभापति महोदय, मैं एक मिनट में अपनी बात खतम करता हूं । बहुत महत्वपूर्ण सवाल है, माननीय मंत्रीजी से पूछना चाहता हूं कि इस सरकार में जितने भी ईमानदार आईएएस अधिकारी हैं या आरएएस अधिकारी हैं वे आज खड्डे लाइन लगे हुए हैं । विद्युत विभाग में एक आईएएस अधिकारी श्री आर.के. अग्रवाल जिसको राष्ट्रपति ने पुरस्कृत किया और उन आर.के. अग्रवाल साहब का चौथी बार कार्यकाल बढ़ाया गया कि बहुत ईमानदार और बहुत ही योग्य प्रशासक हैं । पुरस्कार मिला है उनको कई बार । इस सरकार ने उसका यह पुरस्कार दिया है कि वे नौकरी से इस्तीफा दे गये । डेढ़ साल बचे हुए थे, नौकरी से इस्तीफा देकर गायब हो गये ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): हमने उनको बहुत कहा है कि आप रहें, वे खुद गये हैं ।

श्री महीपाल सिंह यादव (बानसूर): आप जवाब दे देना । आपने कहा होगा । मुख्य मंत्रीजी ने बुलाया होगा ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): वे अपनी मर्जी से छोड़कर गये हैं।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, सदन में हमें किसी भी प्रशासनिक अधिकारी की पैरवी नहीं करनी चाहिए ।

श्री महीपाल यादव (बानसूर): पैरवी नहीं कर रहा हूं । (व्यवधान) हमारे सूरतगढ़ और कोटा दो थर्मल स्टेशन हैं जहां पर कोयले की व्यवस्था करनी थी, उसमें कुछ गड़बड़ी हो रही थी । उन्होंने माना नहीं, वे नौकरी छोड़कर चले गये । आप मेरी बात समझ रहे हैं? इनको तीन महीने तक सरकार ढूंढती रही । वे इस्तीफा देकर कहीं चले गये । आज वे एक कॉलेज के डाइरेक्टर हैं । इस सरकार में जो भी ईमानदार अधिकारी ईमानदारी से काम कर रहे हैं इनको खड्डे लाइन लगा दिया गया है और आज आर.के. अग्रवाल के बारे में पूरा देश नहीं, पूरा विश्व जानता है ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): माननीय सदस्य, मैं रोज वाकिंग के लिए जाता हूं, मुझे वे रोज मिलते हैं । कहां गायब हो गये थे तीन महीने के लिए? मैं तो उनसे रोज मिलता हूं ।

श्री महीपाल यादव (बानसूर): आप मिलते होंगे, आपकी शर्तें नहीं मानीं । चाहे चन्द्रमोहन मीणा आईएएस हो, आपको कितने नाम बताऊं । आपने सबको खड्डे लाइन लगा दिया । इसलिए यह सरकार कोई भी काम ईमानदारी से नहीं करना चाहती । माननीय सभापति महोदय, मैं अपनी बात को यहीं समाप्त करता हूं, धन्यवाद ।

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): माननीय सभापतिजी, आप तो लिस्ट दे दें किस-किस से आपकी सेटिंग है उनका हम ध्यान रखेंगे ।

श्री सभापति: माननीय जीतमलजी खांट ।

श्री महीपाल यादव (बानसूर): मैंने तीस साल के राजनैतिक जीवन में ..(व्यवधान) मैं झोंपड़ी में रहने वाला आदमी हूं और मेरी किसी से सैटिंग नहीं है और आप सिद्ध कर दें तो मैं उसी दिन इस्तीफा दे दूं ।

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): आप विधान सभा में ऐसी बात न कहें । (व्यवधान) आप मेरी बात सुनिए ।

श्री महीपाल यादव (बानसूर): आप बढ़िया डाक्टर हो, हमारे पड़ोसी हो ..(व्यवधान)

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): आप बिजली पर बोलो अच्छी बात है, आप किसान की बात कहो अच्छी बात है । हम अधिकारियों की बात न करें।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): उपाध्यक्ष महोदय, अगर इस तरह से माननीय सदस्य इस्तीफा देते रहे तो यह हाउस खाली होने में ज्यादा देर नहीं लगेगी ।

श्री महीपाल यादव (बानसूर): अब कोयले की दलाली में तो हाथ काले होंगे । अब मैं इसमें असत्य थोड़े ही कह रहा हूं, पूरा प्रदेश जानता है जिस आदमी को विश्व स्तर पर पुरस्कृत किया गया है ।

श्री सभापति: आप मंत्रीजी के चेम्बर में चले जाना, कौन इस्तीफा देगा । आप बोलें ।

श्री जीतमल खांट (बागीडोरा): माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से अकाल, बिजली पर इस पवित्र सदन में माननीय सदस्यों ने जो अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिये हैं, मैं भी अपनी बात को सम्मिलित करते हुए, चूंकि अकाल और बिजली जो महत्वपूर्ण बिन्दु हैं और यह प्रकृति की विपदा है, इस प्राकृतिक विपदा से जूझने के लिए जिस तरीके से अकाल के हालातों से इस राजस्थान की भौगोलिक परिस्थितियां भिन्न-भिन्न हैं और भिन्न-भिन्न परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए सरकार ने अपने संसाधन जुटाकर पूरे राजस्थान की जनता को इस अकाल की विभीषिका से निपटने के समय-समय पर कदम उठाये हैं ।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगा अकाल का संबंध हमेशा पर्यावरण से रहा है । जब से इंसान ने इस प्रकृति के साथ में प्रकृति को छेड़ने का काम किया है प्रकृति के प्रतिकूल अपना आचरण किया है, प्रकृति के विपरीत जाने का प्रयास किया है तब-तब इस राजस्थान प्रदेश नहीं, पूरे देश भर में प्राकृतिक विपदाएं खड़ी हुई हैं ।

मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगा कि जिस इलाके से हम लोग आते हैं, किसी जमाने के अंदर हमारा उदयपुर संभाग संपूर्ण रूप से अरावली श्रृंखलाओं से घिरा हुआ क्षेत्र था जहां सभापति महोदय, आपको कभी आज से 10 या 15 साल पहले की बात मैं कहना चाहूंगा सारा इलाका पहाड़ी क्षेत्र की अरावली पर्वत श्रृंखला वन, जंगलों से ढंका पड़ा था । आज प्रकृति की ऐसी विपरीत परिस्थितियों के कारण वहां के जितने भी जंगल थे, आज जंगल का

(श्री जीतमल खांट)

प्रतिशत इस ढंग से घटा है कि आज सारी की सारी पहाड़ियां बिलकुल नंगी हो गई हैं ।

मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगा कि जिस ढंग से अभी घाटोल से आने वाले माननीय सदस्य अपनी बात का जिक्र कर रहे थे कि जब तक पर्यावरण को सुधारा नहीं जाएगा तब तक अकाल की विभीषिका से हम उबर नहीं पाएंगे । आज परिस्थिति यह है कि हमारे उदयपुर संभाग में जब वह बारिश का समय आता है इतनी जबर्दस्त बारिश पिछले तीन-चार साल से रिकार्डतोड़ बारिश हो रही है और मैं कहना चाहता हूं हमारे सहायता मंत्रीजी भी बैठे हुए हैं जिस इलाके के अंदर आज हम लगातार चार साल से देख रहे हैं या तो पिछली बार कांग्रेस के राज में बांसवाड़ा, डूंगरपुर से कुछ हवाई सर्वेक्षण के माध्यम से वहां बीज का छिड़काव हुआ था, वहां विश्व बैंक की सहायता से कम से कम 50 करोड़ रुपये का बीज उस इलाके में फेंका गया । एक पौधा नहीं उगा गया । मैं आज यह दावे के साथ कह रहा हूं कि पिछले चार साल से हम देख रहे हैं कि बांसवाड़ा-डूंगरपुर-उदयपुर संभाग में रतनजोत की खेती पर बार-बार पहल की जा रही है । मैं कहना चाहता हूं कि हमारे यहां जब भयंकर बारिश होती है, पूरा इलाका हरा-भरा हो जाता है तो क्यों नहीं हम उस क्षेत्र के अन्दर नींबू, आंवला, सागवान, देशी बबूल, बांस, आम, सादड़ आदि के पेड़ लगाते हैं और माननीय सभापति महोदय, हमारे वहां पर मिट्टी की ऐसी तासीर रही है कि एक बार अपनी जड़ जमने के बाद में कोई भी पेड़ सूखता नहीं है । मैं चाहूंगा आपके माध्यम से कि वन को जब तक हम तैयार नहीं करेंगे, तब तक अकाल की समस्या रहेगी ।

मैं आज कहना चाहता हूं वन के बारे में कि बांसवाड़ा जिले के अन्दर 320 हमारे वन सुरक्षा प्रबन्ध कमेटियां बनी हुई हैं । पिछली बार से, लगातार दो-तीन साल से यह जो अच्छी बारिश हुई है, उसका परिणाम क्या होता है, कम से कम तीन लाख की घास और पूले वगैरह पैदा हुए और मैं कहना चाहता हूं कि वह काश्तकार अपनी मजदूरी करके और आधी घास उस सुरक्षा समितियों के माध्यम से वहां छोड़ता है और आधी घास अपने खुद के घर ले जाता है तो जब तक हम वन सम्पदा पर हमारा ध्यान केन्द्रित नहीं करेंगे, उस इलाके में पैदा होने वाले पेड़ों का संरक्षण करने के लिए उसके लिए कोई निश्चित उपाय नहीं ढूंढेंगे, तब तक उसके लिए यह कहते जायेंगे कि अकाल है, अकाल की विभीषिका बार-बार हमारे सामने आती रहेगी । मैं कहना चाहता

(श्री जीतमल खांट)

हूं जिस इलाके के अन्दर जो परिस्थितियां हैं, उस परिस्थितियों के अनुसार हमारे यहां पौधारोपण पर ज्यादा जोर देना चाहिए ।

मैं दूसरी बात यह कहना चाहूंगा, बांसवाड़ा और डूंगरपुर में एक जैसी परिस्थिति है, उदयपुर में एक जैसी परिस्थिति है, मैं एक छोटा सा उदाहरण पेश करूंगा । आज पूरे देश भर में रोजगार गारंटी का कार्यक्रम चल रहा है और शुरूआत होना है । हमारे छह जिलों का चयन हुआ था, आज बांसवाड़ा जिले के अन्दर इन दो-ढाई सालों के अन्दर तीन अरब रुपये खर्च हुए हैं । तीन अरब रुपये की अगर वहां पर प्रोग्रेस रिपोर्ट मंगाई जाये तो जितना भी है, सारे मजदूरों से एक अच्छी सड़क निकाल दी । मजदूरों ने थोड़ा बहुत धूला डाल दिया, बारिश आएगी, बारिश के उस बहाव में वह सारी की सारी सड़क धुल जायेगी, कहीं वाटरशैड का कुछ काम छोटा-मोटा मिट्टी का हुआ था, वह धुल गया । आज स्थिति क्या है? आज हम अगर पिछले साल के काम देखने जायें तो एक भी काम आज वहां मौके पर नहीं है, यह हालत है और माननीय सभापति महोदय, अगर तीन अरब रुपये का सिस्टेमेटिक ढंग से उपयोग कर दिया जाता है तो एक बार माही डेम के ऊपर रुपया लगा, उस माही बजाज सागर परियोजना के निर्माण पर जो धन लगा, आज कम से कम 1,25,000 हैक्टेयर क्षेत्र में वहां सिंचाई हो रही है और वहां पर कम से कम एक लाख परिवार परियोजना से जुड़े हैं तो जिस तरीके से भीखा भाई नहर परियोजना निर्माण से एक लाख परिवार जुड़ेंगे और वहां पर 125 किलोमीटर लम्बी नहर है तो उससे स्थाई समाधान हो जाएगा तो मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि हम पक्ष और प्रतिपक्ष के सारे लोग मिलकर बार-बार यह चिंतन करते हैं कि हम अकाल का मुकाबला कैसे करें? जब तक स्थाई परिसम्पतियों का निर्माण नहीं होगा, तब तक इस अकाल से हम निजात नहीं पा सकेंगे ।

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से यह भी निवेदन करना चाहूंगा कि आज बांसवाड़ा जिले के अन्दर 30,000 कुए हैं, उनमें से 16,000 कुए आज जिंदा हैं, 14,000 कुए अधूरे पड़े हुए हैं, जहां पर नोन-कमांड क्षेत्र है, नोन कमांड क्षेत्र के अन्दर, इस रोजगार गारंटी योजना में इस कार्यक्रम को लेना चाहिए ताकि यह सामने आये । रोजगार गारंटी कार्यक्रम चलाने के पीछे मकसद एक ही है कि गरीब आदमी की माली हालत में सुधार हो और आज स्थिति क्या है? हम लोग सारे के सारे जितने भी माननीय सदस्य हैं, चाहे

(श्री जीतमल खांट)

दिल्ली की पार्लियामेंट में बैठने वाले हों और चाहे हम सब यहां बैठने वाले लोग हों, गांव की जो इकाई है...

श्री भागीरथ चौधरी (किशनगढ़): माननीय सभापति महोदय, देखो, माननीय सदस्य क्या कर रहे हैं?

श्री जीतमल खांट (बागीडोरा): गांव की एक इकाई है ग्राम पंचायत, उसको इस तरह से सारा प्रोग्राम बनाकर दे दिया, सारा का सारा कच्चा काम हो रहा है । गांव में कोई प्रोग्रेस नहीं, व्यक्ति का कोई विकास नहीं... (व्यवधान)

श्री सभापति: चलो, सदन ने उनको सूचना दे दी है । वे सतर्क हो गये ।

श्री जीतमल खांट (बागीडोरा): तो माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से यह निवेदन कर रहा था, रोजगार गारंटी योजना में यह हालत जिस तरीके से मैं बांसवाड़ा का जिक्र कर रहा हूं, यह हालत सम्पूर्ण राजस्थान की होने वाली है । आज करोड़ों-अरबों रुपये हम सबके विकास के लिए, गरीब के विकास के लिए, गरीब के उत्थान के लिए, गरीब की माली हालत को सुधारने के लिए जो करोड़-अरब रुपया मिलने वाला है, अगर हमने यहां से भारत की पार्लियामेंट में जिस तरीके से कहीं भी संशोधन करना पड़ता है, जो भी नियम-कानून में अमेंडमेंट करना पड़ता है, तब तक हम लोग कहीं न कहीं उस पर चिंतन-मनन नहीं करेंगे, तब तक उस पैसे का सदुपयोग नहीं होगा, गांव के गरीब की हालत ज्यों की त्यों रहेगी ।

मैं इसके साथ ही यह भी निवेदन करना चाहूंगा कि आज बिजली के ऊपर भी माननीय सदस्यों ने अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिये हैं । मैं सरकार को धन्यवाद देना चाहूंगा और राजस्थान की मुख्य मंत्री को भी, पर शहरों में जिस तरह से बिजली अनवरत रूप से मिल रही है, 2008 में 34,000 गांवों में बिजली का ठीक ढंग से उपयोग हो इसलिए आपने संकल्प व्यक्त किया है । मैं यह भी कहना चाहूंगा बिजली के बारे में, 15,000 मेगावाट बिजली की बात कही गई है । मैं इस बात के लिए तो स्वागत करता हूं लेकिन साथ ही साथ मैं आग्रह करना चाहूंगा आपके माध्यम से कि पिछला पांच साल कांग्रेस का राज गया, चार साल यह गये, आप थोड़ा आंकड़े देख लीजिए कि बी.पी.एल. परिवार को कुटीर ज्योति योजनान्तर्गत नियमित रूप से सेंक्शन मिलती रहती

(श्री जीतमल खांट)

है, हम लोगों से फार्म भरवाये जाते हैं, बिजली दे दी जाती है लेकिन आज हालत देख लीजिये । जिस व्यक्ति को चार साल पहले कुटीर ज्योति योजनान्तर्गत कनेक्शन मिलता था, क्या आज उसके घर में लाइट जल रही है? आज हमारी सरकार ने भी यह मंशा व्यक्त की कि तीन लाख लोगों को कुटीर ज्योति योजना के अन्तर्गत बिजली देंगे, इसके लिए तो स्वागत है लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि इसके पीछे मकसद क्या है? गरीब आदमी के घर में जब तक बिजली अनवरत रूप से नहीं मिल सकती है, एक बत्ती कनेक्शन और उसका महीने का रेट जब तक फिक्स नहीं होगा, गरीब आदमी अपने घर में बिजली नहीं जला सकता है और इसलिए मैं कहना चाहूंगा कि जिस तरह से गुजरात और मध्य प्रदेश के अन्दर एक बत्ती कनेक्शन में वहां पर रेट निर्धारित है, चाहे सरकार 100 रुपये वसूल करे चाहे उसके 150 रुपये फिक्स करे, बी.पी.एल. परिवार को दी जाने वाली कुटीर ज्योति योजना के अन्तर्गत जब तक रेट फिक्स नहीं होगी, गरीब के घर में अनवरत रूप से बिजली का लट्टू नहीं जल सकता है, इसलिए मेरा आग्रह है कि इस बात पर विचार किया जाये ।

मैं अंत में हमारे माननीय मंत्रीजी का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा । बांसवाड़ा में आपने काफी कुछ जी.एस.एस. का प्रोग्रेस किया है, मैं इसके लिए आपको धन्यवाद देना चाहूंगा लेकिन वहां पर उद्घाटन भी बाकी है आपका तो मुझे आशा है कि बहुत जल्दी आप उद्घाटन करने के लिए जरूर आयेंगे लेकिन वहां पर पोस्ट वेकेंट पड़ी हुई हैं । आज आदमी किसी भी जी.एस.एस. पर जाकर खड़ा रहता है जैसे परतापुर है, गढ़ी है, आनन्दपुरी का सर्किल है, जहां पर पोस्टें कई रिक्त हैं । मैं चाहूंगा कि ए.ईएन. व जे.ईएन. हम लोगों को आप उपलब्ध करायें ताकि गांव का गरीब आदमी कोई भी अपनी शिकायत लेकर वहां जाता है तो उसकी सुनवाई तो हो । इस बात के लिए आप हमको आश्वस्त करें । मैं ज्यादा बात नहीं कहते हुए आपने मुझे समय दिया, धन्यवाद ।

श्री सभापति: माननीय सदस्य वंदना मीणाजी ।

श्रीमती वन्दना मीणा (उदयपुर ग्रामीण): माननीय सभापति महोदय, मुझे बोलने का समय दिया इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद । मेरे उदयपुर ग्रामीण विधान सभा क्षेत्र में क्योंकि आज अकाल और बिजली पर चर्चा हो रही

(श्रीमती वन्दना मीणा)

है उस बिंदु पर अपने आपको सम्मिलित करते हुए मैं अपने विधान सभा क्षेत्र की बात रखूंगी । मेरे विधान सभा क्षेत्र में दो पंचायत समिति आती हैं, बड़गांव पंचायत समिति और गिरवा पंचायत समिति । बड़गांव पंचायत समिति में 19 पंचायतें हैं और गिरवा पंचायत समिति में 22 पंचायतें हैं, उसमें 135 रेवेन्यू विलेज हैं । मेरा विधान सभा क्षेत्र उदयपुर ग्रामीण बिलकुल उदयपुर शहर से लगा हुआ क्षेत्र है । बड़गांव पंचायत समिति माडा क्षेत्र में आती है और गिरवा की जो 22 पंचायतें हैं वह टाडा पंचायत में सम्मिलित हैं । शहर के आसपास होते हुए भी पहाड़ों के बीच में उदयपुर ग्रामीण विधान सभा क्षेत्र बसा हुआ है। आज वहां के हालात को देखते हुए मेरे विधान सभा क्षेत्र की अलग परिस्थितियां हैं । कई जगह बड़े-बड़े तालाब भी बने हुए हैं, सिंचाई के साधन भी हैं लेकिन यह विधान सभा क्षेत्र बिलकुल ही अलग परिस्थिति में बसा हुआ है, वहां पर जीवन यापन करने वाले लोगों के पास करीबन दो, ढाई बीघा जमीन से ज्यादा जमीन नहीं है और अच्छी से अच्छी बरसा होती है तो छह महीने खाने का अनाज होता है, बाकी छह महीने मजदूरी पर जीवन यापन करना पड़ता है । आज इस अकाल की स्थिति में जूझते हुए वहां पर झील संरक्षण के द्वारा एक तो रोक भी लगी हुई है, एनीकट भी नहीं बन पाते हैं कुछ एरिया में, इसके साथ-साथ पानी की भी बहुत दिक्कत है । कई जगह अगर एनीकट भी बन जाय तो यह भी समझ में आता है कि आर्थिक स्थिति उनकी सुधर सकती है लेकिन इस रोक की वजह से न तो एनीकट बन सकते हैं और मैं यहां सदन की नेता से और माननीय मंत्रीजी से निवेदन करना चाहूंगी कि इस रोक को हटा कर वहां पर छोटे-छोटे एनीकट बनवाये जायें ताकि वहां के लोगों को, रहने वाले जो अपना जीवन यापन कर रहे हैं, उनको पीने के पानी के साथ-साथ जो दो बीघा और डेढ़ बीघा खेती है वह भी सही ढंग से खेती कर पाये । सुबह उठते ही सबको मजदूरी के लिए उदयपुर शहर की तरफ आना पड़ता है । रोजगार गारंटी योजना के तहत भी कार्य तो चल रहे हैं लेकिन उसके बावजूद भी बहुत कम कार्य हैं इसलिए मेरा सरकार से निवेदन है कि अकाल के माध्यम से भी कार्य करवाये जायें ताकि उनको राहत मिल सके और छोटे-छोटे एनीकटों पर भी ध्यान दिया जाय । आज उदयपुर शहर झीलों की नगरी कहा जाता है और विश्व में सातवें स्थान पर उदयपुर शहर का नाम स्थापित है । उसके साथ-साथ मैं यह कहना चाहूंगी, चार साल में सरकार ने कई तरह की योजनाएं भी चला रखी हैं, इसी तरह टाडा क्षेत्र में

(श्रीमती वन्दना मीणा)

केशवबाड़ी योजना जो कि अधूरे कुए काश्तकारों के लिए स्वीकृत करने के लिए, तीस हजार स्वीकृत करने के लिए योजना बनाई है, लेकिन उसको बढ़ाकर पचास हजार स्वीकृत किया जाय क्योंकि तीस हजार में पांच हजार बागवानी का पैसा है, पच्चीस हजार में कुआ खोदना है, पच्चीस हजार में कुआ खोदने पर पानी भी नहीं आता है तो बागवानी कहां से लगेगी। इसलिए मेरा सरकार से निवेदन है और मंत्रीजी से भी निवेदन है कि तीस हजार से पचास हजार किया जाय ताकि वहां के जनजाति लोगों को फायदा मिल सके ।

इसी के साथ-साथ बड़गांव पंचायत समिति की जो 19 पंचायते हैं वह माडा क्षेत्र में आती हैं और आज बिजली पर भी चर्चा कर रहे हैं, मैं सरकार को धन्यवाद देना चाहूंगी कि चार साल में जो बिजली के काम में एक कीर्तिमान स्थापित किया है, इसके लिए मैं बिजली विभाग के मंत्रीजी को, सदन की नेता को और सभी अधिकारियों को भी बधाई देना चाहूंगी, धन्यवाद देना चाहूंगी कि हर क्षेत्र में ऐतिहासिक काम करके अपना कीर्तिमान स्थापित किया । यह माडा क्षेत्र की जो 19 पंचायतें हैं उनमें आज भी कई ढाणियां बिजली से वंचित हैं, मेरा मंत्रीजी से निवेदन है कि जो माडा क्षेत्र में 19 पंचायतें आती हैं वहां पर आज भी लट्टू नहीं लगे हैं और मैं यह आपसे आग्रह करूंगी कि यह माडा क्षेत्र में जितनी भी ढाणियां हैं उनको भी बिजली से जोड़ा जाय ताकि वहां की जो बस्तियां हैं, वहां के जो लोग रहने वाले हैं उनको फायदा मिल सके । इसी के साथ आज मैं ज्यादा नहीं कहते हुए जनजाति बाहुल्य क्षेत्र की जो समस्या थी मेरे विधान सभा क्षेत्र की बता ही चुकी हूं, मैं तो इतना ही निवेदन करूंगी कि मैंने जो आज बिजली व अकाल की चर्चा की है, इस पर गौर किया जाय । आज मुझे बोलने का समय दिया इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, मैं समय से पहले बोल चुकी हूं, ज्यादा समय नहीं लिया । धन्यवाद ।

श्री सभापति: सम्माननीय सदस्या, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद, पांच मिनट में आपने अपना विषय रख दिया । माननीय सदस्य श्रीमती राजकुमारी शर्मा ।

श्रीमती राजकुमारी शर्मा (सीकर): माननीय सभापतिजी, आपने बोलने के लिए समय दिया, आपकी बहुत आभारी हूं । हमारी सरकार सत्ता में आई है तब से विद्युत के क्षेत्र में हो, चाहे अकाल के क्षेत्र में हो, चाहे पानी के क्षेत्र में हो, चाहे स्कूलों के क्षेत्र में हो, सभी में अभूतपूर्व कार्य किये हैं । मैं, जैसे हमारी बहन अभी वन्दनाजी ने बहुत जल्दी ही समाप्त कर दिया, वैसे ही मैं

(श्रीमती राजकुमारी शर्मा)

बहुत ज्यादा नहीं बोलूंगी । आदरणीय, अभी हमारे एक माननीय सदस्य विपक्ष के बोल रहे थे कि मेरे..

श्री सभापति: आप तो अपनी बात रखो ।

श्रीमती राजकुमारी शर्मा (सीकर): चालीस गांवों में अभी तक बिजली नहीं लगी है, सभापतिजी, चालीस साल तक इनका राज रहा तो यह दोष अपनी सरकार का नहीं है । मैं एक बात के लिए मुख्य मंत्री साहिबा को बहुत बहुत धन्यवाद देना चाहती हूं, आजादी के साठ साल बाद हमारी शाकम्भरी माता के ऊपर भगोरा गांव है उसमें बिजली नहीं थी और जब हम पहली बार प्रचार के लिए गांव में गये तो बड़ा आश्चर्य हुआ कि पचास साल बाद भी वहां गांव में बिजली नहीं है और हमने माननीय मुख्य मंत्री साहिबा को निवेदन किया और मेरे यहां बिजली उस गांव में लग गई है, उसके लिए ऊर्जा मंत्री और माननीय मुख्य मंत्री साहिबा को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहूंगी कि वहां उन लोगों को बिजली पहुंचाई । मात्र 270 लोग रहते हैं। आदरणीय मुख्य मंत्री साहिबा खुद उनको देखकर के आई और बहुत-बहुत धन्यवाद दिया हम लोगों ने । आदरणीय सभापतिजी, जब से मुख्य मंत्रीजी ने काम संभाला है हर आदमी में ऊर्जा होती है, तभी ऊर्जावान कहलाता है । इसलिए आज ऊर्जा पर और अकाल पर यहां चर्चा हो रही है । अकाल पर मैं हमारे माननीय अकाल राहत मंत्रीजी से निवेदन करना चाहूंगी कि मेरे सीकर ज़िले में बहुत शांति से चार साल तक कार्य चला लेकिन इस बार जो शीत लहर चली, उसमें जो पाला पड़ा, उसमें सरसों की पूरी ही फसल नष्ट हो गई, गेहूँ की भी आधी से भी ज्यादा फसल नष्ट हो गई, चने में भी कुछ नहीं है । इसलिए अकाल के विषय में मैं आपसे निवेदन करना चाहती हूं कि किसानों को बहुत अच्छी राहत मिले। आदरणीय मुख्य मंत्रीजी ने उनके बिजली के बिल माफ किए हैं, उनको खूब राहत दी है, किसान...

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): कर दिया है क्या?

श्रीमती राजकुमारी शर्मा (सीकर): आदरणीय सदस्य आप विराजे, हम लोग बीच में नहीं बोलते हैं।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): यह सारे गुणगान, वहां बैठकर के हम भी गुणगान करते थे, हम बोलते थे महान अशोकजी। हम महान अशोकजी बोलते थे, आप क्या बोलते हो? पता नहीं?

श्रीमती राजकुमारी शर्मा (सीकर): आप विराजें, आप अपना समय आये तब बोलना । माननीय सभापति महोदय, जैसे अकाल राहत कार्य में मैं हमारे मंत्रीजी से निवेदन करना चाहती हूं कि किसानों को बहुत अच्छा मुआवजा मिले । माननीय सभापतिजी, मैं एक निवेदन करना चाहूंगी कि मेरे बारां गांव है, वहां पर, साकम्बरी माता से गुजरते हैं तब बारां गांव में न तो बहुत ज्यादा वहां पर कोई साधन है, न ही वहां बिजली के ज्यादा ट्यूबवैल हैं, बहुत ज्यादा बिजली खर्च नहीं करते हैं । वहां के लोग बरसाती जीवन से ज्यादा प्रभावित हैं। बस बरसात का पानी हो जाए उससे संतोष करते हैं । इसलिए कुछ एनीकट भी वहां बन जाएंगे तो बहुत ही उनको पानी मिल जाएगा और उनको राहत मिलेगी । पानी की पहाड़ी क्षेत्र में बहुत कमी होती है और अन्न उपजता नहीं है। वहां के लोग गुर्जर बाहुल्य हैं और मेरे यहां गुर्जर बहुत भोले-भाले हैं, उन्होंने न तो कोई +++ किया, न कुछ और, माननीय मुख्य मंत्रीजी का बहुत आभार व्यक्त करते हैं । एक हमारे साकम्बरी माता का ट्यूबवैल बन गया था उस....

श्री सभापति: यह जो शब्द है दंगा-फसाद इसको डिलीट कर दें।

श्रीमती राजकुमारी शर्मा (सीकर): एक ट्यूबवैल बन गया था तो उसको किन्हीं कारणों से बंद करवा दिया । इसलिए वह ट्यूबवैल पुनः ऊर्जा मंत्रीजी चालू करवा दें क्योंकि वह ट्यूबवैल चालू होने से पानी पीने को मिलेगा। हमारे पूरे साकम्बरी माता के और सकराय में भी, एक मैं निवेदन करना चाहूंगी मेरे क्षेत्र के लिए मैंने माननीय मंत्री महोदय को और माननीय मुख्य मंत्रीजी को बार-बार लिखकर दिया है कि 33 केवी ग्रिड डेगाना में जोड़ा, दीनापुरा में आप लगाएं। और तारपुरा पीपराली पंचायत समिति में 33 केवी के लिए मैंने आपसे बार-बार निवेदन किया है। और मेरे यहां आज तक 132 केवी ग्रिड का एक भी सब सेंटर नहीं बना है । आदरणीय मंत्री महोदय से मैं बहुत-बहुत विनय करना चाहती हूं कि पीपराली पंचायत समिति हैडक्वाटर है और वहां पर 600 से भी ज्यादा हमारे ट्यूबवैल हैं। इसलिए 132 केवी ग्रिड का एक ग्रिड स्थापित करें और आप जब रिप्लाई दें तो उसमें सम्मिलित कर लीजिए । मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहूंगी । माननीय सभापति महोदय-

करुं-करुं तो सभी, पर करे न कोई काम
काम तो सिर्फ वसुंधराजी ने किया है जो
होगा राजस्थान में उनका नाम, धन्य-धन्य रे

(श्रीमती राजकुमारी शर्मा)

वसुंधराजी, धन्य उनके माता-पिता का नाम
जो पूरे राजस्थान में काम करके और बिजली सा
कर दिया उजागर नाम ।
माननीय सभापतिजी, बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री अमराराम (धोद): आपने खाटूश्यामजी की यात्रा की है, एक भजन सुना दो आप ।

श्रीमती राजकुमारी शर्मा (सीकर): भजन तो...(व्यवधान)

श्री सभापति: बैठिए माननीय सदस्या, अभी आपने माता-पिता का नाम लिया है । माननीय श्रवण कुमारजी, अपनी बात कहें।

श्रीमती राजकुमारी शर्मा (सीकर):...(व्यवधान) उपयुक्त होगा तब भजन सुनाऊंगी, यहां बात सुनाने आई हूं ।

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव): श्रवण कुमारजी आप तो सच बोलेंगे न, श्रवण कुमारजी आप तो सच बोलेंगे?

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): यह चमत्कार हो गया, चमत्कार हो गया, देव कृपा हो गई ।

श्री सभापति: माननीय सदस्य बीच में टोकाटाकी नहीं करें ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): आदत से लाचार है...(व्यवधान) राजकुमार जी आपकी बात ही कहूंगा चिंता मत करो आप, आपकी भावनाओं को प्रकट करुंगा । माननीय सभापति महोदय, राजस्थान की इस भूमि पर आज अकाल की दुर्दशा इस समय जो है सारे लोग केवल इस बात को महसूस कर रहे हैं कि मंत्रीजी, मुख्य मंत्रीजी कहीं नाराज न हो जाएं, मैं बताना चाहता हूं कि कांग्रेस के राज में भी ऐसा हुआ था । अकाल पड़ा, स्कूटरों के नम्बर लिखकर के और इतनी बुरी तरह भ्रष्टाचार हुआ कि पूरे राजस्थान में, और वो ही हालात सेम आपके हो रहे हैं । हालात तो यही है जो भ्रष्टाचार के ऊपर लोगों को कंट्रोल नहीं किया। अभी धर्मपालजी कह रहे थे अच्छे अफ़सरों को लगाना नहीं चाहते, मैं अफ़सरों की कोई तरफदारी नहीं करता हूं पर मैं यह कहता हूं कि राजस्थान हो या चाहे कोई प्रदेश हो जिस प्रदेश का भ्रष्टाचार चरम सीमा पर पहुंच जाता है, उस देश का कभी भला नहीं हो सकता। और आज बिजली के अंदर कोई किसान इस बात से खुशहाली का जीवन नहीं जी

(श्री श्रवण कुमार)

सकता । रात को बिजली नहीं, अंधेरे में किसान सोता है, अंधेरे में उठता है, इन्होंने घोषणा की थी कि सात घंटे बिजली देंगे । मैं, अभी राजेन्द्रजी थोड़ी देर पहले बड़े तीस मारका की तरह कह रहे थे कि बिजली सात घंटे दी जाती है । मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि राजस्थान में पांच घंटे से ज्यादा बिजली नहीं दी। और सुबह स्टूडेंटों को पढ़ने के लिए चार से छह घंटे 6 बजे तक बिजली देने की घोषणा की, एक दिन भी कभी बिजली नहीं दी। शाम को 6 से 10 के बीच बिजली की घोषणा की, एक दिन भी ऐसा नहीं हुआ, पूरे गांव में सिंगल फेस के कनेक्शन के ट्रांसफार्मर लगा दिए और उन ट्रांसफार्मरों में भी इतना भ्रष्टाचार हुआ है मैं बताना चाहूंगा कि सारे के सारे ट्रांसफार्मर पता नहीं फर्जी कहां से लेकर के आये हैं और कितना कमीशन उन्होंने लिया है, मैं जाना नहीं चाहता इस मामले में। पर आज उन ट्रांसफार्मरों की यह हालत है कि कोई काम में बिजली कनेक्शन नहीं जच रहे हैं, कम से कम ऐसा कोई इनको मिला नहीं क्या इन ट्रांसफार्मरों की जांच करने वाला? और पूरे हिंदुस्तान में महाराष्ट्र है, गुजरात है आज भी पुराने मीटर चल रहे हैं और राजस्थान में वह मीटर लगा दिए कि हवा से भी चलते हैं। अगर कोई गलती से रात को जीरो वाट का बल्ब चालू रह गया तो सुबह तक दस यूनिट आ जाएगी...

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): जीरो वाट का बल्ब है वह भी बिजली कंज्यूम करता है आपको मालूम होगा ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): आपने पहले क्यों नहीं किया?

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): जीरो वाट का बल्ब है एनर्जी कंज्यूम करता है, जब टीवी कोई बंद करता है उसकी जो लाल लाइट दिखाई देती है वह भी बिजली कंज्यूम करती है, हवा से नहीं जलती है ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): यह इतना बढ़िया मीटर कहां से ले आये आप जो रात के बारह बजे भी हवा से चलता रहता है? माननीय मंत्रीजी नागौर गांव के लोगों ने इसलिए नहीं भेजा था, राजस्थान की धरती पर राज इन्होंने बदला था कि हम किसान के घर में खुशहाली और दीपक जलाएंगे। और आपने ऐसा दीपक जलाया कि सब का बुझा दिया । पहले कोई अगर आदमी आखिरी डर की सांस भी लेता था बेचारा गरीब आदमी जो झोंपड़ी में दीपक नहीं जलाता था, कहीं सीधा तार लगा लेता था, आपने ऐसी फ्लाइंगें छोड़ दी जिसकी कोई सुनवाई ही नहीं होती । आप अचम्भा करेंगे मंत्रीजी कि

(श्री श्रवण कुमार)

पहले क्या होता था कि किसी का वीसीआर भर भी लेते थे तो उस वीसीआर के बाद में उसका कुछ-न-कुछ मीटिंग होकर के ए.सी. के पास जाकर के उसका समझौता हुआ करता था पर आपने तो ऐसी योजना बनाई कि उसका कोई समझौता ही नहीं है । अगर एईएन ने भर दिया, एईएन इस बात पर क्यों जोर देता है? आपने ऐसा प्रलोभन दे दिया कि 10 प्रतिशत भरने वाले, 30 हजार का भरेंगे तो तीन हजार रुपये इनको मिलेगा । उस लोभ में कोई यह नहीं देखेगा कि इस आदमी ने गलती की है या नहीं की है । आप किसान के हितैषी है या एईएन के हितैषी हैं। जिस किसान के घर में 30 हजार की वीसीआर भरी जाती है और उस एईएन को सीधा 10 प्रतिशत मिल जाता है । माननीय सभापति महोदय, उस तीन हजार के लोभ में एईएन यह नहीं देखता है कि किसान का बुरा हो रहा है । वह जाकर के सुबह से शाम तक 20 लाख रुपए की वीसीआर भरकर के ले आता है....

श्री अमराराम चौधरी (राज्य मंत्री, गृह): सभापति महोदय, माननीय सदस्य को याद दिलाता हूं कि विजलेंस जो आपके समय में थी, आप कह रहे हैं...

श्री सभापति: देखिए माननीय सदस्य को कल भी बोलने का समय नहीं मिला था, आप टोकेंगे नहीं ।

श्री अमराराम चौधरी (राज्य मंत्री, गृह):...(व्यवधान) ज्यादा उस समय में थी, विजलेंस उस समय ज्यादा थी, अब कम हुई है ।

श्री सभापति: मंत्रीजी जवाब दे देंगे ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): आप मंत्रीजी हमारे साथी थे, आप हमारे निर्दलीय आये थे, हमारे साथ साडू भाई थे चिंता मत करो आप। आपको मंत्री बनाकर इधर बैठा दिया, हम बैठेंगे चिंता मत करो । आप कांग्रेस कल्चर के आदमी हो, आपने अपना किनारा बदला है। आपको मालूम है किश्ती के बदलने से किनारा नहीं बदलता है। अमरारामजी, बीजेपी में जाने से आपके विचार नहीं बदलते हैं ध्यान रखना । ये आपके विचार तो कांग्रेस के ही हैं ।

श्री अमराराम (धोद): धर्म परिवर्तन कर लिया आपने ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): धर्म परिवर्तन कर लिया अच्छी बात है ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): यातायात मंत्रीजी क्या कह रहे हैं सुन तो लो एक बार...(व्यवधान)

श्री युनूस खान (यातायात मंत्री): बिल ला रहे हैं...(व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): इस बात की आपको पीड़ा महसूस करनी चाहिए कि किसान के साथ कितना बड़ा अत्याचार है। बिजली दे नहीं और मीटर अगर गलती से किसी आदमी का बंद भी हो गया और वो बिजली बोर्ड में गया कि साहब मेरा मीटर खराब हो गया तो एईएन क्या कहेगा कि पांच दिन बाद में टाइम मिलेगा तब आएंगे। और उसी दौरान अगर कोई फ्लाइंग आ गयी तो सभापति महोदय, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि उस व्यक्ति के तीस हजार रुपये की पेनल्टी लगायेगी और तीस-चालीस का कोई भरोसा नहीं पचास भी लगा सकते हैं । अगर वो एक महीने में जमा नहीं करायेगा तो पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करा देंगे और रिपोर्ट दर्ज होने के बाद पुलिस वाले आ जाएंगे तो दस हजार रुपये वो पुलिस वाले ले जाएंगे । इस तरह की ज्यादती किसानों के साथ जो इस समय हो रही है, ये बोलते हैं कि हमारे राज में कितनी वाहवाही लूटी है, कितना हुआ है, आप लोगों को मालूम है कि हमारे कांग्रेस सरकार में एक नंबर का मुख्य मंत्री घोषित किया था, किया था न? और हमारे को सबको नशा हो गया था कि एक नंबर का मुख्य मंत्री है 120 सीटें आएंगी। पर जनता क्या कहती है मालूम है आपको अक्टूबर तक तो यह कहेगी कि इतनी बढ़िया सरकार है इसका मुकाबला नहीं है। पर नवम्बर एक से चालू होगा जब अभियान चुनाव का तो सब बातें बता देगी कि आपने क्या-क्या कारनामें किये और जब चुनाव होंगे तो रिजल्ट आएंगे तब मालूम होता है, अँधेरा तब खुलता है, सारा अंधेरा लाइट में लोग लेकर नहीं आते हैं। इसलिए मैं विश्वास दिलाता हूं मंत्रीजी आप बहुत ही समझदार और ईमानदार आदमी हो । इस बात को तो मानना ही पड़ेगा मंत्रीजी वाकई में काम करने वाले हैं पर ऊर्जा जिसको मिल जाता है उसको ऊर्जा खा जाती है यह पुराना चला आ रहा है । ट्रांसपोर्ट मंत्री...

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मेरे को नहीं खायेगी ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): मैं कोई आपको खिलाना नहीं चाहता हूं ।

श्री युनूस खान (यातायात मंत्री):...(व्यवधान) मन में क्यों रखते हो ट्रांसपोर्ट वाली भी दोनों ही बोल दो ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): ट्रांसपोर्ट मंत्री और ऊर्जा मंत्री जो बन जाता है न उनको दुबारा विधान सभा मांगती नहीं है न जाने क्या है । हमारे शीशरामजी ओला बने उनको 1990 में हरा दिया, रोहिताश्वजी बने उनको हरा दिया। और पिछली बार जो जगमाल सिंहजी यादव बने थे एक बार तो उनको हरा दिया और डा. चन्द्रभान जी को....

श्री सभापति: माननीय सदस्य, अकाल और ऊर्जा पर सुझाव नहीं हैं हार गये जो हार गये आप तो सुझाव दे दो बढ़िया से ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): ऊर्जा के लिए ही है यह ऊर्जा ही तो गड़बड़ करती है अगर मैं पहले ही इनको रास्ता बता रहा हूं कि बम्बई जाने पर आपका प्लेन क्रेश हो जाएगा तो उसको आप पहले क्यों नहीं समझ पा रहे हैं? यह मैं इनको बता रहा हूं डिपार्टमेंट चेंज ...

श्री युनूस खान (यातायात मंत्री): माननीय सभापति महोदय, मैं आपकी इजाजत से, ये हमारे मित्र हैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि ये कह रहे हैं कि आप दुबारा तो आओगे नहीं और जब आओगे नहीं तो हमारे जाते-जाते ऐसे मीटर लगा जाओ जो चले नहीं बिना चलने वाले मीटर लगा कर जाओ, ये कह रहे हैं यह बात ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): नहीं-नहीं, मैं यह नहीं कह रहा हूं। मैं कह रहा हूं कि किसान का भला करने में अगर कानून बदलना पड़ता है और आपको कितना भी कुछ करना पड़ता है, 'भरा नहीं भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं, हृदय नहीं पत्थर है जिसमें इस किसान के प्रति प्यार नहीं ।' मैं किसान का हितैषी हूं मैं कुछ इस बात की परवाह नहीं करता हूं कि कौन क्या करता है । मुझे इस बात का दर्द है और इस बात की पीड़ा है कि किसान का बेटा रात को किस तरह कड़ाके की सर्दी में पैदा करता है और किस तरह तपती धूप में उसको निकालता है उस पीड़ा को आप समझ नहीं पा रहे हैं। और रात को बिजली तीन-तीन घंटे, दो-दो घंटे आकर के बिजली जब चली जाती है पूरा पाइप भर जाता है और फिर बिजली चली जाती है फिर पाइप खाली हो जाता है। आपको मैं विश्वास दिलाता हूं कि अगर उसका औसत निकाला जाए तो आपके बिजली का औसत, मंत्री जी, आपको वो पता है आपको एक्सप्लेन नहीं कर पाये । आपको डूंगरगढ़ से आने वाले मंगलारामजी एक्सप्लेन नहीं कर पाए मैं आपको एक्सप्लेन करता हूं कि बिजली का केल्कुलेशन कैसे बैठता है। अगर आपने बिजली दी 8 घंटे, बिजली दी 7 घंटे

(श्री श्रवण कुमार)

तो उसका औसतन क्या बैठता है? आपने दो घंटे बिजली देने के बाद बंद कर दी, पाइप भरने में 17 मिनट लगते हैं 17 मिनट तक पाइप भरता है और बड़ी लाइन होती है तो 22 मिनट लगते हैं और 22 मिनट में पाइप भर जाता है। और फिर आपके जब ट्रिप हो जाता है और फिर वो खाली हो जाता है तो 22 22 मिनट तीन ट्रिपिंग हो जाती है तो 66 मिनट हो गये एक घंटा कट गया न आप नहीं जानते हो, 'जिसके कभी न फटी बिवाई वो क्या जाने पीर पराई।' आपने पाइप बदला है क्या? हमें पाइप लगाना आता है, हम जानते हैं हल जोतते समय क्या-क्या कठिनाइयां होती हैं । हमें मालूम है कि पाइप लगाने के समय क्या-क्या तकलीफ होती है । रात को सर्दी में जब जीरो टेम्प्रेचर होता है और किसान का बेटा पाइप के हाथ लगाता है...

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): मैं भी बहुत खेती करता हूं मैं अंजान नहीं हूं । आपके समय में ट्रिपिंग नहीं आती थी? आपके टाइम फारमूला कोई और था ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): आपके खेती करते हैं और ही । आप खेती नहीं करते हैं, खेती हम करते हैं पीड़ा हम जानते हैं, किसान की पीड़ा क्या होती है। रात को 11 बजे रात को 12 बजे जब जीरो टेम्प्रेचर होता है और किसान का बेटा पाइप के हाथ लगाता है तो कइयों को तो हार्ट अटैक हो जाता है आपको उस पीड़ा का मालूम है क्या? उस पीड़ा को हम जानते हैं और बिजली चली जाती है फिर जाकर बैठता है...(व्यवधान)

श्री महीपाल यादव (बानसूर): इनको तो रात को 8 बजे से सुबह तक होश ही नहीं रहता काहे के लिए बिजली चाहिए ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): आपको रहता है क्या?

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): मैं यह तो नहीं कहूंगा पर मैं यह बात एग्जेक्ट बता रहा हूं आपको कि किसान को तीन घंटे बिजली देकर फिर बाद में ट्रिप हो जाती है फिर आती है दो घंटे देकर के फिर ट्रिप हो जाती है फिर एक घंटे दे करके ...

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री):...(व्यवधान) आप खेती नहीं करते हो आप राजनीति करते हो ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): खेती करता हूं और राजनीति दोनों साथ साथ करता हूं । हम हमारे किसान की, गरीब की झोंपड़ी में जाकर के पूछते हैं कि तेरी पीड़ा क्या है ।

श्री महीपाल यादव (बानसूर): माननीय सभापतिजी, श्रवण कुमारजी की एक आँख खेती पर है और एक आंख राज पर है बराबर चलते हैं ये ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): खेती वाले प्रश्न पूछो न पता लग जाएगा कौन खेती करता है कौन नहीं करता है ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): ऐसा है अपन तो करते हैं न आपको मालूम है, एक ही बात में सब कुछ आ जाएगा, 'जंगल में पक्षी अनेक होते हैं, सबका ठिकाना एक होता है । जंगल में शिकारी अनेक होते हैं, सबका निशाना एक होता है । भाषाएं अलग-अलग होती हैं सबका तराना एक होता है, दिल में प्यार हो तो जमाना एक होता है।' आपने महसूस किया होगा कि किसान की जो पीड़ा है उस पीड़ा को केवल चुनाव के एक महीने तक समझते हैं कि आपकी पीड़ा क्या है। रात को बारह बजे हम आपको तैयार मिलेंगे। पर मैं सभापति महोदय, विश्वास दिलाता हूं कि आपके तो किसान है ही नहीं आप तो उस जगह से चुनाव जीतकर आते हैं जहां किसान फिल्टर होकर शहरों में आ जाते हैं, माइग्रेट होकर आ जाते हैं ।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, मुझे चड़स चलाना भी आता है, पाणत करना भी आता है, गिट्टी तोड़ना भी आता है, निनाण करना भी आता है। साउल, सूत, गुणिया सब आता है ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): आता था ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): सभापति महोदय, आप इनको भी सिखायें...(व्यवधान) जो आपको आता है वो सिखा दें इनको...(व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): अगर ये बातें सभापति महोदय, आपने इनको सिखा दी न ...

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): जो आपने सीखा, वो सिखा दो ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): अगर आपने यह सिखा दिया न इनको तो इनका जीवन सफल हो जाएगा ।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर):...(व्यवधान) ये परबतसर से आते हैं इसलिए सब जानकारी है ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): आते हैं न, आते हैं, आया करते थे अब माइग्रेट हो गये हैं ।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): अभी भी महीने में सात दिन वहीं परबतसर किनसरिया में रहते हैं ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): माइग्रेट हो गये, माइग्रेट हो गये ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): जब सब जानते हैं तो फिर किसान का दुश्मन कौन है यह पहचान करने की कोशिश करें ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): हमने तो कर ली न ।

श्री महीपाल यादव (बानसूर): सभापतिजी, आप तो प्रोफेसर हो और जमीन से जुड़े हुए हो यह प्रशिक्षण इनको भी दो थोड़ा ।

श्री सभापति: बिलकुल आपकी राय मानेंगे ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): रामप्रतापजी कह रहे हैं कि फिर पीड़ित कौन हैं, पीड़ा कौन दे रहा है, मैं कह रहा हूं कि इस सदन में जो दो सौ सदस्य बैठे हैं वो उनके दिमाग में यह बात आ जाएगी कि किसान पीड़ित हैं उस दिन के बाद किसान पीड़ित रहेगा ही नहीं। केवल भाषण से देश चलना है और भाषण से जब तक देश चलेगा तब तक इंप्लीमेंट नहीं होगा । कितनी योजनाएं लागू करते हैं वो इंप्लीमेंट केवल दस प्रतिशत होती हैं । मैं यह कहता हूं कि अगर भाषण देने वाली बातें सारी लागू हो जाएंगी तो माननीय मंत्रीजी मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि गांवों में चुनाव के लिए वोट मांगने की जरूरत नहीं पड़ेगी। किसान अपने आप चल कर आएगा कि आपको वोट देंगे आप चलिये हमारे साथ, पर यह आज गली-गली में घूमने की जरूरत कहां पड़ रही है? आज चुनाव जीतते हैं एक बार जीत जाते हैं और तीन बार ड्राप हो जाते हैं फिर जीतते हैं और दो बार ड्राप हो जाते हैं। इसका कारण क्या है? हमारा केवल इंप्लीमेंट नहीं करना और केवल भाषण में लोगों को बरगलाना । यह हमारे जीवन का उद्देश्य हो गया है ।

मैं विश्वास दिलाता हूं कि अगर आपने किसान कि जिस तरह आपने दुर्दशा कर रखी है कि जगह-जगह आपने फ्लाइंग खेतड़ी की फ्लाइंग जाती है बुहाना में और बुहाना की फ्लाइंग आती है सूरजगढ़ में और सूरजगढ़ की फ्लाइंग जाती है झुंझुनूं में। इस तरह आपने जो एंटीवाइज कर रखा है न यह सारा सिस्टम जो लोग अपने पैसे के प्रलोभन में किसानों के साथ अत्याचार करते हैं एक तो आप इसमें सुधार करिये । इसकी अपील तो जरूरी होनी चाहिए । अपील ही नहीं होगी ऐसा दुनिया में कौनसा केस होगा, अगर सेशन कोर्ट में होता है तो हाइकोर्ट में अपील हो जाती है, हाइकोर्ट में होता है तो सुप्रीम कोर्ट में अपील हो जाती है और सुप्रीम कोर्ट में भी अगर नहीं सुनते तो

(श्री श्रवण कुमार)

राष्ट्रपति को अपील होती है पर आपके बिजली की तो कोई अपील ही नहीं होती है । किसान के साथ कितना बड़ा दर्दनाक अत्याचार है कि उसकी कोई अपील ही नहीं है और आपको अफसर पढ़ा देते हैं आप अफसर की बात सुन करके आगे बढ़ जाते हैं ।

अकाल की बात मैं कहना चाहता हूं अकाल में मैं विश्वास दिलाता हूं, अकाल मंत्रीजी ध्यान से सुनें । ऊपर मत देखो, ऊपर तो लाइट है मेरी तरफ लाइट है यह लाइट आपके दिल में बैठेगी ।

श्री महीपाल यादव (बानसूर): माननीय सभापतिजी, ऐसा काला कानून तो अंग्रेजों के राज में भी नहीं बना था ये तो अंग्रेजों से भी ऊपर चला गया कहीं अपील ही नहीं है बताइये ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): हां, अपील ही नहीं है । है तो बता दो मंत्रीजी, है क्या अपील? मंत्रीजी, आप अपने भाषण में बता देना अपील है तो मान जाएंगे अपील है पर अपील है ही नहीं । माननीय मंत्रीजी, अकाल की बात करना चाहता हूं । अकाल में आपने काम शुरू करा रखा है कच्चे काम जोहड़ के अन्दर पन्द्रह साल से जोहड़ ही जोहड़ की खुदाई हो रही है बरसात होती नहीं है और उन जोहड़ों को इतना खुदा दिया कि उसमें पशु घुस नहीं सकता। पशु घुसने का तरीका क्या होता है पेड़ा बना करके पशु जा सकता है।

(समय : 16.00 बजे)

आपने कुंड कुए की तरह बना दिये उसमें पशु कैसे जायेगा, उसमें पानी की क्या व्यवस्था होगी । इसका कोई रीजन तो है नहीं केवल भ्रष्टाचार एक सामूहिक सिस्टम हो गया । उसमें एईएन भी मिल लेगा, जेईएन भी मिल लेगा, बीडीओ भी मिल लेगा और सारे सिस्टम मिलकर भ्रष्टाचार को ग्रोथ बना देंगे । मैं कहना चाहता हूं कोई ऐसी टीम बनानी चाहिये जिसमें भ्रष्टाचार हो रहा है उन लोगों को पकड़ा जाये । लास्ट में बिहार की तरह कोई बड़ा घोटाला हो जायेगा उसके बाद 10 मंत्री जायेंगे और सीएम जेल में जायेगा तब जाकर खुश होंगे क्या? पहले ही इस पर कंट्रोल कीजिए । कैंसर बनने के बाद अगर उसका इलाज कराना चाहोगे तो सेहत ठीक नहीं होगी । जो कैंसर शुरू हो रहा है, आज राजस्थान में जो अकाल राहत चल रहा है इसमें इतनी मध्यान्तियां हैं उन मध्यान्तियों को अगर आप गहराई में देखेंगे तो वास्तव में अकाल राहत में केवल 20 प्रतिशत पैसा जमीन पर लग रहा है 80 प्रतिशत पैसा भ्रष्टाचार

(श्री श्रवण कुमार)

में जा रहा है । इसलिए मेरा ज्यादा सुझाव नहीं है जितने भी माननीय सदस्य राजस्थान की 5-6 करोड़ जनता के बीच में से निकल कर आते हैं उनका प्रत्येक का सोच यह होना चाहिये आज राजस्थान का किसान जो 70 प्रतिशत गांवों में बसते हैं, जिसकी खुशी खेत और खलिहान से गुजरनी चाहिये थी और वह खुशी कहां से गुजरती है अजमेर, कोटा । आज कोई भी काम की बात करेंगे कोटा में हो रहा है, अजमेर में हो रहा है, जौधपुर में हो रहा है । किसी ने सोचा क्या कि झुंझुनूं में भी हो रहा है । आज कोई काम के लिये बोलते हैं कहां हो रहा है झुंझुनूं में नहीं हो रहा है, कोटा में हो रहा है, अजमेर में हो रहा है, जोधपुर में हो रहा है, भीलवाड़ा में हो रहा है, बांसवाड़ा में हो रहा है । मैं एक बात कहता हूं कि राजस्थान की पृष्ठभूमि को कायम रखने वाला किसान का बेटा, हिन्दुस्तान की आजादी को कायम रखने वाला और मान मर्यादा को जिंदा रखने वाला किसान का बेटा जो झुंझुनूं में 33 प्रतिशत शहीद होते हैं वहां कोई विकास ही नहीं और जो लोग जानते नहीं कि देश की मान मर्यादा का अर्थ क्या होता है उन लोगों को आईआईटी खुल रहे हैं, शिक्षा में बढावा दे रहे हैं । आज राजस्थान की पृष्ठभूमि को अगर किसी ने कायम रखा है तो हमारे किसान की बेटी, बाडमेर के जिस कोने में लाइट नहीं जाती है हमारे किसान की बेटी वहां आपको पढ़ाती हुई नजर आयेगी । हमारा इंजीनियर वहां आपको बिजली देते हुए नजर आयेगा । झुंझुनूं जिला एक ऐसी पृष्ठभूमि का जिला है जो शिक्षा में भी अग्रणी है, बहादुरी में भी अग्रणी है, हर विकास में अग्रणी है, ईमानदारी और निष्ठा में अग्रणी है। और उसके बाद भी क्या कहेंगे झुंझुनूं का कभी बजट में नाम आता ही नहीं । पता नहीं हरियाणा में समझ रखा है क्या। मेरा मंत्रीजी आपको सुझाव है कि किसी किसान का ट्रांसफार्मर जल जाता है....

श्री सभापति: माननीय सदस्य समाप्त करें ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): सभापति महोदय, एक मिनट । इस समय किसानों के ट्रांसफार्मर जल रहे हैं आप कृपा करें, माननीय मंत्रीजी बहुत महत्वपूर्ण बात है ध्यान से सुनो । किसान का ट्रांसफार्मर जल जाता है एईएन इस समय दे नहीं रहे हैं । 30 प्रतिशत राशि जमा कराने पर ट्रांसफार्मर इश्यु कराये जाये । जितने भी ट्रांसफारमर नीचे पड़े हैं उन सारे ट्रांसफार्मर को ऊपर स्टेंड पर रखवाया जाये । क्योंकि किसान का बहुत बड़ा धन पशु भैंस, गाय और ऊंट होता है अगर किसी का पशु मर जाता है तो कोई मुआवजा नहीं

(श्री श्रवण कुमार)

मिलता है । इसलिए जितने ट्रांसफार्मर नीचे पड़े हैं उन सारे ट्रांसफार्मर को ऊपर रखवाये । नम्बर दो, जो ट्रांसफार्मर जीएसएस पर बनाये गये हैं उनकी चारदीवारी बनाई जाये । जितने भी जीएसएस बनाये हैं उनकी चारदीवारी तो है नहीं और अगर केवल मिलट्री मैन छोड़ दिये उनमें कोई आदमी जानता नहीं कि बिजली कितने घंटे छोड़नी है । जो आप ऊर्जा दे रहे हैं उसमें आप मैन पावर भी भर्ती करो । आपने 1980 में मैन पावर भर्ती किया था उसके बाद आज तक मैन पावर भर्ती नहीं की, मिलट्री मैन लेकर आ जाते हो । हर जगह मिलट्री मैन काम नहीं आते हैं । मिलट्री मैन सुरक्षा तो बढ़िया कर सकता है, गार्ड के रूप में काम कर सकता है पर उनको बिजली के बारे में बहुत कम ज्ञान है । आपने दुनिया भर के सारे काम ठेकेदारों को दे दिये । ठेकेदारों के जो लेबर काम करती है वह लाइन बंद करवाते नहीं । सभापति महोदय, मैं परसों हास्पिटल में गया था चार लड़कों के हाथ कटे हुए पडे हैं । 11 हजार की लाइन के हाथ लग गये । उनको मालूम ही नहीं नये लड़के हैं । आपने जो ठेकेदारी का जो सारा सिस्टम कर दिया पता नहीं आपका कौनसा सोच है, क्या करना चाहते हो राजस्थान की पृष्ठभूमि के साथ। आप अपना एटीट्युट चेंज कीजिए और राजस्थान की जनता के प्रति हमदर्द बनिए और किसान को बिजली देकर उस किसान को खुशहाल बनायेंगे तभी आपकी कोई दुबारा 20-25 सीट आने का मूवमेंट तैयार हो सकता है वरना तो सारा मामला गड़बड़ है मैं आपको आज 6-7 महीने पहले बता रहा हूं । फिर बाद में आप कहोगे दुबारा यह सब कुर्सियां खाली मिलेगी और लगता है कि आपको इधर आकर बैठना पड़ेगा। आपको पहले इसलिए आगाह कर रहा हूं कि सर्दी से पहले अगर कोट सिला लिया जाता है तो आदमी मरता नहीं है सर्दी के मध्य में सिलाओगे तो सर्दी जुकाम हो जायेगा ।

श्री सभापति: माननीय सदस्य रामप्रताप कासनियाजी ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): मैं आपको विनती करता हूं कि कासनिया जी आजकल बहुत +++ हो रहे हैं । मैं आपको पुनः इस बात की विनती कर रहा हूं कि राजस्थान के किसान को खुश रखना आपका परम कर्तव्य बनता है। अगर किसान के साथ अत्याचार करोगे तो मैं समझता हूं कि विधान सभा का जो मेन अस्तित्व है, जो मेन उद्देश्य है वह कामयाब नहीं हो पायेगा । इन्हीं शब्दों के साथ सभापति महोदय, मैं आपको धन्यवाद देता हूं और सरकार को

(श्री श्रवण कुमार)

7 महीने पहले आगाह कर रहा हूं कि आप किसान की तरफ हमदर्द बनिए, किसान के साथी बनिए, धन्यवाद ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): सभापति महोदय, अकाल और बिजली पर चर्चा हो रही है । (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: इस चमचे +++ शब्द को एक्सपंज कराया जाये।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): नहीं इसको अभी रखना है, मैं अभी बोलूंगा, रुको । मुझे क्या पता इनका चमचा बनना पड़े यह कुछ कर दें तो । सभापति महोदय, अकाल के बारे में सदन में चर्चा हो रही है । अकाल में सरकार का प्रबन्धन पिछले जो कार्यकाल है उनके बनिस्बत ठीक है । अभी माननीय सदस्य कह रहे थे कि स्कूटरों के, ट्रेक्टरों के नम्बर देख कर नंबर एक मुख्य मंत्री के कार्यकाल में काम होते थे । ऐसे काम हमने चार साल में देखे नहीं यह मैं निवेदन करना चाहता हूं । सभापति महोदय, अकाल पर इस सदन में, लोकसभा में पक्ष और विपक्ष के माननीय सदस्य बड़ी जोर-शोर से बहस करते हैं, बडे मीठे-मीठे भाषण भी होते हैं । किसान को ऐसे लगता है जैसे यह सदस्य तो एकदम मेरा साथी है । सभापति महोदय, देश आजाद हुए कितना समय हो गया जितना पैसा अकाल के नाम पर खर्च किया गया है अगर इसको अकाल का कोई स्थाई समाधान करने पर खर्च किया जाता तो आज तक पूरे राजस्थान में नहीं पूरे देश में इस अकाल से पीछा छुड़ाया जा सकता था । परन्तु ऐसी सोच बहुत ही कम नेताओं में मिलती है और अगर सोच है तो उस सोच का कोई महत्व नहीं रहता है । सभापति महोदय, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं हमारी बागड़ी में एक कहावत है:-

चोर न के मारे चोर की मां ने मारे जोकि जामण ना रह जाये ।

यानी इस अकाल को खतम करने के लिये क्या उपाय हो सकते हैं मैंने मेरी सूझबूझ के अनुसार इस हाउस में यह निवेदन किया था । कई माननीय सदस्य तो हंस रहे थे उनको यही पता नहीं यह क्या बोल रहा है । सभापति महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि अकाल पर जो पैसा खर्च होता है वह राजस्थान के डेजर्ट पर सरकार फोग एक पेड़ है जिस पर काश्तकार को प्रोत्साहन के तौर पर कोई राशि दे, सरकार कोई डेमोस्ट्रेशन लगाये, उसको कोई आर्थिक सहायता दे, मजदूरी के रूप में दे, कैसे ही दे । अगर राजस्थान में फोग, खेजड़ी, लाणा, साजी और सेवण यह कुछ इस तरह

(श्री रामप्रताप कासनिया)

की घास है कि जिससे अकाल का मुकाबला किया जा सकता है । जिस साल अकाल पड़ेगा उस साल खेजड़ी ज्यादा गहरी होगी । यानी बिना बरसात के खेजड़ी के ऊपर ज्यादा लूम आयेगी अकाल में । लूम होती है आपको पता नहीं है गाय खाती है, भैंस खाती है, बकरी भी खाती है और जरूरत पड़े तो ऊंट भी खाता है ।

श्री सभापति: खेजड़ी के जो पत्ते होते हैं उसे लूम बोलते हैं ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): खेजड़ी खतम होती जा रही है ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): सभापति महोदय, अभियान के तौर पर खेतों में कुण्ड बनाने के लिए पैसे दिये गये थे उनकी कोई क्वालिटी का ध्यान नहीं रखा गया । यहां पर मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि अगर काश्तकार को पैसा देना है तो उसकी मोनीटरिंग भी करनी पड़ेगी । हर खेत में डिग्गी, उसकी जितनी क्षमता है जितनी भूमि है डिग्गी बनाकर और हैडटेंक, मैं यह नहीं कहता पूरे खेत के लिए पर मैं उदाहरण के तौर पर यह निवेदन करना चाहता हूं कि डिग्गी बनाकर और हैडटेंक बनाकर अगर किसान को उपलब्ध करावा दिया जाए तो उसके 100 बीघा जमीन है, 10 है कि 20 है, तो उससे माननीय सभापति महोदय जो चीज पैदा हो सकती है मैं बता रहा हूं चाहे खेजड़ी उगाओ, चाहे रोयडा उगाओ, चाहे फोग, एक बार पनपने के बाद यह पौधे नष्ट नहीं होते हैं । इतना ही नहीं सभापति महोदय, रोजगार चलाने के लिए खेत में मतीरे की बेल, तरबूज, ककड़ी, काचर यह इस तरह की फसल अपना जीवन निर्वहन करने के लिए अकाल में भी कर सकता है अगर पानी का स्टोरेज हो तो । देखा-देखी सब करने लग जाएंगे ।

सभापति महोदय, यहां मैं, किसान इस बात से कोई नाराजगी तो नहीं मान ले । मैं यह कहना चाहता हूं कि किसान बड़ा भोला भाला प्राणी है, ऊंट जैसे होता है, उसको जब हम फिटकरी देते हैं तब भी वह रोता है, घी दे तो भी उसको रोना आये, गुड दे तो भी रोना आये। तो मेरा कहने का भावार्थ यह है कि किसान को अगर आपको सिखाना है तो खेतों में डिग्गी बनाकर (व्यवधान) मैं जो कह रहा हूं बड़ी जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूं और सही बात कह रहा हूं, कोई माने या नहीं माने । मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि सरकार अगर इस तरह का प्रयास करे तो एक साल में 5 परसेंट खेतों में यह सुविधा उपलब्ध करवा दी तो उनके अकाल का स्थाई समाधान हो जाएगा ।

(श्री रामप्रताप कासनिया)

खेजड़ी और फोग का मैं बार-बार क्यों कह रहा हूं कि यह एक ऐसी चीज है जिससे रेगिस्तान की भूमि उपजाऊ होगी, फोग का पेड़ है उसके नीचे फसल भी बहुत अच्छी होती है । जलाऊ लकड़ी मिलती है, खेजड़ी से चारा मिलता है, लकड़ी भी मिलती है, जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ती है । (व्यवधान)

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): सब्जी भी मिलती है ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): सब्जी के लिए तो कह दिया ना महाराज । टैंक उपलब्ध करवाओ, डिग्गियां बनाओ, जितना पैसा पूर्व में खर्च हुआ है अगर उसके वनीस्पत 25 प्रतिशत ही पैसा खर्च कर दो तो पूरे राजस्थान का नक्शा बदल सकता है । सभापति महोदय, प्राकृतिक प्रकोप भी अकाल से संबंधित है, इसको इसमें जोड़ा जाना चाहिए । मैं चमचागिरी आपकी करूंगा माननीय सदस्य, माननीय सदस्य, पिलानी से आने वाले माननीय सदस्य को आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि सीआरएफ की जो गाइड लाइन है जहां पर सीआरएफ की गाइड लाइन में पाला, शीतलहर यह वर्जित है कि इनको इनमें सम्मिलित नहीं किया जा सकता, यह भी एक अकाल है । सभापति महोदय, मैं किसानों के हितैषी, माननीय सदस्य पिलानी से आने वाले से निवेदन करना चाहता हूं कि आप वास्तव में किसानों के पैरोकार हैं, मैं इस बात का बिलकुल एक्सपेरीमेंट करना चाहता हूं कि अगर आप चमचागिरी नहीं कर रहे हो तो कम से कम दिल्ली जाकर यह सीआरएफ की गाइड लाइन जो किसानों के आगे नाग की तरह फन ताने खड़ी है इसको हटाओ, यह निवेदन करना चाहता हूं । (व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): आपको नहीं मालूम ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): हमारे कंठ पाक गये बोलते-बोलते (व्यवधान) पता नहीं आप कब करेंगे । मैं तो यह भी निवेदन आपको करूंगा, आप कह रहे हो 60 हजार करोड़ रुपये का कर्ज माफ कर दिया । मैं इस हाउस में यह निवेदन करना चाहता हूं कि 60 हजार करोड रुपये कर्ज माफ कर रहे हो, बैंक हमेशा मार्च के अंदर ड्यू खाते में 25 प्रतिशत वैसे ही देता है। (व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): कौन कहता है? (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): कौनसा तीर मार लिया यह? (व्यवधान)

श्री सभापति: माननीय सदस्य आपस में बहस नहीं करें ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): बहस नहीं कर रहा हूं, मेरे को चमचा कहा है ।

श्री सभापति: पिलानी के माननीय सदस्य माननीय प्रतिपक्ष के नेता बैठे हैं उनकी इच्छा होगी जवाब दे देंगे वह । प्रतिपक्ष का नेता इसलिए बनाया जाता है, वह अपनी पार्टी की नीति बता देंगे, उचित समझेंगे जवाब दे देंगे ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): साहब मेरी इतनी हैसियत नहीं कि प्रतिपक्ष के नेता से मैं कोई बहस करूं। मैं तो मेरे सम्मान रूप में...

श्री सभापति: उनकी पार्टी की नीति होगी अपने आप बता देंगे । आपस में बहस नहीं करें ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): मैं उस नीति पर ही बोल रहा हूं, आ रहा हूं, अकाल से संबंधित मामला नहीं है तो बता दें । चमचा शब्द आया इसलिए बोलना पड़ेगा । मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि चाहे प्राकृतिक प्रकोप से फसल नष्ट हो, चाहे पाले से, चाहे गड़े से हो चाहे वर्षा नहीं होने के कारण से हो, किसी भी तरह से फसल नष्ट हो तो उसका स्थायी समाधान करने के लिए प्रति बीघा आप व्यवस्था कराएं। मैंने कई बार निवेदन कर दिया कि अगर आप पांच हजार रुपये बीघा इंतजाम करवा दें तो 30 प्रतिशत शेयर राजस्थान सरकार अपना मिलाएगी । मैं यह भी राजस्थान सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि राजस्थान सरकार आगे आकर इस तरह का प्रस्ताव रखे और इस सदन में पता लग जाएगा कि किसान के पक्ष में कौनसा सदस्य है, कौनसा नहीं । अगर 200 के 200 सदस्य किसानों के पक्ष में हैं सभापति महोदय जो भी कह रहे थे हम किसानों से पूरे परिचित हैं, तो मैं पूरे सदन के समक्ष यह निवेदन करना चाहता हूं कि सरकार की तरफ से अपने खजाने की हैसियत के अनुसार एक संकल्प आना चाहिए और उस संकल्प में काश्तकार... (व्यवधान)

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (वन एवं पर्यावरण मंत्री): संकल्प प्रस्तुत किया गया और प्रतिपक्ष के तमाम जितने सदस्य हैं, यह श्रवणजी भी हैं, सदन छोड़कर भाग गए, इससे साबित होता है कि यह किसानों के कितने विरोधी हैं। (व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): अगर किसान के हित में कुछ भी करना पड़े तो हम तैयार हैं।

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): अगर होते श्रवणजी, आप तो नहीं जाते कम से कम ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): जहां किसानों का पसीना बहेगा वहां हम लोग खून बहाने के लिए तैयार हैं।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): भगवान के लिए मुझे बक्शो, मेरे पर वैसे ही क्रापी है, बोलने पर पाबंदी रहती है । मुझे कुछ मौका दिया है, मुझे दो मिनिट बोलने दो, भगवान के लिए मेरे पर रहम करो ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): बोलो ना । आप पर किसान के बारे में जो यह कहा ना किसानों के अगर सच्चे हितैषी...(व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): मैं चमचागिरी की बात नहीं कर रहा । आपने मुझे एक शब्द दे दिया उसके ऊपर जो बातें मेरे दिमाग में आ रही हैं वह...(व्यवधान)

श्री सभापति: फिर भी माननीय परसरामजी मदेरणा ने पत्र तो लिखा ना। ऐसी क्या बात है? (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): अगर आप यह नहीं कहते.. (व्यवधान)

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): (व्यवधान) करने से कभी सीआरएफ के नोर्म्स आपसे नहीं बदल सकते । आप यहां संकल्प में शामिल होते तो आपकी बात में कुछ असर भी होता अब आपका क्या असर होगा, आप तो खुद ही वाकआउट करके चले गये।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): कांग्रेस के लोगों ने हित किया ना (व्यवधान) जब ही कांग्रेस का यह भला हुआ आपको मालूम है एक भी बीजेपी एक मिनिट प्रताप जी, मैं कह रहा हूं अगर बीजेपी में अगर एक भी स्वतंत्रता सैनानी है ना...(व्यवधान)

श्री सभापति: जो माननीय सदस्य बिना अनुमति बोल रहे हैं बिलकुल भी नहीं लिखें, मैं बार-बार नहीं कहता हूं, मैं एक बार कहता हूं । जब मैं आसन पर हूं मेरे अनुमति के बिना कोई भी सदस्य बोले कुछ नहीं लिखेंगे आप ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी):×××

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ×××

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): ×××

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ×××

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): ×××

श्री सभापति: मेरा सभी माननीय सदस्यों से निवेदन है अकाल पर चर्चा होने दें । कई दिनों से आप लोग प्रयास कर रहे थे, आज चर्चा का दिन रखा तो आप समय खराब कर रहे हैं एक दूसरे का ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): सभापति महोदय, मेरी बात तो...

श्री सभापति: चर्चा हो तो भी दिक्कत और चर्चा नहीं हो तो भी दिक्कत है । जब सरकार ने आज पूरा दिन आपको चर्चा के लिए रखा है तो उस पर आप बोलें।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): सभापति महोदय, मैं मंत्रीजी का ध्यान इस और आकर्षित करवाना चाहता हूं कि आपने सीआरएफ की गाइड लाइन के लिए तो प्रस्ताव रखा था पर सभापति महोदय मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि आप स्थाई, मुआवजे के लिए अपनी हैसियत अनुसार राजस्थान की जो वित्तीय स्थिति है वह देखते हुए आप अपना शेयर उसमें रखो कि हम किसान की, जब भी प्राकृतिक प्रकोप, अकाल से, किसी भी चीज से फसल नष्ट होगी तो राजस्थान सरकार अपने हिस्से से इतना पैसा देगी । और केन्द्र सरकार, सभापति महोदय, मैं एक बात निवेदन और करना चाहता हूं । जब मेरे दांई तरफ से मांग उठती है ।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

सभापति महोदय, घण्टी मत बजाओ, थोड़ा सा ।

श्री सभापति: एक मिनट में समाप्त करें ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): मेरा दिल बड़ा कमजोर है, धड़कन बढ़ जाती है । अभी तो बिजली बाकी पड़ी है, सभापति महोदय ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): ×××

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): हां, बिजली का दूसरा नहीं होगा, मैं जानता हूं । क्योकि मेरे को वैसे ही मेरी तो घण्टी बज रही है । मैं किसी के दिल को नहीं दु:खा रहा हूं, न तो उधर, ना इधर । जो सही बात है, वह बोल रहा हूं, बोलने तो दें । मैं पुन: निवेदन करना चाहता हूं कि इस तरह का एक संकल्प लाओ जिससे इस सदन में पता लग जाएगा कि कौन किसान हैं,

(श्री रामप्रताप कासनिया)

कौन नहीं हैं । मैं यह निवेदन करना चाहता हूं । आप अगर किसान हो तो फिर मैं बार-बार वह रिपीट करुंगा तो मुझे ऊपर भी देख रहे हैं कि इसके पास एक ही बात है । मैंने आपको कहा था कि आप तो कह रहे थे कि टिकट के लिये चमचागिरी कर रहे हो । जो काम करता है, उसकी प्रशंसा करनी चाहिए। कराओ, चाहे आप करो ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): ×××

श्री सभापति: पिलानी से आने वाले माननीय सदस्य, आपसे आग्रह है। आप बिना आसन की अनुमति से बोल रहे हैं ओर आप सदन के सीनियर सदस्य हैं ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): ×××

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): अजी नहीं, यह पहले की बात है। पिछली बार जब झोली फैलाकर 10 हजार मांगे, आपने कहा कि टिकट के लिये इनकी चमचागिरी कर रहे हो, आपने नहीं, आपकी साइड के सदस्यों ने । मैंने कहा था पांच हजार रुपये बीघा स्थाई मुआवजा करवा दो । (व्यवधान) क्या हो गया जी, बिजली बढ़ी है । कड़वी लग रही है मेरी बात । पांच हजार रुपये के लिये मैंने निवेदन किया था और 10 हजार कर दो तो मैं आइन्दा चुनाव नहीं लड़ूंगा । यह बात मैंने आपको कही थी और आज तक कायम हूं और आपकी चमचागिरी कर लूंगा, आप कहेंगे तो कान पकड़ लूंगा । (व्यवधान)

श्री सभापति: आप मूल विषय पर बोलो ना, कान पकड़ने की बात ही नहीं है ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): यह पीछे से डिस्टर्ब कर रहे हैं । सभापति महोदय, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं, अकाल का कोई स्थाई समाधान किया जाए, जितनी मेरी सूझ-बूझ थी, उसके मुताबिक मैंने सदन के समक्ष निवेदन कर दिया । दूसरा सभापति महोदय, बिजली के बारे में अगर आप समय दें...

श्री सभापति: एक मिनट ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): एक मिनट से तो फिर काम नहीं चलेगा । सभापति महोदय, सूरतगढ़ थर्मल पावर, जो मेरे विधान सभा क्षेत्र में है । अब इनको पीड़ा होगी कि तारीफ क्यों कर रहे हैं । इसलिये कर रहा हूं कि वहां उत्पादन सबसे अच्छा है । इसके लिये मैं राजस्थान की सरकार और

(श्री रामप्रताप कासनिया)

कर्मचारी से लेकर अधिकारी, सब को धन्यवाद देना चाहूंगा कि सूरतगढ़ थर्मल पावर प्रोजेक्ट जो है, उसके अन्दर उत्पादन बहुत ही अच्छा है, सबसे एक नम्बर, टाप पर है । इसलिये धन्यवाद देना चाहूंगा, अब आप सुनो कि इन्होंने क्या किया । भारतीय जनता पार्टी ने, जब से सत्ता में आई है, पिछले साल बाड़मेर ग्रिड में लिग्नाइट आधारित, पहली बिजली परियोजना, 725 मेगावाट प्रारम्भ हुई कि नहीं हुई । इसके साथ ही धौलपुर में 330 मेगावाट गैस आधारित 3 इकाइयों में उत्पादन शुरू होने से वहां 22 वर्षों से लम्बित जो समस्या थी, उसका समाधान हो गया । (व्यवधान) बिजली उत्पादन में जो काम हुआ है, वह चमचागिरी में क्या है । बिजली उत्पादन में प्रदेश में करीब 1500 मेगावाट की बढ़ोतरी हो चुकी है । इस साल में इसमें 2100 मेगावाट और बढ़ोतरी होगी । पीड़ा है, पवन ऊर्जा के क्षेत्र में 500 मेगावाट की वृद्धि होगी, इससे भी पीड़ा है । 1600 मेगावाट क्षमता बढ़ाने के करार हो ही चुके हैं। परियोजना का काम भी प्रारम्भ है । अब किसानों के हित में किये गये निर्णय भी थोड़े सुनो, कान खोलकर । नियामक आयोग ने 2005 में दरों में बढ़ोतरी की, उसका भी भार किसानों पर नहीं डाला गया और 74 करोड़ रुपये सालाना भार सरकार वहन कर रही है, इससे पीड़ा हो रही है । अभी तक एक हजार करोड़ रुपये से अधिक का भार सरकार वहन कर चुकी है जिसका लाभ 8 लाख किसानों को पहुंचा है । इसमें भी कोई पीड़ा है आपको । किसानों को 4 साल में सरकार ने डेढ़ लाख नये कनेक्शन दिये हैं और एक साल में 95 हजार और दे दिये जाएंगे । इतना ही नहीं, इसकी तुलना में पिछली कांग्रेस, छोड़ो मैं आपकी नहीं करुंगा, आप नीचे ही हो हर जगह ।

(समय-समाप्ति-सूचक-घंटी)

विशेष श्रेणी के 62 हजार कनेक्शन 2 साल के सामान्य श्रेणी में करके किसानों को लाभ पहुंचाया । 50 करोड़ रुपये सालाना भार वहन कर...

श्री सभापति: श्री राकेशजी मेघवाल ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): आपको भी सभापति महोदय, मैं मेरा सुझाव दे दूं एक । 20 मिनट बोल चुके हैं आप । बाकी सब माननीय सदस्य 10 मिनट बोले । एक सुझाव तो दे दूं । (व्यवधान) राजस्थान के हित के सुझाव हैं ।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): × × ×

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): ऊर्जा मंत्री का ध्यान मैं इस ओर आकर्षित करना चाहूंगा ।

श्री सभापति: आप सुझाव लिखकर दे दें यहां पर । (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): एक सुझाव, एक सुझाव । एक सुझाव एक मिनट में, सभापति महोदय, आपके माध्यम से ऊर्जा मंत्रीजी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं ।

श्री सभापति: आप सुझाव लिखकर दे दें ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): एक मिनट, साहब, एक सैकिण्ड भी नहीं लूंगा । थर्मल पावर सूरतगढ़ जो है उसके लिये पल्लू को एक सीधी सड़क आती है । आपके थर्मल में जो सामान जाता है, कोई भी अधिकारी जाता है, 40-45 किलोमीटर घूमकर जाना पड़ता है । 8 किलोमीटर का एक बीच में मिसिंग लिंक है । थर्मल के लिये यह कोई बड़ी बात नहीं है । इतना तो किराया आपका एक साल में वहां वसूल हो जाएगा । थर्मल के लिये बहुत ही लाभदायक है ।

श्री सभापति: ठीक है, आपकी बात आ गई है । माननीय राकेशजी मेघवाल ।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): माननीय सभापति महोदय, बिजली और अकाल पर जो चर्चा हो रही है, उसमें अपने आपको सम्मिलित करते हुए प्रदेश की यशस्वी मुख्य मंत्री श्रीमती वसुंधरा राजेजी, अकाल राहत मंत्री माननीय लक्ष्मीनारायणजी दवे और हमारे नागौर जिले के और पूरे राजस्थान के विद्युत मंत्री माननीय गजेन्द्रसिंहजी खींवसर जिन्होंने राजस्थान में पहली बार एक कीर्तिमान स्थापित किया है और पूरे राजस्थान को उजाला दिया है । सत्यमेव जयते, अगर किसी से सीखें तो माननीय गजेन्द्रसिंहजी खींवसर से सीखें । मैं राजस्थान की सरकार को और राजस्थान की मुख्य मंत्री को हृदय से बधाई देना चाहता हूं और आभार प्रकट करना चाहता हूं कि काफी लम्बे समय की जो नागौर जिले की मांग थी, नागौरी बछड़े पर जो रोक लगी हुई थी और किसानों के लिये एक बहुत बड़ी समस्या हो गई थी और गौ-शाला और गौ-माता के लिये, लोगों ने गाय पालना छोड़ दिया था । उन्होंने, जो रोक थी, वह रोक हटा दी । इसके लिये पूरे नागौर जिले की तरफ से पूरे पशुपालकों की तरफ से और किसानों की तरफ से माननीय मुख्य मंत्रीजी का और राजस्थान

(श्री राकेश मेघवाल)

सरकार का आभार प्रकट करना चाहता हूं । उसमें हम सभी नागौर जिले के, सभी विधायक, माननीय मुख्य मंत्रीजी से मिले थे और माननीय प्रभूलालजी सैनी साहब से भी मिलकर मीटिंग रखी थी, सभी को सम्मिलित करते हुए, माननीय रामचन्द्रजी जारोड़ा भी थे, माननीय रिछपालजी मिर्धा भी थे । हमारे यहां नागौर जिले में कोई पक्षपात नहीं है ।

हमारे परबतसर का विश्व विख्यात पशु मेला जो भरता था, उसमें पशुओं की और नागौर बछड़े की गिरावट आई है । आने वाले समय में अकाल राहत मंत्री के साथ-साथ पशु-पालकों को और बछड़ा-पालकों को भी राहत मिलती है। उसमें मैं राहत मंत्रीजी से निवेदन करुंगा, नागौरी नस्ल पूरे हिन्दुस्तान में ही नहीं, पूरे विश्व में फेमस है और नागौर की जो साख है, नागौरी बछड़े की वह कम से कम एक-एक लाख रुपये का जोड़ा बिकता है । और उससे फसल, खेत में अगर नागौरी बैल से फसल की जाती है तो वह फसल शत-प्रतिशत अच्छी होती है और जीवन के लिये शुभदायक होती है, जो दूसरी मशीन से फसल पैदा करते हैं उससे अच्छी है । अब आप इस फसल को, इस नागौरी बछड़े को बढ़ावा दें तो पूरे नागौर जिले के साथ-साथ राजस्थान में, पूरे देश में इसकी हरियाणा, पंजाब, गुजरात और महाराष्ट्र से लोग परबतसर में, नागौर में, और मेड़ता में यह बछड़े खरीदने आते थे, उन पशुपालकों को राहत मिली है ।

श्री रामचन्द्र जारोड़ा (मेड़ता): बाजवास भी ।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): बाजबास को तो बकरो, वह भी पूरे हिन्दुस्तान में ही नहीं विश्व फेम और एक्सपोर्ट होता है बाजवास का बकरा ।

मैं यह चाहूंगा, माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से अकाल राहत कार्य में जो रास्ते एकदम संकरे हो गये उनको चौड़ा किया जाए। और चौड़ा करके उनको डब्ल्यू.बी.एम. किया जाए ताकि क्या सड़क बन सकती है और एनिकट ज्यादा से ज्यादा बनाया जाए, तालाबों को लिया जाए जिसमें तालाब भी ज्यादा हो। और थोड़ी-बहुत माननीय मंत्री महोदय, एक निवेदन करूंगा कि जो गिरदावरी में कमी रही है, उसमें भी अगर कोई सुधार हो सकता है तो वह किया जाए । बिजली के मीटर की, अब यह अभी बात कर रहे थे, मीटर तो चाहे कोई भी राज आये । न तो कोई राकेश की फैक्ट्री में बनता है और न कोई कांग्रेस की फैक्ट्री में बनता है वह बनाने वाले ही मीटर बनाते हैं

(श्री राकेश मेघवाल)

और यह चलता ही रहता है । कल्लाजी भी नहीं बनाते हैं । मीटर तो टेस्टेड आई.एस.आई. मार्का लग कर फिर मार्केट में आता है और फिर कम्पनी निगम लेती है इसलिए कोई ऐसा नहीं है कि आज कोई नया ही मीटर आ गया जिसमें तीन लाइट लग गयी और कई बार तीन लाइट भी बंद हो जाती है । बिना लाइट के भी चलता ही है । एक हमारे नागौर जिले में बिजली विभाग ने जो 440 के.वी.जी.एस.एस. मेड़ता में बना हुआ है और उस पर ज्यादा कोई लोड नहीं है । मकराना, नावां, कुचामन, परबतसर, विधात, बागोट, यह 440 के.वी. हीरापुरा से जोड़ रखा है इसका प्रपोजल मार्बल उद्योग के जो एसोसिएशन के पदाधिकारी भी आये थे और माननीय मंत्रीजी से भी निवेदन किया था और निगम से भी निवेदन किया था कि 440 के.वी. मेड़ता से इन बागोट को, बेरूंदा है, हरसोल है, बागोट है, विधात है, मकराना है, नावां है, कुचामन है ताकि हमको जिले के हिसाब से पर्याप्त आठ घंटे के बजाए दस घंटे बिजली मिली जाए ।

अभी फीडर सुधार कार्यक्रम में सभी गांवों में फीडर सुधार कार्यक्रम अच्छा हो रहा है जिसमें बिजली पर्याप्त मिल रही है । अब कहने को तो कोई भी कह दें कि साहब तीन घंटे मिली । पहले कहा कि तीन मिली, फिर कहा चार मिली, फिर कहा पांच मिली, फिर कहा इस्तीफा दे दो और फिर कहा, 123 बता दिये शहीद, यह तो मेरे समझ के तो बाहर हो गयी कि 123 शहीद के कनेक्शन, यह तो कभी रुका नहीं और न हो सकता है । इस किताब में लिखा है कि जिन-जिन शहीद के कनेक्शन किये, 123 नहीं हो सकते उन्होंने यूं ही अन्न-पानी छोड़ दिया होगा । एक दो हो सकते हैं, वह माननीय मंत्री महोदय से निवेदन करेंगे । अन्न, अब अन्न छोड़ दें तो फलाहार खा लें । अट्ठाईस करते हैं वह, अट्ठाईस करते हैं। जैन समाज में तो न तो पानी पीते हैं और न कुछ खाते-पीते, कुछ नहीं है, वैसा करना चाहिए था उनको । हां, कुछ करना ही है तो वैसा करना चाहिए । अब अन्न नहीं खाये, साहब । वह फल खा लेंगे, काजू खा लेंगे, सेब खा लेंगे तो वह तो उनके तो और अच्छा हो गया ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): रबड़ी खा लेंगे । (व्यवधान)

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): हां, +++ इसमें, कोई उसमें अन्न में तो आती नहीं है।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): आप भी एक महीने अन्न छोड़कर देखो । माननीय सदस्य, आप भी एक महीना अन्न छोड़कर देखो ।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): मैं इतना बेवकूफ थोड़े ही हूं । मैं सरकार में हूं, मेरा काम कहते ही होता है इसलिए मुझे अन्न और जल छोड़ने की जरूरत नहीं पड़ती है ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): फिर आप दूसरों के, आपको एप्रिशिएट करना चाहिए कि एक व्यक्ति ने अपने इलाके की समस्या के लिए अन्न छोड़ दिया है और आप उसको मखौल उड़ा रहे हो, यह उचित नहीं है ।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): अगर यह माननीय...(व्यवधान) बीकानेर से आने वाले माननीय सदस्य, आप यह जांच, 123 की लिस्ट अभी दे दो, हम जाते हैं माननीय मंत्री महोदय के पास और अभी की अभी अगर 123 कनेक्शन है तो अभी कराने की बात करते हैं ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): मंत्रीजी जवाब दे देंगे । आप इन की क्यों पैरवी कर रहे हो? आप अपनी बात कहो न ।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): मंत्रीजी तो...(व्यवधान) आपको क्यों तकलीफ हो रही है? यह तो मैं ही जवाब दे दूं । नागौर वाले हैं, हम एक दूसरे का जवाब देते रहेंगे, बीकानेर नहीं आएंगे ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): आप जवाब दे रहे हो तो शपथ लेओगे तो आप दे देना जवाब ।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): हमारे यहां एक 33 के.वी. जी.एस.एस. खोकर्म और गांगवा का प्रपोजल आया हुआ है । जी.एस.एस. बना दिये हैं, कोई कमी नहीं है । 132 के.वी. जी.एस.एस. बन गये, 33 के.वी. जी.एस.एस. बन गये । चारदीवारी की बात आयी, हमारे तो पूरे परबतसर विधान सभा क्षेत्र में एक चारदीवारी को छोड़कर सभी 33 के.वी.जी.एस.एस. की चारदीवारी बनना भी, एक 33 के.वी.जी.एस.एस. है जो परबतसर का, उसमें क्या है, कार्यालय भी शामिल है और ए.ईएन. और जे.ईएन. का आवास भी शामिल है। तो बीच की एक दीवार निकल जाए परबतसर 33 के.वी.जी.एस.एस. की इतनी सी यह थी ।

एक, मैं माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से गर्मी का मौसम आ रहा है और पानी की किल्लत गर्मी में और अकाल होगी। इसलिए हमारे जो पी.एच.ई.डी. के कनेक्शन हैं वह थोड़ा सा समय पर कर दें।

(श्री राकेश मेघवाल)

पी.एच.ई.डी. में कभी क्या, एल.ओ.सी. नहीं आयी हुई रहती है तो कनेक्शन के लिए वह आठ-आठ हजार रुपये फाइल का तो जमा करा देते हैं, पूरा पैसा जमा कराने में कुछ देरी हो जाती है । जब पी.एच.ई.डी. का ए.ईएन., जे.ईएन. एक्स. ईएन. और एस.ई. अंडरटेकिंग दे देता है तो मुझे यह लगता है कि विभाग का पैसा कहीं डूबता नहीं है । पी.एच.ई.डी. विभाग सक्षम है, समय पर पेमेंट करेगा अंडरटेकिंग के आधार पर अगर पी.एच.ई.डी. के जितने कनेक्शन कर दिए जाएं तो लोगों को पानी की सुविधा उपलब्ध होगी और आपको भी आय होगी । कोई पैसा डूबेगा नहीं । सरकारी पैसा है । सरकारी खजाने का पैसा सरकार के खजाने में और निगम के खाते में आ जाएगा ।

एक मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि कई जगह स्कूलों में ऊपर से तार है । सरकारी भवन है, पुराने बने हुए हैं, उनके ऊपर से तार है । हमारे यहां परबतसर में ए.डी.जे. कोर्ट है, मुन्सिफ कोर्ट है, उसके सामने दो ट्रांसफार्मर लगे हुए हैं बिलकुल सड़क पर तो इस तरह के जो ऊपर से सरकारी भवनों के तार हैं या सरकारी बिल्डिंग के सामने कोई ट्रांसफार्मर है तो आये दिन दुर्घटना होने के अंदेशे रहते हैं । छोटे बच्चे स्कूलों में पढ़ते हैं, छत पर चढ़ते हैं तो तार का खतरा रहता है । यह आप एक अभियान चलाकर इसको हटाएंगे तो अच्छा एक कदम होगा ।

एक यह कुटीर ज्योति उद्योग, कुटीर ज्योति के वह कनेक्शन कराओ और एक जो राजीव गांधी विद्युतीकरण, योजना तो चला दी लेकिन भारत सरकार ने पैसा नहीं दिया है। इसलिए हम यह चाहेंगे माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से राज्य सरकार से कि मुख्य मंत्री विद्युतीकरण के नाम से वह जो गरीबों के कनेक्शन किया जाए । एक अभियान चलाकर, नई यह स्कीम बनाकर जो जिस तरह से यह राजीव गांधी विद्युतीकरण मिशन योजना बनायी थी, उसी तर्ज पर मुख्य मंत्री विद्युतीकरण योजना बनाकर गरीबों को कनेक्शन दिया जाए ।

एक माननीय सभापति महोदय, यह मंगलारामजी गोदारा ने जो बात कही, जो आज तक पूरे सदन में किसी ने नहीं कही । सबसे बढ़िया सुझाव था उनका । राजस्थान का एक मात्र है कल्प वृक्ष, वह है खेजड़ी । उसका लौंग भी काम आता है । उसकी डाली भी काम आती है और उसकी सांगरी जो शाही शादियों में, आप चाहे दिल्ली, मुम्बई, गुजरात और महाराष्ट्र कहीं भी जाएंगे तो करोड़ों रुपये लगाते हैं शादियों में, चाहे उदयपुर की फाइव स्टार होटल में

(श्री राकेश मेघवाल)

ले लो, चाहे राम बाग़ पैलेस में ले लो, वहां कैर और सांगरी की जो सब्जी बनती है, उसको सब लोग अच्छा मानते हैं और बिना यूरिया के सब्जी होती है। आप गोभी में यूरिया डालते हैं । खेजड़ी के इस सांगरी में कभी भी यूरिया का उपयोग नहीं होता है और कैर को तो कोई यूरिया के नजदीक भी नहीं ले जाता । तालाब होता है, पायतन होता है। इसलिए आप इस कल्प वृक्ष है राजस्थान का, वन विभाग के फ्रंट फोटो पर है ।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

माननीय सभापति महोदय, यह मिनटें हैं न दूसरों के लिए... (व्यवधान)

श्री सभापति: बोलिये-बोलिये आप । (व्यवधान)

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): हां, एक मिनट । आप मेरे लिए मत गिनोजी, मैं आपका लाड़ला विधायक हूं । माननीय, वन मंत्री भी रहे हैं आप और आपने फ्रंट पर फोटो छापी थी । राजस्थान का कल्प वृक्ष खेजड़ी और आप तो महान पंड़ित हो । आपको यह भी पता है कि खेजड़ी की समिधा जब हम हवन करते हैं उसमें भी खेजड़ी की लकड़ी काम आती है माननीय सभापति महोदय, खेजड़ी के बिना कोई भी काम अधूरा रहता है । जन्म, मरण, परण, हवन, हर चीज में खेजड़ी की समिधा को काम में लिया जाता है इसलिए मैं यह चाहूंगा कि पूरे राजस्थान के खेतों में किसान को एक प्रोत्साहित करने के लिए वन विभाग भी एक अभियान चलाये और अकाल राहत विभाग भी एक अभियान चलाये । चारों तरफ अगर खेत के अपन अंग्रेजी बबूल उगते हैं और उसकी जगह अगर खेजड़ी उगाये और बीच में भी खेजड़ी उगाये तो उसका पूरे राजस्थान को लाभ मिलेगा । राजस्थान के किसान को लाभ मिलेगा और यह अकाल की जो प्रवृत्ति आये साल अकाल पड़ता है, पड़ता है, वह बंद हो जाएगा।

एक, माननीय सभापति महोदय, कई लोग खेजड़ी को काटकर बेच देते हैं इसलिए इस पर भी रोक लगनी चाहिए कि बिना तहसीलदार की परमिशन के, कोई भी यह कह देते हैं कि सूख गयी खेजड़ी । कई बार सूखती है । खेजड़ी के एक बीमारी लगती है, कोई कीड़ा लगता है तो खेजड़ी सूख जाती है तो इसलिए उस बीमारी का भी इलाज खेजड़ी का ढूंढना चाहिए इसलिए मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा कि खेजड़ी को बढ़ावा दें । जो राजस्थान का कल्प वृक्ष है । हर चीज में काम आता है ।

(श्री राकेश मेघवाल)

मानवीय सभापति महोदय, राजस्थान सरकार ने और सदन की माननीय नेता ने बहुत ऐतिहासिक काम किया है । जो हैण्ड पम्प ठीक करने के लिए 20 लिमिट दी है, अकाल राहत कार्य में, उसको बढ़ाकर अगर 30 कर दिया जाए तो करीब-करीब गांवों में वह हैण्ड पम्प ठीक हो जाएंगे और जो 73 रुपये मजदूरी थी उसको 100 रुपये किया है । यह भी एक गरीबों के लिए, मजदूरों के लिए ऐतिहासिक काम किया है, उसके लिए भी बधाई के पात्र हैं।

चारा डिपो, सभापति महोदय, गौ-शालाओं में नियमानुसार अनुदान स्वीकृति देने पर 01 मार्च से जिला कलक्टर को आदेश तो दे दिया, उस आदेश की पालना हो जाये । जगह-जगह चारा डिपो खोलकर गौ-शालाओं में भी चारे की व्यवस्था करें । अब इसमें एक मांग आ रही है कि कई गौ-शालाओं ने अभी रजिस्ट्रेशन के एप्लाई किया है, अनुदानित नहीं है । उन गौ-शालाओं को भी कोई न कोई राहत देने के लिए पैकेज जारी करायें ।

सदन की कार्यवाही

विधान सभा की बैठक के निर्धारित समय में वृद्धि

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): सभापति महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि सदन का समय एक घण्टे बढ़ाया जाये ।

श्री सभापति: क्या सदन का समय एक घण्टे बढ़ा दिया जाए?

(स्वीकृत)

सदन का समय एक घण्टे बढ़ाया जाता है । लेकिन माननीय सदस्यों से आग्रह है कि पांच-सात मिनट में अपना पूरा विषय रख दें ताकि सभी माननीय सदस्यों का नम्बर आ जाये ।

राज्य में अकाल एवं बिजली की स्थिति पर विचार

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): पाला और शीतलहर में राजस्थान की यशस्वी माननीय मुख्य मंत्रीजी ने 125 करोड़ रुपये दिये हैं ।

श्री सभापति: यह माननीय सदस्य, जो अभी मैंने कहा, यह आप पर भी लागू होता है ।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): यह देश में पहली बार हुआ है । 126 करोड़ रुपये पहली बार दिये हैं । माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से

(श्री राकेश मेघवाल)

एक निवेदन करना चाहूंगा प्रतिपक्ष के नेताजी भी हैं और कांग्रेस पार्टी भी है कि यह सदन से जब हम किसानों की बात करते हैं और किसानों की जब बात करते हैं तो मिल-जुलकर सभी किसानों की समस्याओं पर उनको लाभ दें, उनकी समस्याएं मिटायें । चाहे कांग्रेस हो, चाहे बीजेपी हो । अभी कह रहे थे भारत सरकार है, राज्य सरकार है । भारत सरकार भी अपनी है, राज्य सरकार भी अपनी है ।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, समाप्त करें ।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): सी.आर.एफ. नोर्म्स के वर्तमान संशोधित मापदण्डों की अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां हैं जिनके निराकरण एवं संशोधन हेतु विगत वर्षों में भारत सरकार को लिखा गया था, लेकिन अभी तक हुआ नहीं । सी.आर.एफ. में सामरिक घटक हेतु 40 प्रतिशत का प्रावधान करना है, वह भी अभी हुआ नहीं। श्रमिकों को देय खाद्यान्न की गणना इकोनोमिक कास्ट की बजाय एस.जी.आर.वाई. के दिशा-निर्देशों से करना है, वह भारत सरकार ने किया नहीं । मृत पशुधन प्रतिस्पर्धा की संख्या बढ़ाना है, वह भी बढ़ाई नहीं । क्षतिग्रस्त आधारभूत परिसम्पत्तियों की मरम्मत एवं पुनर्स्थापना हेतु समय सीमा बंधन में परिवर्तन करना, जो कल परिसम्पत्तियों की बात कर रहे थे, पुराने खण्डहर हो गये ।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, श्री जोगेश्वरजी गर्ग ।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): रोजगार सृजन करने में अन्य स्कीम के प्रावधान के बाद केवल अतिरिक्त आवश्यकता की पूर्ति हेतु सी.आर.एफ. राशि के उपयोग की शर्त को हटाना है । दो मिनट सिर्फ ।

श्री सभापति: अंकित नहीं हो । बोलिये माननीय जोगेश्वरजी ।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): ×××

श्री सभापति: सभी को बोलना है ।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर):×××

श्री सभापति: यह कोई बात थोड़े ही है । सब माननीय सदस्यों को बोलने की इच्छा है । कल पिलानी से आने वाले माननीय सदस्य इतने नाराज हो गये कि वह कागज फाड़ने पर आ गये ।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर):×××

श्री सभापति: नहीं, तो फिर आसन का कोई मतलब ही नहीं है । जब आप आसन की नहीं मानते तो आपकी मर्जी की बात है ।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर):×××

श्री सभापति: अंकित नहीं होगा । माननीय जोगेश्वरजी गर्ग ।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर):×××

श्री जोगेश्वर गर्ग (जालौर): मैं कोशिश करूंगा कि 10 मिनट के अंदर-अंदर अपनी बात कर लूं ।

श्री सभापति: धन्यवाद ।

श्री जोगेश्वर गर्ग (जालौर): दिल्ली में केन्द्र में जब-जब भी कांग्रेस की सरकार आती है, मंहगाई के मजे हो जाते हैं, दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ती है और उस मंहगाई की सबसे ज्यादा मार पड़ती है गरीब आदमी पर, मजदूर पर । उस मजदूर की पीड़ा को हमारे यशस्वी मुख्य मंत्रीजी ने समझा और न्यूनतम मजदूरी को बढ़ाया । लगभग 33 प्रतिशत से ज्यादा बढ़ोतरी एक साथ की, उसके लिए मैं इस पवित्र सदन के माध्यम से माननीय मुख्य मंत्रीजी को और पूरी सरकार को बधाई देता हूं । पाला पड़ा इस बार, बहुत तेजी से, बहुत जबरदस्त नुकसान हुआ और उस सारे नुकसान को झेलने के लिए किसान की यथाशक्ति मदद करने की दृष्टि से 126 करोड़ रुपये का पैकेज देकर सरकार ने जो उदारता दिखाई, वह एक ऐतिहासिक निर्णय है और ऐसा निर्णय आज तक नहीं हुआ । ऐतिहासिक निर्णय जो हुआ, उसके लिए भी मैं सरकार को बधाई देता हूं । उस पाले की चपेट में जालौर जिला भी कुछ मात्रा में आया । प्रारम्भिक तौर पर, जो बड़े तौर पर सर्वे हुआ है, उसमें 50 प्रतिशत खराबे की सीमा में जालौर जिला नहीं आ रहा है और इसलिए उस पैकेज का उसको लाभ मिलेगा, ऐसा नहीं लगता । लेकिन जैसी घोषणा की गयी थी उस पैकेज को प्रस्तुत करते समय इस सदन में यह कहा गया कि इस मामले में प्रत्येक खेत या प्रत्येक काश्तकार एक यूनिट होगा, एक इकाई होगा । उस एक-एक काश्तकार को इकाई मानकर जैसा डिटेल सर्वे होना चाहिये था, वह अभी तक जालौर जिले में नहीं हुआ है । पूरे का पूरे गांव में नुकसान नहीं हुआ होगा, मैं मानता हूं लेकिन कई खेत ऐसे हैं जहां बिलकुल सफाया हो गया । विशेषकर अरण्डी की फसल बिलकुल साफ हो गयी और उसमें बहुत नुकसान काश्तकार को हुआ है । इसलिए मेरा निवेदन है इस सदन के माध्यम से कि जालौर जिले में एक-एक खेत का सर्वे करवायें और जिस किसी भी काश्तकार

(श्री जोगेश्वर गर्ग)

को 50 प्रतिशत से ज्यादा नुकसान हुआ है, उन सभी को लाभान्वित करने के लिए थोड़ा सा प्रयास करें तो बहुत कृपा होगी जालौर जिले पर आपकी सरकार की और इसी के माध्यम से फिर जो बिजली के बिल माफ करने की बात है, वह भी उन काश्तकारों पर लागू हो सकेगी, उनको लाभ मिल सकता है । राहत के बारे में मुझे अभी इतना ही निवेदन करना है ।

माननीय सभापति महोदय, बिजली की बात जब करता हूं तो मैं पूरे राजस्थान की बात नहीं करूंगा पर मैं उस जालौर की बात करूंगा जो जालौर बिजली के कृषि उपभोक्ताओं की दृष्टि से राजस्थान के सबसे मुख्य जिलों में से एक है और मैं बड़े गर्व से कहना चाहता हूं कि इस हमारी सरकार ने शासन सम्हालने की तुरन्त बाद नई कृषि कनेक्शन नीति घोषित की थी । नई कनेक्शन नीति घोषित हो गयी, कैबिनेट से अप्रूव हो गयी, छप गयी, किताबें फील्ड में पहुंच गयीं और फील्ड में पहुंचने के बाद हमारे ध्यान में आया कि जालौर जिले की परिस्थितियों को देखते हुए वह नीति ठीक नहीं है । जालौर के काश्तकारों को उसमें बहुत नुकसान हो रहा था तो मैंने जालौर जिले के काश्तकारों की भावना माननीय मुख्य मंत्रीजी तक पहुंचाई और बहुत गर्व के साथ और बहुत धन्यवाद के साथ मैं कहना चाहता हूं कि उस सारी घोषित कृषि नीति में आमूल-चूल परिवर्तन हुआ और जालौर के हितों को देखते हुए उसमें संशोधन किये गये । इसके लिये मैं जालौर जिले की पूरी जनता की तरफ से माननीय मुख्य मंत्रीजी का बहुत-बहुत आभार मानता हूं ।

इन चार वर्षों में बिजली के मामले में जो कुछ हुआ है, वह मेरे विद्वान साथियों ने बहुत बढ़-चढ़कर सारा वर्णन कर दिया है, बहुत विस्तार से वर्णन कर दिया है । मैं केवल इतना कहना चाहूंगा कि यह सारे घाटे सहन करने के बाद भी, वित्तीय भार सहन करने के बाद भी चार साल में एक बार भी सरकार ने और इन कम्पनियों ने बिजली की दर नहीं बढ़ाई है । डिमाण्ड बहुत बढ़ गयी । 700 लाख यूनिट प्रतिदिन की खपत से चलकर आज 1200 लाख यूनिट प्रतिदिन की खपत के आस-पास पहुंच गयी । उसके बाद भी उस खपत को सम्हालना, सप्लाई को सम्हालना और मंहगी बिजली खरीदकर भी उस सप्लाई को सम्हालना फिर भी रेट नहीं बढ़ाना, यह अपने आप में एक बहुत महत्वपूर्ण निर्णय है, बहुत साहसिक निर्णय है । मैं उसके लिये सरकार की बहुत-बहुत प्रशंसा करता हूं, धन्यवाद देता हूं सरकार को ।

(श्री जोगेश्वर गर्ग)

मानतीय सभापति महोदय, जालौर जिले में इन चार सालों में बिजली के क्षेत्र में जो विकास के कीर्तिमान स्थापित हुए हैं, मैं संक्षिप्त में उनका उल्लेख करना चाहता हूं। पूरे राजस्थान में 400 के.वी. के जी.एस.एस. गिनती के थे चार या पांच मुश्किल से थे। माननीय मुख्य मंत्रीजी जब रामसिंह पधारीं, उनको हमने निवेदन किया और उन्होंने वहीं घोषणा की थी । वह 400 के.वी. का जी.एस.एस. भीनमाल में स्वीकृत भी हो गया, जमीन भी अलाट हो गयी, टेण्डर भी हो गया, काम शुरू हो गया । बहुत तेजी से काम चल रहा है। उसके लिए सरकार को बहुत-बहुत धन्यवाद । 200 के.वी. का जी.एस.एस. जालौर में नहीं था, भीनमाल में था। जालौर में एक और की आवश्यकता थी। जालौर के पास लेटा गांव में वह 200 के.वी. का जी.एस.एस. भी इस सरकार ने बनाकर दिया, उसके लिए सरकार का बहुत-बहुत आभार । 132 के जी.एस.एस. पिछली सरकार के कार्यकाल में पूरे जालौर जिले में केवल दो बने थे । उसकी तुलना में इन चार सालों में हमने पांच जी.एस.एस. बनाकर दे दिये और अभी और जी.एस.एस. जो स्वीकृति के लिए विचाराधीन हैं, प्रस्ताव बने हुए हैं। एक हमारे मांडोलाव का प्रस्ताव बना हुआ है, एक तिलोड़ा भी देर-सवेर उस क्राइट एरिया में आ सकता है तो वह अभी संभावनाएं हमारे सामने हैं । इसके बाद 33 के.वी. के जी.एस.एस. की यदि बात करूं तो जालौर की धरती पर पूरे जिले में मिलाकर 39 जी.एस.एस. तो बन चुके, काम में लग चुके । अभी और जो काम जारी हैं, जिनमें ऐसे तीन जी.एस.एस. हैं और उनके बारे में मैं केवल इतना निवेदन करना चाहता हूं, माननीय मंत्री महोदय यदि ध्यान दें तो लेटा, काकाड़ी नाड़ी और चंदूजी की ढाणी, यह मेरे क्षेत्र में हैं तीनों जिनका काम चल रहा है । लेटा का काम ठीक चल रहा है, अभी-अभी शुरू हुआ है लेकिन यह दो जो मैंने नाम बताए, चंदूजी की ढाणी बावतरा और काकाड़ी नाड़ी सायला, इन दोनों के टेण्डर हो चुके थे, ठेकेदार समय पर काम शुरू नहीं कर पाया, ब्लैक लिस्ट हो गया, उस ठेकेदार को ब्लैक लिस्ट किये हुए भी सालभर से ज्यादा समय हो गया, दूसरा ठेकेदार आना चाहिए था नहीं आया, उस काम में विलम्ब हो रहा है। तो माननीय मंत्री महोदय, थोड़ा सा ध्यान देंगे तो वो काम भी जल्दी शुरू हो जाए तो अगले सीजन तक उन काश्तकारों को भी लाभ मिल जायेगा ।

(श्री जोगेश्वर गर्ग)

इसके अलावा मेरे विधान सभा क्षेत्र के सात और जो स्वीकृति के लिए पेंडिंग हैं आपके पास उनका भी उल्लेख करना चाहूंगा, एलाना, खरल, दीगांव, हेतलावास, नारवाड़ा, आसाणा और डाबली, यह सात आपके पास विचाराधीन हैं। इनमें से तीन लगभग ऐसे हैं जिनकी सारी खाना पूर्ति हो चुकी केवल उच्च स्तरीय निर्णय बाकी है बाकी चार में अभी प्रक्रिया जारी है तो उस प्रक्रिया को तेज करके हम जल्दी से जल्दी उसको पूरा कर सकें तो आपकी बड़ी कृपा होगी। अगले सीजन तक इनका हमको लाभ मिल सकेगा ।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि आपने नये कनेक्शन बहुत दिये हैं जालौर जिले में, इसमें कोई शक नहीं। लेकिन अभी जो पेंडिंग हैं वहां पर जो 5250 रुपये वाली स्पेशल श्रेणी की एप्लीकेशंस ली थीं आपने उनमें से 3300 से ज्यादा पत्रावलियां केवल जालौर जिले की हैं, उसमें से 1300 से ज्यादा केवल मेरे क्षेत्र की हैं। तो मेरा निवेदन है कि उस पर आप जल्दी कार्यवाही करें और जैसा कि आपने और माननीय मुख्य मंत्रीजी ने सार्वजनिक रूप से घोषणा की है, सदन में भी घोषणा की है एक अप्रैल से उनके डिमाण्ड नोट निपटाने चालू हो जायेंगे तो सरकार पर मुझे भरोसा है कि वास्तव में वो चालू हो जायेंगे और इन काश्तकारों को राहत मिलेगी । इसके अलावा भी पांच हजार के आस-पास सामान्य श्रेणी की एप्लीकेशंस भी जालौर जिले में विचाराधीन हैं, पेंडिंग हैं वर्षो से तो उनको भी हम इस वर्ष में यदि कनेक्शन उपलब्ध करवा सकें तो आपकी बड़ी कृपा होगी ।

मैं सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं कि अधीक्षण अभियंता का कार्यालय जालौर में नहीं था जो आपने हमारी मांग पर खोला, अब मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि जैसा वर्क लोड बढ़ता जा रहा है, जितने आपने नये कनेक्शन दिये हैं, जितने आपने लोड एक्सटेंशन के यह काम किये हैं, जितने जी.एस.एस. आपने निर्माण किये हैं, जितने फीडर रिनोवेशन किया है उन सब को देखते हुए अब सायला, जो सबसे ज्यादा पोंटेशल है उस सायला में एक एक्स.ईएन. आफिस की आवश्यकता महसूस हो रही है। और जब उसको एक्स.ईएन. आफिस करेंगे तो पोशाणा में ए.ईएन. आफिस भी आपको करना पड़ेगा और इसलिए उम्मेदाबाद, सायला, पोशाणा और धूमड़िया, ऐसे यह चार ए.ईएन. सब डिवीजन मिलाकर एक डिवीजन सायला का जस्टिफाई होता है। मेरा आपसे निवेदन है कि इस पर विचार करें और इसको स्वीकृत करवाने की

(श्री जोगेश्वर गर्ग)

कृपा करें तो हमारा प्रशासनिक ढांचा ज्यादा सुदृढ़ हो सकेगा और हम काश्तकार को अधिक संतुष्टी दे सकेंगे ।

माननीय सभापति महोदय, सतर्कता जांच जो होती है, फ्लाइंग विजीलेंस जो होती है, आन द स्पोट जो वो जांच करते हैं उसमें कई बार उन्नीस बीस भी होता है । काश्तकार को लगता है कि जांच ठीक नहीं हुई, काश्तकार को लगता है कि मेरी मोटर तो सही थी और इन्होंने ज्यादा एम्पीयर बता दिया है, ज्यादा हार्स पावर बता रहे हैं तो उसको थोड़ी सी दिक्कत होती है तो उसमें वो दोबारा निवेदन करते हैं जांच के लिए । उस दोबारा जांच के आदेश करने का अधिकार वर्तमान में मुख्य अभियंता के पास है, जोधपुर में बैठते हैं, बहुत दूर है । हमारे ऐसे बहुत केस हो जाते हैं इसलिए मेरा निवेदन है कि यदि अधीक्षण अभियंता, जालौर को वो अधिकार दिये जाएं तो काश्तकारों को अधिक सुविधा मिल सकेगी ।

माननीय सभापति महोदय, इसके अलावा गोशालाओं में जो कनेक्शन हैं अभी, मैं सरकार का धन्यवाद करना चाहता हूं कि मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारों में जो कनेक्शन थे उनमें जो कामर्शियल रेट लग रही थी उसको उन्होंने समाप्त करके और घरेलू दर लागू करी, उसके लिए आपका आभारी हूं। लेकिन गोशालाएं जो चल रही हैं राजस्थान की धरती पर दानदाताओं द्वारा, समाज सेवकों द्वारा हजारों की संख्या में रजिस्टर्ड गोशालाएं चल रही हैं, वहां पर जो कृषि कुओं के कनेक्शन हैं उन पर जो दर लग रही है वो स्पेशल कामर्शियल रेट से लग रही है वो उचित नहीं होगा। हम जिस विचारधारा और जिस भावना को धारण करने वाले लोग आज सत्ता में हैं उनके शासनकाल में यदि ऐसा चले तो अच्छा उदाहरण नहीं होगा इसलिए मेरा सरकार से निवेदन है कि गोशालाओं के ट्यूबवैलों पर लगने वाली बिजली की रेट भी सामान्य रेट से करें तो अच्छा रहेगा ।

माननीय सभापति महोदय, अभी जो सबसे ज्यादा समस्या आ रही है, फीडर रेनोवेशन राजस्थान में बहुत किया है और उसके कारण वोल्टेज बहुत अच्छे मिल रहे हैं काश्तकारों को, ट्रिपिंग कम हो रही है, यह सब तो बहुत खुशी की बात है लेकिन फीडर रेनोवेशन के साथ-साथ आपने जो यह सुपर ट्रांसफारमर्स लगाये हैं उसमें मीटर उसके अन्दर लगा हुआ है और वो सुपर ट्रासफारमर्स के कारण काश्तकारों को काफी प्रॉब्लम्स आ रही हैं । उसमें एक

(श्री जोगेश्वर गर्ग)

ट्रांसफारमर्स पर यदि एक से ज्यादा कनेक्शन हों और एक का मीटर जल जाए तो बाकी सब को भी सफर करना पड़ेगा । एक का मीटर जल गया तो उसकी सप्लाई बंद हो जाती है, बाकी काश्तकार कहते हैं कि नहीं, हम यह ट्रांसफार्मर हटाने नहीं देंगे, हम क्यों भुगतें तेरे कारण और उसके कारण से यदि बाकी काश्तकार मजबूत टाइप के आदमी हुए और वो एक काश्तकार गरीब, मेरे जैसा हुआ तो वो पांच-पांच, सात-सात दिन तक वो उतारने नहीं देते हैं और उसके कारण बड़ी दिक्कत आती है । तो यह मीटर अलग-अलग रहें, ट्रांसफार्मर के अन्दर एक साथ नहीं रहें ऐसी कुछ व्यवस्था यदि हो सकती हो तो करनी चाहिए । फिर इस सुपर ट्रांसफार्मर के कारण एक और बड़ा नुकसान काश्तकारों के साथ हो रहा है । जिन काश्तकारों के कनेक्शन फ्लेट रेट से हैं उनके बिल भी हम फ्लेट रेट से भेजते हैं, भेजना ही चाहिए लेकिन जिनके फ्लेट रेट वाले काश्तकारों के वहां सुपर ट्रांसफार्मर लग गया तो उसके अन्दर मीटर लगा है और मीटर रीडिंग भी बतायेगा, मीटर रीडिंग बतायेगा तो मीटर रीडिंग नोट भी होगी और नोट होगी तो बिल भी उस मीटर रीडिंग के हिसाब से आयेगा । जिस काश्तकार के साथ हमने कांट्रेक्ट, एग्रीमेंट साइन किया हुआ है फ्लेट रेट से बिजली देंगे, फ्लेट रेट से बिल भेजेंगे उसको मीटर से बिल भेजना चुपके से यदि हमारा अधिकारी शुरू करता है तो यह अमानत में खयानत जैसी बात लगती है । मेरा सरकार से निवेदन है कि इस बात को सम्भाले और जिनके फ्लेट रेट से कनेक्शन हैं उनको जब तक वो काश्तकार सहमति से अपना परिवर्तन नहीं कराये तब तक उसको मीटर रीडिंग से बिल नहीं जाए । यह व्यवस्था हमको करनी चाहिए ।

एक आपने नयी व्यवस्था जो लागू की है स्पाट बीलिंग, स्पाट बीलिंग अभी भगवान जाने कैसे उनकी मशीन काम करती है बहुत भारी-भरकम बिल आ रहे हैं । खड़े-खड़े वो हाथों-हाथ बिल निकाल कर देते हैं । बहुत भारी रकम के बिल आ रहे हैं और वो काश्तकारों को बहुत भारी पड़ रहे हैं । उन मशीनों के बारे में भी पुनर्विचार करना चाहिए, स्पाट बीलिंग की व्यवस्था के बारे में पुनर्विचार करना चाहिए ।

सभापति महोदय, मैं इसलिए यह सारी बातें आपके ध्यान में लाना चाह रहा हूं, सरकार के ध्यान में लाना चाह रहा हूं कि पिछली सरकार की यह जो हालत हुई, 156 से 56 पर आ गये, उसमें बिजली भी एक बहुत बड़ा मुद्दा था । हमारी सरकार ने विशेष रूप से बिजली के क्षेत्र में इतना काम किया है,

(श्री जोगेश्वर गर्ग)

इतना काम किया है, इसकी जितनी वाहवाही की जाए उतनी कम है और यह छोटे-छोटे मुद्दे यदि हम सम्भाल कर नहीं रखेंगे तो यह भी हमारे खिलाफ एक बड़ा मुद्दा बन सकता है। इसलिए आज मैं सरकार के ध्यान में लाना चाहता हूं, इन संवेदनशील विषयों पर थोड़ा सा हम और अधिक ध्यान दें ।

फिर मैं एक निवेदन करना चाह रहा हूं, जालौर शहर में इस समय सीवरेज लाइन डल रही हैं ...

श्री सभापति: मेरे को सभी माननीय सदस्यों को सूचना देनी है । मेरे पास पर्ची में जितने भी नाम हैं, आज सब बोलेंगे, चाहे नो बजो और चाहे दस बजो, चाहे ग्यारह बजो पर सदस्य समय का ध्यान नहीं रख रहे हैं । सब को कह रहा हूं कि आठ से दस मिनट में अपनी बात बता दें ।

श्री जोगेश्वर गर्ग (जालौर): आखरी बात मैं कर रहा हूं । जालौर शहर में जो सीवरेज लाइन डल रही है उसमें मेरा निवेदन करना चाहूंगा डिस्काम के अधिकारियों से कि उस लाइन के समय पूरे जालौर शहर की सड़कें खोदी जायेंगी, उस दौरान यदि हम कर सकें, मैंने पी.एस.ई.डी. से भी निवेदन किया है और वो भी कर रहे हैं, पाइप लाइन सारे शहर की रिनोवेट कर रहे हैं, इसी तरह से यदि आप अण्डरग्राउंड केबलिंग कर सकें जालौर शहर में तो बहुत अच्छी बात हो जायेगी ।

मैं अंतिम बात मेरी करना चाहता हूं । राजीव गांधी विद्युतीकरण योजना की यहां सदन में बहुत चर्चाएं हुई हैं, 2006 में जालौर जिले की ...

श्री सभापति: माननीय सदस्य, श्री नन्दलालजी पूनिया ।

श्री जोगेश्वर गर्ग (जालौर): अंतिम बात, केवल आधा मिनट, माननीय सभापति महोदय ।

श्री सभापति: बोलें ।

श्री जोगेश्वर गर्ग (जालौर): 28 गांव जालौर जिले में ऐसे थे जो विद्युतीकृत नहीं थे, उन 28 गांवों के बारे में हमने सुना था कि इस योजना के अन्तर्गत केन्द्र सरकार ने स्वीकृति निकाल दी है, टेण्डर हो गये हैं बस ठेकेदार आने वाला है, वो स्वीकृति कहां गयी, पता नहीं, वो ठेकेदार कहां गया, पता नहीं । आज दो साल से ज्यादा समय हो गया वो ठेकेदार कहां गया, पता नहीं।

(श्री जोगेश्वर गर्ग)

(समय : 17.00 बजे)

आज दो साल से ज्यादा समय हो गया वह आपके वैसे के वैसे पड़े हैं । उसमें से एक कोई मेरे क्षेत्र का था मैंने विधायक कोटे से पैसे देकर उसको विद्युतीकृत कराया है । ऐसी इसके अन्दर सरकार की बहुत बड़ी नाम वाली योजना की यह हालत है। इस तरह के दूर के ढोल सुहावने, केवल गाल बजाना बहुत आसान है, काम करना बहुत मुश्किल है। माननीय वसुन्धराजी के नेतृत्व में इस सरकार ने बहुत काम किये बिजली के । उसकी मैं फिर एक बार सरकार को बधाई देता हूं और आपने मुझे समय दिया उसके लिए धन्यवाद ।

श्री सभापति: माननीय सदस्य नंदलालजी पूनिया ।

श्री नन्दलाल पूनिया (सादुलपुर): माननीय सभापति महोदय, आज अकाल और बिजली पर चर्चा हो रही है। मैं इसमें सम्मिलित होते हुए मेरे क्षेत्र की कुछ समस्या रखना चाहता हूं। काफी लोगों ने बिजली कम्पनी की और बिजली मंत्री की बड़ी तारीफ की लेकिन मुझे तो कुछ ऐसा महसूस नहीं होता कि इतनी तारीफ की जाय। आज बिजली कम्पनियों के जितने भी उपभोक्ता हैं, चाहे वह घरेलू कनेक्शन वाले हों चाहे वह कृषि कुएं वाले हों, चाहे फैक्ट्री वाले हों, इस बिजली कम्पनी से कोई संतुष्ट नहीं है। आज सोचिये यह कम्पनी है और इसके ग्राहक ही इससे संतुष्ट नहीं हैं तो यह कम्पनी कब तक चलेगी । वही बात है दुकानदार दुकान चलाता है और उस पर जो ग्राहक आते हैं वह उससे संतुष्ट नहीं होते हैं तो वह दुकान नहीं चलती है। यही हालत बिजली कम्पनी की है । मैं आशा करता हूं कि इसमें कुछ सुधार होना चाहिए।

आज ट्रांसफार्मर जल जाता है और यहां तो यह घोषणा कर रखी है कि बहत्तर घंटे में हम ट्रांसफार्मर चैंज कर देंगे लेकिन यह सिर्फ एक घोषणा ही है । आज जो प्रोसीजर इन्होंने एडाप्ट किया है कि ट्रांसफार्मर जलेगा, खुद काश्तकार लाएगा, फेल्योर रिपोर्ट बनेगी उसके बाद स्टोर तक जाएगा और उसके बाद में रिप्लेसमैंट होगा और उससे रिपोर्ट मंगायेंगे इसके कोई ड्यूज हैं कि नहीं हैं। यह सारा समय लगने में कम से कम दस दिन लगते हैं और उस काश्तकार को वापस ले जाने तक दस और पन्द्रह के बीच में दिन लग जाते हैं। आप सोचिये एक काश्तकार को जला हुआ ट्रांसफार्मर दस और पन्द्रह दिन के बाद मिले तो उस काश्तकार की फसल का क्या होगा, वह फसल जल जाएगी और फसल जल जाएगी तो काश्तकार स्वतः ही बर्बाद हो जाएगा ।

(श्री नन्दलाल पूनिया)

मेरा इस सम्बन्ध में निवेदन है कि जहां जे ई एन बैठता है 33 के वी ए सब स्टेशन पर, वहां स्टैण्ड बाई ट्रांसफार्मर रखें। ज्योंहि ट्रांसफार्मर काश्तकार का जलता है रिप्लेसमैंट में उसको दे देना चाहिए ताकि समय नहीं लगे । यह जो प्रक्रिया आज कम्पनी ने एडाप्ट कर रखी है उसमें काश्तकार पर बहुत पैसे का भार पड़ता है लाने ले जाने का और जब तक उन ए ई एन और जे ई एन की मुट्ठी गरम नहीं करते हैं तब तक फेल्योर रिपोर्ट भी नहीं बनाते और वह स्टोर तक भी नहीं भेजते हैं, यह स्थिति है। और आने के बाद में भी ट्रांसफार्मर रिप्लेसमैंट होकर आ जाता है तो आने के बाद बगैर पैसे उसको ट्रांसफार्मर नहीं दिया जाता है, यह स्थिति है उस कम्पनी की। आज कुछ जगह पर जैसे एक ट्रांसफार्मर तीन कुएं हैं और तीन में वह ट्रांसफार्मर जल गया, दो आदमियों ने पूरे पैसे भर रखे हैं और एक आदमी उसमें पैसे भरने में असमर्थ है तो आज बिजली कम्पनी के अधिकारी उनको यह कहकर टरका देते हैं कि सारे पैसे, तीनों के पैसे भरोगे तब हम आपको ट्रांसफार्मर रिप्लेसमैंट में देंगे। बड़े दुःख की बात है कि आज दो आदमियों ने जिन्होंने पैसे भर दिये वह नुकसान उठा रहे हैं। आप तीसरे का कनेक्शन कट कर दीजिए, उसको डिसकनेक्ट कर दीजिए लेकिन जिन दो आदमियों ने पैसे भरे हैं उनका तो नुकसान नहीं होना चाहिए ।

सभापति महोदय, यहां इस विभाग में भ्रष्टाचार कहां से शुरु होता है उसका ताजा उदाहरण मैं बताता हूं आपको । जब कृषि कुओं का कनेक्शन का समय आता है, वहां से भ्रष्टाचार शुरु होता है । आज जब वह कनेक्शन लेने के लिए आते हैं तब ही कुछ तो तार पकड़ा दिये जाते हैं, कभी इन्सुलेटर दे दिये जाते हैं, कभी कोई सामान दे दिया जाता है और उसको जब तक वह पैसे के बल पर उनके पैसे देने के लिए उसको बाध्य करते हैं यह स्थिति है । आज सारे-सारे सभी सब डिवीजन हैडक्वार्टर पर आप देख लीजिए, जब तक कोई पैसा नहीं देता तब तक सारा सामान नहीं देते, उसको कनेक्शन नहीं देते और कुछ सामान पकड़ा देते हैं ।

मेरा इस सम्बन्ध में सुझाव है कि यदि आपको वाकई में इस भ्रष्टाचार को समाप्त करना है तो ज्योंहि जिस काश्तकार का कुएं का कनेक्शन आए सारा चाहे इन्सुलेटर हो, चाहे तार हों चाहे पोल हो चाहे ट्रांसफार्मर हो, सारे उसको एक साथ दे दीजिए ताकि भ्रष्टाचार का जो यह मुद्दा है यह नहीं आए ।

(श्री नन्दलाल पूनिया)

आज मीटर वाला मामला भी अभी चला था, वाकई में मैं एक गांव में गया था वहां यह चर्चा चली, एक आदमी बुजुर्ग था, बोले साहब यह थ्हारला मीटर अब काले अस्या है खांसे तो भी चाल पड़े, तेज बात करो तो चाल पड़े, सब लोगों ने कहा है इसकी तरफ भी ध्यान दीजिए आप। यह बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है ।

इसके अलावा मैं एक बात और निवेदन करना चाहता हूं कि एम एल ए और एम पी लैड के जो काम हैं आज वह राजगढ़ के सब डिवीजन में चाहे रूरल सब डिवीजन में, मैं एक-एक साल से अभिशंसा कर चुका हूं लेकिन एस्टीमेट नहीं बना । आज एस्टीमेट बनाते हैं तो कभी कह देते हैं खो गये, बड़े ताज्जुब की बात है कि 2003 में एक बांगड, सार्वजनिक कुए के विद्युतीकरण के लिए पैसे जमा करा चुके हैं और वहां पैसे जमा हो गये आज पांच साल तक उस सार्वजनिक कुए का कनेक्शन नहीं हुआ। इसी प्रकार एक लम्बोर छोटी में किशनाराम की ढाणी है 2006 में पैसे जमा करा दिये और आज एक महीने बाद उनका एडीशनल डिमांड नोटिस आता है कि इतने पैसे और जमा कराओ, वह मेरे पास उन्होंने भेजा। पी डी साहब ने कहा इतने पैसे और दो, मैंने कहा किस बात के, जब हमने 2006 में पैसे दे दिये उनको, 2006 में पैसे दे दिये डिमांड नोटिस के अनुसार और इसके खाते में जमा हो गये तो आज एडीशनल डिमांड किस बात की, मैं तो यह कहता हूं उन अधिकारियों और कर्मचारियों के खिलाफ कार्यवाही होनी चाहिए जिन्होंने तीन साल तक काम नहीं किया और हमारे से एडिशनल डिमांड मांगते हैं ।

विद्युत मंत्री महोदय से मैं निवेदन करना चाहता हूं कि आज एडिशनल डिमांड जो मांग रहे हैं उस एडिशनल डिमांड को बंद कीजिए, वह उपभोक्ता आज कुए का कनेक्शन लेने के लिए पैसे जमा करा देता है और दो साल तक उसको कनेक्शन नहीं मिलता है और दो साल बाद बिजली कम्पनी यह कहती है कि इतने पैसे और दो । किस बात के? उनकी कमी है पैसे इसलिए बढ़ गये कि दो साल में उन्होंने काम नहीं किया और समय पर काम कर देते तो पैसे का भार नहीं पड़ता। तो मैं तो कहता हूं एडिशनल डिमांड को बंद कीजिए और अधिकारियों ने एडिशनल डिमांड भेजी है और समय पर काम नहीं किया, उनके खिलाफ कार्यवाही करने की कृपा करें ।

(श्री नन्दलाल पूनिया)

हमारे राजगढ़ तहसील जो रूरल सब डिवीजन है उसकी स्थिति बड़ी खराब है वाकई में आज राजस्थान में सबसे ज्यादा कोई पीड़ित है तो हमारे राजगढ़ का सब डिवीजन पीड़ित है। सभापति महोदय, पहले जब किसी अधिकारी को पनिशमैंट देते थे तो जैसलमेर, बाड़मेर भेज देते थे और आज बिजली कम्पनी में किसी ए ई एन और जे ई एन को पनिशमैंट देते हैं तो उसको राजगढ़ भेज देते हैं, राजगढ़ भेजते हैं उसको पनिशमैंट के तौर पर, हकीकत है और वहां आने के बाद वह काम क्यों करेगा । एक ए ई एन था उसके खिलाफ इन्क्वायरी चल रही थी और एम डी साहब उसको सस्पैण्ड करने के मूड में थे लेकिन राजगढ़ की जगह खाली थी, उनको बुलाकर कहा कि आप राजगढ़ चले जाइये, आपको निलम्बित नहीं करेंगे । वह आ गया और आने के बाद क्यों काम करेगा, ऐसी स्थिति है राजगढ़ में । आज मैंने तो दो महीने बाद कभी उस सीट पर ए ई एन को बैठे नहीं देखा ।

जब तक इस स्थिति को नहीं बदलोगे और पनिशमैंट के तौर पर राजगढ़ भेजते रहोगे तो हमारे वहां क्यों काम करेगा । वहां आने के बाद वह कहेगा कि मेरा ट्रांसफर करवा दो, आप बोलो क्या करोगे इस सम्बन्ध में ।

आज कुटीर ज्योति के जो कनेक्शन दे रहे हैं इसमें भी बड़ा घोटाला हो रहा है। वह ठेकेदार और ठेकेदार ही नहीं आज तीस मीटर की आपने पाबंदी लगाई है उसमें तो कोई कवर अप होता ही नहीं है । आज हरिजनों के हों चाहे चयनित परिवार के कोई भी हों उसके घर दूर-दूर हैं और वहां तक तो बिजली पहुंची नहीं, उस मौहल्ले तक तो पोल लगे ही नहीं और आज तीस मीटर की बात करते हो तो इसमें कवर अप होंगे इसमें भ्रष्टाचार का मुद्दा बनता है। मैं तो यह कहता हूं कि यह बात हकीकत है, इस बात को आपने नहीं रोका और मैं कहता हूं सरकार को निर्णय लेना चाहिए। एक तरफ तो आप यह कह रहे हो कि हमारे पास पैसे की कमी नहीं है। हमारा खजाना भरा हुआ है। यदि भरा हुआ है तो राजस्थान सरकार यह निर्णय ले कि जितने भी बी पी एल परिवार हैं और जिनके कनेक्शन हैं, सबके कनेक्शन कर दिये जायेंगे ताकि सभी बी पी एल परिवारों को उसका फायदा मिल सके। यदि सरकार संवेदनशील है तो मैं कहता हूं ऐसी घोषणा आज यहां मंत्री महोदय कर देनी चाहिये ।

अकाल की बात करें । हमारे यहां तो अकाल का चोली और दामन का सम्बन्ध हो गया है। हर दस बारह साल में अकाल पड़ता है। मैं कहता हूं आज

(श्री नन्दलाल पूनिया)

सरकार को इस बात के लिये आगे आना चाहिये जहां दस बारह साल तक लगातार अकाल पड़ा है और उनकी आर्थिक स्थिति खराब हो गयी है तो मैं कहता हूं उन लोगों के लिये एक विशेष पैकेज देना चाहिये ताकि वह लोग बच सकें ।

इसी प्रकार हमारे यहां पानी का भी अकाल है सबसे ज्यादा । अनाज का तो है ही, चारे का है, रोजगार का है लेकिन हमारे राजगढ़ तहसील में पानी का बड़ा अकाल पड़ा हुआ है । हमारे लोगों को आज राजस्थान की बाउण्ड्री के आसपास हरियाणा के गांवों से पानी लाना पड़ता है । मैं कहता हूं बड़े ताज्जुब की बात है 60 साल देश को आजाद हुए हो गये लेकिन आज तक हम पानी की व्यवस्था नहीं कर सके । आज हमें बड़ी शर्मिंदगी महसूस करनी पड़ती है हम हरियाणा से पानी लाते हैं और कभी-कभी तो टैंकर को मना भी कर देते हैं...(व्यवधान)

श्री सभापति: माननीय सदस्य समाप्त करें ।

श्री नन्दलाल पूनिया (सादुलपुर): इन्हीं शब्दों के साथ मैं पुनः यह कहते हुए कि वहां जो पानी का अकाल पड़ा हुआ है उसमें अकाल राहत कार्य के तहत जब सरकार काम शुरू करे तक पानी की भी व्यवस्था करें । इन्हीं शब्दों के साथ आपने मुझे बोलने का समय दिया बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री सभापति: माननीय सदस्य खुशवीर सिंह, दस मिनट में अपनी बात कहें ।

श्री अमराराम (धोद): माननीय सभापति महोदय, व्यवस्था तो बीच की है ।

श्री हरीसिंह रावत (भीम): आप ही बहुत हैं आपके लिये तो ।

श्री सभापति: हां बोलो । आप बोलें ।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): धन्यवाद माननीय सभापति महोदय,...(व्यवधान)

श्री सभापति: सदस्य, दस मिनट में बात कहनी है पूरी आपको ।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): माननीय सभापति महोदय, अभी बिजली पर बहुत लम्बी चौड़ी चर्चा हुई है, मेरे तो सुझाव हैं । सुझाव यह हैं कि अभी बात चल रही थी कि जीरो वॉट का वल्ब अंकित करता है

(श्री खुशवीर सिंह जोजावर)

इलेक्ट्रोनिक मीटर में और मंत्रीजी ने कहा बिलकुल सत्य है। तो वह जीरो वॉट ही 15 वॉट के बराबर होता है ।

माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से मंत्री महोदय का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि जो इलेक्ट्रोनिक मीटर सरकार लगा रही है वह इलेक्ट्रोनिक मीटर चुनाव से पूर्व सरकार ने वादा किया था कि शायद इस बार कांग्रेस सरकार दुबारा आ गयी तो यह इलेक्ट्रोनिक मीटर लगायेगी और चकरी वाले हटा देंगे । आज यह दुर्दशा हो रही है मेरे विधान सभा क्षेत्र में हाल ही की बात है उन उपभोक्ताओं को डराया जा रहा है, ठेकेदार के द्वारा धमकाया जा रहा है और इनकी लगी हुई केबल, माननीय सभापति महोदय, चालू हालत के मीटर खोलकर इलेक्ट्रोनिक मीटर लगाये जा रहे हैं। मंत्री महोदय, आप जवाब दें तब इसके बारे में हमें थोड़ा अवगत करवायें कि चालू हालत के मीटर किन नियमों के तहत बदले जा रहे हैं?

यही नहीं माननीय सभापति महोदय, मीटर लगाने वाला अनट्रेंड, अनस्किल्ड है और उन लोगों के द्वारा मीटर लगाये जा रहे हैं जो लग्ज नहीं लगाता उसके अन्दर सीधा तार को गोल करके डाल देते हैं और उसकी वजह से स्पार्किंग होती रहती है । अभी मंत्री महोदय बता रहे थे यह इलेक्ट्रोनिक मीटर चकरी वाले मीटर से मैं आपको बताना चाहूंगा कि पांच हजार से दस हजार गुणा अधिक सेंस करता है और मीटर के साथ जो उसके ऊपर एक लाल लाइट जलती है वह भी रीडिंग उसी में आती है । सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है हमारा कि आपके विभाग के द्वारा एफ आर पी के तहत सिंगल फेज ट्रांसफार्मर से न्यूट्रल और फेज दिया जा रहा है उसके साथ में अर्थ नहीं दिया जा रहा है । अर्थ नहीं देने की वजह से इलेक्ट्रोनिक मीटर अपने आप बिलकुल लाइट बंद होने के बावजूद भी मीटर चलता रहता है । अर्थ के लिये क्या किया इन्होंने? आपके बी आई एस के जो मानक हैं जो आई एस के तहत मंत्री महोदय, उसमें बराबर गड्ढा प्रोपर गहराई तक होना चाहिये । उसमें कॉपर की प्लेट लगनी चाहिये । कॉपर के वायर होने चाहिये । उसमें नमक और कोयले की चूरी डाली जाए और उसके बाद वह अर्थ उस ट्रांसफार्मर से उपभोक्ता के घर तक पहुंचाया जाए । आज उसकी बदौलत करंट लीकेज होता है उसका उपभोक्ता पर भार पड़ता है । दूसरा वहां एक्सीडेंट होने की घटनाएं बढ़ जाती हैं । कई एक्सीडेंट मेरे विधान सभा क्षेत्र में हो चुके हैं ।

(श्री खुशवीर सिंह जोजावर)

माननीय सभापति महोदय, मीटर के ऊपर यह लिखा हुआ होता है कि 27 डिग्री सेंटीग्रेड टैस्टिंग, मैं जानना चाहूंगा मंत्री महोदय से कि हमारे यहां तो जीरो से 48 डिग्री तक टैम्प्रेचर चला जाता है और उन विपरीत परिस्थितियों में वह आपका मीटर 27 डिग्री पर टैस्ट किया हुआ जीरो डिग्री पर क्या बतायेगा और 48 डिग्री पर क्या बतायेगा? निश्चित रूप से उसमें अंतर आयेगा और वह भी बोझ उपभोक्ता के ऊपर पड़ रहा है ।

माननीय सभापति महोदय, मैं माननीय मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहूंगा कि घरों के अन्दर जो केबल लगायी जा रही है उस केबल के कम से कम 30 से 35 तरह के उसमें परीक्षण होते हैं और उसके बाद वह केबल अप्रूवल होनी चाहिये । मंत्री महोदय, मात्र दो या तीन तरह के परीक्षण ही करके उस केबल को अप्रूवल कर रहे हैं ।

उसके साथ में आज घटिया ट्रांसफार्मर आपके लगाये जा रहे हैं । लिखा हुआ होता है ट्रांसफार्मर 25 के वी ए का और अगर उसमें वास्तविक देखा जाए तो वह 18 और 20 का भी नहीं मिलेगा और उसकी बदौलत किसानों के ऊपर बोझ पड़ रहा है । जब किसानों की मोटर आपके अधिकारी जाकर टैस्ट करता है, किसान तो दस हार्स पावर की मोटर लगा रहा है लेकिन उस टैस्टिंग के वक्त उसमें 12 और 15 हार्स पावर बतायेगा । वह उस हिसाब से उसके अधिभार लगा देते हैं । चार्ज उससे वसूल करते हैं । कारण क्या है? कारण घटिया किस्म के ट्रांसफार्मर जो ज्यादा बताकर आपकी कम्पनी जो भी खरीद रही है इसमें बहुत भारी गड़बड़ी हो रही है ।

मैं आपको बताना चाहूंगा भारत सरकार द्वारा जयपुर में ई टी डी सी है । आप ट्रांसफार्मर जो हैदराबाद भेजकर टैस्ट कराते हैं, क्यों नहीं भारत सरकार ने करोड़ों रुपये खर्च करके ई टी डी सी की स्थापना जयपुर में ही की है और आपका ट्रांसफार्मर हैदराबाद जाता है। हैदराबाद में भी जहां टैस्टिंग होती है वह संस्था भी पूर्णतया उन मानकों में सही नहीं है तो मेरा आपसे मंत्री महोदय अनुरोध है कि इसके बारे में आप अवश्य जानकारी प्राप्त करें और ई टी डी सी जयपुर में मालवीय नगर में भारत सरकार ने करोड़ों रुपये खर्च करके पिछली हमारी गहलोत सरकार के वक्त यह था कि जब तक ई टी डी सी से प्रमाणित नहीं करायेंगे भारत सरकार की जो संस्था है तब तक हम अप्रूवल नहीं देंगे और अप्रूवल भी देते थे तो उसके उपयोग के बाद में उसका

(श्री खुशवीर सिंह जोजावर)
फाइनल पेमेंट होता था । आज जिस तरह से हो रहा है आप स्वयं इसके बारे में जान सकते हैं ।

मंत्री महोदय, मेरा आपसे निवेदन है कि जो ठेकेदार काम करवा रहा है वह ऐसे मजदूरों से काम करवा रहा है कि इन मजदूरों की जानकारी के अभाव में अनट्रेंड होने की वजह से उनकी मृत्यु हो जाती है । मेरे विधान सभा क्षेत्र में दो-तीन केस हो चुके हैं। उनको जब पैसे देने की बात आती है तो ठेकेदार के साथ, हम आपके विभाग से बात करते हैं । वह कहते हैं हम क्या करें यह तो ठेकेदार का आदमी था। आदमी ठेकेदार का था, आपकी भी तो कुछ न कुछ जिम्मेवारी बनती है। तो मंत्री महोदय, इसके बारे में आप निश्चित रूप से विचार करें और अपने जवाब में हमें अवगत करवायेंगे ।

सभापति महोदय, मैं अकाल के बारे में निवेदन करना चाहूंगा पिछले चार वर्षों से प्रदेश में अकाल पड़ रहा है और सरकार मात्र मई और जून माह में ही कार्य प्रारम्भ करवा रही है । पिछली आदरणीय गहलोत साहब की सरकार में एक ऐतिहासिक कार्य हुआ था कि अगस्त माह से ही कार्य प्रारम्भ हुए थे ।

सभापति महोदय, हमें अकाल के बारे में सोचना होगा कि यह अकाल क्यों पड़ते हैं और इसके बारे में मैं आपको कुछ 1938-39 की जानकारी देना चाहूंगा । उस वक्त क्या व्यापक सोच थी इस अकाल के बारे में, सभापति महोदय, 24 जुलाई, 1939 को महाराजा जोधपुर के द्वारा बैठक हुई थी और उसमें यह निर्णय लिया गया कि इस अकाल के बारे में क्या-क्या हो जो कि भविष्य में अकाल नहीं हो, बाकी बहुत सारी बाते हैं, इन बातों से मतलब नहीं है, मैंने कुछ उसके अंश मेरे पिता श्री की डायरी से लिये हैं क्योंकि वह भी उसमें थे और उसमें यह निर्णय लिया गया कि सभी जागीरदार अपनी जागीर के गांवों में हैसियत के अनुसार अपने क्षेत्र में दो हजार, तीन हजार, पांच-पांच हजार बीघा तक जोहड़, उनमें वृक्षारोपण विकसित करायेंगे और सड़क के दोनों तरफ वृक्षारोपण किया जायेगा । उसके तहत हमारे यहां तीन हजार बीघा के जोहड़ में वृक्षारोपण हुआ, टिक्की का जोहड़ है और मेरे गांव से फलाद रेल्वे स्टेशन तक 15 किलोमीटर सड़क के दोनों तरफ सघन वृक्षारोपण हुआ था ।

सभापति महोदय, उस वक्त यह सोच थी और यहां तक मैं आपको बताना चाहूंगा कि यह सरकार मात्र दो और तीन माह के अंदर कार्य प्रारम्भ कर रही है, जब कि मैं आपको 1938 की बात बताना चाहूंगा, वह है "With the works started for relief and famine in the time of Maharaja Ummed Singh.

(श्री खुशवीर सिंह जोजावर)

The famine relief operations from August to December, 1939." सभापति महोदय, 1939 की बात निवेदन करना चाहूंगा कि उस वक्त अगस्त से कार्य प्रारम्भ होते थे और आज की हमारी यह सरकार मात्र दो माह में कार्य प्रारम्भ करवा रही है।

सभापति महोदय, मेरे विधान सभा क्षेत्र में लगातार अकाल रहा, लेकिन गलत आंकलन करवाये गये, पटवारियों को निर्देश दिये गये कि तुम गिरदावरी सही मत बतायें, 50 प्रतिशत से कम खराबा बतायें और उस वक्त की बात निवेदन करना चाहूंगा "To give employment on average to over 65 thousand persons daily." उस वक्त मारवाड़ छोटी सी रियासत के अंदर अगस्त माह से कार्य प्रारम्भ हुए और 65 हजार से ज्यादा लोगों को रोजगार अगस्त माह से पूर्व दिये हैं । उस वक्त हम सोच सकते हैं कि आबादी क्या थी और वह मारवाड़ की रियासत थी और यह पूरा प्रदेश है जो 662 रियासतों से मिलकर बना है । आज क्या कार्य हो रहे हैं और कितने हो रहे हैं । सभापति महोदय, यहां तक ही नहीं ...

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): उस समय भयंकर सूखा पड़ा था ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): यह 96 के अकाल की बात है क्या?

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): 1939 के, 96 का अकाल ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): यह 96 के अकाल की बात है?

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): हां, बिलकुल ।

एक माननीय सदस्य: आप तो बड़े सारे थे उस समय ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): उस समय दो पैसे देते थे दो पैसे ।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): बिलकुल, मैं निवेदन कर दूंगा, सभापति महोदय, यहां तक कि आज हमारे यहां फेमिन कोड में भेड़, बकरी और ऊंट को शामिल नहीं किया गया है और उस वक्त का आपको निवेदन करना चाहूंगा "The exodus of men and cattle to Malwa and Central India was now over. At the ten fodder and grain depots which were opened on the role of Malwa over 5 lakhs cattle 3 lakhs men revised men received their free rations"

(श्री खुशवीर सिंह जोजावर)

सभापति महोदय, उनके पलायन के वक्त मवेशी और मनुष्य साथ-साथ जाते थे, उस वक्त उनके साथ में उनको फ्री राशन उपलब्ध होता था, जाते वक्त...(व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): सभापति महोदय, यह कनक्लूड कर लें, मैं समझता हूं कि लक्ष्मीजी को बुलवा दें फिर कनक्लूड करवा दें...(व्यवधान)

श्री बाबूसिंह राठौड़ (शेरगढ़): सभापति महोदय, पश्चिमी राजस्थान में अकाल पड़ता है...(व्यवधान)

श्री सभापति: बैठें सब ।

एक माननीय सदस्य: मरू प्रदेश पूरा पड़ा है...(व्यवधान)

श्री सभापति: बैठिये माननीय सदस्य ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): चार बोलेंगे चार ।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): सभापति महोदय, यहां तक ही नहीं उनको जाते वक्त राशन उपलब्ध होता था, फ्री में उनको घास उपलब्ध होती थी, लेकिन मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा "The depots would come in operation again when the migratnts return in March." सभापति महोदय, इससे ज्यादा क्या सोच थी, उस वक्त के लोगों में और आज की हमारी यह सरकार बिलकुल नहीं सोच रही है । पशुपालकों के बारे में तो बिलकुल ही नहीं सोच रही है । जब वह माइग्रेट करके जाते हैं तो उन पशुपालकों के पशुओं को लूटकर ले जाते हैं, उनकी आत्म रक्षा के लिए सस्ते लाइसेंस उपलब्ध नहीं करवा सकते हैं । घास और खाना, राशन तो बहुत दूर की बात है ।

सभापति महोदय, मेरा आपसे निवेदन करने का मतलब यह है कि हमारी यह सरकार कितनी संवेदनशील सरकार है यह इस बात से पता चल सकता है । सभापति महोदय, अंत में मैं एक निवेदन करना चाहूंगा कि यह अकाल...(व्यवधान)

श्री सभापति: हां, बोलें ।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): सभी बातों में मशगूल हैं, सभापति महोदय, हाउस आर्डर में नहीं है । यह अकाल जो परमानेंट समस्या है राजस्थान की और उसके लिए मैं धन्यवाद देना चाहूंगा हमारे प्रधानमंत्री और आदरणीय श्रीमती सोनिया गांधीजी को ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): अटल बिहारीजी को धन्यवाद दो जो गेहूं भेजा था और आपने काम में नहीं लिया ।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): प्रधानमंत्री और हमारी श्रीमती सोनिया गांधीजी दोनों को ही...(व्यवधान) दोनों को ही धन्यवाद देना चाहूंगा कि उनकी सोच देखो आप, राजस्थान के अंदर अकाल जो परमानेंट समस्या है, उस समस्या के समाधान के लिए भारत का पूरे विश्व में गर्व के साथ सिर ऊपर हो गया और वह है भारत को श्रीमती सोनिया गांधीजी ने दुनिया का पहला ऐसा देश घोषित कर दिया जिसमें रोजगार को कानूनी अधिकार दिया है। आज के पहले किसी ने कल्पना तक नहीं की थी जो हमारी नेता श्रीमती सोनिया गांधीजी ने इस राष्ट्र को पूरे विश्व में गौरवान्वित किया है । मैं धन्यवाद देना चाहूंगा इस सदन के माध्यम से, सभापति महोदय, मैं इसमें कुछ ...

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, डा. सुरेशजी चौधरी ।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): सभापति महोदय, अंत में मैं मेरी बात कनक्लूड कर रहा हूं, एक समस्या आ रही है, वह मैं नहीं बोलूंगा, मेरी बहुत तैयारी थी ।

श्री सभापति: आप आसन के सीधेपन का फायदा नहीं उठायें, मैंने कहा था कि दस मिनट बोलेंगे आप ।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): तीन मिनट बीच में मेरे महावीर प्रसादजी ने ले लिये ।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): हां तो आप 15 बोल लिये फिर भी...(व्यवधान)

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): सभापति महोदय, अंत में मेरी बात, एक समस्या है, वह सभी की समस्या है ।

श्री सभापति: बोलें, बोलें ।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): सभापति महोदय, वह समस्या यह है कि अब जाब कार्ड बन रहे हैं और जाब कार्ड के अंदर जो राशन कार्ड के हिसाब से, एक राशन कार्ड में 15 लोग हैं, कहीं 8 लोग हैं परिवार के सदस्य और उनमें से तीन बच्चे जो बालिग हो गये, उनकी शादियां हो चुकी हैं और उनके जाब कार्ड नहीं बनाये जा रहे हैं । मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा हमारे राहत मंत्रीजी और सरकार से कि इस समस्या की ओर आप

(श्री खुशवीर सिंह जोजावर)

ध्यान दें । उन लोगों की जो बालिग हो गये हैं और उनकी शादियां हो चुकी हैं और वह अलग से बस रहे हैं, रह रहे हैं, वह अपने माता-पिता के साथ नहीं रह रहे हैं । उनके जाब कार्ड भी बनाये जायें । यह मेरा अनुरोध है । आपने मुझे समय दिया, इसके लिये धन्यवाद, जय हिन्द ।

श्री सभापति: माननीय सदस्य डा. सुरेशजी चौधरी, पांच से सात मिनट में अपनी बात बतायें ।

श्री रामचन्द्र सराधना (जमवारामगढ़): माननीय सभापति महोदय, मैं सदन को एक सूचना देना चाहता हूं कि बिजली की कटौती के कारण किसानों की फसल सूख गई है, छात्रों को पढ़ने के लिए लाइट नहीं मिल रही है इसी कारण से चौमूं में पांच दिन से सैकड़ों लोगों ने धरना दे रखा है और बिजली विभाग की तरफ से वहां कोई अधिकारी जाकर नहीं सम्भाल रहे हैं । मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्रीजी का ध्यानाकर्षण करना चाहता हूं कि इस समस्या का समाधान करने के लिए मौके पर अधिकारियों को भेजें, उनको आश्वस्त करें और बिजली की व्यवस्था को ठीक करें ।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): माननीय सभापति महोदय, बिजली और अकाल पर राजस्थान विधान सभा में हो रही इस चर्चा में शामिल होने के लिए मुझे वक्त दिया उसके लिए आपका धन्यवाद । मैं ज्यादा लम्बी चौड़ी बात नहीं करके कुछ सुझाव ही दूंगा लेकिन मैं इतना अवश्य कहूंगा बात शुरू करने से पहले कि बिजली में जो हालत चार साल पहले थे और जो हालत आज है उनमें रात दिन का अंतर है, उसे महसूस किया जा सकता है । चार साल पहले यह स्थिति थी कि दिसम्बर, 2003 से पहले तीन घण्टे मुश्किल से बिजली मिलती थी किसानों को, दो बार आपने डेढ़ सौ प्रतिशत तक बिजली की दरें बढ़ाई थी 1998 से 2003 के बीच में, अब तक इस सरकार ने एक बार भी बिजली की दरें नहीं बढ़ाई । बिजली कम्पनियों ने जो रेट बढ़ाई या उनका जो भार बढ़ा, इवन भारत सरकार ने भी जो पैसा सात से दस रुपए प्रति यूनिट कर दिया उसका भार भी राजस्थान की सरकार ने किसानों पर नहीं डाल कर अपने ऊपर लिया तो बिजली की स्थिति कुल मिला कर बेहतर है ।

सूरतगढ़ थर्मल पावर 1998 से 2003 के बीच में मैं खुद कांग्रेस में था पर कम से कम तीन या चार बार वहां पर राजस्थान के तत्कालीन माननीय मुख्य मंत्रीजी और काफी केन्द्रीय मंत्री पधारते थे और वहां सूरतगढ़

(डा. सुरेश चौधरी)

में हम भी जाते थे और मंच से जो चर्चाएं होती थी, मंच से जो भाषण होते थे वह यही होते थे कि भारतीय जनता पार्टी ने कुछ नहीं किया, भारतीय जनता पार्टी ने कुछ नहीं करके किसानों को गर्त में डाल कर प्रदेश को पीछे ले गई, कांग्रेस ने ही सब कुछ किया है । वास्तवकिता क्या थी, सूरतगढ़ थर्मल पावर की तीन इकाइयों में जो काम प्रारम्भ हुआ और जो उत्पादन प्रारम्भ हुआ वह शुरू की गई थी 1998 से पहले की जो भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी उसके द्वारा और श्रेय ले रहे थे खुद ।

आज स्थिति यह है कि आजादी के इतने साल बाद मतलब किसी भी देश या प्रदेश में यह स्थिति हो जानी चाहिए थी कि उसकी आबादी के आखरी घर तक, हर घर में बल्व चसे, हर घर में दीया चसे, हर घर में लाइट हो, बिजली हो, इस तरह की व्यवस्था आबादी के बाद होनी चाहिए थी। आज जिस तरह से प्रयास किए जा रहे हैं चाहे प्रदेश के स्तर पर किए जा रहे हों चाहे राष्ट्र के स्तर पर किए जा रहे हों, आने वाले कुछ ही महीनों में आने वाले कुछ ही सालों में यह देश और यह प्रदेश पावर के मामले में सरप्लस होगा और सब जगह मांगते ही बिजली दी जाएगी चाहे वह घरेलू कनेक्शन हो, चाहे वह कामर्शियल कनेक्शन हो, चाहे वह एग्रीकल्चर कनेक्शन हो, तो बिजली के मामले में निश्चित रूप से सुधार हुआ है ।

मेरा सुझाव है कि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति की जितनी भी बस्तियां हैं उनमें माननीय मंत्रीजी टार्गेट फिक्स न किए जाएं कि पर्टीकुलर जिले में इतने दिए जाएं, जितनी भी बस्तियां हैं, एक मुश्त उनका सर्वे करवाकर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति की तमाम बस्तियों का विद्युतीकरण किया जाए, बार-बार इनके टार्गेट फिक्स न किए जाएं । इसी प्रकार कुटीर ज्योति योजना में कि इतने हजार कनेक्शन प्रत्येक जिले में दिए जाएंगे, जिस जिले में जितनी आवश्यकता है जितने बी पी एल परिवार हैं साढ़े सत्रह लाख प्लस साढ़े पांच लाख, पांच लाख, कुल साढ़े बाईस तेईस लाख जितने होते हैं उन सबके घरों में बल्व जलाएं । बिजली, सड़क और पानी ऐसी तीन चीजें हैं जो पहली बार किसी के घर जाती है तो उसको याद रहती है पीढ़ियों तक कि फलां के जमाने में बिजली आई थी ।

कई जगह यह देखने में आया है कि आबादी के ऊपर से कम से कम 50-50, 60-60 घरों के ऊपर से 11 केवी की हाईटेंशन लाइन जाती है, वहां

(डा. सुरेश चौधरी)

यह राइडर डाल रखा है कि उपभोक्ता इतने पैसे जमा कराए, उन उपभोक्ताओं की स्थिति यह नहीं है, जहां एस सी बस्तियों के ऊपर से लाइन जा रही है, अब उनके घर में तो लाइट नहीं है। लेकिन उनके घरों के ऊपर से हाई टेंशन लाइन जाती है, खतरा जरूर रहता है। लेकिन घर में बल्व नहीं जलता तो वह पैसा जमा कराने का जो है, कोई फर्क नहीं पड़ता डिपार्टमेंट के ऊपर, इतनी बड़ी कम्पनियों पर, इतने से पैसों से लेकिन इससे उस गरीब आदमी को निश्चित रूप से राहत मिलेगी। इस तरह की जिन बस्तियों के ऊपर से इस तरह की लाइन जा रही है उन लाइनों को हटा कर दूसरी जगह शिफ्ट किया जाए । वह एक जुट भी नहीं रहते हैं, जैसे सारे उपभोक्ताओं के पचास घर हैं, उसमें से बीस घरों ने कह दिया कि हम पैसा जमा करा देंगे, तीस घरों ने कह दिया कि हम नहीं कराएंगे, दस घरों ने कह दिया कि हम फलां आएगा तब बात करेंगे, तब जमा कराएंगे, यह बड़ी दिक्कतें आती हैं और लगातार खतरा बना रहता है ।

माननीय सभापति महोदय, बिजली के मामले में मैं एक बात और कहूंगा कि एग्रीकल्चर एरिया जहां है, एग्रीकल्चर कनेक्शन है, थ्री फेस कनेक्शन है, माननीय मंत्रीजी, कई जगह वहां एकरूपता नहीं है। अभी भी घरेलू कनेक्शन और थ्री फेस एक साथ में हो, काफी जगह ऐसी हैं कि कुए का एग्रीकल्चर कनेक्शन है और वहीं से लेकर उसने घर का कनेक्शन भी ले रखा है। और वह बिजली विभाग से, कम्पनी से अधिकृत है लेकिन आज के सिस्टम में हम यह बात करते हैं किसी भी जे ईएन से या ए ईएन से तो वह कहता है कि थ्री फेस से हम सिंगल फेस का कनेक्शन नहीं दे सकते। तो मेरा इसमें निवेदन है कि जो काश्तकार खेत में काम करता है वह निश्चित रूप से अपने बच्चे भी वहीं ले जाएगा, बच्चे पढ़ने वाले भी होंगे तो वहां उसको जब तक सिंगल फेस के कनेक्शन की व्यवस्था नहीं हो जाए तब तक थ्री फेस से उसको सिंगल फेस का कनेक्शन दिया जाए ।

(समय : 17.35 बजे)

(मोहम्मद माहिर आजाद, सभापति, पदासीन)

माननीय सभापति महोदय, किसानों का जो बिल आता है, अब बारह महीनों में तीन-चार-पांच महीने तो इस तरह के होते हैं कि काश्तकार उनमें न के बराबर कुआ चलाता है । एग्रीकल्चर कनेक्शन का न के बराबर इस्तेमाल

(डा. सुरेश चौधरी)

करता है लेकिन होता क्या है कि दो-चार महीने उसने कनेक्शन को काम नहीं लिया लेकिन बारह महीने होने पर माननीय मंत्रीजी, क्या होगा कि साल के अंत में बारहवें महीने में इस तरह का करते हैं कि एवरेज उसका निकाल कर देते हैं । अब तीन-चार महीने में काश्तकार ने बिलकुल ही उपयोग नहीं किया विद्युत का तो उसमें उसका मीटर लगा हुआ है तो उस मीटर के हिसाब से नहीं किया, बारह महीने का एवरेज निकाल कर बारहवें महीने में उसको लम्बा चौड़ा बिल थमा देते हैं ।

अब बात रही अकाल की, अकाल की जैसा माननीय सदस्यों ने कहा, चोली दामन का साथ है कांग्रेस और अकाल, यह चोली दामन और पायल का साथ है या तो इन तीनों की व्यवस्था हो। और माननीय सदस्य, बहादुरसिंहजी गोदारा ने सुझाव दिया, माननीय सदस्य, कासनियाजी ने सुझाव दिया और राजस्थान के हिसाब से है भी वह बेहतर उपाय आज की तारीख में है कि फोग या खेजड़ी को कामर्शियलाइज किया जाए किसानों के लिए कि वह किसान ही करे दूसरा कोई उपयोग नहीं करे तो अकाल का काफी हद तक निपटारा हो सकता है । इसके अलावा जैसे अभी माननीय सदस्य, खुशवीरसिंहजी ने कहा कि माननीय सोनियाजी ने और माननीय प्रधान मंत्री मनमोहनसिंहजी ने इस तरह की व्यवस्था कर दी कि भारत नम्बर वन हो गया विश्व में, उससे पहले हम व्यवस्था कर चुके थे। माननीय अटल बिहारीजी वाजपेयी, तत्कालीन प्रधान मंत्री, जब उन्होंने यह कहा था कि हिन्दुस्तान की सारी नदियों को आपस में जोड़ दो और माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं सदन को कि जिस दिन यह काम नदियों को जोड़ने वाला हो गया उस दिन आपकी यह रोजगार गारंटी योजना और इस तरह की चीजें बहुत पीछे रह जाएंगी । ऐसा ही काम प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना, माननीय वाजपेयीजी की बहुत बड़ी देन थी, जो हर गांव 250 से अधिक आबादी वाले हर गांव को सड़क से जोड़ रहे हैं, पूरे देश में पैमाना एक ही है, यह नहीं कि फलां प्रदेश सक्षम है, फलां प्रदेश अक्षम है उसको नहीं जोड़ेंगे, पूरे देश को एक पैमाने पर एकरूपता से जोड़ रहे हैं तो उसी तरह अगर सभी नदियां जोड़ दी जाएंगी तो इस हिन्दुस्तान की जमीन पर एक इंच हिस्सा भी ऐसा नहीं होगा, एक इंच भी टुकड़ा इस तरह का नहीं होगा जिस पर सिंचाई नहीं की जा सके। आने वाले टाइम में जब बिजली में हम सरप्लस होंगे, आने वाले टाइम में जब

(डा. सुरेश चौधरी)

नई-नई तकनीकें, स्प्रिंकलर और ड्रिप इर्रिगेशन की आएंगी, पावर सरप्लस होगा, सारी सुविधाएं होंगी और काश्तकार अपनी फसल लेंगे ।

माननीय सभापति महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि अकाल का जिस तरह से कहते हैं कि अकाल और राजस्थान का साथ रहा है, उसका सबसे बड़ा कारण रहा है राजस्थान की भौगोलिक परिस्थिति और राजस्थान का आकार, राजस्थान जैसे विभिन्न भौगोलिक परिस्थिति वाले प्रदेश में, इतना बड़ा प्रदेश एक सरकार के लिए सम्भालना बहुत ज्यादा मुश्किल हो जाता है। कई देश ऐसे हैं उदाहरण के लिए श्रीलंका का ले लें, जापान का ले लें, उनसे कई गुना बड़ा हमारा यह प्रदेश है । इसका सबसे अच्छा उपाय यही है, मैं प्रदेश को बांटने की वकालत नहीं करता लेकिन जिस तरह से हम कहते हैं कि छोटा परिवार, सुखी परिवार, उसी तरह से छोटा राज्य उन्नति अपार, छोटा राज्य खुशहाली अपरम्पार । माननीय सभापति महोदय, मेरा आपके माध्यम से सदन से निवेदन है कि छोटा राज्य मरु प्रदेश, यह आठ-दस जिलों को मिलाकर जो पाकिस्तान से लगते हुए हैं, उनको फिर अलग प्रदेश का दर्जा मांगने की या विशेष प्रदेश का दर्जा मांगने की या स्पेशल पैकेज मांगने की हमें आवश्यकता नहीं पड़ेगी, क्योंकि पूरी की पूरी अन्तरराष्ट्रीय सीमा इन 10-11 जिलों से लग रही है और मोस्ट सैंसेटिव इंटरनेशनल बोर्डर है तो निश्चित रूप से हमें इसका फायदा मिलेगा ।

श्री सभापति: माननीय डाक्टर साहब, कनक्लूड कीजिये । 10 मिनट हो गये।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): अकाल के लिए लास्ट आधा मिनट में कनक्लूड कर देता हूं । जब तक कानून नहीं बनाया जाएगा अकाल से निपटने के लिए चाहे वह सूखे का अकाल हो, चाहे वह गीले का अकाल हो, चाहे वह गर्मी का अकाल हो, चाहे वह सर्दी का अकाल हो, चाहे शीतलहर हो, चाहे ओलावृष्टि हो, चाहे लू हो, चाहे अतिवृष्टि से हो, चाहे कम वर्षा से हो, बरसात नहीं होने से हो, अकाल कई तरह के होते हैं और उसमें इसका सबसे बढ़िया तरीका है कि काश्तकार के लिए एक कानून बनाया जाए। राजस्थान की सरकार बनाये चाहे देश की सरकार बनाये कि अगर उसकी फसल खराब होती है तो प्रति बीघा उसको इतना मुआवजा, 5 से 10 हजार, 5 से 7 हजार, जितना भी तय करो वह दिया जाए । हमको कानून बनाना पड़ेगा अन्यथा

(डा. सुरेश चौधरी)

आने वाले टाइम में हालात यह हो जाएंगे कि खेती करने वाले नहीं बचेंगे । आज 200-200 बीघा जमीन जिनके है वो कह रहे हैं कि मेरी औलाद कह रही है कि इस जमीन को बेचो पर मेरा इस जमीन से लगाव है इसलिए बेचने नहीं दे रहा । इस जमीन से 365 दिन की परिवार के चार सदस्यों की मजदूरी नहीं निकलती । जब तक इस खेती का संरक्षण नहीं किया जाएगा, खेती करने वालों को संरक्षित नहीं किया जाएगा, आने वाले टाइम में यह खेती बंद हो जाएगी। और माननीय सभापतिजी, मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगा कि अगर यही हालात चलते रहे तो आने वाले टाइम में खेती करने के लिए काश्तकारों को अपने को प्रोत्साहन राशि देनी पड़ेगी । आपका बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री सभापति: श्री जगसीराम कोली, नहीं हैं । माननीय श्री अमराराम धोद ।

श्री अमराराम (धोद): माननीय सभापति महोदय, आज सदन में बिजली और अकाल पर चर्चा हो रही है । बिजली विकास का आधार है । (व्यवधान)

श्री सभापति: थोड़ी देर में । 6 बजे रिप्लाई करा देंगे ।

श्री अमराराम (धोद): चाहे कृषि का विकास हो.... (व्यवधान)

श्री कन्हैया लाल मीणा (बस्सी): सभापति महोदय, आज सवेरे से हम बैठे हुए हैं यहां पर इसका मतलब यह नहीं है कि हम कोई सुझाव देना चाहें तो दे ही नहीं सकते । (व्यवधान)

श्री सभापति: आपका तो डाक्टर साहब, नाम नहीं है।

श्री कन्हैया लाल मीणा (बस्सी): कैसे नहीं है नाम? नाम दिया हुआ है मेरा । नाम दिया हुआ है मेरा ।

श्री सभापति: नहीं, आपका नाम नहीं है । जो लिस्ट मेरे सामने रखी हुई है उसमें आपका नाम नहीं है । आप अपने सचेतकजी से बात कर लीजिये। (व्यवधान) आपका नाम है । कृपया अमरारामजी धोद को बोलने दो ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): सभापति महोदय, मैं एक बात निवेदन करना चाहता हूं कि माननीय सदस्य ने राजस्थान को विभाजित करने की बात कही है, मेरे दल के हैं पर मैं इनसे सहमत नहीं हूं, इस बात का मैं विरोध करता हूं ।

श्री सभापति: इससे कोई भी सहमत नहीं हो सकता ।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): माननीय सभापतिजी, मैंने प्रांत के टुकड़े करने की बात नहीं की है, मैंने प्रांत की खुशहाली की बात की है । आप कासनियाजी से यह पूछ लो कि कासनियाजी के पिताजी अलग नहीं हुए, कासनियाजी के भाई अलग से नहीं हुए या कासनियाजी की जो औलाद है वह अलग-अलग नहीं होगी ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): इससे नुकसान हुआ है । परिवार जब से बिखरे हैं, राजस्थान में नहीं, हिन्दुस्तान में नुकसान हुआ है ।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): ...छोटा परिवार खुशहाली का प्रतीक होता है । (व्यवधान)

श्री सभापति: श्री अमरारामजी धोद का ही अंकित हो । रामप्रतापजी का नहीं, उनका भी नहीं । अमरारामजी, आप शुरू करिये ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा):×××

श्री सभापति: आप बैठिये । कपासन से आने वाले माननीय सदस्य, विराजिये ।

श्री अमराराम (धोद): माननीय सभापति महोदय, आज सुबह से बिजली और अकाल पर चर्चा हो रही है और मैं समझता हूं कि बिजली किसी भी प्रांत और देश के विकास का मापदण्ड है कि प्रति व्यक्ति कितनी बिजली की खपत है । बिजली ही कृषि का, उद्योग का और आम विकास का मापदण्ड है कि प्रति व्यक्ति कितनी बिजली खपत है वो ही राज्य और देश कितना विकास कर सकता है । मैं समझता हूं कि राजस्थान में लम्बे समय से जो डिमांड और सप्लाई का गैप है वह अभी भी हम नहीं मिटा पाये हैं ।

श्री सभापति: माननीय पंचायती राज मंत्रीजी, धीरे बात करें । पंचायती राज मंत्रीजी, धीरे बात करें । कृपया अपनी सीट पर जाएं । पंचायती वहां करें ।

श्री अमराराम (धोद): सभापति महोदय, इनकी पंचायती बंद करो साहब । आप उनको सीट पर भेजो । ये डिस्टर्ब कर रहे हैं, एकदम सामने हैं । सभापति महोदय, मैं समझता हूं कि इस मांग और सप्लाई में जो गैप है, राजस्थान में आज तक भी हम उस गैप को नहीं मिटा पाये हैं, यह सबसे बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण है। मैं इस बात में नहीं जाता कि यह सरकार है या वह सरकार है, राजस्थान के निर्माण के बाद आज तक भी हम बिजली के मामले में

(श्री अमराराम)

आत्मनिर्भर नहीं हो पाये और आज भी हमें कटौती का संकट झेलना पड़ता है। विशेष तौर से राजस्थान में जो भी संसाधन हमारे उपलब्ध थे जिनसे बिजली पैदा हो सकती थी, मैं समझता हूं कि पिछले 50-55 साल में उन संसाधनों से बिजली पैदा करने की ओर हमारी राजस्थान की सरकारों ने ध्यान नहीं दिया । अब मैं इस बात के लिए जरूर धन्यवाद दूंगा कि अब उस ओर ध्यान देने की और शुरूआत करने की ओर बढ़े हैं । जिस तरह लिग्नाइट का हमारे पास बहुत बड़ा भण्डार है, मैं समझता हूं कि 25 से 30 हजार मेगावाट बिजली पैदा की जा सकती थी । वह हमारे पास था उस पर अब जाकर के एक-दो जगह हमने कार्यवाही शुरू की है। जहां पवन ऊर्जा का आपने ही बताया है कि 5400 मेगावाट बिजली पैदा करने की क्षमता राजस्थान में है और हम कर कितनी रहे हैं? 60 साल की आजादी के बाद मुश्किल से 40 या 50 मेगावाट बिजली पवन ऊर्जा से पैदा कर रहे हैं। मैं समझता हूं कि वह चाहे लिग्नाइट का सवाल हो, चाहे पवन ऊर्जा का सवाल हो, चाहे सौर ऊर्जा का सवाल हो तो राजस्थान के पास काफी संसाधन हैं । माननीय सभापति महोदय, पवन ऊर्जा की जो ऊर्जा है उसमें न कोई प्रदूषण है, न कुछ लाने की जरूरत है । राजस्थान की जितनी अरावली की पहाड़ियां हैं, मैं समझता हूं कि सब जगह अगर इस पवन ऊर्जा का उपयोग किया जाता और पूरे राजस्थान में 60 साल में हम 4 हजार मेगावाट बिजली पैदा कर पाते और अकेली हवा से, जिसमें कोई प्रदूषण नहीं, कुछ हमें लाना नहीं, केवल उसकी टैक्निक से हमारे यहां पैदा करके चालू करते तो मैं समझता हूं कि जस्ट दुगुना हम राजस्थान को बिजली के मामले में आत्मनिर्भर बना सकते थे। लेकिन इस ओर चलो देरी से ही सही, अब जो शुरूआत की गई है, मैं समझता हूं क्योंकि इन पर पूरे हमारे देश में बहुत बड़ा काम हो चुका, बहुत बड़ी बिजली पैदा होती है। इसलिए आज सबसे बड़ी आवश्यकता है कि राजस्थान बिजली के मामले में किस तरह से आत्मनिर्भर हो जिससे कृषि, उद्योग और आम आदमी का विकास हो सके ।

सभापति महोदय, आज गरीब से गरीब जिसके घर नहीं है, जो घुमक्कड़ जाति है वो भी मोबाइल लेकर के घूमती है। चाहे रहने के लिए घर नहीं है, कोई ठिकाना नहीं है लेकिन वो भी मोबाइल रखते हैं जिसको बिजली से चार्ज करने की आवश्यकता है । वह भी उसके पास है । इसलिए बिजली की आवश्यकता बढ़ी है लेकिन आज भी हम राजस्थान की 60 साल की

(श्री अमराराम)

आजादी के बाद भी सारे 40-42 हजार जो गांव हैं उनमें हम बिजली नहीं पहुंचा पाये । आम उपभोक्ताओं की बात तो छोड़िये, सभापति महोदय, आज भी हम बिजली की कटौती का हम दंश भोग रहे हैं । राजस्थान की सरकार आने पर बड़ी घोषणाएं की गईं कि 8 घंटे किसानों को बिजली मिलेगी, गांवों में 24 घंटे बिजली दी जाएगी । मैं समझता हूं कि सवा चार साल में एक दिन ऐसा नहीं होगा जब 8 घंटे किसानों को, किसी भी गांव में बिजली मिली हो तो 24 घंटे की बात तो छोड़ दीजिये। यह प्रगति रिपोर्ट में, कागजों में लिख सकते हैं, यह विधायकों के पास लिस्ट भेज सकते हैं कि सीकर जिले के 332 गांवों में हम 24 घंटे बिजली सप्लाई कर रहे हैं पर जब जयपुर राजधानी में ही बिजली 24 घंटे नहीं है, डिविजनल हैड क्वार्टर पर नहीं है, जिला हैडक्वार्टर पर नहीं है, कस्बों में नहीं है तो मैं नहीं समझता कि राजस्थान की सरकार के ऊर्जा विभाग ने गांवों में 24 घंटे बिजली पहुंचाने का काम किया है । कौनसी प्रसारण निगम से किया है? इस निगम से तो बिजली, मैं समझता हूं कि जयपुर से हीरापुरा से या जोधपुर या मेड़ता से 440 से जाती है । केवल लोगों को झूंठे वायदे और झूंठे कागज में प्रगति करने से प्रगति नहीं होगी । सभापति महोदय, जहां तक किसानों के साथ जो विश्वासघात करने की बात है कि हम 7 घंटे से बुवाई करायें और 7 घंटे के बाद जब भी फसल पकने का समय आता है, मंत्रीजी जब जवाब दें जब बता दें, पहली बार तो राजस्थान का वो किसान जिस अकाल की इसके साथ हम जोड़कर के बात कर रहे हैं, राजस्थान में बिजली गांव तक, खेत तक नहीं पहुंची । राजस्थान के किसान ने अपनी मेहनत से कुआ और ट्यूबवैल बनाकर के इस अकाल का मुकाबला करने की कोशिश की है । वह किसान है जिसने ट्यूबवैल या कुआ खोदने से लेकर के बिजली के तमाम सामान के लिए एक-एक पैसा अपनी मेहनत से लगाया है । उस अकाल से मुकाबले में अकाल से सिर फोड़ने का काम किया है । लेकिन मैं समझता हूं कि उस किसान के साथ जो चीटिंग की जा रही है, जिस तरह से शीतलहर में सुबह 4 बजे आधे घंटे के लिए बिजली देकर के दो घंटे नहीं देकर के फसल जलाने का काम किया। 7 घंटे बुवाई के वक्त सरकार ने वादा किया कि इस बार रबी की फसल में 7 घंटे अनट्रिप रात को 7 घंटे, दिन में साढ़े 6 घंटे अनट्रिप बिजली मिलेगी, किसान अपनी बुवाई करे और फसल पकने तक हम देंगे । फसल तो जल गई उसके बाद मेरा आरोप है कि आज की तारीख में भी 5 घंटे अनट्रिम बिजली नहीं मिल रही है । आप पूरे नवम्बर से लेकर आज तक का रिकार्ड मंगवा लें प्रत्येक कम्पनी से 7 घंटे बुवाई के

(श्री अमराराम)

वक्त किस तरह से आपने दी ? ज्यों ही शीतलहर से जली उसके बाद जो कुछ फसल बची हुई थी जिसको बचाया जा सकता था, इस मौसम में जब गर्मी बढ़ी है, जब शीतलहर से भरी हुई फसल को आगे बढ़ाने की जरूरत थी, मैं समझता हूं उससे बढ़ कर देना तो दूर है वह 7 घंटे बिजली भी पर्याप्त रूप से नहीं देने की मैं समझता हूं किसानों के साथ सबसे बड़ा धोखा है। और सभापति महोदय, यही नहीं, किसान के साथ इस तरह नाइंसाफी की जा सकती है, अखबारों में बयान दिया जा रहा है सरकार की तरफ से कि राजस्थान के शहरों की बिजली काट करके किसान को दी जा रही है। सरकार की तरफ से रोज बयान आता है कि जयपुर बड़े-बड़े शहरों की बिजली को काट करके किसान को दी गई है। सभापति महोदय, मैं पूछना चाहता हूं कि राजस्थान के किसान की 19 से 20 घंटे बिजली काट कर के किसको दी गई है ? जब शहर की ही 2 घंटे की बिजली काट करके गांव को और किसान को दी गई है तो राजस्थान के किसान की 19 से 20 घंटे बिजली काट कर राजस्थान की सरकार ने कहां दी है? वह बता दो क्योंकि किसान के साथ बिजली देने में कनेक्शन देने में जिस तरह की लूट की जा रही है, सभापति महोदय, मैं समझता हूं इससे बड़ी कोई भी बड़े-बड़े विज्ञापन दिये जा रहे हैं, हमारी मुख्य मंत्रीजी के फोटो छपाये जा रहे हैं, कहीं भी गांवों में बिजली रात को नहीं कटेगी, विद्यार्थियों के लिए बिजली की कमी नहीं है, यह टोल फ्री तीनों वितरण कम्पनियों के ये नम्बर हैं, इनको आप रिंग करें, किसी भी गांव में रात को बिजली नहीं कटेगी, कटेगी तो इनका मुझे तो यही बता दें मंत्रीजी, जब जवाब दें तो, नम्बर आपने तीनों वितरण कम्पनियों के दिये हैं, एक भी उपभोक्ता का गांव का टेलीफोन उस पर टोल फ्री पर सुन लिया हो तो । आज आप देखेंगे परीक्षा हो रही है, क्या गांव के लोग नहीं पढ़ सकते, निश्चित रूप से मैं समझता हूं जिस तरह का आपने किया है यह कतई उन लोगों के साथ किसी भी तरह से न्याय नहीं है । जहां तक 72 घंटे में जले हुए ट्रांसफार्मर को बदलने की बात कर रहे हैं, क्या हालत है, सभापति महोदय, यही बिजली कम्पनियां, तीनों वितरण कम्पनियां जिस तरह से अपने उपभोक्ताओं को शहर के उपभोक्ता और गांव के किसान और गरीब उपभोक्ता के साथ किस तरह का भेदभाव कर रही हैं? मंत्रीजी, अपने अधिकारियों से पूछ कर बता दें, राजस्थान में जितने भी शहर हैं, शहर के जितने भी उपभोक्ता हैं, एक भी उपभोक्ता को, किसी भी उपभोक्ता को ट्रांसफार्मर जलने पर क्या किसी ने, उपभोक्ता ने खुद वह जला हुआ ट्रांसफार्मर को कम्पनी के कार्यालय में लाकर

(श्री अमराराम)

रखा है । क्या अपने साधनों से ले जा करके वापस उसमें ट्रांसफार्मर में लगाने का काम किया है? लेकिन राजस्थान के किसान का ट्रांसफार्मर जब भी जलता है यह कम्पनी के अधिकारी शहर के डिस्ट्रीब्यूशन ट्रांसफार्मर को खुद अपने साधन से बदलेंगे और गांव के ट्रांसफार्मर जब भी किसान का जलता है, वितरण कम्पनी के अधिकारी इस बात के लिए बाध्य करते हैं कि किसान उस ट्रांसफार्मर को उठा कर पहले विद्युत कम्पनी के कार्यालय पर लाकर रखेगा, उसके बाद रिपोर्ट बनेगी उसके बाद में उसको जब उपलब्ध होगा तब देंगे। वह अपने साधन से वापस लेकर जाएगा ।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, समाप्त कीजिए, कनक्लूड कीजिए । (व्यवधान) नहीं, आपको 12 मिनट हो गये, 10-10 मिनट का समय निश्च‍ित किया हुआ है ।

श्री अमराराम (धोद): दो मिनट ही लूंगा, साहब ।

श्री सभापति: आसन बंधा हुआ है समय से । (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): आसन बंधा हुआ है । (व्यवधान)

श्री सभापति: मैंने यही तो कहा है कि कनक्लूड कीजिए।

श्री अमराराम (धोद): सभापति महोदय, जिस तरह से लूट हो रही है इसलिए सभापति महोदय, जिस तरह से आज किसान के साथ ट्रांसफार्मर की रिप्लेसमेंट नहीं की जा रही है...(व्यवधान)

श्री सभापति: हां, सही है, चीन और रसिया में तो कम्युनिस्ट हुकूमत है ।

श्री अमराराम (धोद): जिस तरह से कनेक्शन देने में की जा रही है, सरकार आने के बाद घोषणा की कि मार्च, 2007 तक सब को कनेक्शन मिल जाएंगे तो उससे 2007 से पहले लेना चाहते हैं, वह 2004 में पहले आएं और पहले पाएं, स्पेशल श्रेणी में 5200 रुपये जमा कराएं और 120 दिन में कनेक्शन ले लें । 28 हजार किसान 2004 से लेकर 2008 तक इंतजार कर रहे हैं । सरकार की घोषणा के बाद सरकार के विश्वास पर 28 हजार लोगों ने ट्यूबवैल बनाकर 3 से 7 लाख रुपये खर्च किया ।

श्री सभापति: माननीय श्री हीरालालजी...(व्यवधान) मुझे दिख रहा है।

श्री अमराराम (धोद): इस बात के लिए सरकार ने आश्वस्त किया है, तुरन्त आओ और तुरन्त पाओ । जो पैसा खर्च कर सकता था उसका पैसा

(श्री अमराराम)

खर्च हो गया और सरकार अब यह बहाना बनाए कि वह जून में जाकर के कनेक्शन देंगे, मैं समझता हूं यह राजस्थान की सरकार पर जिसे मत और बहुमत देकर के राजस्थान की सत्ता को बैठाया अगर उसका विश्वास नहीं करेंगे तो मैं समझता हूं किसका विश्वास करेंगे कि किसान के साथ विश्वासघात कनेक्शन देने में भी किया गया है। और सभापति महोदय, इन्होंने, मैं नहीं बाकी उपभोक्ता, कोई भी उपभोक्ता है, उद्योग का उपभोक्ता है, इण्डस्ट्रीज का उपभोक्ता है, व्यापार का उपभोक्ता है, वह अपनी मर्जी से कोई भी कनेक्शन ले सकता है। लेकिन राजस्थान में जब पानी खतम हो रहा है, जमीन बहुत छोटी हो गई, जितना पानी उपलब्ध है, किसान चाहता है थ्री फेस के बजाय अगर वह सिंगल फेस कनेक्शन लेना चाहता है तो हमारे कानून में अड़चन आ गई। क्योंकि एक रोटी खाने की भूख है, हमारी बिजली कम्पनी कह रही है कि नहीं, आपको तीन रोटी जबरदस्ती खानी पड़ेंगी, न पानी उपलब्ध है, केवल खेत में बचने के बाद जहां पानी की शॉर्टेज हो रही है, जमीन का जो बंटवारा हुआ है । जितना पानी है, सिंगल फेस की मोटर के 200 फीट नीचे से भी पानी निकाल कर अपना पीने के पानी का और कुछ खेती कर सकता है उस पानी से लेकिन इसमें हम उस किसान की मदद नहीं कर सकते, थ्री फेस का भी कनेक्शन होगा इसलिए सभापति महोदय ।

श्री सभापतिः कृपया, आप समाप्त कीजिए ।

श्री अमराराम (धोद): एक ही मिनट में ।

श्री सभापतिः माननीय श्री हीरालालजी रैगर ।

श्री अमराराम (धोद): माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से एक ही मिनट में करके, जो घरेलू कनेक्शन जो पिछले 4 साल में एक भी कनेक्शन ढाणियों में नहीं दिया गया है, आज भी जहां 2011 तक सब को कनेक्शन देने की बात कर रहे हैं । चार साल में जो ढाणियों में बसे हुए हैं उनको एक को भी कनेक्शन नहीं दिया। कनेक्शन देना तो दूर है उसकी एप्लीकेशन फाइल लेने के लिए तैयार नहीं, सभापति महोदय, यह मैं आखिर में एक ही निवेदन करना चाहूंगा कि अकाल में जिस तरह से गिरदावरी की जा रही है और गुढा में लगातार 10 दिन से किया जा रहा है, मैं समझता हूं पाले से नष्ट हुई फसल अगर सरकार किसान को मदद करना चाहती है ।

श्री सभापतिः अब समाप्त कीजिए । (व्यवधान) कृपया अब आप समाप्त कीजिए । (व्यवधान) मैंने हीरालालजी का नाम पुकार लिया, दो मिनट में वह सुझाव दे देंगे ।

सदन की कार्यवाही

विधान सभा की बैठक के निर्धारित समय में वृद्धि

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): माननीय सभापतिजी, मैं प्रस्ताव करता हूं कि यह चर्चा समाप्त कर माननीय मंत्रीजी के जवाब देने तक सदन का समय बढ़ाया जाए ।

श्री सभापतिः क्या सदन की सहमति है कि सदन का समय मंत्रियों के उत्तर तक बढ़ाया जाए ?

(स्वीकृत)

सदन का समय बढ़ाया गया ।

श्री अमराराम (धोद): सभापति महोदय, मैं इतना ही निवेदन आपके माध्यम से करना चाहूंगा कि अकाल और बिजली के नाम से किसानों का जिस तरह से विश्वासघात किया है, यह कतई राजस्थान का किसान बरदाश्त नहीं करेगा । (व्यवधान) सभापति महोदय, आपने समय दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री सभापतिः आप बिराजिए, श्री हीरालालजी रैगर, पांच मिनट में अपनी बात कह दीजिए ।

राज्य में अकाल एवं बिजली की स्थिति पर चर्चा

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): 4 बोलेंगे, 5-5 मिनट सब को, चार बोलेंगे ।

श्री हीरालाल (निवाई): हां, दो-दो मिनट ही बहुत हैं, गुण करेंगे तो, यही बहुत हैं ।

सभापति महोदय, आज अकाल और विद्युत पर सदन में चर्चा हो रही है, इस चर्चा में मैं भी अपने आपको शामिल करता हूं । हमारी सरकार आने पर माननीय वसुंधराजी राजे ने जब राजस्थान की बागडोर सम्भाली जो विद्युत की स्थिति गांवों में इस तरह की थी कि चूंकि मैं गांव के परिवेश से आया हूं, रात को किसान इस तरह जगता था जिस तरह कोई चोर आ जाए, अपने पाणत के लिए अपने ओसरे के लिए इस तरह जगना पड़ता था और कई दफा झगड़े टंटे मुकदमे यहां तक मर्डर हो जाया करते थे। लेकिन माननीय मुख्य मंत्री ने सभी विधायकों को जब नये जीत कर आए उन्होंने बताया कि आप अपनी समस्या बता दें तो मैंने अपनी पहली समस्या यह बताई, माननीय

(श्री हीरालाल)

मुख्य मंत्रीजी कि रात को किसान जगता है और इस कड़ी सर्दी में लोग अपना हीटर लगा कर रज़ाई में सोते रहते हैं। अब उस किसान की कैसी स्थिति होगी जो अपने पानी के ओसरे के लिए अपनी फसल को पानी पाणे के लिए रात भर जगना पड़ता है। और सरकार में आते ही माननीय वसुंधराजी ने रात के बजाय प्रातः उस बिजली को और शाम को कर दिया । सबसे बड़ा ऊर्जा मंत्री जी राज्य मंत्रीजी को और मुख्य मंत्रीजी को धन्यवाद देना चाहूंगा । सबसे महत्वपूर्ण बात है कि राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी की सरकार आने के बाद बिजली के लिए किसी प्रकार का कोई आंदोलन नहीं हुआ ।

(समय : 18.00 बजे)

इस सरकार का महत्वपूर्ण एचिवमेंट है कि कोई आंदोलन बिजली के लिए नहीं हुआ ।

श्री अमराराम (धोद): आप 8 दिन का पड़ाव भूल गये ।

श्री हीरालाल (निवाई): कौनसा?

श्री अमराराम (धोद): 8 दिन तक वहां उतना बड़ा प्रदर्शन कभी नहीं हुआ ।

श्री हीरालाल (निवाई): पिछली सरकार में तो +++ मोलासर में जूते-चप्पल छोड़कर भाग गये और हेमकार कलक्टर थे जो बेहोश हो गये । पीछे-पीछे जनता और आगे-आगे +++ यह आपका प्रबंधन था और हमारा प्रबंधन देखिए, कोई आंदोलन नहीं हुआ । अब आप तो कम्युनिस्ट हो, आपका काम सरकार की बुराई करना है ।

माननीय सभापति महोदय, मैं ऊर्जा मंत्रीजी से निवेदन करना चाहता हूं, मैं आलोचना-समालोचना की बहस में नहीं जाऊंगा ।

श्री सभापति: आप अपनी जो मांग है वे फटाफट सुझाव दे दो ।

श्री हीरालाल (निवाई): मैं सभापतिजी, यही कर रहा हूं । इसलिए मैंने पहले यह कहा है, मैं ऊर्जा राज्य मंत्री महोदय से निवेदन करूंगा कि सबसे पहले एससी, एसटी की बस्तियों में जो विद्युतीकरण से रह गई उन गांवों को जोड़ दिया जाए। मैंने अपने विधायक मद से मेरे विधान सभा क्षेत्र में महताबपुरा गांव है सिरस पंचायत में जहां मैंने 4 लाख बिजली के लिए दिया था, लेकिन आपके विभाग ने वह पैसा मुझे वापस भिजवा दिया, वापस दे दिया। इसलिए कोई ऐसे गांव भी रह गये, कृपया आप उसको रिएग्जामिन करके ऐसे गांव जो रह गये हैं, उनको राजीव गांधी मिशन के तहत एससी,

(श्री हीरालाल)

एसटी की बस्तियों को इलेक्ट्रिफाई करें, वे रहने नहीं चाहिए, सबसे महत्वपूर्ण बात मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा ।

मेरे विधान सभा क्षेत्र में सबसे ज्यादा विद्युत चोरी, तार चोरी, तेल की चोरी और ट्रांसफार्मर की चोरी होती है । मैंने पहले भी एक प्रश्न और 295 के जरिये सरकार का ध्यान आकर्षित किया । मेरा मंत्री महोदय से निवेदन है कि जो तार चोरी और ट्रांसफार्मर चोरी है इसके लिए कारगर कदम उठाये जाएं क्योंकि चोरी होने के बाद ग्रामीण और कृषक एक हफ्ते तक ट्रांसफार्मर नहीं लगेगा तो उनको उसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा । इसलिए आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा इसमें भी कोई कारगर कदम उठाये जाएं। सबसे महत्वपूर्ण बात है कि हमारी सरकार आने के बाद बिजली की कमी होते हुए भी बिजली खरीदकर आम जनता को और कृषकों को दी गई है यह सबसे महत्वपूर्ण बात है और यह हमारी सरकार का एचिवमेंट है । कटौतियां सब जगह होती हैं, हरियाणा में भी हो रही है, यूपी में भी हो रही है, दिल्ली में भी हो रही है उसकी अपेक्षा राजस्थान में कम हो रही है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बिजली खरीदकर देना यह सबसे बड़ी बात है जब कि बिजली की कमी है ।

दूसरा, अकाल पर भी मैं चर्चा करना चाहूंगा। मेरे विधान सभा क्षेत्र में पानी की कमी है। रबी और खरीफ की दोनों फसलें नहीं हुईं। ओलावृष्टि, अतिवृष्टि, पाला जो सीआरएफ के मानदण्ड में नहीं आता है, चूंकि यह केन्द्र सरकार से संबंधित है इसके लिए गवर्नर साहब को हम लोगों ने मेमोरेंडम भी दिया था, इसको नहीं होते हुए भी भारत सरकार ने नहीं माना फिर भी हमारे लोकप्रिय मुख्य मंत्रीजी ने राजस्थान में जो सरसों की फसल पर पाला पड़ा 126 करोड़ की राहत दी और 12 जिलों में इसका सर्वे कराकर उनको राहत दिलाने और फायदा पहुंचाने का काम किया है ।

मैं एक बात और कहना चाहूंगा कि हमारे जिले में इस बार तो वर्षा कम हुई है। जिन्होंने फसल बो दी, जिनके कुओं में पानी है उन्होंने तो फसल बो दी, उनको फायदा मिलेगा, लेकिन ऐसी बारानी भूमि है जहां न तो रबी की फसल हुई है और न खरीफ की फसल हुई है। सभापति महोदय, आपके माध्यम से सरकार से मांग करना चाहूंगा ऐसे लोगों का सर्वे कराकर उनको भी राहत दी जाए उन सब के क्षेत्र में खेत के खेत खाली पड़े हैं ।

साथ ही यह अकाल है और पानी की कमी है। मेरे क्षेत्र में किसी प्रकार के सिंचाई के साधन नहीं है इसलिए ज्यादा से ज्यादा एनिकट बनवाये

(श्री हीरालाल)

जाएं जिससे कृषकों को लाभ मिले, क्योंकि नहर नहीं है । मैं मांग करना चाहूंगा बीसलपुर का पानी जो ओवरफ्लो का आता है, गत बार इतनी बरसात हुई बीसलपुर बांध के 16 गेट खोलने पड़े । मेरा सभापति महोदय, आपके माध्यम से सरकार से निवेदन है कि जो ओवरफ्लो का पानी है वह टोरडी सागर में डाला जाएगा तो पूरी पीपलू, निवाई और मालपुरा को इससे राहत मिलेगी । साथ ही ..(व्यवधान)

श्री सभापति: समाप्त कीजिए अब ।

श्री हीरालाल (निवाई): 1889 में टोरडी बांध बना था। जो कमाण्ड एरिया था आज उसकी यह स्थिति हो गई कि नान-कमाण्ड हो गया इसलिए मैं पुरजोर शब्दों में आपसे मांग करूंगा सरकार से कि जो बीसलपुर का ओवरफ्लो का पानी है वह टोरडी सागर में डाला जाए और वहां से डेम में डाला जाए । आपने मुझे समय दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद, जय हिन्द ।

श्री सभापति: माननीय सदस्य कन्हैया लालजी मीणा । 5 मिनट ।

श्री कन्हैया लाल मीणा (बस्सी): माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से कुछ सुझाव देना चाहूंगा। मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा कि जो डिमाण्ड नोटिस का 60 दिन का समय निकल जाता है, कई गरीब आदमी उस समय सीमा में पैसे जमा नहीं करा सकते। मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि समय सीमा को या तो समाप्त करें या ऐसे गरीब आदमियों की समय सीमा को तय कर दीजिए, बढ़ा दीजिए, नहीं तो वह चोरी करता है और चोरी करके वह अपना काम चलाता है। इसलिए वह चोरी रुके इसके लिए मैं चाहूंगा डिमाण्ड नोटिस की समयसीमा है उसको खतम किया जाए । साथ ही मैं निवेदन करना चाहूंगा जो कृषि कनेक्शन होता है वह किसान डीपी से कनेक्शन होकर उससे 100 मीटर दूरी से कनेक्शन कर लेता है, 10 मीटर से ऊपर है, 10 मीटर तक अलाऊ है उसको चोरी के अंदर माना जाता है और चोरी के अंदर मानने से वह शिफ्टिंग कराता है तो दो साल बाद में शिफ्ट होते हैं । अगर दो साल बाद में आप शिफ्ट करोगे तो भी वह चोरी करेगा, हर तरह से चोरी करेगा । मैं निवेदन करता हूं इस दो साल की समय सीमा को समाप्त किया जाए जिससे वह काश्तकार अपना कनेक्शन समय पर ले सके । इससे बोर्ड को भी फायदा होगा ।

दूसरा मैं निवेदन करना चाहूंगा कटे हुए कनेक्शन की आपने 15 वर्ष की समय सीमा तय की है। राजस्थान में मुश्किल से तीन हजार ऐसे कनेक्शन

(श्री कन्हैया लाल मीणा)

होंगे, मैं कहता हूं 15 वर्ष से ज्यादा का भी कनेक्शन है, अगर जिनके कनेक्शन नहीं है और उनके खेती हो रही है तो यह मानकर चलो कि चोरी हो रही है। मैं निवेदन करना चाहूंगा ऐसे कनेक्शनों को एक बार दो महीने की आप छूट दे दो कि जितने भी कनेक्शन कटे हुए हैं चाहे 20 वर्ष हो गये या 25 वर्ष हो गये तो एक बार वे जुड़वा लें, यह ठीक रहेगा, यह मेरा सुझाव है ।

दूसरा मैं निवेदन करना चाहूंगा किसान के द्वारा उसके आलरेडी कनेक्शन है वह दूसरी जगह जमीन खरीद लेता है और उस जमीन के अंदर पानी है और पानी होने की वजह से उसने तय कर रखा है जब तक उसमें दो साल पूरे नहीं होंगे तो जिस किसान ने जो जमीन खरीदी है उसमें वह कनेक्शन नहीं ले सकता । यह प्रतिबंध समाप्त होना चाहिए । किसान जब वहां पानी ले रहा है, उस जगह पानी है तो मैं निवेदन करना चाहूंगा कि यह भी समाप्त होना चाहिए, किसान को छूट होनी चाहिए कि वह कनेक्शन ले सकता है ।

राजीव गांधी विद्युत योजना सारी जगह लागू कर दी, लेकिन जयपुर जिले में अभी तक लागू नहीं की गई है । मैं निवेदन करना चाहूंगा इसको लेने से काश्तश्कार जो ढाणी में रहता है वह कनेक्शन ले सकता है नहीं तो कनेक्शन नहीं ले सकता । इसलिए मैं निवेदन करना चाहूंगा जयपुर जिले में इसको चालू किया जाए ।

मैं निवेदन करता हूं कि आपने मुख्य मंत्री सब के लिए विद्युत कनेक्शन में तय किया जो ढाणियां 500 मीटर से ज्यादा दूर हैं और एक किलोमीटर है उसमें आपने तय किया कि 10 कनेक्शन होंगे तब ही उनको कनेक्शन मिलेंगे। मैं निवेदन करना चाहूंगा किसानों की ढाणियों में मुश्किल से दो कनेक्शन, तीन कनेक्शन होते हैं । 10 कनेक्शन एक साथ कभी भी उनकी ढाणी में नहीं मिलेंगे । इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूं कि 10 कनेक्शन की जो समय सीमा तय की है उसे समाप्त किया जाए जिससे वह काश्तश्कार अपनी ढाणी में कनेक्शन ले सके ।

साथ ही मैं निवेदन करना चाहूंगा कि आज लगभग 10 लाख किसान मंदिर माफी में हैं । वे कनेक्शन शिफ्टिंग करना चाहें तो मंदिर माफी में नहीं ले पाता है । उसकी प्रायरटी में कनेक्शन का नम्बर आ गया तो वह मंदिर माफी के कनेक्शन नहीं ले सकते । वह कब्जा आज छोड़े न कल छोड़े, पीढ़ियों से उसके पास कब्जा है। मैं निवेदन करना चाहूंगा जो मंदिर माफी के

(श्री कन्हैया लाल मीणा)

काश्तकार हैं उन काश्तकारों को कनेक्शन दिये जाने का आदेश करें जिससे कनेक्शन मिल सकें और वे कनेक्शन शिफ्टिंग भी करा सकें, ऐसा आदेश मैं मंत्री महोदय से चाहूंगा ।

साथ ही मैं निवेदन करना चाहूंगा कि वर्तमान में जो 11 हजार की लाइनें हैं इतनी पुरानी हो चुकी हैं कि जब चाहे तब तार टूट जाते हैं । अभी मेरे क्षेत्र में तीन भैंसें एक साथ खतम हो गईं । जो दूसरे लोग हैं अगर नहीं आये होते तो पता नहीं उस रास्ते में कितने लोग खतम हो सकते थे । मैं निवेदन करना चाहूंगा जो ढीले तार हैं उनको सही कराया जाए ।

साथ ही मैं निवेदन करना चाहूंगा सिंगल फेस के कनेक्शन लोगों ने ढाणियों में आज से 20 साल पहले या 10 साल पहले ले रखे हैं, लेकिन उनको सिंगल फेस की डीपी इसलिए नहीं दे रहे हैं कि आपके एक या दो कनेक्शन हैं। जब पुराने टाइम से उन्होंने कनेक्शन ले रखे हैं तो उनको सिंगल फेस की डी.पी. दिया जाना अनिवार्य है। ऐसे लाखों किसान हैं राजस्थान में । मैं निवेदन करना चाहूंगा कि उन किसानों को भी और उनके बच्चों को भी कम से कम 24 घंटे लाइट मिल सके, इसलिए सिंगल फेस डी.पी. दिये जाने के आदेश करें मंत्री महोदय, ऐसा मैं निवेदन करना चाहूंगा ।

श्री सभापति: अब एक मिनट में समाप्त कीजिये ।

श्री कन्हैया लाल मीणा (बस्सी): साथ ही मैं निवेदन करना चाहूंगा कि सूखे कुए 10 मीटर की जो दूरी है, यह सूखे कुओं के अन्दर 10 मीटर की दूरी के जो कनेक्शन हैं, उसमें दूसरा शिफ्ट नहीं करके, 10 मीटर के अन्दर एक ही खसरा नम्बर में, जो कुए का खसरा नम्बर है, उसी खसरा नम्बर का, दूसरी जगह ट्यूबवैल तो होता नहीं है। मैं निवेदन करना चाहूंगा कि इसको 100 मीटर की परिधि बनाया जाये। और साथ ही मैं निवेदन करना चाहूंगा, ऐसे जो शिफ्टिंग के कनेक्शन हैं, उनकी सीमा 10 मीटर से ज्यादा बढ़ाई जाये और खसरा नम्बर को चेंज किया जाये, दूसरा खसरा नम्बर दो क्योंकि कुए का तो एक ही खसरा नम्बर होता है ।

साथ ही मैं निवेदन करना चाहूंगा कि ट्रांसफार्मर जलने वाली बात के बारे में धोद से आने वाले माननीय सदस्य ने कहा है, बिलकुल सही बात है, बिलकुल जलने से 72 घंटे माना जाना चाहिए जिससे उनको डी.पी. मिले ।

(श्री कन्हैया लाल मीणा)

डी.पी. की चोरी के मामले में कहना चाहूंगा कि सिंगल फेस डी.पी. होती है, वह आये दिन चोरी हो रही है । उसका कारण यह है कि आपके ठेकेदार जो काम करते हैं, वह चलाकर ढाणी में या गांव में नहीं रखकर उसको ऐसी जगह रखते हैं जिससे रात के समय में चोरी करते हैं और मुझे तो यह डाउट है कि वह आपके ठेकेदार के आदमी भी चोरी करके ले जाते हैं ।

साथ ही मैं निवेदन करना चाहूंगा, दो किसानों के जब कनेक्शन हैं और आपने एक डी.पी. दे रखी है, उसके बावजूद भी किसानों से 630 रुपये प्रतिमाह उन डी.पी. के चार्जेज ले रहे हैं । मैं कहता हूं कि यह ठीक नहीं है ।

श्री सभापति: कृपया समाप्त करिये ।

श्री कन्हैया लाल मीणा (बस्सी): बस एक मिनट में खतम कर रहा हूं। 630 रुपये प्रति काश्तकार से लिये जा रहे हैं, मैं कहता हूं मंत्री महोदय, वह 630 रुपये डी.पी. के उस किसान से नहीं लिया जाना चाहिए ।

साथ ही मैं यह निवेदन करना चाहूंगा मीटर जलने के बारे में, जब मीटर के वैल्डिंग है, मीटर के ताला लगा हुआ है, मीटर के लोक लगा हुआ है, सील लगी हुई है, उसके बावजूद भी मीटर जलने पर 625 रुपये उस किसान से वसूल किये जाते हैं । मैं निवेदन करना चाहूंगा कि ऐसा किसानों के साथ नहीं होना चाहिए ।

दूसरा, मैं निवेदन करना चाहूंगा कि डी.पी. खराब होने पर जो किसान हैं, एक डी.पी. खराब हो गई, खराब होने पर वह डी.पी. जमा करा देता है, जो उसमें यूनिट आती है, उसका पैसा वह किसान देता है, लेकिन मुझे दु:ख है कि वही डी.पी. जब दूसरे किसी किसान को देते हैं तो उसमें जो यूनिट होती है, वह भी उसके बिल में जोड़कर उससे चार्ज किया जाता है, ऐसा नहीं होना चाहिए । उसको जीरो पर करके वापस देना चाहिए ।

साथ ही मैं यह निवेदन करना चाहूंगा, मेरे क्षेत्र के कानोता एरिया में जितने भी किसान हैं, वे आमेर-कुंडा जाते हैं जिनको करीब 23 किलोमीटर दूर जाना पड़ता है । मैं मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहूंगा ए.ईएन. के लिए, मैंने गत बार भी आपसे निवेदन किया था और इसमें लगभग कार्यवाही पूरी हो गई है, जब तक कानोता में ए.ईएन. आफिस नहीं होगा, काश्तकार को डी.पी. लेने में भी 5-5, 6-6 दिन लग जाते हैं । मैं चाहता हूं कि एक ए.ईएन. का आफिस आप दें तो मैं आपका बहुत-बहुत आभारी रहूंगा ।

(श्री कन्हैया लाल मीणा)

साथ ही मैं निवेदन करना चाहूंगा, जो मंदिर और स्कूल हैं, उनके ऊपर कहीं 11,000 के.वी. की लाइन जा रही है तो आप निःशुल्क आधार पर उनको हटायें ।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, अब आप समाप्त करें ।

श्री कन्हैया लाल मीणा (बस्सी): माननीय सभापति महोदय, आपने समय दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री सभापति: सभी प्रमुख-प्रमुख सुझाव और मुख्य बातें आ चुकी हैं । अगर सदन की सहमति हो तो अब मंत्रीजी का उत्तर कराया जाये ।

श्री केसर देव बाबर (लक्ष्मणगढ़): सभापतिजी, सभापतिजी, दो मिनट, दो मिनट दीजिये सभापतिजी ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): 10 मिनट में अपनी बात कह देंगे, एक-एक आदमी बोल लें दोनों तरफ से ।

श्री सभापति: नहीं नहीं माननीय सदस्य ।

श्री केसर देव बाबर (लक्ष्मणगढ़): सभापतिजी, दो मिनट का समय दीजिये ।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): लगता है, सदन की सहमति नहीं है। माननीय सभापति महोदय, आपका चश्मा गिर रहा है, शकुन सही नहीं हो रहा है । दो मिनट हमको बोलने दीजिये । दो-दो मिनट बोलने दो।

श्री सभापति: इधर से चार बोलेंगे, उधर से चार बोलेंगे ।

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (सरकारी उप मुख्य सचेतक): माननीय सभापति महोदय, बहुत आपने लगातार बुला लिये थे । जब रिप्लाई करवाना हो तो करवाइये, नहीं तो फिर सभी बोलेंगे ।

श्री सभापति: सवाल इस बात का नहीं है इधर से या उधर से । अब आप तय कर लीजिये कि चर्चा को और आगे चलाना चाहते हैं ।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): सभापति महोदय, केवल दो मिनट का समय, केवल दो मिनट ।

श्री सभापति: ये सब बातें तो आ गईं ।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): राजीव गांधी ने कहा था कि लाल मिर्च बोनी चाहिए, वह हरी मिर्च से होती है, लाल मिर्च होती है ।

श्री सभापति: आप बिराजिये बिराजिये ।

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): सभापति महोदय, दो मिनट, मैंने सुबह से ही पर्ची दी हुई है ।

श्री सभापति: आप देख लें, जैसा चाहते हैं, मुझे क्या दिक्कत है ।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): सभापति महोदय, राजीव गांधी ने अपने भाषण में कहा था कि किसानों को लाल मिर्च बोना चाहिए तो वह हरी मिर्च से होती है । हमारी किसानों के बारे में पीड़ा है ।

श्री सभापति: नहीं तो फिर पांच माननीय सदस्य हैं । पांच-पांच मिनट में आप अपनी बात कहिये । आप बैठिये । मैं सीरियल से बोलूंगा फिर। श्री संयम लोढ़ा ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): माननीय सभापति महोदय, 2003 को अगर याद करें तो जिन घोषणाओं और वायदों के आधार पर राजस्थान की जनता से यह पहली बार स्पष्ट बहुमत का जनादेश लिया था । इन साढ़े चार साल में अगर यह सरकार किसी मोर्चे पर सबसे ज्यादा विफल रही है तो वह बिजली का मोर्चा है । आज भी अगर नजर दौड़ाकर हम खुली आंखों से देखने की कोशिश करें तो दिन में कटौती चल रही है । सी.बी.एस.ई. की परीक्षाएं हो रही हैं । बच्चे हाल में बैठते हैं और उस समय अंधेरा होता है । जब आपकी मार्च में यह हालत है तो मई-जून में क्या होगा?

माननीय सभापति महोदय, चार साल तो इन्होंने सोचा नहीं और जब चुनाव का खटका हुआ तो मुख्य मंत्रीजी ने धड़ाधड़ उद्घाटन करना शुरू किया और भाषण में जुमले कि यह केन्द्र सरकार हमें सहयोग नहीं कर रही है, हमारे हक की उपेक्षा कर रही है। जब कि सभापति महोदय, मैं निवेदन करना चाहूंगा कि साढ़े 19 प्रतिशत अन-आबंटित कोटा केन्द्र से मिल रहा है और आज तक कभी भी 20 प्रतिशत से ज्यादा मिला नहीं है । मुख्य मंत्रीजी का अगर भाषण या बजट भाषण सुन लें, जो घोषणाएं की हैं, उनमें जुमले हैं, जैसे 2009 में यह कर देंगे, 2011 तक कर देंगे, 2012 तक कर देंगे। पर जब राजस्थान की जनता से वोट मांगे थे तब आपको मालूम नहीं था कि सालाना खपत राजस्थान में 300 मेगावाट की है और आपकी सरकार में पांच साल में 1,500 मेगावाट की डिमांड बढ़ जायेगी । क्या आपने 1,500 मेगावाट जनरेशन का काम किया? आज क्यों फोड़े पड़ रहे हैं? क्यों किसान को आज इतनी बिजली नहीं मिल रही है?

(श्री संयम लोढ़ा)

मैं मेरे सिरोही जिले का ही उदाहरण दूं । 25 फुट पर पानी पड़ा हुआ है, 20 घंटे कुए चलने की स्थिति में है, यह सरकार छह घंटे भी बिजली देने की स्थिति के अन्दर कभी भी नहीं हो सकी सभापति महोदय और क्या राजस्थान में स्थिति आपने बनाई? हमारे समय में सेंक्शन हुई थी गिराल की। भेल ने यह कहा था कि हम यह काम नहीं कर पायेंगे, आज क्या स्थिति है? 650 करोड़ रुपये राजस्थान की जनता के आपने डूबो दिये । धौलपुर का क्रेडिट लेने की बात करते हैं। धौलपुर में पहला नेफ्था बेस प्लान था । गोयनका साहब को उस समय भैरोंसिंहजी की जमीन अलाट हो गई थी चार करोड़ रुपये में । बाद में जब उन्होंने कहा कि हम उसको नहीं कर पायेंगे, वह सरकार ने चार करोड़ रुपये उनको वापस दिये और तत्कालीन कांग्रेस सरकार के समय में हमारे वित्त मंत्रीजी उस समय के, बिराजमान हैं अभी जो उसी जिले से आते हैं । यह फैसला हुआ कि गैस के आधार पर इस योजना का निर्माण किया जायेगा । कांग्रेस शासन के वक्त एम.ओ.यू. साइन हो गये थे, सिविल वर्क शुरू हो गया था । बाद में आपने ग्लोबल टेण्डर के लिए किया और आपकी वजह से यह धौलपुर की योजना भी डेढ़-दो साल डिले हुई, यह सरकार जिम्मेदार है उसके लिए और अब आपका रावतभाटा का प्रोडक्शन आने वाला है । मैं राजस्थान की जनता की ओर से माननीय मंत्रीजी, आपसे जानना चाहता हूं कि आपने 2004 में प्रोडक्शन किया था, तब आपका जो जनरेशन आया था फोर्थ यूनिट में, राजस्थान का हक तत्कालीन एन.डी.ए. सरकार के दबाव में आपने मध्य प्रदेश को दे दिया । अब जो जनरेशन आने वाला है, कम से कम उसमें तो कृपा करके राजस्थान के साथ में ऐसा मत करना और पवन ऊर्जा, 2001 में कांग्रेस के वक्त में उसकी शुरुआत हुई । 2003 में कांग्रेस विंड एनर्जी की पालिसी असेम्बली में लाई और कांग्रेस की सरकार के वक्त में 200 मेगावाट उत्पादन इसके अन्दर हुआ और जो प्रोजेक्ट आये, उसके बाद में आपके समय में भी इसमें उत्पादन हुआ। लेकिन यह जो भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का प्रतिवेदन अभी मार्च महीने में जो सदन में प्रस्तुत हुआ है यह, राजस्थान की क्या स्थिति है, इसके बारे में क्या कहते हैं? माननीय सभापति महोदय, देश के अन्दर विंड एनर्जी का प्रोडक्शन हो रहा है 7,111 मेगावाट और इसमें राजस्थान का कंट्रीब्यूशन है, 464.64 मेगावाट, देश में तमिलनाडु कंट्रीब्यूशन कर रहा है 48.61 प्रतिशत, महाराष्ट्र कंट्रीब्यूशन कर रहा है 20.88 प्रतिशत, कर्नाटक कंट्रीब्यूट कर रहा है 11.93 प्रतिशत और

(श्री संयम लोढ़ा)

हम अटके हुए हैं 6.5 प्रतिशत पर और इसमें भी आपकी कम्पनियों का कंट्रीब्यूशन क्या है, राजस्थान अक्षय ऊर्जा लिमिटेड का, मात्र 41.55 मेगावाट, जो स्टेट के कंट्रीब्यूशन का ही 8.94 प्रतिशत है, और देश की उपलब्धि का 0.5 प्रतिशत है। यह परिस्थिति है और इसमें भी आपकी नीयत साफ नहीं रही है । 2003 की पालिसी को पहले आपने स्टे किया, और बाद में किस खेल के आधार पर वापिस आपने कंटीन्यू किया, वह भी आपको मालूम है ।

माननीय सभापति महोदय, यह सरकार बनी, क्या कहा था उस वक्त, यह कांग्रेस तो किसानों की दुश्मन है, इसके राज में तो बिजली के बिलों में करंट आता है । आपने करंट बंद कर दिया? सरकार बनते ही पहले कन्ज्यूमर घरेलू बढ़ोत्तरी, घरेलू बिजली का मामला लें, पावर टैक्स का मामला लें, पन्द्रह पैसे प्रति यूनिट आपने पावर टैक्स बढ़ाया और राजस्थान की जनता के ऊपर पांच साल के लिए 900 करोड़ रुपये का बर्डन डाल दिया। स्थायी सेवा शुल्क आपने बढ़ाया, और जो घरेलू बिजली की दर बढ़ाई उससे राजस्थान की जनता से कितना ज्यादा पैसा वसूला है, मैं माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं । जयपुर डिस्काम ने आपने जो डोमेस्टिक बिजली की रेट बढ़ाई उससे इन चार साल में, जयपुर डिस्काम ने 364.70 करोड़ रुपये ज्यादा वसूल किये हैं । अजमेर डिस्काम ने 291.64 करोड़ रुपये ज्यादा वसूल किये हैं और जोधपुर डिस्काम ने 384.39 करोड़ रुपये ज्यादा वसूल किये हैं । मतलब राज्य के घरेलू उपभोक्ताओं से जहां चुनाव घोषणा पत्र के अंदर तर्कसंगत दरों का वादा करके जो सरकार सत्ता में आई थी उसने 1037.73 करोड़ रुपये डोमेस्टिक कंज्यूमर से तत्कालीन कांग्रेस सरकार की तुलना में ज्यादा वसूलने का काम किया है और इसका नतीजा क्या हुआ । आम उपभोक्ता की जेब से सालाना ढाई हजार रुपये, तीन हजार रुपये, पांच हजार रुपये ज्यादा काटने का काम इस सरकार ने किया है। और इतना ही नहीं, माननीय सभापति महोदय, एफआरपी के माध्यम से राज्य के हजारों किसानों के खेतों के ऊपर जो बिजली के कनेक्शन लगे हुए थे, घर के कनेक्शन लगे हुए थे, जो पांच सौ मीटर से ज्यादा डिस्टेंस के थे, हजारों कनेक्शन इस सरकार ने किसानों के घर से काटने का काम किया है । मैं निवेदन करना चाहता हूं आपको, अजमेर डिस्काम ने 1 लाख 69 हजार 435 कनेक्शन काटे हैं घर के । जयपुर डिस्काम ने 1 लाख 55 हजार 372 कनेक्शन इन चार सालों में काटे हैं । जोधपुर डिस्काम ने 2 लाख 39 हजार 387 कनेक्शन काटे

(श्री संयम लोढ़ा)

हैं । पूरे राजस्थान में सरकार की इस जनविरोधी नीति की वजह से, किसान विरोधी नीति की वजह से 6 लाख 4 हजार 194 घरेलू बिजली कनेक्शन, माननीय सभापति महोदय, काटे गये हैं। और मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं माननीय सभापति महोदय, इसी सदन के अंदर आपको याद होगा, जब तत्कालीन कानून मंत्री घनश्यामजी तिवाड़ी ने इसी सदन में जवाब दिया था कि हमारी सरकार किसानों के बिजली कनेक्शनों की ऐसी नीति लेकर आयेगी कि जितने कनेक्शन पेण्डिंग पड़े हुए हैं आने वाले तीन साल के अंदर हम सारे कनेक्शन देंगे, और राज्य के अंदर यह स्थिति लाकर के पैदा करेंगे कि आओ और पाओ । कर दिये आपने कनेक्शन? कर दिये आपने सारे पेण्डिंग कनेक्शन क्लियर? कांग्रेस की सरकार के वक्त 2003 में 1 लाख 5 हजार कृषि कनेक्शन लम्बित थे, आज वही आंकड़ा पहुंच कर डेढ़ लाख से पार चला गया, पौने दो लाख तक पहुंच गया माननीय सभापति महोदय । राजस्थान के किसानों के साथ चार साल में इस सरकार ने धोखा करने के अलावा कोई काम, माननीय सभापति महोदय, नहीं किया। और एफआरपी, पूरा पैसा भारत सरकार का है, लेकिन मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं माननीय सभापति महोदय, कि आप जो यह नई लाइनें बिछा रहे हो, पुरानी लाइनें कहां हैं, पुराना मेटेरियल कहां है, पूरे राज्य के अंदर, माननीय सभापति महोदय, डेढ़ हजार करोड़ रुपये का घपला इसके अंदर हुआ है । सारा पुराना मेटेरियल दूसरे फैक्टरीज में, एल्यूमिनियम फैक्टरीज के अंदर जाकर बिक रहा है और उसका कोई रिकार्ड नहीं है । और एफआरपी की जो आपकी कम्पनियां काम कर रही हैं, क्या आपने चैकिंग की व्यवस्था कर रखी है । उसके गोदाम के अंदर माल पहुंच जाता है कम्पनी के और आप पेमेंट कर देते हो और उस पर कोई चैक नहीं कि वह माल आया है, कहां पर गया, किसका कोई मतलब नहीं । माल पहुंचा उसके गोदाम में और पेमेंट हो गया । और क्या यह आपकी जानकारी में नहीं है कि पूरे राज्य के अंदर सारा काम सबलेट के आधार पर हो रहा है । एक-एक काम सबलेट के आधार पर हो रहा है ।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, कृपया कनक्लूड करें ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): कर रहा हूं माननीय । तो फिर कितना मुनाफा है उसके अंदर? तीन-तीन लोग अगर सबलेट के आधार पर काम कर रहे हैं तो हम यह समझ सकते हैं कि यह किस आधार पर काम हो रहा है। और माननीय सभापति महोदय, यह बिजली खरीदने के लिए आपने शार्ट टर्म

(श्री संयम लोढ़ा)

लोन लिया, लोंग टर्म लोन लिया, महंगी आपने बिजली खरीदी तो यह भार किसके ऊपर पड़ा और यह सब क्यों करना पड़ा? यह सब इसलिए करना पड़ा कि आपने जनरेशन का काम नहीं किया। और यह कोई नई बात नहीं है, हर सरकार के जाने के बाद नई सरकार जब भी आती है तो डिमांड बढ़ती है क्योंकि राज्य के अंदर पहले 250 मेगावाट की सालाना डिमांड बढ़ती थी, आज तीन सौ मेगावाट की डिमांड बढ़ती है। भैरोंसिंहजी जब चीफ मिनिस्टर थे, डिमांड साढ़े पांच सौ करोड़ की थी । कांग्रेस सरकार थी, सात सौ लाख की डिमांड हो गई । आज वही डिमांड बढ़कर 825 लाख यूनिट की हो गई । तो यह जो आपूर्ति करने का आप बता रहे हैं कि हमने ज्यादा बिजली आपूर्ति की, यह आपकी कोई उपलब्धि नहीं है । आपने जनरेशन कितना किया, वह आप बतायें । आठ रुपये बिजली आप दूसरे से खरीद करके राजस्थान के कंज्यूमर को दे रहे हैं अगर, तो वह बिजली का पैसा राजस्थान की गरीब जनता की जेब से जा रहा है। और जो आज स्थिति आपकी बनी हुई है, तार लूज पड़े हुए हैं और यह लोसेज और टी एण्ड डी लोसेज, जिनके बारे में अभी आप बात करते हैं, मैं एक मिनट में आपको निवेदन करना चाहता हूं कि आपके महालेखाकार ने इसी महीने जो रिपोर्ट पेश की है उसमें क्या कहा है । कैश लोसेज की आपकी क्या स्थिति है । जयपुर डिस्काम में 2002-03 में जो 39.24 प्रतिशत था वह 2005-06 में बढ़कर 40.94 हो गया । जोधपुर में 40.95 था जो 2005-06 में बढ़कर 44.80 हो गया । अजमेर में 39.10 था जो 2005-06 में बढ़कर 45.45 हो गया और इतना ही नहीं, माननीय सभापति महोदय, महालेखाकार ने अपनी रिपोर्ट में इंगित भी किया है कि यह टी एण्ड डी लोसेज के लिए जिन वृत्त का चयन करना था, जो इसमें लोसेज 30 से 60 प्रतिशत थे, लेकिन इन्होंने अपनी प्रोग्रेस ज्यादा दिखाने के लिए उन वृत्त का चयन किया तीनों ही जगह पर जिनके लोसेज 23 प्रतिशत से कम थे। और मैं आपको झालावाड़ का उदाहरण देना चाहता हूं, आप बड़ा सर्टिफिकेट लेने की चेष्टा करते रहे, आपकी मुख्य मंत्री बड़ी अपनी उपलब्धियों को लेकर खुद अपने आपको रोमांचित महसूस करती रही। लेकिन यह भारत के महालेखाकार की रिपोर्ट यह कह रही है कि टी एण्ड डी हानि जो है, झालावाड़ में 2001-02 में जो 58.27 प्रतिशत थी वह 2005-06 में बढ़कर 60.19, माननीय सभापति महोदय, हो गई है । अब मैं निवेदन, एक मामला मेरे विधान सभा क्षेत्र का भी, दो मामले मैं कहना चाहूंगा ।

श्री सभापति: नहीं, अब आप कृपया समाप्त करें ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): एक मिनट आप कृपा करें माननीय उप सभापति महोदय ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): बड़ा महत्वपूर्ण विषय है सभापति महोदय, आप सरकार से जवाब दिलवाने के लिए इतने उतावले क्यों हैं आज आप?

श्री सभापति: नहीं, उतावले तो और भी मेम्बर हैं बोलने के लिए ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): नहीं तो बोलते हैं, रात के दस-ग्यारह बजे तक चलती है डिबेट ।

श्री सभापति: समय जो आपके सचेतक ने दिया है, मैं उस समय से पाबंद हूं ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): अच्छी बात है साहब, जैसा आप कहें, हमें तो आपकी आज्ञा शिरोधार्य है श्रीमान् ।

श्री सभापति: कन्क्लूड करें, प्लीज कनक्लूड ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): मैं समाप्त कर रहा हूं । माननीय सभापति महोदय, बड़ा यह कहते हैं कि हमने नये जीएसएस बनाने का काम किया । मैं निवेदन करना चाहता हूं कि मेरे विधान सभा क्षेत्र में बराड़ा के जीएसएस की हमने सेंक्शन कर दी थी 2002 के अंदर, यह कम्पलीट काम आपके वक्त में शुरू हुआ । कृष्णगंज की लाइन हमने सेंक्शन कर दी थी, 2002 के अंदर उसकी बाउंड्री वगैरह सब बनवा दी थी, आपके वक्त में कौन सा मेरे विधान सभा क्षेत्र में एक जीएसएस आपने बनाया है। कालन्दरी की मांग है, अरठवाड़ा की मांग है 132 केवी जीएसएस की, 33 केवी जीएसएस की मोहब्बत नगर की मांग है, टीबा गांव की 33 केवी की मैंने पूरी लाइन खिंचवा दी थी लेकिन राजनीतिक भेदभाव के आधार पर आप राजस्थान के किसानों के साथ सौतेला व्यवहार कर रहे हैं । इतना ही नहीं, माननीय सभापति महोदय, रोबाड़ा के अंदर आपके एईएन ने आठ गरीब किसानों को यह कहकर के कि कृषि कनेक्शन कर रहा हूं मैं, उनसे 45-45 हजार रुपये रिश्वत ले लिये और माननीय सभापति महोदय, उनके घरों पर डोमेस्टिक कनेक्शन कर दिये। पांच सौ मीटर की डिस्टेंस को बेस बनाकर, पांच सौ मीटर से ज्यादा होने के बावजूद और जब उसकी शिकायत हुई तो उन किसानों के तो कनेक्शन कटे ही कटे, माननीय सभापति महोदय, आज तक उन बेचारों के जो चालीस-चालीस,

(श्री संयम लोढ़ा)

पैंतालीस-पैंतालीस हजार रुपये उन एईएन ने खाये, आपके अधिकारियों ने खाये, आपके कर्मचारियों ने खाये, उनको एक फूटी कौड़ी उन किसानों की आपने वापस नहीं की । और वह जो किसान पैसा लोन पर लेकर के आये थे इस उम्मीद से कि राजस्थान की यह सरकार उनको बिजली उपलब्ध करा रही है और इस चक्कर में कि उनका कनेक्शन हो जायेगा उस ए ईएन ने उन खेतों के अन्दर मकान भी बनवा दिये । तो मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं अगर राजस्थान के गरीब किसान को शोषण से बचाने की और उसकी मदद करने की आपकी जरा भी नीयत है तो मेहरबानी करके एण्टी करप्शन डिपार्टमेंट में उसका मुकदमा दर्ज कराइये जिससे उन गरीब किसानों का जो पैसा खाया है वह पैसा वापस मिल सके । (व्यवधान)

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): अभी बोला था माननीय सदस्य ने, आपने मुकदमा क्यों नहीं करवाया दर्ज? आपने कार्यवाही क्या की?

श्री सभापति: नहीं-नहीं, आप बिराजिये सुमेरपुर से आने वाले माननीय सदस्य । कृपया आप बिराजिये । (व्यवधान) आप आपस में बात नहीं कर सकते । बैठिये आप । आप कृपया बैठिये ।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): माननीय सभापति महोदय, एक मिनट । जब आपको यह...(व्यवधान)

श्री सभापति: आप कृपया बिराजें।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): माननीय सभापति महोदय, मैं आपसे कह रहा हूं । आपके माध्यम से कह रहा हूं...(व्यवधान) जब माननीय सदस्य को यह पता चल गया...(व्यवधान)

श्री सभापति: आप बिराजिये । इनको कनक्लूड करने दीजिये । प्लीज, आप इनको कनक्लूड करने दीजिये।

श्री महीपाल सिंह यादव (बानसूर): माननीय सभापति महोदय, यह कोई हैड मास्टर लग रहे हैं? क्या यह मंत्री...(व्यवधान) या मंत्री हैं क्या आप?

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): मैं यह इसलिये...(व्यवधान)

श्री सभापति: आपका अंकित नहीं होगा ।

श्री महीपाल यादव (बानसूर):×××

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): ×××

श्री सभापति: आप कनक्लूड करने दीजिये...(व्यवधान) आप कनक्लूड करिये फटाफट । सिरोही से आने वाले माननीय सदस्य, प्लीज कनक्लूड कर दीजिये ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): हुजूर हमने तो ससपैंड करा दिया उस ए ईएन को...(व्यवधान) इसलिये मैं आपके माध्यम से यह प्रार्थना करना चाहता हूं...(व्यवधान)

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): ×××

श्री सभापति: आपस में बात नहीं करें।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): मैं जवाब दे दूं उनको...(व्यवधान)

श्री सभापति: नहीं, आप अपनी बात खतम करिये । मैं दूसरे वक्ता को बुला रहा हूं ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): वह ए ईएन ससपैंड जरूर हुआ लेकिन बाद में जिस डी.वाई.एस.पी. को जो यह आपका बिजली विभाग का होता है वह ए ईएन साथ लेकर आया जांच करने और उन कम्पलेनेंट को धमकाया कि अगर आपने मेरे खिलाफ स्टैटमेंट दिया तो आपके कनेक्शन कटवा दूंगा । तब तक कटा नहीं था फिर बाद में मैंने जब डैम चेयरमैन थे, मैं अभी नाम भूल रहा हूं जो भी हैं उनसे पहले जो आजकल अजमेर हैं शायद । उनको मैंने फोन करके कहा कि यह इस तरह का हुआ है उन्होंने एडिशनल एस.पी. को जांच दी लेकिन इतना सब होने के बाद भी उन किसानों की फूटी कौड़ी वापस नहीं मिल रही है। इसलिए आपके माध्यम से मैं बहुत विनम्र शब्दों में सरकार से प्रार्थना करता हूं कि आप उन किसानों का पैसा वापस दिलाने की कृपा करें । धन्यवाद ।

श्री सभापति: धन्यवाद । श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल, पांच मिनट। (व्यवधान) सात बजे समाप्त करना है।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): पांच मिनट ही बहुत हैं। (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): दोनों के लिए बराबर हैं?

श्री सभापति: हां बराबर है सब के लिए ।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): माननीय सभापति महोदय, आज बिजली और अकाल पर चर्चा में मैं अपने आपको शामिल करते हुए अपनी बात रखना चाहती हूं ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): आप तो घर पर आराम करके आये हो ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): आप मेरे पर जो आरोप लगा रहे हैं मैं इसका खंडन करता हूं। मैं बैठा हुआ डिबेट अन्दर लाबी में सुन रहा था श्रीमान।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): आप ही के माननीय सदस्य कह रहे थे कप्तान साहब आराम करने गये हैं।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): किसने कहा नाम बताएं, कृपया नाम बताएं मैं कन्फ्रंट करूंगा उनको अभी...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): तो मैं आपको नाम बता दूंगा...(व्यवधान)

श्री सभापति: यह तो इनको ख्वाब में दिखे थे आप।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): अच्छा चलिये ठीक है । तब कोई बात नहीं है।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): माननीय सभापति महोदय, राजस्थान की नियति कहें अकाल पर अकाल पड़ते रहे हैं । राजस्थान में जब वसुन्धरा जी का राज बना है तब से कम से कम अकाल दूर भाग ही गया है । मगर अकाल पड़ा तो अकाल के दुष्चक्र में किसान ही पिसता गया । किसान की हालत दयनीय से दयनीय होती गयी । आज केन्द्र सरकार ने करोड़ों रुपये का किसान के ऊपर जो कर्जा था वह माफ करने की घोषणा की मगर मैं कहती हूं जो महंगाई है उसको खतम करो ना आप । आप वास्तव में जो मूल चीज है उसको खतम करो1 विदेश से जो गेहूं आयात किया जाता है उसको तो ज्यादा पैसे दिये जाते हैं और जो किसान अपनी गाढ़े पसीने की कमाई से कर्जा लेकर गेहूँ बोता है उस किसान को उसके ही देश में उसकी उपज का भाव बराबर मिलता ही नहीं । आज आपने कर्जा तो माफ कर दिया मगर इसकी तरफ सोचने की आवश्यकता है । अगर एक उद्योगपति है उसकी दस रुपये की कोई चीज है तो वह उसको चार सौ रुपये में बेचेगा मगर किसान अगर पन्द्रह रुपये में गेहूँ बोता है तो उसे गेहूं को दस रुपये में बेचना पड़ेगा, यह स्थिति हो गयी है इसलिए मेन चीज महंगाई को खतम करना ज्यादा जरूरी है ।

आज भाव जिस तरह से बेतहाशा बढ़ रहे हैं उस पर सोचने की आवश्यकता है इस पर हमको आपको सबको सोचना पड़ेगा । जो परम्परागत

(श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल)

साधन हैं हमारे सिंचाई के उसकी तरफ ध्यान देना पड़ेगा । पूरे देश में गोबर गैस से संबंधित जो संयंत्र लगाये जाते हैं उनको लगाना पड़ेगा ताकि लोगों को रोजगार भी मिले, भूमि उपजाऊ भी हो, ऊर्जा की भी प्राप्ति हो इसके बारे में सोचना पड़ेगा तभी इस देश के किसान की माली हालत में सुधार आ सकेगा ।

पिछल चार वर्ष के कार्यकाल में माननीय सभापति महोदय, बिजली के क्षेत्र में अभूतपूर्व काम हुए हैं । फीडर रिनोवेशन के माध्यम से पूरे राजस्थान में चौबीस घंटे सिंगल फेस गांवों को आज दी जा रही है । पाली जिले की मैं बात करती हूं, पाली जिले में 499 गांवों में चौबीस घंटे घरेलू सिंगल फेस बिजली से जोड़ा गया है और उसमें 55 गांव मेरे देसूरी विधान सभा क्षेत्र के हैं, बाली के 62 गांव हैं, सोजत विधान सभा क्षेत्र के भी 62 गांव हैं, सुमेरपुर के भी हैं । इस प्रकार से 499 गांवों को सिंगल फेस बिजली 24 घंटे मिल रही है आज । आज इसके बारे में सोचा तो वर्तमान सरकार ने सोचा । गांवों में आज मैं वास्तविक स्थिति बता रही हूं आपको । मैं किसी शहरी इलाके से चुनकर नहीं आती, मैं ग्रामीण इलाके से चुनकर आती हूं और आज वहां पर फीडर रिनोवेशन के तहत 24 घंटे सिंगल फेस बिजली मिल रही है ।

वर्तमान बजट में जो वसुन्धराजी ने घोषणा की है कि 2007 तक के कृषि कनेक्शन जिन्होंने आवेदन कर रखे हैं उनको वह दिये जायेंगे । इसका भी किसानों को बहुत फायदा होगा । पिछली सरकार ने कितने कनेक्शन दिये उसकी बनिस्पत हमारी सरकार ने ज्यादा कनेक्शन दिये और अब और कनेक्शन 95 हजार के तहत दिये जायेंगे ।

माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से मेरा मंत्री महोदय को एक सुझाव है इसमें कि रजिस्ट्री में स्टाम्प ड्यूटी महिलाओं के नाम पर कम की गयी है । मेरा सुझाव है जो 95 हजार कृषि कनेक्शन दिये गये तो महिलाओं के नाम पर आज रजिस्ट्री होने में अभी जो अच्छा काम किया है कि रजिस्ट्रियाँ भी महिला के नाम पर हो रही हैं, मैं चाहती हूं कि महिला कृषकों को प्राथमिकता कनेक्शन देने में दी जाय । साथ ही मेरे कुछ और सुझाव भी हैं । मैं कुछ ज्यादा नहीं बोलूंगी, मैं सुझाव पर ही बात करूंगी ।

किसानों के बिल के बारे में मैं बात करना चाहती हूं । किसानों से जो बिजली के बिल लिये जाते हैं वह बिजली के बिल उनकी फसल कटाई के समय लिये जाने चाहिए क्योंकि एक तो अकाल की मार दूसरे खाद बीज की

(श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल)

वजह से उनकी हालत वैसे ही पतली हो जाती है उनको कर्जा और लेना पड़ता है इस वजह से किसानों की जब फसल कटाई हो तब उनसे बिजली के बिल भराये जायें । ऐसी सरकार की व्यवस्था होनी चाहिए नहीं तो सेठ साहूकारों के चक्कर में पड़कर उसे बड़ी परेशानी होती है ।

श्री शांतिलाल चपलोत (मावली): आपने जैसा कहा ना फसल कटाई के समय, कटाई के समय तो वैसे ही खर्चा पड़ जाता है । कटाई के बाद आप कहो । कटाई के समय नहीं ।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): कटाई होती है तब उसके पास माल घर आता है और उसे बेचेगा तो पैसे तो आयेंगे । सुझाव दिया है उसे आप समझ लीजिये ।

पवन चक्कियों को ज्यादा से ज्यादा लगाया जाए । जैसलमेर और बाड़मेर में हवा के रूप में पवन चक्कियों को लगाया जाए ताकि ऊर्जा की भी प्राप्ति हो सके । दूसरा जहां सूर्य की किरनें सीधी पड़ती हैं वहां पर सौर ऊर्जा के संयंत्र लगाए जाएं ताकि उससे भी ऊर्जा की प्राप्ति हो सके। वर्तमान सरकार ने उत्पादन की भी सोची है, गांव के लोगों को अच्छी और गुणवत्ता वाली बिजली मिले इसकी भी सोची है । मगर कांग्रेस की पूर्ववर्ती सरकार ने इसके लिए कुछ नहीं किया, उत्पादन के लिए कुछ नहीं किया, उनको भी सोचना था, उनके सामने तो...(व्यवधान) मेरा कोई षड्यंत्र नहीं है, संयंत्र बोला है, आपको सुनने में शायद आपके कान में, क्या कहते हैं, कचरा आ गया होगा ।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): देसूरी से आने वाली माननीय सदस्य एक बात तो साफ है कि सबसे ज्यादा काम अगर हुए हैं इस राज में तो देसूरी विधान सभा में हुए हैं, चाहे पीडब्लूडी हो, चाहे शिक्षा हो और चाहे बिजली हो यह बिलकुल सही है...(व्यवधान)

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): आप देख आइए ।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): यह कह रही हैं न, इससे अंदाजा लगा रहे हैं ।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): पूरे राजस्थान में हुए हैं, पूरे पाली ज़िले में हुए हैं, आपने तो मेरे देसूरी की सुध नहीं ली, आपके कांग्रेस राज ने देसूरी विधान सभा क्षेत्र से जुड़े लोगों की सुध ली नहीं । मगर वसुंधराजी ने

(श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल)

मेरे इलाक़े की सुध और काम हुए हैं तो कहना पड़ेगा । इसमें कोई मैं अन्यथा नहीं कह रही हूं । इसके साथ ही कुओं पर जो नर्सरी योजना के तहत कनेक्शन दिए जाते थे, उसमें ग्रामीण क्षेत्रों को सामान्य दर से तो कर दिया था, उससे ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को फायदा हुआ । मेरा यह निवेदन है कि शहरी क्षेत्र नगरपालिका क्षेत्र में रहने वाले जो काश्तकार हैं, जिनके कुएं हैं, उनको भी नर्सरी योजना से जोड़ा जाए ताकि सामान्य दर की सुविधा उनको भी प्राप्त हो सके । जुबेरजी मैं बताना चाहती हूं मेरे विधान सभा क्षेत्र में और मेरे साथी जो विधायक हैं खारची विधान सभा क्षेत्र के, सभी जगह 33 केवी जीएसएस है, बिजली की स्थिति बहुत अच्छी है, वह ठीक बात है कि वह विपक्ष में बैठते हैं तो उनको अपना धर्म निभाना पड़ता है । मगर काम बहुत हुए हैं, बहुत महत्व दिया है, सभी को महत्व दिया है, कोई भेदभाव नहीं रखा, पूछ लें उनसे आप, वह कह रहे हैं मेरे भी हुए हैं...(व्यवधान) जवाली में मेरा जीएसएस हुआ, किशनपुरा में जीएसएस हुआ तथा इनके वहां पर पांच जीएसएस हुए, देखो हाथ से इशारा कर रहे हैं, कोई भेदभाव नहीं रखा । इस सरकार की सिर्फ एक मानसिकता है गांवों में भी लोग रहते हैं, उनके बच्चे भी पढ़ते हैं। आपके बच्चे तो अच्छी स्कूलों में पढ़ते हैं, मगर गांव में रहने वाले बच्चों को भी बिजली मिले, किसान जब थकाहारा घर जाए और जब उसकी पत्नी को खाना बनाने के लिए कहे तब उस समय लाइट गुल न हो जाए। इसलिए 24 घंटे सिंगल फेज की बिजली का जो प्रावधान वसुंधराजी ने और वर्तमान सरकार ने किया है निश्च‍ित रूप से बहुत ही अच्छा किया है । इससे महिलाएं भी बहुत खुश हैं । माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद । जय हिन्द, जय भारत ।

श्री सभापतिः आपको भी धन्यवाद । माननीय श्री बत्तीलालजी ।

श्री बत्तीलाल (टोडाभीम): माननीय सभापति महोदय, मैं सबसे पहले तो आपको धन्यवाद देना चाहूंगा कि आपने मुझे समय दिया । मान्यवर, राजस्थान अकाल का पर्यायवाची है और हमारी परिस्थिति ऐसी हैं जो हमेशा अकाल पड़ते रहे हैं लेकिन मान्यवर हमारी यशस्वी मुख्य मंत्री महोदया ने यह तय कर लिया है कि हमको इस अकाल को समूल नष्ट करना है और आप जानते हैं अकाल नष्ट जब होगा जब कि कृषि पर भार कम से कम होगा । अकाल अकेला नहीं आता है मान्यवर, अकाल के कई भाई बंधु हैं, अकाल के मित्र हैं भुखमरी है, गरीब है, अशिक्षा है, बेरोजगारी है । हम इन सब को

(श्री बत्तीलाल)

मिटाना चाहते हैं । यह अकाल को मिटाने का इनका तरीका दूसरा है, हमारा तरीका दूसरा है । इनका तरीका है गारंटी रोजगार, यह गारंटी रोजगार देना चाहते हैं रोजगार की, कितना देना है 27 दिन का एवरेज आ रहा है देश का, हमारी बात तो छोडिए और उसमें दस रुपये आदमी की मजदूरी पड़ रही है । अब दस रुपए मजदूरी पड़ रही है मान्यवर तो 270 रुपये पड़ते हैं, अब 270 रुपए में वह आदमी कैसे अपना जीवनयापन करेगा और बाकी खुद आकर के देश को खाना चाहते हैं । मैं मान्यवर, पूछना चाहता हूं कि पहले इन्होंने पांच साल में क्या किया अकाल प्रबंधन में? और एक्सर्टस और ले आये ट्रेनिंग के लिए, कौन ले आये? लालू प्रसादजी यादव को और लालू प्रसादजी यादव चारे का वो कैसा करते हैं प्रबंधन? वह सारा देश जानता है । इन्होंने मान्यवर, यह देश का कैसे.....

श्री सभापति: सुनो संसदीय कार्य मंत्रीजी ।

श्री बत्तीलाल (टोडाभीम): भला कर सकेंगे? इन्होंने यह सेंट्रल सरकार, केन्द्र सरकार, कैसी सरकार जो अप्राकृतिक सरकार है, जो अनैतिक सरकार है, जो अविश्वसनीय सरकार है । अब आप कहेंगे अप्राकृतिक सरकार कैसे है? मान्यवर, बचपन में किसी का सहारा लेकर के चलते हमने सब को देखा है, तब बच्चा सब का सहारा लेकर चलता है, बुढापे में यदि कोई आदमी किसी का सहारा ले तो उसका क्या भविष्य है? यह आप जानते हैं उसकी मृत्यु तो सुनिश्चित है । ऐसा ही कांग्रेस के साथ हो रहा है और इन्होंने अपनी कुर्सी खिसका ली । मान्यवर, हमने भी एनडीए सरकार बनाई थी। अब एनडीए सरकार इसलिए बनाई थी कि हमारा बचपन था और हमको सहारा लेना जरूरी था। लेकिन इन्होंने बुढापे में जो कहते हैं कि हमारी पार्टी 400 में 145 पर आई, गर्व से कहते हैं जो सरकार अपनी मृत्यु आसन पर पड़ी-पड़ी लम्बी सांस गिन रही है और उससे यह देश का भला करवाना चाहते हैं और इन्होंने बताया अनैतिक कैसे कहूंगा मैं? मैं अनैतिक ऐसे कहूंगा कि +++ अब मान्यवर यह आंकड़ों के जाल में उसको देश को उलझाना चाहते हैं कि हम कर्ज माफ करते हैं । हमने इनसे पूछा...

श्री जुबेर खान (रामगढ़): लालू को दुनियाभर में व्याख्यान करने के लिए बुलाया जा रहा है, इस विद्वान आदमी की बात आप कर रहे हैं बत्तीलालजी...

(समय : 18.46 बजे)

(श्री बत्तीलाल)

(श्री रामनारायण विश्नोई, उपाध्यक्ष, पदासीन)

लालू को आइआइएम अहमदाबाद में भी बुलाया जा रहा है, अमेरिका में भी बुलाया जा रहा है । आज यहां बिजली और अकाल की बात करिए । लालूजी क्या कर रहे हैं, छोड़िए ।

श्री बत्तीलाल (टोडाभीम):...(व्यवधान) अकाल और बिजली क्या होता है...(व्यवधान)

श्री हीरालाल (निवाई): एम.ए. पास भी है यह बोलने दीजिए ।

श्री बत्तीलाल (टोडाभीम): आप यह बताइए हमने लाखों आदमियों को रोजगार दिया है परमानेंट, क्या उससे अकाल खतम नहीं होगा, हमने चंबल मेरे क्षेत्र में वहां ला रहे हैं, चंबल से नादौती परियोजना बन रही है, 600 करोड़ रुपए खर्च कर रहे हैं, क्या उससे अकाल नहीं मिटेगा? अकाल का मतलब है कि अकाल पड़ता है तब क्या-क्या होता है? पानी की समस्या आती है, बीमारी की समस्या आती है, गरीबी आती है, बेरोजगारी आती है । इन सबसे हम जब लड़ रहे हैं तो अकाल को हम समूल नष्ट नहीं करना चाह रहे हैं? +++ ऐसा ही देश के साथ में हो रहा है । मैं यह आपके माध्यम से माननीय उपाध्यक्ष महोदय यह देश की जनता से मांग करना चाहूंगा कि जब तक इन डकैतों को आप देश के ऊपर से नहीं हटा दोगे तब तक किसान का भला नहीं हो सकता। मान्यवर, नदियों को जोड़ने वाली हमारी योजना, हमने आज राजस्थान का ही भला नहीं किया, गांव-गांव में सड़क बनाकर के जो मिट्टी है, राजस्थान को रेतीला कहा जाता था आज उस मिट्टी को सोने के भाव करवा दिया, यह कहकर के...(व्यवधान). क्या इससे अकाल को सहारा नहीं मिला है? यह मैं पाले के सबजेक्ट पर बोल रहा हूं...(व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है, आप एक मिनट चुप कराइए । एक मिनट आप सुनिये तो सभापति महोदय...

श्री उपाध्यक्ष:...(व्यवधान). एकाध वक्ता कोई ऐसे हो...(व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पाइंट आफ आर्डर, उपाध्यक्ष महोदय मेरा पाइंट आफ आर्डर यह है कि लालू प्रसाद जी केन्द्रीय रेलवे मंत्री हैं और इनके बारे में टोडाभीम से आने वाले माननीय सदस्य ने +++ उसको आप एक्सपंज कराइए ।

श्री उपाध्यक्ष: कोई अंकित नहीं होगा ।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): अंकित तो हो गया है, आप एक्सपंज कराइए ।

श्री उपाध्यक्ष: वह अंकित नहीं होगा कह दिया ।

श्री बत्तीलाल (टोडाभीम): वह जेल में क्यों गए? इसका मुझे जवाब दे दीजिए आप । उन्होंने चारा घोटाले में 900 करोड़ रुपये का जो घोटाला किया, क्या वह...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: बत्तीलाल जी...(व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़):...(व्यवधान) घोटाला किया तो यहां ज़मीनें बेच दी, सारी ज़मीनें बेच दी और...(व्यवधान) बेकार की बात कर रहे हैं आप, सारा राजस्थान बेच दिया ।

श्री बत्तीलाल (टोडाभीम):...(व्यवधान) बेकार की नहीं, सही बात है, आप हकीकत तो सुनना नहीं चाहते, हकीकत में यह है। मैं किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं ले रहा हूं, मैं रेलवे मंत्री है उसका नाम ले रहा हूं जो...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य अभी आप रेलवे की बात यहां मत कीजिए, आप बिजली और पानी से संबंधित बोलिए । बिजली और अकाल के बारे में...(व्यवधान)

श्री बत्तीलाल (टोडाभीम):...(व्यवधान) मैं इसके बारे में कहना चाहूंगा, मैं सरकार को धन्यवाद देना चाहूंगा कि मेरे क्षेत्र में 600 करोड़ रुपये की जो चंबल से नादौती जाने की योजना बनाई है । मैं मान्यवर निवेदन करना चाहूंगा...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: अब आप उत्तेजित मत कीजिए। माननीय सदस्य अब आप बैठिए चलती स्पीड को नहीं रोकें।

श्री बत्तीलाल (टोडाभीम): पानी जब खेत में मिलेगा, हर खेत में पानी, हर हाथ में काम मिलेगा तब जाकर के देश मजबूत होगा । आप बताइए हर खेत में पानी और हर हाथ को काम मिलेगा जब देश मजबूत होगा और तब आर्थिक स्थिति सुधरेगी किसान की। हम किसान को एक तरह का परमानेंट गरीब करना चाहते हैं । गरीब किसान इसलिए हो गया कि अकाल का अर्थ क्या है कि वर्षा नहीं हो और वर्षा के नहीं होने से किसान की अर्थव्यवस्था लड़खड़ा जाती है। उसके पास में साधन नहीं होते हैं तब जाकर यह मामला

(श्री बत्तीलाल)

होता है। मान्यवर, हमको किसान को मजबूत करना है और मजबूत तब होगा जब उनके, मैं यह प्रस्ताव रखता हूं, मैं यह मांग रखता हूं कि उनके घर में एक स्थायी नौकरी होनी चाहिए जैसा हमारी सरकार का विचार है। और जब तक स्थायी नौकरी किसान की नहीं होगी तो आज किसान जो इन्होंने अपनी गलत नीतियों के कारण किसान को एक तरह का एक भिखारी बना दिया है। देश का अन्नदाता भारत का भाग्य विधाता उसको क्या बना दिया इन्होंने आज हमारे किसान की क्या नौबत हो रही है । आज हमारा देश गरीब इसलिए है कि इन्होंने कभी किसान के हित की नीति नहीं बनायी । अटलबिहारी वाजपेयीजी ने गांव को सड़क से जोड़ने की योजना बनायी और सड़कों के माध्यम से मान्यवर, हमने राजस्थान में .....(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, आप बार-बार फिर...(व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): उपाध्यक्ष महोदय, उन्होंने किसान को भिखारी कह दिया यह किसान का अपमान है । किसान को भिखारी कहना किसान का अपमान है । किसान अन्नदाता है, किसान अन्नदाता है भिखारी नहीं है । आप किसान को भिखारी कहते हैं आपको थोड़ा सोचना चाहिए । किसान मतदाता है भिखारी कतई नहीं है ।

श्री बत्तीलाल (टोडाभीम): किसान को बना दिया आपने भिखारी । किसान तो अन्नदाता है पर अन्नदाता को आपने भिखारी बना दिया ।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): किसान को अन्नदाता ही कहा है किसान की हालत खराब है ।

श्री बत्तीलाल (टोडाभीम):...(व्यवधान) लेकिन आपने उसकी जो हालत की है यह वो एक तरह से भिखारी जैसी नहीं कर दी आज आपने? आपने भिखारी जैसा बना दिया मैं उसकी उपमा दे रहा हूं । मैं किसान की उपमा भिखारी जैसी इसलिए दे रहा हूं कि आपकी गलत नीतियों के कारण उसकी ऐसी स्थिति हुई आप कृषि को उद्योग का दर्जा देना चाहते थे, आप नहीं दे सके । आपने तीन बार जय जवान, जय किसान, एक बार आपने 1989 में जय जवान के साथ में बोफोर्स का धोखा किया आपने दूसरी बार उसके साथ...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य । माननीय सदस्य । आप थोड़ा बिजली और अकाल के संबंध में बोलें ।

श्री बत्तीलाल (टोडाभीम): हां। बिजली पर आ रहा हूं । मान्यवर, दो फाइलों का फैसला जनता कर चुकी है और तीसरी फाइल जो वो गेहूं का घोटाला है उसके इंतजार में है । अब 2008 में ये भी मैदान में जाएंगे और हम भी मैदान में जाएंगे हमें पूरा विश्वास है कि फैसला हमारे फेवर में होगा क्योंकि किसान का तो भगवान ही मालिक है । अब इन गेहूं से कौन निपटे । हमारी जो पार्टी है वो साधु-संतों की जमात है हम देश के फेवर में काम करना चाहते हैं और इनका एक उसूल है कि डकैतों का गिरोह है जो देश को लूटने के सिवाय और कुछ नहीं करता । मैं मान्यवर, आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि इस गिरोह से भगवान ही निपट सकता है इसलिए हमने उसके लड़ने के लिए हमने भगवान से प्रार्थना करने के लिए एक ब्राह्मण को अकाल राहत मंत्री बनाया है कि वो भजन करे और यज्ञों से ही तो वर्षा होती है वर्षा तब होती है जब भगवान खुश होते हैं। तो हमने, मैं यह कहना चाहता हूं कि वसुन्धराजी सारी देवी देवताओं को मानती हैं और वो स्वयं भी देवी रूप हैं इसलिए हमारे राज में कभी अकाल नहीं पड़ा । नौ साल पहले भी अकाल पड़ा कांग्रेस और अकाल का परमानेंट जोड़ा है । इन्होंने चालीस साल राज किया उसमें पैंतीस साल अकाल पड़ा तो यह अकाल के लिए भगवान से भजन करते थे कि भगवान अकाल पड़े और हमको खाने का मौका मिले । यह था उसमें इनका इन्होंने पाठ रखे थे हनुमान जी के कि अकाल पड़े और हम यह चाहते हैं कि भगवान कभी हमारे राज में अकाल नहीं पड़े और आप मान लीजिये मान्यवर, अच्छे राज का यह लक्षण होता है ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, आप अपने विधान सभा क्षेत्र की समस्याओं के बारे में कहें ।

श्री बत्तीलाल (टोडाभीम): मेरे विधान सभा क्षेत्र का आपसे मैं निवेदन करना चाहूंगा कि पांचना के लिए जो आप लिफ्ट योजना बना रहे हैं वो डेढ़ करोड़ रुपये का प्लान है । इन्होंने एक बार नहीं बनाया किसान की रक्षा के लिए कभी भी इन्होंने पूर्वी राजस्थान का मुझे अच्छी तरह याद है कि पूरा एक एक जिले के गांव-गांव में मैं जाता हूं। इन्होंने कोई, 1977 में मैं एमएलए था तो हम लोगों की मांग पर माननीय शेखावत साहब ने पांचना बांध बनाया और पांचना बांध में पहले वर्षा काफी होती थी अब पानी कम आने लग गया। हमने दुबारा प्रार्थना की तो सांवरलालजी जाट वहां गये उन्होंने अब एक योजना बनायी है । मैं मुख्य मंत्री साहिबा को धन्यवाद देना चाहूंगा कि चम्बल को

(श्री बत्तीलाल)

पांचना में डालने की जो बजट में घोषणा की है उसके लिए मैं बार-बार वहां की जनता की ओर से हार्दिक धन्यवाद प्रेषित करना चाहूंगा ।

मान्यवर, मेरी एक छोटी सी मांग और है बिजली के मामले में जितना गर्व हमको बिजली के सुधारों में है उससे ज्यादा गर्व हमको हमारे वियुत मंत्रीजी पर है और वो ईमानदार हैं, कर्मठ हैं और उनको भगवान ने वो श्रेय दिया है जो वास्तव में किसी को नहीं मिला है । बिजली के मामले में इन्होंने इतना संतुष्ट किया है कि आज हम गांव में जाते हैं तो पहले तीन घंटे में 6 ट्रिप आता था लोग इनको गांव में घुसने नहीं देते आज हमारा जगह जगह स्वागत करते हैं । हम बिजली को लेकर के यदि चुनाव का एक मुद्दा बनाकर लड़ेंगे तो हमें पूरा विश्वास है कि वसुन्धराजी के नेतृत्व में पुन: सरकार बनायेंगे । इस प्रकार के इन्होंने गौरवशाली काम किये हैं मैं कहां तक इनके कामों का बखान करूं काम तो बहुत ज्यादा हैं लेकिन मैं यही कहना चाहूंगा मान्यवर, कि इन्होंने जो गरीब किसान के बच्चे थे उनकी शहर की जैसी पढ़ने के लिए चौबीस घंटे की लाइट दी है यह कोई कम बात है क्या? और दूसरा जो पहले डीपी के नाम पर बड़ा भारी घोटाला होता था किसान की डीपी जल गयी तो कोई सुनने वाला नहीं था और बहुतों ने तो हमारे वहां यह सौदा कर रखा था कि पांच हजार रुपये दो, दस हजार रुपये दो हम आपको डीपी देंगे । अब यह टाइम तय कर दिया कि कोई भी अधिकारी यदि 72 घंटे में किसान की नहीं सुनेगा तो उसकी जिम्मेदारी होगी उसको सस्पेंड कर दिया जाएगा। और यही कारण है कि आज किसानों को कहीं भी असुविधा नहीं है और कनेक्शन के बारे में ले लीजिये कनेक्शन इन्होंने कह दिया कि आओ और पाओ । सन् 2009 दिसम्बर तक सारे लोगों को जिन्होंने डिमाण्ड नोटिस जमा कर रखे हैं उनको भी दे दिये जाएंगे । अब ऐसा न कभी हुआ और न होगा भविष्य में ।

मैं माननीय वियुत मंत्रीजी साहब से निवेदन करूंगा कि मेरी दो-एक मांगें हैं 33 केवी की । एक केमला है, एक गलफरा है, एक पांचना है आप हम नहीं सोचते हैं उससे ज्यादा करते हैं। पर मैं जब खड़ा हुआ हूं तो मेरे क्षेत्र के लिए कुछ न कुछ मांगूंगा तो आप यह 33 केवी के दे दें आपकी बड़ी भारी मेहरबानी होगी । आप तो कभी ना करते ही नहीं, ना करना जानते ही नहीं । आपकी कार्यप्रणाली इस तरह की है कि बिजली के करेंट से भी ज्यादा काम करते हो । आपका जो स्वभाव है वो इस तरह का है कि जो किसानों को

(श्री बत्तीलाल)

वास्तव में गरीब से लेकर अमीर तक लोग तो पद के पीछे भागते हैं परन्तु हमारे विद्युत मंत्रीजी के पीछे पद भागते हैं । आपके बारे में जितना भी कहूं आज वास्तव में थोड़ा है । आप इतने बड़े एक संभ्रांत परिवार के व्यक्ति हैं लेकिन किस तरह विनम्रता है आप में जो वास्तव में आज तक किसी विद्युत मंत्री में नहीं रही । नहीं तो विद्युत मंत्री में तो करेंट जैसी बात होनी चाहिए तो आप में जो विनम्रता है उसका सारा राजस्थान कायल है हम अब जब अगला चुनाव लड़ेंगे तो सड़क, शिक्षा और पानी यह तो हमारा मुद्दा होगा ही लेकिन विशेषकर बिजली हमारा चुनाव का मुद्दा होगा । मैं यही निवेदन करना चाहूंगा कि इन्होंने कहा कि यह कैसे क्षेत्र में जाएंगे क्या करेंगे, मैं एक बात कह करके क्योंकि सब को शेर शायरी कहने का शौक है मैं भी मान्यवर, अपनी बात समाप्त करूंगा कि जो माहाराणा प्रताप के सेवक हैं हम उनके अनुयायी हैं, शिवाजी के अनुयायी हैं । महाराणा प्रताप ने कहा था कि 'पीथल चम क्षमता बादल री जो रोके, शूर उगारी ने नाहर री हथकर सहलेवे वा कूक मिली कर शारी न ।' जय हिन्द । जय भारत ।

श्री उपाध्यक्ष: धन्यवाद । श्री महीपाल मदेरणा ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज सदन में अकाल और बिजली की स्थिति पर चर्चा हो रही है मुझे अफसोस है कि इसके लिए सिर्फ एक दिन चर्चा के लिए रखा जाता है। सरकार को बहुत सीरियसली सोचना चाहिए इस पर आम आदमी पर और आम आदमी पर जिसकी आर्थिक स्थिति सही नहीं हो, अन्नदाता की स्थिति ठीक नहीं हो उसके लिए चर्चा के लिए समय सत्तापक्ष को ज्यादा रखना चाहिए । भूलो मत आपने इस...(व्यवधान) देखिये बैठ जाओ आप ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, विपक्ष इतना गम्भीर नहीं है ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): चलते हुए ही मेरी गाड़ी रोकेंगे तो मैं गाड़ी बहुत तेज चलाऊंगा आज आपको स्पष्ट कहता हूं पर इतना मारूंगा कि ...

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): आप सारी बात स्पष्ट स्पष्ट कहेंगे जिस तरह की आपकी आदत है और जिस तरह की आपकी छवि है । आप पिछली सरकार को भी नहीं बख्शेंगे और हमारी कोई आलोचना करेंगे।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): आप तो बहुत स्पष्ट कहने वाले हैं पर आपके अलावा विरोधी पक्ष गम्भीर नहीं है नहीं तो एक दिन क्यों हम तो पांच दिन चलाने के लिए तैयार हैं ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): देखिये आपके भाजपा के सदस्यों ने पिछले पांच सालों के बारे में बहुत कुछ कहा है अब तो आपकी बेलेंस शीट है चार साल राज किया, मस्ती ली और समस्याओं का समाधान के लिए आपने थोड़ा कुछ नहीं किया तो वो भी बताऊंगा । इस सदन के अन्दर।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): आप मुझे क्षमा करेंगे। सोनियाजी को जो चिट्ठी लिखी है परसरामजी ने उसको जरूर आप बताना।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): आप लिख देना अपनी मुख्य मंत्री को चिट्ठी इस तरह की, वो जो आदरणीय मदेरणाजी ने कांग्रेस अध्यक्षा को लिखा है आप में हिम्मत हो किसी में तो अपनी मुख्य मंत्री को लिख कर बता दो न।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): हमें तो आवश्यकता नहीं है पर हमारी मुख्य मंत्री ने आपके प्रधानमंत्रीजी को जो चिट्ठी लिखी है न।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): आप लिख कर दिखा दो हिम्मत है तो ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री):...(व्यवधान) देश के प्रधानमंत्री को जो पत्र लिखा है वो भी देख लें जरा ।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): वो प्रधानमंत्री की छोड़ो इंटरनल पार्टी का मैटर है आप लिख कर बता दो किस में हिम्मत है पूरी भाजपा में...(व्यवधान)

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (सरकारी उप मुख्य सचेतक):...(व्यवधान) धड़ाधड़ काम हो रहे हैं। धड़ाधड़ काम हो रहे हैं चिट्ठी लिखने की आवश्यकता कहां है। सब के काम हो रहे हैं चिट्ठियां लिखने की आवश्यकता ही नहीं है हमको ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): आप उन लोगों के पदचिन्हों पर कहां चलने की कोशिश कर रहे हो...(व्यवधान) मदेरणाजी जैसे लोगों के पदचिन्हों पर चलने की कोशिश कर रहे हो क्या आप? आप तो उनका नाम भुनाना चाहते हैं उनकी फोटो लगा कर किसान का वोट लेना चाहते हो ।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): सुरेन्द्र सिंहजी राठौर ने लिखा था कहां पहुंचा दिया उनको, वो कोने में पहुंचा दिया । हिम्मत हो तो लिख कर दिखा दो, बात करते हो ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): आपकी मुख्य मंत्रीजी की आजकल आपकी पार्टी में दिल्ली में कोई सुनता है नहीं महेश शर्मा को टिकट तो दिला नहीं पायी, ओमजी आ गये ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): थोड़ा उनके ढंग से हाथ मजबूत करो ताकि उनकी दुकानदारी वापस ठीक हो जाए । यह टिकट फिर नहीं मिलेंगे चक्कर में पड़ जाओगे कहीं ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): कांग्रेस की संस्कृति है कि इधर से भिड़ाओ उधर से भिड़ाओ...(व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़): घनश्यामजी के साथ आने के बाद ही हो रहा है आप दूर थे तब तो ठीक था आपके करीब आने से यह हालत हो रही है।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): बनाया फिर हटा दिया । पहले कल्ला साहब को विपक्ष का नेता बनाया फिर हटा दिया । फिर...(व्यवधान) साहब को हटा दिया ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव):...(व्यवधान) पहले बनाओ फिर हटाओ फिर लड़ाओ। आपस में लड़ाओ और फिर इसके खिलाफ यह भड़काओ, इसके खिलाफ यह भड़काओ, यह हमारी संस्कृति नहीं है ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, बैठिये ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): हमारी संस्कृति है हम सब एक हैं एक के साथ सब हैं ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही):...(व्यवधान) आपके भी आ गये ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): आप अपनी तो देखो ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): चार साल में तीन तो आ गये ललितजी आ गये, महेशजी आ गये, ओमजी आ गये ।

(समय : 19.00 बजे)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): पहले अपनी तरफ देखो ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): चार साल में तीन तो आ गये ललितजी आ गये, महेशजी आ गये, ओमजी आ गये ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य छोड़ो, बीच में डिस्टर्ब नहीं करें ।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक के आदमी को लाओ, उनको बदनाम करो, उनको कहो अकुशल है और उनको बर्फ में लगाओ । इस स्कीम के अंतर्गत आपने नारायण सिंहजी का, रामनारायणजी का और बीडी कल्ला साहब का इतने बड़े-बड़े लोगों का बलिदान ले लिया और किसका लेने की इच्छा है ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): आपके बलिदान का क्या हुआ? आपका शिक्षा मंत्रालय गया इसका कोई जवाब है क्या?

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): हम चेंज तो करते हैं...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): महीपालजी का बलिदान नहीं ले पाओगे कितने ही षडयंत्र कर लो । महीपाल का बलिदान आप लेना चाहते हो उसमें आप सक्सेस नहीं हो पाओगे ।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): घनश्यामजी हमको सबसे ज्यादा तकलीफ आपके बलिदान की है ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): उपाध्यक्ष महोदय, हमारी पार्टी में परिवर्तन तो होते हैं तिवाडी साहब के तो चार साल गुजर गये विलाप में, कोई सुन भी रहा है क्या आपकी । आप कैबिनेट की बैठकों में नहीं गये, आपने जासूसी के आरोप लगाये, आपने सब कुछ कर दिया कुछ हुआ, कुछ हुआ ?

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य ।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): कुछ क्या होता मैं तो यहीं हूं ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): आप तो यहीं है जिनको हटाना चाहते थे उनका क्या हुआ ।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): अब मैं जब यहां बैठा हूं और मेरा कुछ भी नहीं बिगड़ा तो आपको क्यों तकलीफ हो रही है।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): आपको फर्क पड़ा है, आप यूनिवर्सिटी से राशन की दुकान पर आ गये ।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): मदेरणाजी की हिम्मत की दात देते हैं हम।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य ।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिका आपूर्ति मंत्री): मदेरणाजी और हम कालेज में साथ-साथ रहे हैं इसलिए कितनी भी कोशिश कर लेना उनका बाल भी बांका नहीं कर सकते, यह मैं आपको बता दूं, महीपालजी का।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): कौनसे महीपाल जी का कह रहे हो आप, एक महीपालजी यह बैठे इधर ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): जो बोल रहे हैं उन्हीं की कह रहे हैं। हमारे साथी रह चुके हैं । जब विद्युत की मांग के बारे में, विद्युत के वितरण के बारे में, जनरेशन के बारे में जिन वादों, घोषणाओं को इस सदन में भूमिका के रूप में कई कथन कहे गये । परन्तु सरकार खरी कसौटी पर सफल नहीं रही । पहले-पहले लगा कि विद्युत के समाधान में, जनरेशन में और अकाल के स्थाई समाधान में इस सदन में इस तरीके का जहाज उड़ाया, टेकआफ किया हमने सोचा वाकई विद्युत में बहुत ज्यादा जनरेशन होगा, अकाल का स्थाई समाधान होगा । पर इन चार सालों में जब वापस हम उसका आंकलन करते हैं तो वह जहाज बिलकुल धड़ाम से धरती पर पड़ा है और धरती में चला जाये तो कोई बात नहीं । क्योंकि सरकार विद्युत देने में सफल नहीं रही । कहा गया कि 2007 में हम आत्म निर्भर हो जायेंगे और कहा कि हम किसान के लिये उसकी परिस्थितियों को, उपभोक्ताओं को, अन्नदाताओं की इनकी किसी की सुनवाई नहीं हुई । यह भी नहीं हुआ कुछ दिनों पहले जयपुर डिस्काम कम्पनी ने राज्य की मुख्य मंत्री और विद्युत मंत्री के समक्ष इन किसानों को जो विद्युत उपभोक्ता है उनकी समस्याओं से और उनकी मुश्किलों से आमने सामने रू ब रू हो उसके लिये कम्पनी ने एक मेला लगाया और कम्पनी ने यह दिखाने का प्रयास किया और यह मेला नौकरशाही द्वारा प्रायोजित था । इसका आयोजन विद्युत कम्पनी ने इस प्रकार से किया, दिखावा किया, बनावटी दिखावा था और उस दिखावे में अपनी स्टाइल से ऐसा आयोजन किया और दूसरी तरीके से प्रचारित किया कि हमारी क्या उपलब्धियां हैं। जैसी प्रस्तुति की वैसी आपकी उपलब्धियां नहीं है । किसान पिछले चार साल में आपकी विद्युत व्यवस्था से

(श्री महीपाल मदेरणा)

निराश और हताश हुआ है । 2003 में जब आप सत्ता में आने के लिये आतुर थे तो आपने जगह-जगह होर्डिंग लगाये कि हमारी सरकार सत्ता में आई तो किसान को सस्ती दर पर बिजली उपलब्ध करायेंगे जो दर पूर्व सरकार से कम हो । इन होर्डिंग में कहा कि हम विद्युत व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन करेंगे, यह वादे आपने किये । विद्युत सुधार होगा, उत्पादन होगा और हम क्रांतिकारी कदम उठायेंगे । किसान को भ्रमित किया इन लुभावने वादों से और आप सत्ता में आये । पहला सत्र आरम्भ हुआ तो यह विभाग टैम्प्रेरी रूप से आदरणीय तिवाड़ीजी के पास था। और इनका पहला वक्तव्य था, और बडे जोश में और बुलंदी से कहा कि हम विद्युत जनरेशन के प्रोग्राम में नये आयाम प्रस्तुत करेंगे। और इस जनरेशन के रिकार्ड कायम करेंगे । इतना जनरेशन करेंगे कि हमारे पास सरप्लस विद्युत होगी और उसकी बढोत्तरी करेंगे और राज्य की विद्युत सप्लाई करेंगे जिससे हमारी विद्युत कम्पनियों की आय बढेगी । जोधपुर डिस्काम कम्पनी 680 करोड़ के घाटे में है दूसरों का हिसाब बाद में बताऊंगा । चार साल में वह कम्पनी 680 करोड़ के घाटे में आ गई । उन कम्पनियों का हाल देख लीजिए, क्या हश्र हुआ । राजस्थान में अभी भी आपको महंगी दर पर बिजली खरीदनी पड़ रही है । आप तो कह रहे थे सरप्लस बिजली होगी और हम दूसरे राज्यों को देंगे । आपने 80 प्रतिशत बिजली महंगी दर पर खरीदी है । मैं अभी आपको बताऊंगा कि क्यों खरीदनी पडी महंगी दरों पर । सीएमडी, डिस्काम कम्पनी का अध्यक्ष, यह नौकरशाही यह आंकलन नहीं कर सकी कि हमारी मांग क्या होगी, मांग की आपूर्ति करने में राज्य को महंगी दर पर बिजली खरीद कर इस राज्य के बजट पर 500-600 करोड़ का नुकसान किया है । विद्युत सप्लाई में राजस्थान आप देख रहे हैं आपने विद्युत की कटौती की है, कटौती भी नहीं की इतना ज्यादा विद्युत वितरण में डिस्टर्बेंस हुआ है कि कई मर्तबा आपका जो वोल्टेज रेगुलेशन है वह नीचे आया है और नीचे आने के कारण आपको 132 केवी को शट डाउन करना पड़ा । 33 केवी शट डाउन हुए और 11 केवी के जीएसएस भी आपके शट डाउन हो गये । इन दो सालों में रिकार्ड डिस्टर्ब विद्युत सप्लाई आपने की है । इसके कारण उपभोक्ता को बहुत सारा नुकसान हुआ है । आप नारा कहते हो किसान हितैशी का, विद्युत देंगे और विद्युत आपने दी नहीं । आप जनता के बीच में जाओगे और जो फसल के लिये विद्युत आपूर्ति ढीली रही है जिसका उत्पादन उसके खेत में होना चाहिये, उस अन्नदाता के होना चाहिये बिजली की वजह से

(श्री महीपाल मदेरणा)

वह फसल नहीं ले सका और फसल नहीं लेने के कारण उसकी जितनी भी माली हालत ठीक होनी चाहिये वह नहीं हुई ।

दूसरी वादाखिलाफी, किसान को कहा कि हम 8 घंटे विद्युत सप्लाई देंगे, बडी खुशी हुई । दूसरे साल आपने कहा कि हम 7 घंटे अनइंट्रेप्ड विद्युत देंगे । क्या आपने विद्युत दी किसान को? तीसरे साल कहा कि हम 6 घंटे विद्युत सप्लाई देंगे । इसमें कितनी बार ट्रिपिंग हुई? सच्चाई यह है कि कभी काश्तकार को साढे तीन घंटे, साढे चार घंटे, पांच घंटे से ज्यादा लाइट नहीं मिली । यह वह जमीनी हकीकत है जिसको आपकी यह कम्पनी डिस्ट्रीब्यूशन कर नहीं सकी । लगातार पांच घंटे बिजली किसी भी फीडर पर नहीं दी गई । यह जितने वादे इन कम्पनियों ने किये हैं इन कम्पनियों ने आपको गलत बताया । मांग आपूर्ति का बैलेंस नहीं रख सके और राज्य के वोल्टेज रेगुलेशन के मापदंडों को ठीक नहीं रख सके । इतनी बडी कम्पनियों का झमेला आपका है, बड़ी-बड़ी कम्पनियां है कोई 600 करोड की, कोई हजार करोड की और इन चारों विद्युत कम्पनियों ने किसी भी मापदंड के अनुसार काम नहीं किया । यह इस बात का द्योतक है कि कैसा आपकी विद्युत डिमांड, डिस्ट्रीब्युशन एण्ड जनरेशन रहा है । मैं इसके साथ- साथ आपको बताना चाहता हूं कि बिजली की आवश्यकता और जरूरत बहुत ज्यादा बढ़ी है और उसकी उत्पादकता में भारी अंतर है। कम्पनी के अधिकारियों ने इसकी आपूर्ति नहीं की जिसकी वजह से जनता में, किसान में असंतोष है । औद्योगिक क्षेत्र के लोगों का जो उत्पादन होना चाहिये उनमें असंतोष है । छोटे व्यापारियों में असंतोष है और गांव के विद्यार्थी को पढ़ने के लिये शाम को लाइट नहीं दी, अभी दी है, आपने उसके लिये राजस्थान के चारों तरह के लोगों में भयंकर असंतोष है । सरकार ऊपर वर्णित समस्याओं को नहीं समझ सकी, देख नहीं सकी और निराकार के लिए कोई ठोस प्रबंध या कोई नीति नहीं बना सकी । मैं प्रोडक्शन की बात करूंगा, इस राजस्थान के साथ और किसान के साथ एक छल हुआ है । सबसे पहले जो जनरेशंस की बात आई थी वह पूर्व मुख्य मंत्री और उप राष्ट्रपति शेखावत साहब के टाइम आई थी । उन्होंने प्रयास किया पार्षियल फैलियर हो गये । उन्होंने नई सोच से काम किया और वह सोच ठीक है । उन्होंने सरकार से, सरकार ने विभिन्न कम्पनियों के माध्यम से एम ओ यू साइन किये और एम ओ यू साइन करने पर राजस्थान में कहीं भी विद्युत उत्पादन इन कम्पनियों ने

(श्री महीपाल मदेरणा)

नहीं किया । ऐसे कहीं भी आपने एम ओ यू साइन किये वह कम्पनियां वापस आपके दरवाजे पर नहीं आई और एम ओ यू हो गया । 1998 में आपको सत्ता से विपक्ष में बैठा दिया । उस समय कांग्रेस की सरकार आई । चन्द्रभानजी साहब ने बहुत काम किया । पैसे की जरूरत थी, विद्युत उत्पादन बढ़ाना था...(व्यवधन)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): जायल में भागना पडा (व्यवधान)

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): आप मत आ जाना आपको मेरे यहां भागना पड़ेगा । (व्यवधान) आप मत करो मुझे ऐसे...

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ऐसी स्थिति तो नहीं आयेगी। (व्यवधान) इस बारे में कमी तो है ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): अभी स्थिति और बता देंगे । आप तो धैर्य से सुनिये। वह स्थिति भी मुख्य सचेतक महोदय आपको बता देंगे ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): साथ में वह भी बता दीजिए वर्ल्ड बैंक से लोन के नाम पर एफआरपी की थी उन्होंने, हर साल रेट बढ़ाने वाली बात, सरकार ने...(व्यवधान) बता दो। वह सही-सही बता दो । वह आप ही बता सकते हो । प्रतिपक्ष में सिर्फ आप ही हो आपकी स्पष्टवादिता के बारे में पूरा सदन मानता है, आप ही बता सकते हो ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): देखिये एफआरपी जो किया उसके मेरे पास डाक्यूमेंट नहीं है (व्यवधान) डाक्यूमेंट अगर मेरे पास होते तो निश्चित...(व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): नालेज तो है ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): देखिये अभी यह कहते हैं अख़बार की बात मत करो ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): नालेज आपको पूरा है । प्रश्न नालेज का है ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): आपमें इतना कामन सेंस है । आपके जितना कामन सेंस है किसी का नहीं होगा । आपको खुद को मालूम है उन दिनों में आपके बयान छपे थे जब बिजली की दरें बढ़ाई थी अशोकजी ने, दो बार बढ़ाई । जिला प्रमुख की हैसियत से जो बयान छपे थे सब लोगों ने सराहा था ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): हम वहीं थे ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): वास्तव में कांग्रेस में रहते हुए एक मात्र व्यक्ति है जो अपनी बात वेबाक कह सकता है ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): देखिये, एक आदमी होता है, वित्त मंत्री होता है या सरकार के आप जो चलाने वाले केबिनेट होते हैं, आपके प्रयास होते हैं जरूरी नहीं कि सारे परिणाम आये, बल्कि प्रयास आपके पूर्व मुख्य मंत्री ने किये यह हम बात मानते हैं । अगर वह धरातल पर नहीं आये, नहीं लगे नहीं साइन किये तो उन कम्पनी वालों ने अपने को धोखा दिया, अपने विश्वास को धोखा दिया उसी तरह चन्द्रभानजी के समय वर्ल्ड बैंक से पैसा लेकर एक शुरूआत को उन्होंने आगे बढ़ाने की कोशिश की । इस सन्दर्भ में लीजिए आप देखिये, आलोचनाल you can be critical but you must be very constructive when you want to criticize. उन्होंने लिया वर्ल्ड बैंक से लोन, क्या लिया, उन्होंने सोचा कम्पनी को फाइनेंशियल वाइबल करेंगे उन्होंने कहा कि स्ट्रोंग ओन फुटिंग पर लाएंगे, बना सकेंगे और उसमें सबसे बड़ी बात थी जिसका वर्ल्ड बैंक ने असेस किया था । एक सेमीनार था उस सेमीनार में मैं गया था उसने कहा कि नहीं काश्तकार के लिए विद्युत सप्लाई होने के बाद उसका सोशियो इकोनोमिक ग्रोथ होना चाहिए । सोशियो इकोनोमिक ग्रोथ इसलिए कि उसको अनइन्ट्रेप्टेड बिजली मिले, उसकी फसल अच्छी पके और फसल का उचित दाम मिले तो सोशियो इकोनोमिक ग्रोथ होगी । मैंने पहले साल के, मैंने कहा कि 6 से 7 प्रतिशत इकोनोमिक ग्रोथ नहीं, जोधपुर डिस्काम कम्पनी में दिल्ली की एक संस्था कर रही थी, यह बढ़ना चाहिए था और टारगेटेड ग्रोथ कर दी इन अधिकारियों ने । पैसा इनके पास, वर्ल्ड बैंक का लोन, कर्ज लिया हुआ । इनको पता ही नहीं लगा यह इतने नाकारा हो गये इन्होंने टारगेटेड एप्रोच कर ली । जो एप्रोच इनको खुली करनी चाहिए थी वह खुली नहीं करके इन्होंने टारगेटेड एट एप्रोच कर ली और टारगेटेड एट एप्रोच के कारण इतना एफटर्स इन लोगों ने सिंसियरली नहीं किया । सबसे बड़ी बात थी कम्पनी बनने का मतलब है एक फाइनेंशियल कम्पनी के रूप में यह अधिकारी काम करेंगे, बल्कि इनका माइंडसैट ही चेंज नहीं हुआ इनकी मानसिकता भी नहीं बदली और मानसिकता बदले भी कैसे । यह अपने पुराने ढर्रे पर ही काम करते रहे । अपनी लीक से नहीं हटे । वह कल्चर इन कम्पनियों में आज तक नहीं है और उसका खामियाजा पूर्व सरकार को भुगतना पड़ा और आप सभी को, इनके वर्क कल्चर के कारण यह कम्पनियां

(श्री महीपाल मदेरणा)

जितनी ऊर्जावान होनी चाहिए थी जितनी इनमें गतिशीलता आनी चाहिए वह नहीं आ सकी ।

देखिये जोधपुर डिस्काम कम्पनी ने फीडर रेन्यूवेशन के नाम से हजार करोड़ रुपये खर्च किया । लूट मचाई ठेकेदारो ने । वर्क आर्डर देने से पहले ही जो परसेंटेज होती है वह पहुंची, इसके अंदर दस जिले आते हैं जोधपुर डिस्काम कम्पनी में, 11 केवी के 3400 ग्रामीण फीडर को दुरस्त करना था और हजार करोड़ रुपये व्यय करना था। इनको मिला हुआ था पैसा, इन्होंने यह रखा ही नहीं कि खर्च करो इसको जैसे भी कर सकते हो । इन्होंने वह फीडर लिये जो VR 8 से नीचे थे जिनकी VR 8 का मतलब यह है कि जहां पर काश्तकार के कुए ज्यादा हैं, बिजली की आपूर्ति के अंदर ट्रिपिंग होती है और उनके फीडर के ऊपर ज्यादा बिजली का लोड रहता है, शट डाउन नहीं करना पड़े उसके लिए उन्होंने उनको नहीं लिया । पता नहीं किसकी मनमर्जी से VR 8 के रूप में फीडर्स थे उनको लिया गया जिससे काश्तकारों को कोई फायदा नहीं हुआ, फायदा इन ठेकेदारों को, इन कम्पनी के आर्डर देने वाले इन अधिकारियों को हुआ । इस फीडर रेन्यूवेशन के प्रोग्राम में 10337 गांवों के लिए था 337 गांव के लिए । 11 केवी के फीडर के ग्रामीण आबादी के दोनों को मिक्स किया और सिंगल फेज के ट्रान्सफार्मर लगाने का था, एक भी ट्रान्सफार्मर सिंगल फेज के लगाने में, टेलीफोन करो आप, वह कह रहे थे टेलीफोन हैल्प लाइन नहीं चलती है, इनकी तो कोई लाइन नहीं चलती है । कोई वर्क कल्चर इनमें डवलप नहीं हुआ । इनकी सोच है, काश्तकारों को अपने उपभोक्ताओं को फायदा पहुंचाने की नहीं रही । सिंगल फेज ट्रान्सफार्मर के लिए 70 crores of rupees they have invested. और फिर भी आप यह देखिये कि गांव में 24 घंटे लाइट नहीं । वाहवाही लेते हैं, हमने छीजत कम कर दी। उसको भी कहूंगा मैं, क्या किया इन्होंने, एक ऐसी तस्वीर दिखा दी 10377 विलेज को कवरेज करेंगे। फीडर रिनोवेशन के प्रोग्राम को जो फीडर ले गये वो VR8 नीचे थे वहां पर इन्होंने जीएसएस लगा दिये जहां जरूरत नहीं थी, जोधपुर जिले में, जिनकी आवश्यकता नहीं थी और जहां आवश्यकता थी वह राज्य मंत्री ने रूकवा दी । जिन लोगों को बिजली की मांग आपूर्ति करना आपका धर्म बनता था रायकोरिया में रूकवा दिया नया जो है उन्होंने बिरसालू का रूकवा दिया । 132 केवी का जीएसएस था उसको रायमलवाड़ा से मतोडा ट्रान्सफर कर दिया

(श्री महीपाल मदेरणा)

कोई मापदण्ड नहीं, वहां स्वीकृत किया पहले । अरे भई पहले आपने जब जगह स्वीकृत कर दी जहां से फीडर लाइन जाएगी जहां ज्यादा कुए हैं, जहां 300-400 कुए को, बिजली के लिए आपको फायदा होगा वहां जाकर इन्होंने बतौडा के अंदर 132 केवी बनाया जहां 150 ही टयूबवैल नहीं है, 4-5 गांवों को मिलायेंगे ना तब भी वहां 150 टयूबवैल नहीं होते, पानी नहीं है, पानी नहीं है तो काहे की विद्युत लाइन खींची जाएगी और इस जगह बनाना जो स्थान उपयुक्त नहीं था मुझे पता नहीं किसके कहने से पहले स्वीकृत करके बाद में किसी न किसी दवाब में किसी ने किसी बात में यह हुआ है । बड़ा इनफीडर रिनोवेशन के प्रोग्राम में इन्स्यूलेटर और तार कहां गये, अभी का 1500 करोड के तार और इन्स्यूलैटर वह सारे के सारे इन्सूलेटर आपके काम आ जाते । (व्यवधान) उपाध्यक्ष महोदय, वह तार और इन्स्यूलैटर इतनी बढ़िया कम्पनी से लिये हुये थे उनका कोई हिसाब नहीं है, आपके स्टोर में कोई हिसाब नहीं है। कितने तार लगे थे, कितने इन्सूलेटर्स लगे थे, कितने विद्युत पोल थे । उनको स्टोर में लाकर इन्होंने जमा नहीं कराया । और वह सब ठेकेदार उतारकर बाजार में बेच खाये । बाजार में बेच खाया और तार को एल्यूमीनियम, हेण्डीक्राफ्ट के जो हैं, जो एक्सपोर्ट करते हैं, उनको बेच दिया ।

श्री महीपाल यादव (बानसूर): यह देश को बेच देंगे, बार्डर बेच दिया ।

श्री उपाध्यक्ष : माननीय सदस्य ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): अब पुरानी सर्विस लाइन लगी हुई थी । पुरानी सर्विस लाइन इतनी बढ़िया सर्विस लाइन थी, कहीं भी जोधपुर जिले के अन्दर सर्विस लाइन को चेंज करने का नहीं था । अन्वांटेड एक्सपंडीचर किया इन्होंने, अनफ्रुटफुल एक्सपंडीचर किया । लेकिन उन्होंने सर्विस लाइन हटाकर के नया केबल लगाया । केबल में कई खतरनाक चीजें हो गईं । नीचे से जा रहा है, या तो कोई पशु आयेगा तो इनका केबल है, यह ज्यादा वोल्टेज भी नहीं ला सकता है । कई जगह इनके नीचे-नीचे वहां पर लगे हुए हैं, एकदम नीचे जल जाए, केबल रिप्लेसमेंट करने के लिये ठेकेदार से बात करो और कई दिन बिजली आपके आपूर्ति नहीं होती है, काश्तकार को और वह भी खरीफ की फसल में, रबी की फसल में ।

श्री उपाध्यक्ष : माननीय मदरेणाजी, थोड़ा कन्क्लूड करें ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): Let me have a time. It is a very serious matter about it. You have remained as a Minister for Electricity and you must give us more time to point out all those points.

श्री उपाध्यक्ष : I am trying to give you more time. Kindly conclude.

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): सर, आप बताओ, आम आदमी की बात कौन उठाता है । गरीब की बात कौन उठाता है, उस काश्तकार की जिसके साथ समस्या है, जो जूझ रहा है, उसकी बात कौन उठाता है और इनको बताऊं तो सही, इनको अभी छीजत वाले बताऊंगा । इस फीडर रिनोवेशन के प्रोग्राम में, मुझे खुशी है कि राजस्थान की वित्त मंत्री और..

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): माननीय सदस्य, आप जैसा स्टेट फारवर्ड आदमी, सदन के रिकार्ड पर ऐसी बात ले जाए जो है ही नहीं ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): कौनसी?

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): फीडर रिनोवेशन में ट्रंकी बेसिस पर सारे काम चल रहे हैं, जिसमें ठेकेदार को ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): आप सुन लीजिये मेरी बात सारी ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): अब ठेकेदार को सारी चीज खुद ही लानी पड़ती है । वह खुद ही खम्भा लाता है, इंसुलेटर लाता है, सारा खुद ही परचेज करता है । कहां तो स्टोर की बात आ गई, कहां क्या बात आ गई ।

श्री रामचन्द्र सराधना (जमवारामगढ़): कहां मिल रहा है । एम.आर.पी. में पुराना सामान उतारते हैं । वह आपके रिकार्ड में आता है क्या। वह खबर नहीं है । वह बेच रहे हैं, ये सही कह रहे हैं ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): मैं और किसी को नहीं टोकता । मैं और किसी को नहीं टोकता । परन्तु मदेरणा साहब मेरे मित्र हैं और यह स्टेट-फारवर्ड हैं । (व्यवधान) यह खुद ही, उपाध्यक्ष महोदय, कहते कहते पिछली सरकार ने जो बिजली के दाम बढ़ाये, किसान के दाम बढ़ाये, उसकी बात भी कहेंगे ये ।

श्री रामचन्द्र सराधना (जमवारामगढ़): राठौड़ साहब, एक भी आदमी को मत बोलने देना । यह पुराना सामान उतार रहे हैं, ठेकेदार, वह कहां रख रहे हैं, यह पता है क्या आपको । पूरा माल जा रहा है, बाजार में ।

श्री महीपाल यादव (बानसूर): आपको तो कोई व्यापारी यह समझा दे कि सरकार ठेके पर चलाने में फायदा है तो वह भी कर सकते हो आप । आपकी तो हालत ही यह हो रही है ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, माननीय सदस्य ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैंने यह नहीं कहा कि उनको स्टोर से दिया जाता है । जो मैटेरियल उतारा गया, वह तो स्टोर में जमा कराते, वह नहीं हुआ । उसका क्या होगा, जो जमा नहीं कराया इन्होंने ।

श्री उपाध्यक्ष: कोई स्पेस्फिक गांव के अन्दर..

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): जिन अधिकारियों ने नहीं किया यह काम, जे.ईएन. नहीं गये, ए.ईएन. नहीं गये, जिसने मैटेरियल का पता किया, वह काम कर चुका है और माल आपका बाजार में बिक चुका है, उसकी जांच होनी चाहिए । इतना बड़ा, अगर 1500 करोड़ का घोटाला मानते हैं तो, मुझे नहीं मालूम । (व्यवधान) हां, आपने कहा है । उसको देखा जाना चाहिए।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): आप इनकी बात पर विश्वास कर रहे हो, मेरे को आज मालूम पड़ा।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): नहीं, नहीं ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ऐसे भोले आप नहीं हो। मैं फिर आगाह कर रहा हूं । आप धोखा खा जाओगे, मदेरणा साहब । यह बहुत +++ लोग चारों तरफ हैं, इनसे थोड़ा सावधान रहें आप ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): इनकी बात पर तो विश्वास कतई नहीं करें ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): देखिये, जनरेशन के प्रोग्राम में, राजस्थान की मुख्य मंत्री ने, वित्त मंत्री और विद्युत मंत्री ने ।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): इन्होंने परसरामजी मदेरणा साहब की बड़ी-बड़ी फोटो छापकर धोखा दिया था । फिर उसी प्रयत्न में हैं । इनसे सावधान रहें आप ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): परसरामजी की बात कहकर क्यों प्रोवोक कर रहे हो । सच्चाई बहुत कड़वी होती है । फिर मुझे कुछ कहना पड़ेगा, तिवाड़ीजी । इसलिये आप डिबेट होने दो, अब ।

श्री गुलाब चन्द कटारिया (गृह मंत्री): अब आप ही बचे हो, इनके लिये कहने वाले, आप ही कहोगे ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): अब आप डिबेट होने दो ।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): अब आप मदेरणाजी के खिलाफ कहने वाले आप ही बचे हो, तो कहो ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): तो आपको क्या तकलीफ हो रही है ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): पर आपका मन मान जाएगा क्या?

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): क्या मान जाएगा?

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): जिन मदेरणा साहब को आपने आदर्श माना ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): हां, हां मानते हैं ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): उनके ऊपर मन मान जाएगा आपका?

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): हां, हां, मानते हैं । माना था । मानते हैं और मानेंगे । आपको क्या तकलीफ है, आप बैठिये ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): तो फिर आपके पीछे वालों को भी कह दो ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): आपकी तरह नहीं हैं जो रोज-रोज पाले बदलते हो । आप फालतू बात करते हो ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): आप फिर फोटो लगाएंगे। आप फिर फोटो लगाएंगे, फिर धोखा देंगे ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): हम लगायेंगे, आपको क्या तकलीफ हो रही है । फिर आपको क्या तकलीफ हो रही है ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ये हमारे मित्र हैं, इसलिये तकलीफ हो रही है ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): आपके बड़े मित्र हैं । आपके जैसे मित्र हो जाएं तो उसका भगवान मालिक है ।

श्री महीपाल यादव (बानसूर): हमें तो ताज्जुब हो रहा है तिवाड़ीजी पर, कि आप इतने गम खाकर भी हंस रहे हो ।

श्री नरपत सिंह राजवी (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री): मेरे भाई को तो बख्शो भाई साहब ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): हो, हो, भाई । आपके भाई, इनके भाई ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): 2003 में जब वसुंधराजी प्रदेशाध्यक्ष बनकर आई थीं तो सबसे ज्यादा सांप आपके दिल पर लौटे थे । आपका मुख्य मंत्री बनने का जो दिमाग में घूम रहा था, सबसे ज्यादा चकनाचूर वही हुआ था । वही 4 साल आप अपनी फ्रस्ट्रेशन से बाहर नहीं आ सके ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): देखिये, साहब, हमारे मारवाड़ के सबसे पुराने किसानों के नेता थे और जब 2003 में आपने उनका फोटो छापा तो हमने भी देखा, कहीं कुछ होगा । किसानों के हित में कुछ होगा ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): 2003 में नहीं छापी ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): 1998 में छापी थी ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): क्या किया आपने । (व्यवधान) और आप कह रहे हो, हमको क्या हक है, हमारे मारवाड़ के नेता हैं वे, हमको हक नहीं है क्या ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): 1998 में सारे राजस्थान में परसरामजी का नाम लेकर वोट ले लिये और फिर इतना बड़ा धोखा हुआ कि क्वश्चन अवर के अलावा मदेरणा साहब ने इस हाऊस में रहना भी उचित नहीं समझा ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, माननीय सदस्य, बैठिये ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): और आप जैसे महान आदमी यह कहें कि हम फिर ऐसे ही करेंगे तो यह तो ठीक नहीं लगता । (व्यवधान)

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): आप मुख्य मंत्रीजी की +++ और अब बड़े +++ बन रहे हो । हमसे कहलवाना चाहते हो ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): क्या कहलवाना चाहते हैं ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): +++ बन रहे हो अब । रोज तो हाऊस में नहीं आयेंगे । आपको बाइ-पास कर दिया । नये डिप्टी चीफ व्हिप बना दिया । क्या बात करते हो ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): एक दिन कभी हाऊस में रुके हों तो बता दो ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): यह तो चट्टान की तरह मुख्य मंत्रीजी के साथ हैं, चट्टान की तरह ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): हो-हो, एक आप चट्टान और एक ये हैं।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): और अगर घर में कोई बात हो तो घर में करेंगे । आपसे नहीं पूछेंगे । (व्यवधान) ऐसा है इतना कमजोर नहीं हूं । यदि घर में कहनी है तो कहूंगा । और आपके कहने से ... (व्यवधान)

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): वह जसोल में अफीम किसने खाई थी, जसोल में । क्या बात करते हो ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): अफीम जिसने खाई थी, उसने खाई होगी । यह तो आपका षड्यंत्र था ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): जसोल में अफीम किसने पी । जसोल में किसने अफीम पी थी ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): आपने खूब षड्यंत्र किया । क्या कर लिया?

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): बात करते हो । अब आप डिबेट होने दीजिये ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): वहां पर षड्यंत्र किया आपने। फिर क्या कर लिया ।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, विराजिये । महावीरजी, विराजिये ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): यह राजनीति पर डिबेट नहीं है, किसी रोज कर लेंगे अगर करनी हो तो ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): वहां षड्यंत्र किया आपने, फिर क्या कर लिया?

श्री नरपत सिंह राजवी (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राजगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य को एक ही निवेदन करना चाहता हूं, मदेरणा साहब और भैरोंसिंहजी शेखावत साहब, दोनों ही इस सदन में एक ही साथ करीब-करीब आये थे और दोनों ही किसान थे । माननीय शेखावत साहब को तो उप राष्ट्रपति पद से नवाजा था पार्टी ने और इनको । क्या हुआ?

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): आपको क्या हुआ?

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): तकलीफ होती है ।

श्री नरपत सिंह राजवी (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री): क्या हुआ, तकलीफ होती है ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): सन् 1957 वाले सब उप राष्ट्रपति बन गये क्या? सन् 1957 में बहुत से लोग आये थे, 67 में आये थे, 72 में आये, कोई मुख्य मंत्री बन गया । वे पहली दफे आकर मुख्य मंत्री बन गयीं । ये बन गये क्या? इन बातों में कुछ नहीं रखा है ।

श्री सांवर लाल (सिंचाई मंत्री): किसी किसान को बनाने का आपका सपना है, सोच है कि नहीं है, यह तो बता दो । (व्यवधान) कांग्रेस पार्टी किसी किसान को कुर्सी पर बैठाना चाहती है कि नहीं ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): आप तो उनके आगे यूं कर रहे थे ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): अगली दफे अब आपको डाक्टर साहब, प्रोजेक्ट कर देना, हम आपके साथ हैं डाक्टर साहब ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): उपाध्यक्ष महोदय, यह चर्चा तो बच्चे करते हैं गांव में बैठकर । (व्यवधान) बच्चे भी अच्छी चर्चा करते हैं, इससे ज्यादा ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, आप बीच में मत आओ । (व्यवधान)

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): माननीय प्रद्युम्नसिंहजी, मदेरणा साहब की और 1957 में आये बहुत सारे लोगों की तुलना नहीं की जा सकती है ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, बीच में मत आओ आप ।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): मदेरणा साहब, हमारे समाज के लिये देवता तुल्य हैं, भगवान तुल्य हैं । इसलिये उनके साथ क्या किया, उनके साथ क्या हुआ?

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): आप तो आग लगाने पर तुले हो । आप तो आग लगाने पर तुले हो । हमें मालूम है ।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): हम तो पूरी की पूरी 1958 में सरकार ले आये उनके नाम से ।

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): उपाध्यक्ष महोदय, इनकी नीयत तो अब भी ठीक नहीं है । उपाध्यक्ष महोदय, नीयत अब भी ठीक नहीं है ।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): यह गहलोत साहब के अलावा किसी को नहीं मानते हैं ।

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): अभी टीवी पर माननीय गहलोत साहब ने स्टेटमेंट दिया । पूछा टीवी वालों ने कि अगला मुख्य मंत्री तो किसान के लिये, कांग्रेस वाले कह रहे हैं, किसान होगा, तो पहले भी तो किसान ही था, यह कहा । तो नीयत तो बहुत साफ है, मदेरणा साहब । इसलिये आपका सम्मान इस सदन में है ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): असली किसान का रक्त दौड़ता है इनकी धमनियों में । इसलिये ये ज्यादा दिन चुप रहने वाले नहीं हैं । रिछपालजी मिर्धा कितने दिन रहेंगे, पता नहीं, पर वह ज्यादा दिन चुप रहने वाले नहीं हैं ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): अब आप कटु सत्य सुनिये । आप कुछ नहीं जानते हैं ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): आप इतनी अकाल पर गम्भीर चर्चा को डाइल्यूट करने की कोशिश मत करें । आप सुन लीजिये, आपने कहा, मैंने कहा और यह सब आपने जो भी कहा, कथन पर विचार होगा, ऐसी बात नहीं है ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): यह हुई कोई बात ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): अब आपका वर्ल्ड बैंक खतम हो गया, नया राज बन गया । राजस्थान की यशस्वी मुख्य मंत्री वसुंधराजी बन गईं, विद्युत मंत्रीजी हैं, उन्होंने इस प्रोग्राम को, जनरेशन को, और फीडर रिनोवेशन के प्रोग्राम को अपने हाथ में लिया। She too has initiated the programme of feeder renovations. It is good. बल्कि इनीसिएशन इनिशियली गुड स्टार्ट हुआ । और जब स्टार्ट हुआ तब लगा कि वाकई बहुत सारा काम फीडर रिनोवेशन का जो गांव की बिजली में लोगों की ट्रिपिंग होती है, लोडिंग होती है, वह मिलेगी । फिर भी यह 500 किलोमीटर की दौड़ थी, बड़ा फाइव ईयर प्रोग्राम आपने लिया परन्तु आप इतना जल्दी दौड़ने के चक्कर में फाइनल रेस में पिछड़ गये । मैंने कहा न इनके प्लान नॉक डाउन हो गया और बैलेंस शीट

(श्री महीपाल मदेरणा)

में आप देखिये इनके सभी जगह घाटा ही घाटा है इतना बड़ा घाटा इन कम्पनियों को होना It is a serious indication that these companies are not doing well. It is a question mark. और इस कारण यह सारा का सारा कम्पनीज का जो हुआ है, इनका उत्पादन नहीं, इनका वितरण नहीं, इन चारों कम्पनियों में, कंधों पर इतना भार डाल लिया, कम्पनी बनाने का अर्थ क्या है? There will be efficiency.

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): कितनी सब्सिडी दी है । 6470 करोड़ रुपये...(व्यवधान)

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): एक मिनट । आप देखिये, आप मेरे को कह देने दो । सब्सिडी देने के बाद भी घाटे में है ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): पर आज तक आपके अशोकजी के समय में तो इनको डूबोने का काम किया। (व्यवधान) 6470 करोड़ का अनुदान दिया है ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): आप इनको मत बचाओ । मैं बोल रहा हूं । सुनते जाओ । इनकी कान की जूं रेंगने दो । आपको पता लगे कि वास्तव में स्थिति क्या है इन कम्पनियों की । इनकी एफिशिएंसी बढ़नी चाहिए थी । अच्छी होनी चाहिए थी । क्या हुआ? सिर्फ एक परिवर्तन पहले दो सालों में दिखाई दिया । कुछ दिनों के लिए इन्होंने काली-काली टाई जरूर लगायी । मैंने कहा कि वाकई यह टाई लगाकर हम काश्तकारों के ग्रामीणों के काम करेंगे? बल्कि जब टाई लगाकर यह आते थे, देखते हुए डरते हुए, तो अंग्रेजी हिन्दुस्तानी लार्ड साहब लगते थे । मैंने कहा कैसे लग रहे हो या तो राजस्थानी वेशभूषा पहन लो या कोई ऐसी ड्रेस दूसरी कर लो, यह टाई लगाने का सिस्टम तुमने क्या कर दिया? (व्यवधान) नहीं-नहीं, इन्होंने नहीं, यह कम्पनी वालों के सभी कर्मचारियों को लगानी आवश्यक थी । लगाई थी इन्होंने, मैंने देखा है स्वयं । काली टाई ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): मोनेटरिंग हो रही थी इसीलिए सही आपूर्ति हुई दो सालों में । आप सही कह रहे हो यह बात ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): मोनेटरिंग टाई लगाने से नहीं, विद्युत आपूर्ति सही ढंग से करने पर, डिस्टर्ब नहीं करने पर, विद्युत जनरेशन

(श्री महीपाल मदेरणा)

करने में लगानी चाहिए थी । मैं वही बात कह रहा हूं, टाई लगाने का काम नहीं था । इनको अंग्रेजी लार्ड साहब बना दिया आप लोगों ने । काम करना चाहिए था इनको । एफिशिएंसी लानी चाहिए थी । वर्क कल्चर लानी चाहिए थी । वह तो हुई नहीं, टाई लगाकर यह नये साहब बन गये...(व्यवधान)

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): टाई तो आपके टाइम पर लगाते थे, साहब ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): नहीं, अभी भी लगाते थे ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): मैंने तो इनको देखा नहीं, काली टाई में कभी, आप देख लें तो मेरे को बता दो, मैं देखना चाहूंगा।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): उन्होंने सुन लिया होगा कि आप जो देखेंगे तो टाई पर उनको...(व्यवधान)

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): मैं देखना चाहता हूं उनको काली टाई में, मैंने नहीं देखा ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): देखिये, आपने विद्युत नीति बनायी। 2004 की विद्युत नीति बनायी, उस विद्युत नीति में आपने कई घोषणाएं कीं बल्कि वह ठोस नीति नहीं थी । काश्तकार के पक्ष में नहीं थी । काश्तकार महरूम रहा । चार साल में बिजली के कनेक्शन नहीं ले सका और कनेक्शन अभी इस साल आपने खोले हैं । मेरे जोधपुर जिले के अन्दर इन्होंने 2800, 2757 विद्युत कनेक्शन देने का कहा है । उसमें से 2600 कुछ कनेक्शन की इन्होंने डिमांड नोट भर लिये । डिमांड के बाद, डिमांड भरने के बाद सब कुछ इन्होंने पैसा ले लिया । 757 कनेक्शन आज की तारीख तक रिलीज किये हैं । जब आपने डिमांड नोट ले लिया, पैसे ले लिये । आपने उनको मैटीरियल दे दिया तो क्या कारण है कि आप अभी तक रुके हुए हो और उनको कनेक्शन क्यों नहीं रिलीज हुआ? आपने उनके साथ धोखा किया । आपकी नीति के खिलाफ उन्होंने काम किया और आपकी नीति थी कि उनको मिलना चाहिए ।

दूसरा, जो था कि यह जो विद्युत लाइनें जो थीं उनके तंत्र को मजबूत करने के लिए हम बहुत कुछ करेंगे । घरेलू कनेक्शन देने के लिए वन पाइंट पर आते हैं यह और उसको घरेलू कनेक्शन देने वाले उपभोक्ता के साथ जिस तरीके से इनके ठेकेदारों का व्यवहार होता है, शायद ही किसी के साथ होता

(श्री महीपाल मदेरणा)

हो। वहां तक लाकर कहते हैं कि अब आपके आगे कनेक्शन नहीं लगाएंगे । आगे कनेक्शन इसलिए नहीं लगाएंगे, केबल कम्पनी के द्वारा दिया गया और कहते हैं कि इतना केबल लगेगा । इस केबल के हमें पैसा आपको देने पड़ेंगे । वह कंजूमर, जो डोमेस्टिक कंजूमर है, उसको केबल का पैसा देना पड़ता है और वह पैसा आप, यह कम्पनी है जो 1750 रुपये देने के बाद उसमें चार्ज होना चाहिए । यह उस केबल के लिए, उस केबल के लिए भी पैसे मांगते हैं ।

अभी कह रहे थे मीटर । इलेक्ट्रोनिक मीटर । खूब लगाओ आप । हमने लगाये थे । टोक का बाई-इलेक्शन में मीटर लगाया थे, सी.एम.डी. अजमेर के करणीसिंहजी थे, उखाड़-उखाड़ कर लगाये, जैसे-जैसे मीटर लगे वैसे वैसे हमारा उम्मीदवार उखड़ गया और जहां-जहां आपने मीटर लगाये है वहां-वहां आपका भी मीटर जो फास्ट चल रहा है न और जिस ढंग से चल रहा है, उसको समझ में नहीं आता है । वह कहता है कि साहब, यह मीटर ऐसा दौड़ता है ऐसी, मैंने कहा कैसा दौड़ता है तो सर, यह तो मिल्खा सिंह दौड़ता है वैसा मीटर दौड़ता है और बहुत तगड़ी तेज गति से, एक यूनिट की जगह चार यूनिट निकालता है यह । आप उसको टैस्ट करने का कहो तो इनके टैस्ट वाले, इनकी लेबोरेटरी नहीं, समय पर इनका टैस्ट करने का आदमी नहीं जाता और क्या व्यवस्था कर दी? 1500 रुपये का आता है, आपके साथ, महीने का है, उसमें पीछे लिखा है कि इतनी लाइट जलेगी, इतना वोल्टेज होगा, इतनी लाइट जलेगी, एयर कंडीशनर चलेगा, 480 होना चाहिए, यह होना चाहिए, आदमी इस महंगाई के जमाने में विद्युत, डोमेस्टिक विद्युत से ज्यादा आपका मीडियम कंजूमर त्रस्त है । चाहे किसी शहर में रह रहा हो और यह मीटर दौड़ता है । 1500 आना चाहिए, जिस जगह यह निकल कर बिल आता है, कोई 4000-5000, इस मीटर को वापस दिखाना चाहिए । इस मीटर की वजह से लोअर मिडल क्लास एण्ड अपर मिडल क्लास, यह दिखाना चाहिए आपको और मीटर खरीद में मामला ओर भी तगड़ा है । इन कम्पनियों के सी.एम.डी. मालामाल है यह । यह भी पता करना चाहिए । इसकी भी जांच होनी चाहिए । मुझे नहीं पता कि यह फीडर रिनोवेशन में, जनता अगर आप नहीं करोगे, जनता की रिनोवेशन, उसकी समस्याओं का मुश्किल समाधान तो जनता आपको चार्ज-शीट तो जरूर दे देगी ।

अपने मिनिस्टर साहब, मिनिस्टर कन्सर्न हैं, स्टेट मिनिस्टर हैं। मंत्रीजी तो आज आये नहीं । टेम्प्रेरी ही ले लेते आप । आप तो फालतू बैठे हैं।

(श्री महीपाल मदेरणा)

इस सदन में कोई बैठने वाले आप ही आप हैं । आप ही दे सकते थे क्योंकि पहली शुरूआत आप ही ने की थी, अन्तिम भी आप कर देते । Beginning and closing would have been better. उस दिन मंत्री महोदय हमारी बैलेंस शीट बता रहे थे पांच साल की । हम कह रहे हैं कि भाई, आपके चार साल की बैलेंस शीट हम अब बताएंगे । उत्पादन और प्रसारण और वितरण, कुछ नया नहीं हुआ । अपना प्रोडक्शन भी नहीं हुआ । आपके जो नये-नये जो लगने वाले थे, चाहे धौलपुर में लगो, चाहे आपके गिरार के लगो, चाहे लिग्नाइट के लगो, एक्चुअली प्रोडक्शन उनमें शुरू नहीं हुआ और देखो तो सही इनके कार्य-कलापों को, यह जितने भी अध्यक्ष हैं, सी.एम.डीज. हैं, इन्होंने इनकी व्यवस्था से, इनकी नीति से काश्तकार का आंसू ला दिया है और वह आंसू आपको भाजपा को बहुत भारी पड़ेगा । उपभोक्ता यह बर्दाश्त नहीं करेगा । इसी सदन में राज्य के पूर्व मुख्य मंत्री ने कहा था कि जो तुम नीति लगा रहे हो, यह सब बर्दाश्त काश्तकार नहीं करने वाला लेकिन वह तुम सब को हजम कर जाएगा ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): किसने कहा?

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): पूर्व मुख्य मंत्री भैरोंसिंहजी शेखावत ने विद्युत की डिमांड पर यह बात कही थी । It has been quoted from there. आज मंत्रीजी ने...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): अपने तत्कालीन उस वक्त के, उसके जवाब में तत्कालीन मुख्य मंत्री ने जो बात कही वह भी कोटेड है, वह भी कह दो आप ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): तत्कालीन मुख्य मंत्री...(व्यवधान) आप उनके जैसे बोल्ड ही नहीं हो । आप उनके जैसे स्ट्रांग ही नहीं हो, यह वुमैन होकर वह बहुत स्ट्रांग है आपसे । देखिये, मेरी बात तो...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): नहीं-नहीं, वह अभी वाले मुख्य मंत्रीजी । वह जो तत्कालीन, भैरोंसिंहजी ने जब प्रतिपक्ष के नेता के रूप में कहा तब तत्कालीन मुख्य मंत्री अशोकजी ने कुछ कहा था?

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): मैं वही, देखिये, परिवहन मंत्रीजी ने कहा वही मेरा दुर्भाग्य रहा । मैं उस समय सदन में था नहीं बल्कि यह जिस आदमी ने जो बात कही गयी है और बड़ी सोच-समझकर गम्भीरता से बात

(श्री महीपाल मदेरणा)

कही, वही मैं आपको वापस, आप ही की बात आपको बता रहा हूं । मुझे लगा कि जो राज्य मंत्री है वह बहुत युवा हैं, एनर्जेटिक है, यंग इमेज है इनकी और गुड होटेलियर है । सोचा, इनकी कम्पनियों में एक परिवर्तन आयेगा । विश्वास हुआ कि मुख्य मंत्रीजी के इरादों को मुख्य मंत्रीजी के बजट में जो जो भी फीडर रिनोवशन प्रोडक्शन जनरेशन के काम को जो दर्शाया है, उनमें आमूल चूल परिवर्तन करके राजस्थान को एक आत्मनिर्भर बनायेंगे । अब लगता है वह स्वयं तो असफल हुए जो हुए । इसका कारण not given a leadership. He should have given a leadership in the companies. फाइनेंशल वाइबल नहीं बना सके इन कम्पनियों को । एक बात आई, कान में कह दिया एक भी सी.एम.डी. का व्यवहार, जयपुर के सी.एम.डी. का व्यवहार कुशल नहीं है । इतना रूखा, वह क्या समस्याओं का समाधान करेगा? अगर जन-प्रतिनिधि उसको कहता है और कहकर टेलीफोन पर बात करता है तो उसका रूखा जवाब देता है । यह इन काश्तकारों की समस्याओं और शहरी उपभोक्ताओं की समस्याओं का समाधान करने के लिए नहीं है । ऐसे रूखे सी.एम.डी., जो फाइनेंशल वायबल अपनी कम्पनियों को नहीं बना सके, इनको तो तुरन्त प्रभाव से हटा देना चाहिये । प्रोडक्शन (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय मदेरणाजी ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): बस एक मिनट, सुन तो लें, कौन सुनायेगा इनको? यह तो आप सुन लें, थोड़े दिन हैं, चलेगा, कुछ काम होगा। लोगों की आपूर्ति सही ढंग से होगी । आपको स्वयं मालूम है, आप स्वयं जाते हैं और आपको स्वयं को वहां डाक बंगले में लोग घेरते हैं और आप मुझे कह रहे हैं चुप रहो । थोड़ा समय दे दो । आप नहीं बोलते हैं तो मुझे दे दो ।

श्री उपाध्यक्ष: नहीं, आपने कह दी ना । मुख्य बात तो जो कहनी थी, वह सब आपने कह दी ऐसी ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): देखिये, यह अधिकारी आपको नहीं गिनते । युवा होने के बाद एनरजेटिक व गुड होटेलियर होने के बाद भी इसको बेबी मिनिस्टर गिनते हैं । आप थोड़ी बेबी मिनिस्टर की इमेज चेंज कराओ । दिशा और नई चीज सब हो जायेगी अन्यथा तो जैसी स्थिति है, इसमें विपरीत स्थिति है, परिस्थिति है । बहुत सारी बातें थीं, एक बात जरूर कहूंगा । वरिष्ठ

(श्री महीपाल मदेरणा)

सदस्य हैं राजाखेड़ा के, उन्होंने मुझे कहा, सीनियर मैम्बर की बात, आज मैं नहीं बोल रहा हूं ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): आपके मिनिस्टर हैं, उनमें काफी तगड़े मिनिस्टर हैं ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): हैं सदन में? (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): आप इनके दबाव में मत आओ साहब ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): इनके दबाव में नहीं, किसी के दबाव में नहीं ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): इन्होंने सब जगह प्रचारित भी कर दिया कि आज मदेरणा साहब पूर्व मुख्य मंत्रीजी के खिलाफ नहीं बोलेंगे और मैंने बिलकुल मुख बंद कर दिया है । आप इनके दबाव में आते हो, औरों को कहना नहीं चाहिये इनको । (व्यवधान)

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): अभी दस दिन का हाउस चलेगा, कभी और हो जायेगा ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): तब फिर ठीक है ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, अब आप कन्क्लूड करें ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): मैं इतनी गम्भीर समस्या पर कह रहा हूं । अकाल में जहां रोज काश्तकार को रोजगार चाहिये, विद्युत जिससे उसकी सोशल इकोनोमिक ग्रोथ रूकी हुई है, इतना गम्भीर है । काश्तकार के लिए अपन दो शब्द कहते हैं तो आपको और मुझे बड़ी आराम से नींद आयेगी और नहीं तो जिसका प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, असत्य आश्वासन उनको अपन टिकायेंगे तो वह अपने को टिकाने में कोई कमी नहीं रखेंगे ।

राजाखेड़ा से आने वाले सीनियर माननीय विधायक महोदय की बात कहूं । उनके राजाखेड़ा में अम्बिका माता का जी.एस.एस. पिछले पांच साल से बन रहा है । कोई देखने वाला नहीं इस कम्पनी को । पांच साल में पूरा नहीं किया । पांच साल पहले इसका काम शुरू हुआ । खम्भे खींच दिये, लाइन खींच दी, यह सब खींच दी गयी और वह अभी भी इन-कम्पलीट ऐसी अवस्था में है जिसका उपयोग नहीं हो रहा है । पांच साल का समय तो बहुत ज्यादा होता है । इसको छह महीने से ज्यादा लगना नहीं चाहिये । दूसरा कई जिलों

(श्री महीपाल मदेरणा)

के अंदर मेरे यहां तो काम एम.एल.ए. लैड में विद्युत कम्पनियों ने किये हैं । मुझे आश्चर्य हुआ कि कई जिलों में एम.एल.ए. लैड, जो विद्युत फीडर, चाहे छोटे-मोटे कनेक्शन देने का हो या कोई फीडर रिनोवेशन का प्रोग्राम हो, वह अपने एम एल ए लैड से देना चाहता है तो इन कम्पनियों को देने में आपने रोक लगा दी । (व्यवधान) हां, रोक लगा दी । और यह लिखित में आदेश है। आप माननीय मुख्य मंत्रीजी की जानकारी में लायें, इस तरह से रोक नहीं होनी चाहिये । छोटे-मोटे ..(व्यवधान)

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): आपने कभी नहीं कहा । आप खुद मीटिंग में आते हैं अपन बैठकर बात करते हैं, अब आपके मन में यह था कि रोक हटनी चाहिये, सुझाव आया नहीं आपका ।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): पंचायत राज मंत्रीजी, आपकी तरफ से रोक नहीं है । इनके विभाग के आदेश निकले हैं जिसके तहत एम.एल.ए. लैड से जो काम होते थे, उसके ऊपर इन्होंने रोक लगा दी कि साहब ऊपर से आदेश हैं कि एम एल ए लैड के जरिये बिजली के कोई काम नहीं होंगे । धौलपुर जिला और भरतपुर की कह रहे हैं सारे लोग । यहां कोई आरोप नहीं लगा रहा हूं । जो स्थिति है वह आपको अवगत करा रहे हैं और पंचायत राज विभाग से कोई संबंध नहीं है इसका, लेकिन विद्युत विभाग द्वारा यह रोक लगा दी गयी है । आपकी जानकारी में है और रोक लगी है, इसको हटा दीजिये, कहां दिक्कत आ रही है? हटवा दीजिये आप, कहां दिक्कत आ रही है इसके अंदर ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह छीजत की बात हुई । यह छीजत की बात कही गयी । छीजत इन्होंने एक प्रोग्रेस रिपोर्ट दी, मंत्रीजी को भी दी होगी और उसमें यह कहा कि हमने 15 प्रतिशत छीजत कम की है । किसी ने कहा हमने 3.85 जयपुर में कम की है, अजमेर में 4.53, जोधपुर डिस्काम में 8.70 और टोटल यह कहते हैं 5.47 और जो सी ए जी की रिपोर्ट पढ़ी गयी, उससे यह परिलक्षित होता है कि आपकी छीजत कम नहीं हुई, आपकी छीजत ज्यादा बढ़ी है । इसलिए सी.ए.जी. की रिपोर्ट और उनकी रिपोर्ट को किसी प्राइवेट एजेन्सी से आपको जांच करानी चाहिये और जिस-जिसने आपको छीजत के बारे में गलत बताया है, उन सभी अधिकारियों के खिलाफ कार्यवाही होनी चाहिये ।

श्री उपाध्यक्ष: धन्यवाद । आ गया सारा करीब-करीब ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): एक मिनट । एक प्रोग्राम और है राजीव गांधी विद्युतिकरण योजना, ऐसी योजना जो 349 करोड़ की जोधपुर जिले की बनी । हमको कहते रहे, हम जाते हैं दौरे के अंदर, हमको कहते हैं साहब विद्युत कनेक्शन, हमको तो घरेलू विद्युत कनेक्शन मेरे एरिये में तो दिये ही नहीं और वह लठैत से शेरगढ़ वाले ले गये, 1200-1300 कनेक्शन कर दिये। मैंने कहा यह मापदण्ड कौन से? हमको कहते हैं कि हमने केन्द्र के पास आपकी योजना भेज दी । इन घरों के विद्युतिकरण के लिए पैसा नहीं आया और इन्होंने 8.7 लाख 91 विलेजेज का विद्युतिकरण के लिए खर्च किया है और सारे के सारे शेरगढ़ में कर दिये । उस लठैत ने करवा लिये । आपके भी हुए हैं, मेरे नहीं हुए ।

श्री उपाध्यक्ष: वह छोड़ो, बिजली सप्लाई में पिछड़ा हुआ था जी । खेतसिंहजी ने कभी परवाह नहीं की इसकी ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): नहीं साहब, डबल-डबल लाइनें खींची हैं इन्होंने । इनके तो डबल-डबल लाइनें हैं । तार पर ही चल रहा है पूरा, सड़क हो, तार हो, विद्युत हो, स्वास्थ्य हो, पानी हो, उसमें अब यह सम्पन्न, एक समग्र विकास हुआ है । समग्र विकास में आपका योगदान है, खेतसिंहजी का योगदान है । मैं यह कह रहा था कि जोधपुर डिस्काम कम्पनी में 67 करोड़ का 2006-07 का घाटा और इस साल का एक हजार करोड़ का घाटा जोधपुर डिस्काम कम्पनी में होगा । कैसे चल रही है यह? वह तो देखना चाहिये, कैसे करेंगे? सब्सिडी दीजिये । घाटे में कैसे काम करेंगी कम्पनियां और ज्यादा नहीं कहकर बस इतना ही कहूंगा कि इन्होंने अपने वित्तीय घाटे को कम नहीं किया । इनकी ड्यूटी थी छीजत कम की जाये । फीडर रिनोवेशन प्रोग्राम को अच्छी तरह से चलाया जाये और इस कम्पनी को फाइनेंशियल वायबल बनाया जाये । यह वित्तीय घाटा कमजोर करने में जो रहे हैं उन सब के खिलाफ सख्त कार्यवाही होनी चाहिये । इसके अलावा (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: अब इसके अलावा नहीं । दूसरी बार मौका देंगे ।

श्री महीपाल मदेरणा (भोपालगढ़): बहुत सारी बात है । एक बिलों को माफ करने की बात थी । बड़ी-बड़ी बात है सर, इनको कौन बोलेगा? अच्छा छोड़ो । अब अकाल के लिए कुछ कह दूं । (व्यवधान) थैंक्यू, इन्हीं शब्दों के साथ आपने मुझे समय दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री रणवीर सिंह गुढा । एक नेशनल पार्टी के सदस्य इंतजार कर रहे हैं ।

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अकाल, बिजली के बारे में माननीय सदस्यों ने अपने विचार रखे । मैं भी अपने आपको इसमें शामिल करते हुए पांच मिनट का समय लूंगा । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बिजली के बारे में सदन में माननीय सदस्यों ने अपने विचार रखे । बिजली एक तरफ तो हमारे प्रदेश में किसान, जिसकी स्थिति बहुत ठीक नहीं है और भूमि का जो जल स्तर है, वह भी बहुत नीचा है और दूसरी तरफ यह किसान पर भारी, ऊंची कीमत का जो बिल लादा जाता है, हमारे देश में पंजाब, केरल, तमिलनाडु के किसानों की बिजली माफ है । वहां के किसानों को बिजली मुफ्त में दी जाती है । उपाध्यक्ष महोदय, पंजाब में किसान सम्पन्न हैं, साधन सम्पन्न हैं । वहां पूरे टाइम, 24 घंटे बिजली आती है और वहां पूरे साधन सम्पन्न होने के बावजूद वहां के किसानों को इतनी सुविधा दी जाती है । हमारे प्रदेश में यहां का किसान पिछड़ा हुआ है, लेकिन उसको बिजली मुफ्त में नहीं दी जाती । मैं आपके माध्यम से यह चाहूंगा कि हमारे प्रदेश में किसान को बिजली मुफ्त में दी जाये । जब पंजाब में हो सकता है तो राजस्थान में क्यों नहीं? जब पंजाब में हो सकती है तो राजस्थान में क्यों नहीं?

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मैं यह भी कहना चाहूंगा कि जिस प्रकार से केन्द्र ने किसान का कर्ज माफ किया उसी तर्ज पर अगर राज्य सरकार किसान के प्रति इतनी गम्भीर है तो भूमि विकास बैंक हैं, सहकारी बैंक हैं उनसे भी कम से कम 25-25 हजार रुपये का कर्ज माफ राजस्थान में राज्य सरकार किसानों के लिए करे ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से यह भी कहना चाहूंगा कि बिजली कम्पनियां जो हैं, बिजली कम्पनियों का उद्देश्य है मुनाफा, लाभ कमाना, उनको जन भावना से कोई मतलब नहीं है, लॉ एण्ड आर्डर से भी उनको कोई मतलब नहीं है तो, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहूंगा कि किसान का अतिकतर रेवेन्यु इन कम्पनियों के पास जाता है तो हमारी सरकार के पास में व्यवस्था का काम है और सरकार घाटे में, सरकार के ऊपर इतना सारा कर्ज लादा हुआ है तो ऐसी व्यवस्था हो कि इन कम्पनियों की भी कुछ जिम्मेदारी बनती है लॉ एण्ड आर्डर के लिए, किसान के लिए ।

(श्री रणवीर सिंह गुढा)

दूसरा, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मैं यह भी कहना चाहूंगा कि आये साल, हर साल बजट सत्र में अकाल के ऊपर चर्चा होती है । जैसा खारची से आने वाले माननीय सदस्य ने कहा था कि महाराजा गंगा सिंहजी जो डेजर्ट के ऊपर गंगा नहर लाये उसके कारण आज भी वहां अकाल नहीं पड़ता है । हजारों करोड़ रुपये हम अकाल के लिए खर्च करते हैं और उस अकाल का कोई पुख्ता इंतजाम हम आज तक नहीं कर पाये ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मैं यह कहना चाहूंगा कि माननीय सदस्यों ने जो भी अपने विचार रखे, आये साल सबसे ज्यादा, बड़े बड़े आन्दोलन, बड़ी-बड़ी घोषणाएं और सदन के अन्दर भी बहुत सारी बहस होती है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, खेती को उद्योग का दर्जा, मैं यह कहना चाहता हूं कि नाटक कम्पनियों को उद्योग का दर्जा है, खेती में उपयोग आने वाले जितने भी साधन हैं उनको उद्योग का दर्जा है, आज हमारे देश में चाहे केन्द्र में वाजपेयीजी आये चाहे मनमोहन सिंहजी हैं, पार्लियामेंट के अन्दर जो अन्नदाता है उसको उद्योग का दर्जा नहीं है, खेती को उद्योग का दर्जा नहीं है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अगर वास्तव में देश के किसान को हम सम्मान देना चाहते हैं कृषि को हमको उद्योग का दर्जा देना होगा । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मैं यह कहना चाहूंगा कि जहां नाचने-गाने को उद्योग का दर्जा है इस देश के अन्दर तो कृषि जैसा जो महत्वपूर्ण विभाग है उसको उद्योग का दर्जा दिया जाए ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मैं यह भी कहना चाहूंगा कि बिजली के क्षेत्र में जो हमारे प्रदेश में 40 प्रतिशत हमारा वर्षा का पानी यहां से बाहर जाता है, जो घग्घर नदी है उसके माध्यम से पाकिस्तान में हमारा पानी जाता है, उस पानी को रोकने की व्यवस्था हो, बिजली बनाने की व्यवस्था हो । आज सबसे ज्यादा जो इस देश में, प्रदेश में शासन किया है, मैं कहता हूं कि कांग्रेस ने ज्यादा शासन किया है, बी.जे.पी. ने कम किया है और आज से चार साल में सारी समस्या हमारे सामने नहीं खड़ी हुई हैं, बिजली के लिए कांग्रेस को इतना तैश में आने की आवश्यकता नहीं है, आपके शासन में भी किसान ने आन्दोलन किये हैं, सड़कों पर आये हैं और बिजली की कमी रही है ।

आप कह रहे थे, अभी बता रहे थे माननीय सदस्य कि बिजली जो अभी किसान को नहीं दी जा रही है, आठ घंटे के लिए बोला गया था पहले,

(श्री रणवीर सिंह गुढा)

आठ घंटे नहीं मिली थी और आज भी जब किसानों को छह घंटे के लिए बोला जा रहा है, काफी सारी जगह किसान को छह घंटे बार-बार कटौती होती है उससे भी किसान को काफी समस्या का सामना करना पड़ता है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से यह भी कहना चाहूंगा कि परीक्षा का समय है, इस समय के अन्दर जो बच्चे हैं, रूरल में छात्र पढ़ते हैं वहां पर बिजली की कटौती ज्यादा होती है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, शहरों में जो प्रभावशाली लोग रहते हैं, पूंजीपति लोग लोग रहते हैं वो जनरेटर अफोर्ड कर सकते हैं लेकिन गांव में जनरेटर अफोर्ड नहीं कर सकते, वहां पर किसान के, मजदूर के बच्चे रहते हैं । बिल तो वो भी भरते हैं, रूरल एरिया की जो जनता है, किसान हैं वो भी बिल भरते हैं, शहर के लोग भी भरते हैं तो उनके साथ में यह सौतेला बर्ताव क्यों किया जा रहा है?

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे समय दिया उसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री बाबू सिंह राठौड़ । रणवीर सिंहजी की तरह से बिलकुल शोर्ट में ।

श्री बाबूसिंह राठौड़ (शेरगढ़): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको धन्यवाद देना चाहूंगा आपके पधारने से भोपालगढ़ और शेरगढ़ का नम्बर आया । इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहूंगा ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी हमारे भोपालगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य कह रहे थे कि राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण का कार्य सारे शेरगढ़ में चलाया गया । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको निवेदन करना चाहूंगा कि देश को आजाद हुए 60 वर्ष हो गये और आजादी के बाद पहली बार जब यह राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना आयी तो गांवों के अन्दर यह महसूस होने लगा कि जब देश आजाद हुआ था उस हालत में जैसे बैठे थे अंधेरे में, आज भी हम अंधेरे में हैं, अब रोशनी आयेगी और उनके चेहरे पर खुशी की चमक आयी थी । मेरे विधान सभा क्षेत्र शेरगढ़ में 110 गांवों में बिजली नहीं थी, 8 पंचायतों में बिजली नहीं थी । जब यह योजना बनी तो उस 110 गांवों का और 8 पंचायतों का प्रस्ताव बनाकर के...(व्यवधान) हां, वो ही, वो ही ।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): खेत सिंहजी तो कहते थे सब में है।

श्री बाबूसिंह राठौड़ (शेरगढ़): तो यह कह रहा हूं न, में कह रहा हूं । तो यह मैं कह रहा हूं, सच्चाई है, 110 गांवों में बिजली नहीं थी और 8 पंचायतों में बिजली नहीं थी । उसकी योजना बन कर गयी तो गांवों के लोगों को यह लगा कि अब हमारे ढाणियों में रोशनी हो जायेगी । उन्होंने 500 मीटर एरिया के हिसाब से मिनिमम 15 के ग्रुप के हिसाब से फाइलें जमा करायीं, फाइलें जमा हो गयीं बाद में नियम यह आया कि एक राजस्व गांव के अन्दर 10 प्रतिशत कनेक्शन दिये जायेंगे इस योजना के । अब जहां पर 50 घरों की बस्ती थी या घरों की ढाणियों का राजस्व गांव था, अब 50 में से 10 प्रतिशत, 5 घरों में बिजली लाइन खिंची, बिजली आयी लेकिन मैं आज भी आपसे यह निवेदन कर रहा हूं कि हमारे विधान सभा क्षेत्र में शेरगढ़ में 110 गांव के लिए बिजली की लाइन तो खिंच गयी लेकिन 10 प्रतिशत कनेक्शन हुए हैं और 60 प्रतिशत आज भी हमारे यहां घरों में कनेक्शन होने बाकी हैं ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि उप-खण्ड बालेसर में जब यह योजना बनी तो इस योजना में 31 मार्च, 2006 तक 5188 पत्रावलियां जमा हुई, मांग पत्र जमा हुए 3851 के कार्य पूर्ण कर लिया और मांग पत्र उसमें 1337 अब भी बाकी हैं और 15 मार्च, 2008 आज तक 1511, कुल मिलाकर के 2848 मांग पत्र आज भी बाकी हैं और डेचू उप-खण्ड की अगर बात करें तो डेचू उप-खण्ड में 15 मार्च, 2008 तक 4697 मांग पत्र आज भी बाकी हैं ।

इसलिए मैं निवेदन करना चाहूंगा कि एक झलक आयी थी लेकिन वास्तव में ढाणियों में आज भी वंचित हैं और 2001 तक के गांव उसमें शामिल किये गये थे। हमारे यहां जो 2001 के बाद के गांव हैं वो 250 गांव हैं और 250 गांव में आज भी उन गांवों में बिजली नहीं है। इसलिए, माननीय मंत्री महोदय, मैं आपसे निवेदन यह करना चाहूंगा कि राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना के अन्दर हमारे पड़ोसी जिले बाड़मेर के अन्दर तो योजना भी चालू नहीं की, उसके अन्दर बजट भी नहीं आया तो किस प्रकार से वहां काम चलाया जाए? इसलिए मैं माननीय मंत्री महोदय से यह निवेदन करना चाहूंगा कि आप कम से कम केन्द्र सरकार में विशेष प्रयास करें, प्रतिपक्ष के नेता भी विशेष प्रयास करें और राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना के अन्दर दूसरे राज्यों के अन्दर जिस प्रकार से पैसा मिला है, राजस्थान को उस हिसाब से पैसा नहीं मिला है। आज भी राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण का काम कम हुआ है। इसलिए यह स्कीम में संशोधन करा करके जो हमारे गांव

(श्री बाबूसिंह राठौड़)

बचे हैं, जो ढाणियां बची हैं उन ढाणियों के प्रस्ताव जाने चाहिए और बिजली का कनेक्शन शीघ्र होना चाहिए ।

मैं आभारी हूं राजस्थान की यशस्वी मुख्य मंत्री वसुन्धराजी राजे का कि उन्होंने इस बार बजट के अन्दर यह घोषणा करी कि मुख्य मंत्री सब के लिए योजना, जो राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना में बचे हैं या 11 के.वी. की जो लाइन है उस लाइन के एक किलोमीटर दायरे के अन्दर जो कनेक्शन जायेंगे मुख्य मंत्री सब के लिए योजना के अन्दर उनको जोड़ा जायेगा। इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहूंगा कि मिनिमम दस ढाणियों को उसमें लिया है, दस घरों को उसमें लिया है । मैं निवेदन यह करना चाहूंगा कि हम छितराई हुई ढाणियों में, दूर-दराज में हर भाई बंटे के हिसाब से, हर खसरे में बैठे हैं तो वो पांच घर लिये जाने चाहिए जिससे वो कनेक्शन हमारे आसानी से हो जाएं । ऐसा मेरा खास निवेदन रहेगा ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कुछ मेरे सुझाव हैं । वास्तव में जो अच्छा काम करते हैं आगे बढ़ते हैं, उनको कठिनाइयां भी आती हैं, परेशानियां भी आती हैं तो वो जो परेशानियां हैं, जो समस्याएं हैं उनके समाधान के लिए मैं निवेदन करना चाहूंगा कि बी.पी.एल. को घरेलू कनेक्शन अभी सर्विस लाइन से दिये जा रहे हैं। तो यह निवेदन करना चाहूंगा कि कुटीर ज्योति योजना के अन्दर पांच का ग्रुप बना करके उनको घरेलू कनेक्शन ज्यादा से ज्यादा दिये जाने चाहिए और पिछली सरकार के समय में कुटीर ज्योति में 65137 कनेक्शन हुए थे वो अभी साढ़े तीन लाख पहुंच रहे हैं । इसके लिए तो मैं बधाई देना चाहूंगा लेकिन जो अभी बी.पी.एल. चयनित हुआ है और पूर्व का जो बी.पी.एल. है उनको भी कनेक्शन मिले नहीं तो पूर्व की बी.पी.एल. लिस्ट और नयी बी.पी.एल. लिस्ट सब के लिये ग्रुप की योजना बना करके उनके लिए बजट, पैसा होना चाहिए और उन्हें कुटीर ज्योति योजना के तहत कनेक्शन मिलने चाहिए । मेरे विधान सभा क्षेत्र में हमने ग्रुप बना कर के ऐसी स्कीम बना कर भेजी है उनको अगर स्वीकृति मिल जाए तो बी.पी.एल. के घरेलू कनेक्शन मिलेगा । इसके लिए मैं आपको विशेष रूप से निवेदन करना चाहूंगा ।

मैं खास तौर से आपको यह निवेदन करना चाहूंगा कि 1980 के बाद आज दिन तक तकनीकी व मंत्रालयिक हैल्पर कर्मचारियों की भर्ती नहीं हुई है

(श्री बाबूसिंह राठौड़)

और भर्ती नहीं होने की वजह से लोड बढ़ा है और लोड बढ़ने की वजह से दुर्घटनाएं ज्यादा बढ़ रही हैं ।

(समय : 20.00 बजे)

तो मैं निवेदन करना चाहता हूं कि वह भर्ती करें जिससे ज्यादा से ज्यादा हमारे काम हो सकें। दो-तीन मेरे सुझाव हैं ।

श्री उपाध्यक्ष: धन्यवाद । बात आ गयी आपकी सारी ।

श्री बाबूसिंह राठौड़ (शेरगढ़): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, भोपालगढ़ को भी आपने इतना समय दिया, शेरगढ़ को भी, मेरे सुझाव हैं बाकी मैं कोई ज्यादा लम्बा चौड़ा भाषण नहीं दे रहा, वो लम्बा चौड़ा बोल रहे थे तब तो कुछ नहीं ।

श्री उपाध्यक्ष: बाकी मंत्रीजी...(व्यवधान)

श्री बाबूसिंह राठौड़ (शेरगढ़): हां, ठीक है अभी राजाखेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य कह रहे थे...(व्यवधान)

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): पहले अकाल पर है ।

श्री बाबूसिंह राठौड़ (शेरगढ़): माननीय भैरोंसिंह जी...(व्यवधान) बजे तक अकाल पर चर्चा होती रही है लेकिन जब हम खड़े होते हैं तो इस प्रकार, मैं निवेदन यह करना चाहूंगा कि धार्मिक स्थलों के लिए जो आपने घरेलू नीति के अनुसार कनेक्शन दिये हैं वह कनेक्शन भी घरेलू हिसाब से हैं और विद्यालयों को भी घरेलू हिसाब से लिया जाना चाहिए । यह मेरा खास तौर से निवेदन रहेगा । बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री उपाध्यक्ष: बाकी मंत्री महोदय बोलेंगे माननीय सदस्य । माननीय नेता प्रतिपक्ष ।

श्री केसरदेव बाबर (लक्ष्मणगढ़): मैं एक मिनट में ।

श्री उपाध्यक्ष: बैठें बाबर साहब, बात सुन लेंगे आपकी ।

श्री केसरदेव बाबर (लक्ष्मणगढ़): मैं एक मिनट एक चीज कहना चाहता हूं ।

श्री उपाध्यक्ष: एक मिनट ही, अच्छा ।

श्री केसरदेव बाबर (लक्ष्मणगढ़): ओनली वन मिनट । उपाध्यक्ष महोदय, सब बात हो चुकी । सुबह से कांग्रेस आरोप लगा रही है मैं एक बात कहूंगा, माननीय धोद से आने वाले सदस्य कुछ कहें समझ में आती है बात,

(श्री केसरदेव बाबर)

माननीय गुढा से आने वाले सदस्य कुछ कहें बात समझ में आती है पर यह कांग्रेस सुबह से आलोचना कर रही है । उपाध्यक्ष महोदय, बाहर गांव में मारवाड़ी में एक कहावत है कि छाजलो तो बोले ही बोले, चालणी भी बोले। तो कांग्रेस सुबह से आरोप लगा रही है । मैं ऊर्जा मंत्रीजी से यही निवेदन करूंगा आपके माध्यम से कि पूर्ववर्ती सरकार के समय एक 220 के.वी.ए. के और 132 के.वी.ए. के जो पावर हाउस हैं उनमें बड़े-बड़े टावर लगाये गये थे उनका नाम मेरी जानकारी के अनुसार रेडियो फ्रीक्वेंसी आटो कट सिस्टम था । यह करीब दौ सौ बीस करोड़ का मामला है और बिजली बोर्ड जब एक कम्पनी थी तब लगाये गये थे। और आज यह जो टावर लगाये गये हैं यह टावर कौनसी कम्पनी, किस कम्पनी को बेचा गया, कितने में बेचा गया, अब इसका पैसा कौनसी कम्पनी के पास गया, सरकार को नफा हुआ या नुकसान हुआ इनमें करोड़ों की जमीन जो काम में आयी टावर लगाने में उस जमीन का क्या हुआ?

उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह चाहूंगा कि ऊर्जा मंत्री महोदय जब जवाब दें तो इसकी जानकारी सदन को जरूर दें । धन्यवाद आपने मुझे समय दिया ।

श्री उपाध्यक्षः धन्यवाद । माननीय नेता प्रतिपक्ष ।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, केवल एक मिनट ।

श्री उपाध्यक्षः आपका सूची में नाम नहीं है माननीय सदस्य, बैठिये आप । देखो वह नेता प्रतिपक्ष खड़े हो गये हैं । बैठिये आप ।

श्री धर्मेन्द्र कुमार मोची (टिब्बी): मेरा नाम तो था सूची में ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): उपाध्यक्ष महोदय, आज अकाल और बिजली पर एक दिन चर्चा के लिए नीयत किया गया और यहां पर सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष के सदस्यों ने इस बारे में अपने अमूल्य सुझाव दिये । मैं इस पर बहुत ज्यादा लम्बा कुछ नहीं कहना चाहता । मैं कुछ माननीय मंत्री महोदय जी से क्लेरीफिकेशन के तौर पर चाहूंगा कि वह अपना उत्तर दें उस समय जरूर अपनी बात कहें ।

उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान में अकाल कोई नई बात नहीं है और बाड़मेर, पश्चिमी राजस्थान, जैसलमेर, जोधपुर डिवीजन वहां तो प्रायः अकाल पड़ता रहता है और सरकार हमेशा अकाल जब पड़ता है तो उसके प्रबन्ध करती

(श्री हेमाराम चौधरी)

है । जहां तक मुझे ध्यान है, मेरी जानकारी है हमेशा जब भी अकाल पड़ता है तो गिरदावरी के बाद में राज्य सरकार अकाल के कारण खरीफ की फसल को जो नुकसान होता है उसकी रिपोर्ट तैयार करती है। और उससे कितना नुकसान हुआ फसलों का और अकाल के हालात पैदा हुए उससे निपटने के लिए राज्य सरकार को कितनी मदद की आवश्यकता रहेगी, हमेशा राज्य सरकार केन्द्र सरकार को ज्ञापन भेजती है, ज्ञापन देती है। और उसमें नुकसान का भी और उसमें कितनी धनराशि की आवश्यकता रहेगी, उस अकाल को मीट आउट करने के लिए, लोगों को रोजगार देने के लिए, पानी की व्यवस्था के लिए, पशुओं के संरक्षण के लिए, चारे की व्यवस्था के लिए इस तरह का मेमोरेण्डम राज्य सरकार की तरफ से भारत सरकार को दिया जाता है। और इसके बाद में भारत सरकार राजस्थान में अपनी एक टोली भेजती है जिसको केन्द्रीय अध्ययन दल कहते हैं। और वह अकाल का जायजा लेने के लिए यहां आती है और जहां-जहां अकाल होता है भंयकर वहां स्थिति का जायजा लेकर के फिर वह केन्द्रीय अध्ययन दल अपनी रिपोर्ट केन्द्र सरकार को सौंपती है। फिर उस रिपोर्ट के आधार पर केन्द्र सरकार राजस्थान सरकार को मदद देती है परन्तु इस बार क्या हुआ क्या नहीं हुआ, मंत्रीजी अपने जवाब में स्पष्ट करेंगे ।

जहां तक मैं समझता हूं केन्द्रीय अध्ययन दल यहां राजस्थान मेरे ख्याल से नहीं आया, मैंने तो देखा नहीं, सुना नहीं और बता देंगे, ज्ञापन भी भारत सरकार को राज्य सरकार ने प्रस्तुत किया या नहीं किया और किया तो फिर उसके बाद क्या है, अगर ऐसा नहीं हुआ तो क्यों नहीं हुआ, इसका कारण स्पष्ट करें ।

यही नहीं, उपाध्यक्ष महोदय, हमेशा बजट विधान सभा में जब भी पेश होता है तो प्रायः बजट में अकाल के बारे में कुछ न कुछ कहा जाता है । राजस्थान में यह अकाल के हालात हैं और इन हालातों से निपटने के लिए यह सरकार कदम उठायेगी, उठाने जा रही है, इस बारे में बजट में जरूर कुछ न कुछ कहा जाता है। परन्तु उपाध्यक्ष महोदय, इस साल का जो यह 2008-09 का बजट माननीय मुख्य मंत्री महोदय ने जो पेश किया, उसमें यह 99 पेज का बजट है, मैंने इसको काफी गहराई से देखा, मेरे को तो इस बजट में अकाल के बारे में एक शब्द भी पढ़ने को नहीं मिला । अब ऐसा क्यों हुआ, क्या कारण रहा, मैं समझ नहीं पाया । या तो मुख्य मंत्रीजी को इस बार राजस्थान में अकाल की स्थिति है इसकी जानकारी नहीं या अकाल की स्थिति

(श्री हेमाराम चौधरी)

की जानकारी होने के बावजूद भी उन्होंने इसकी गम्भीरता को नहीं समझा और यहां पर सदन में बजट भाषण के दौरान अपने श्रीमुख से कुछ कहना उचित नहीं समझा । चिन्तित कितनी है सरकार इसके बारे में यह मेरे ख्याल से इस बजट भाषण से ही स्पष्ट हो जाता है ।

मुझे इस बारे में बहुत ज्यादा अधिक विस्तार से कहने की जरुरत नहीं, ज्यादा समय सदन का जाया करने की जरुरत नहीं । इसलिए आप इस बारे में बता दें । मतलब बजट में अगर कुछ बताया जाता, कुछ होता कुछ बात हमारे को भी समझ में आती, हमें भी कुछ सन्तोष होता, जनता को भी कुछ विश्वास होता, मैसेज जाता कि अकाल के बारे में बजट में यह बात आयी है और इसलिए लोग यह सोचते कि अकाल का मुकाबला कर लेंगे, सरकार हमारे साथ खड़ी है मदद करने के लिए । इसलिए मैं चाहूंगा कि इस बारे में आप जरूर कुछ न कुछ कहें । केन्द्र से मदद नहीं मांगी इसलिए नहीं आयी, वह बात मैंने कह दी । सी आर एफ का पैसा आपके पास पहले से पड़ा है । आप कह रहे हैं कि सी.आर.एफ. का पैसा हम पाला और शीतलहर से जो फसलों को नुकसान हुआ उसमें हम किसान को दे नहीं सकते क्योंकि उसमें पाले और शीतलहर से जो नुकसान हुआ वह उसमें इनक्लुड नहीं है सी.आर.एफ. के नियमों में। लेकिन सी.आर.एफ. का पैसा इन अकाल प्रभावित क्षेत्रों में अकाल राहत कार्य खोलकर, लोगों को रोजगार के लिए और पशुओं के चारे के लिए और पीने के पानी पर तो मैं समझता हूं कि यह खर्च किया जा सकता है । अगर आप इसमें भी पैसा खर्च नहीं कर सकते हैं तो फिर आप यह पैसा कहां खर्च कर सकते हैं और इस पैसे का क्या करेंगे । आपके पास पैसे होते हुए भी आपने आज दिन तक जो मेरी जानकारी है, कहीं पर भी अकाल राहत का कोई काम नहीं खोला, कहीं भी आपने कोई चारे की व्यवस्था नहीं की, पीने के पानी की व्यवस्था नहीं की । आप बता दें, आप ठीक कह रहे हैं, आपने याद दिला दिया तो वह भी कह दूंगा, यह मदद करते हैं हमेशा मेरी कि अशोकजी ने 16 अगस्त से शुरू की, यह कहा था ना, अशोकजी का नाम लिया या क्या कहा, मैंने ऐसा ही सुना, हमारी जब सरकार थी उस समय भी अकाल पड़ा था, कोई बात नहीं, मैंने गलत सुन लिया, हमारी जब सरकार थी कांग्रेस की राजस्थान में, पिछली बार, उस समय भी अकाल पड़ा था ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): तब आप धरने पर बैठे थे ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): उस समय 16 अगस्त से अकाल राहत के काम खोले थे । बिना गिरदावरी कराये क्योंकि गिरदावरी तो लेट होती है हमेशा, लेकिन जब यह मालूम हो गया कि गिरदावरी का क्या, जब बारिश ही नहीं हुई, जमीन पर जब कुछ है ही नहीं तो गिरदावरी तो होगी भी तो वही होगी जो आज स्थिति है वह गिरदावरी में आयेगा, इसलिए उन्होंने 16 अगस्त से लेकर के 15 जुलाई तक...

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): आप भी तो उस मंत्रिमंडल के सदस्य थे...(व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): आप धरने पर क्यों बैठे थे?

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): आपने तो मेरा नाम ले लिया इसलिए मुझे आना पड़ा, अब मैं एक शब्द भी नहीं बोलूंगा ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): बाद में आप धरने पर क्यों बैठे थे यह भी बता दें ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): आप बोलनें दें तो बोलूं नहीं तो यह तो ठीक नहीं है ।

श्री उपाध्यक्ष: नहीं, बीच में नहीं ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): बिलकुल नहीं साहब ।

श्री उपाध्यक्ष: टोकाटोकी नहीं ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): उपाध्यक्ष महोदय, 15 अगस्त से लेकर के हमेशा अकाल राहत का पीरियड 30 जून होता है परन्तु 15 दिन और बढ़ाकर के 15 जुलाई तक काम कंटीन्यु किया । बरसात थोड़ी लेट हुई इस वजह से, 11 महीने काम चला, अब घनश्यामजी बीच में आप टोकाटोकी तो करें नहीं ।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): उपाध्यक्ष महोदय, माननीय प्रतिपक्ष के नेता कह रहे हैं कि हमारे वक्त अगस्त में अकाल राहत के काम शुरू हुए । अगस्त में नहीं, मई में हुए, गिरदावरी भी 16 अक्टूबर से नवम्बर तक होती है ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): यह मंत्रीजी का जवाब है, यह तो मैंने पहले ही कह दिया कि गिरदावरी तो बाद में होती है, काम शुरू कर दिये

(श्री हेमाराम चौधरी)

16 अगस्त से । मैं गलत कह रहा हूं तो आप कह दें कि आप गलत कह रहे हैं कि काम 16 अगस्त से शुरू नहीं हुए ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): 16 अगस्त से शुरू हो गये थे... (व्यवधान) मंत्रीजी आप बात कर लें...(व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): यह अकाल राहत मंत्रीजी की जानकारी है और बीच में खड़े होकर के यह सोच रहे हैं कि इनको इस तरह से कह दें क्योंकि यह गलत बोल रहे हैं ।

उपाध्यक्ष महोदय, यह मंत्रीजी की योग्यता का इसी से ही पता लग गया कि वह कितने अकाल के प्रति गम्भीर हैं । यह भी पता लग गया आपका, मुझे कहने की जरूरत नहीं है । उपाध्यक्ष महोदय, सी.आर.एफ. का पैसा आपके पास पड़ा है । आपने अकाल राहत के काम कहां-कहां, किस-किस जिले में, कितने-कितने खोले, कितने-कितने मजदूर उस पर कार्यरत हैं, कितने आपके पशु शिविर खोले, कितने आपने चारा डिपो खोले । अब हो सकता है कि आप कहें कि हमने इन-इन जिलों में इतनी लेबर सीलिंग दे दी, हमने इतने चारा डिपो खोलने की स्वीकृति दे दी, इतने हमने पशु शिविर की स्वीकृति दे दी । दे दी होगी परन्तु आज यह चर्चा है इसलिए हो सकता है कि एक-दो दिन में कुछ कर दिया हो । मेरी जानकारी में तो वह भी नहीं है । उससे मतलब नहीं है, मतलब यह है कि आज की तारीख में कितने लोग काम पर लगे हुए हैं अकाल राहत के कार्यों में और कितने पशु शिविर चल रहे हैं और कितने चारा डिपो संचालित हैं जहां चारा पहुंच रहा है और पानी के टैकरों की अकाल में व्यवस्था की जाती है जहां पानी की भयंकर समस्या होती है । वह कोई आपने व्यवस्था की है क्या? आपके पास सी.आर.एफ. का पैसा है और फिर भी आपने अगर व्यवस्था नहीं की है तो क्या यह संवेदनहीनता की श्रेणी में नहीं आता है । क्या यह संवेदनशील सरकार का नमूना है ।

उपाध्यक्ष महोदय, आपने पाला और शीतलहर की भी बात कही, पाला और शीतलहर के बारे में आपने 126 करोड़ की घोषणा करके वाहवाही तो लूट ली और 126 करोड़ में आप देओगे कितना, बांटोगे कितना, बांटा नहीं है और आपके पास रिपोर्ट आ गयी होगी कि कितना किसान इससे प्रभावित हुआ? उनकी सूची आयी होगी जिससे यह पता लग जाये कि आप कितने किसानों के प्रति हमदर्द हैं । काफी टाइम हो गया पाले और शीतलहर को और अभी तक

(श्री हेमाराम चौधरी)

भी आपके पास उसकी कोई जानकारी नहीं आयी है तो बड़े अफसोस की बात है ।

उपाध्यक्ष महोदय, इसमें गिरदावरी का यह मामला बहुत उठा था सदन में, गिरदावरी पाले और शीतलहर की है, नुकसान हो रहा है और वह भी यहां से जो निर्देश हैं उसके मुताबिक हुई तो उससे ऐसा लगता है कि जब नुकसान 50 प्रतिशत से ऊपर का आप बताओगे ही नहीं तो किसी को कुछ नहीं मिलना । यह 126 करोड़ रुपये ऐसे ही पड़े रहेंगे । उसके बारे में भी बतायें कि आपने पाले और शीतलहर को भी काफी समय हो गया है । उसकी भी आपके पास रिपोर्ट आयी है और उस पर आप 126 करोड़ रुपये दे देंगे या यह भी कम पड़ेंगे ।

उपाध्यक्ष महोदय, अभी बेमौसम की बरसात हुई, इस बेमौसम बरसात से पश्चिमी राजस्थान में खास तौर से जहां पर जीरे और इसबगोल की फसल होती है उसमें बहुत भारी नुकसान हुआ, बहुत भारी तबाही हुई । रानीवाड़ा से आने वाले सत्ता पक्ष के माननीय सदस्य बैठे हैं उनसे पूछ लें, अगर मेरी बात से वह सहमत हैं तो गौर करें क्योंकि सत्ता पक्ष के प्रति सरकार का हमेशा रवैया यही रहता है कि विपक्ष जो कुछ भी कहता है उसको अनसुना करना ही ठीक रहता है क्योंकि उसका आलोचना करने का ही दृष्टिकोण होता है । हमारी बात यह आलोचना के रूप में लेते हैं । सुझाव के रूप में नहीं लेते हैं । यह दुर्भाग्य है हमारे प्रजातंत्र में, इसलिए मैं उनसे कह रहा हूं कि वह सत्ता पक्ष के सदस्य हैं उस पर तो आप गौर कर लें, जीरे और इसबगोल की फसलों का नुकसान हो गया । मंत्रीजी के वक्तव्य की आज ही बात तय की थी आपने, व्यवस्था दी थी तो उसमें भी आप बता दें कि कहां-कहां कितना नुकसान हुआ है । उसके लिये सरकार क्या सोच रही है, क्या कर रही है, क्या करने का विचार है या कुछ नहीं है ।

उपाध्यक्ष महोदय, यहां तक ही नहीं, बरसात जो हुई उससे जन हानि भी हुई । मेरे वहां बिजली गिरने से एक व्यक्ति की मृत्यु हो गयी और दो जल गये जो हास्पिटलाइज्ड हैं । उनका शरीर बहुत ज्यादा जल चुका है, तो जिसकी मृत्यु हो गयी है और जो जलें हैं उनकी भी सरकार ने कुछ सोचा है क्या? क्योंकि पिछले वर्ष हमारे बाड़मेर में जब बाढ़ आयी थी तो कवास में जन हानि हुई । जो जन हानि हुई उनको 50-50 हजार रुपये की सहायता दी गयी ।

(श्री हेमाराम चौधरी)

मुझे ध्यान है आज से करीब आठ-दस साल पहले जब गुजरात में तूफान आया था, समुद्री तूफान में उस समय बहुत लोग मरे थे वहां पर और हमारे बाड़मेर के लोग भी वहां काफी संख्या में खतम हो गये थे । उन सब को आज से आठ-दस साल पहले की बात है, दस साल में कितना अंतर है, वह भी आप देख लें कि उस समय उनको एक-एक लाख रुपया दिया था जब कि अभी 50-50 हजार दे रहे हैं । बाकी कई स्टेटों में, पिछली बार दूसरी स्टेटों का भी देखा, सब जगह एक लाख से कम तो कहीं दिया ही नहीं है जन हानि पर । लेकिन यहां पर 50 हजार रुपये दिये । कहने का मतलब यह है कि प्राकृतिक आपदा के मामले में सरकार कितनी चिंतित है, गम्भीर है, संवेदनशील है, यह इसी से अनुमान लगाया जा सकता है । इसलिए मैं चाहूंगा कि सरकार को अकाल, प्राकृतिक आपदा के मामले में गम्भीरता से विचार करने की जरूरत है। मैं खासतौर से यही निवेदन करना चाहूंगा कि अकाल के बारे में जब आप जवाब दें उस समय जरूर इसके बारे में स्पष्ट करें ।

उपाध्यक्ष महोदय, बिजली के बारे में दूसरे माननीय सदस्यों ने बहुत विस्तार से बिजली के उत्पादन के बारे में, वितरण के बारे में, नये कनेक्शनों के बारे में, भ्रष्टाचार के बारे में बातें कहीं हैं । उसको फिर से ज्यादा दोहराने की जरूरत नहीं है ।

उत्पादन के मामले में बिलकुल ही पिछड़ रहा है प्रदेश । पिछली बार इन्होंने उछल-उछल कर विधान सभा में यह घनश्यामजी, अब तो यह महकमा इनसे ले लिया पर घनश्यामजी के पास जब यह महकमा था, यह बहुत उछल कर यहां बोलते थे, कनेक्शन हाथोंहाथ, जवाब आप ही देते थे। (व्यवधान) अब भी जवाब आप दे देते हैं महकमा नहीं है तो भी, आपको महकमे से क्या करना है, पर आपको जवाब देना अब आपसे ले लिया, यह आपसे स्कूल खोलने का ही अधिकार ले लिया, यह तो क्या, वह तो ठीक है आप चला रहे हो, आपका कलेजा जानता है । सारी चीजें कहने की नहीं होती है, सच्ची कहने से तो फिर गड़बड़ हो जाती है, 'हाची कहे तो माय ही माथा म देय' इस वास्ते आप मन री बात मन म राखो ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इन्होंने कहा कि तत्काल कनेक्शन दे देंगे, आत्मनिर्भर हो जाएंगे, यह हो जाएंगे, वह हो जाएंगे, इनके मैनिफेस्टो को भी मैंने पढ़कर पिछली बार सुनाया था, अब मैं उसके बारे में ज्यादा फिर से समय लूंगा तो मतलब नहीं। पर कहने का मतलब है कि यह क्यों कहते हैं जब यह

(श्री हेमाराम चौधरी)

कर नहीं सकते तो कहने का आखिर अर्थ क्या है? उससे फायदा क्या, जनता का क्या फायदा हुआ और लोगों को क्या फायदा मिला? इस सदन को गुमराह किया और आम जनता को गुमराह करने का प्रयास किया है, इसके सिवा मैं समझता हूं कि कुछ नहीं किया ।

यहां चाहे यह हों चाहे हम हों, यहां बढ़ चढ़कर जो हम नहीं कर सकते, जो हमारी क्षमता नहीं है या किसी कारण से हम नहीं कर सकते तो वह बात हमें नहीं कहनी चाहिए। और यहां जो कुछ भी सदन में बात कहें तो वह जिम्मेदारी से कहनी चाहिए, हम जिम्मेदारी से कहते हैं तो अच्छा रहता है। आज इनको सुनना नहीं पड़ता और हमें कहना नहीं पड़ता लेकिन इन्होंने कहा, जैसे कुछ कनेक्शन आज भी नहीं मिले हैं लोग आज भी कतार में खड़े हैं । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं थोड़ा सा निवेदन करना चाहता हूं कि... (व्यवधान) माननीय मंत्रीजी, आपका जो बजट है 2008-09 का, इसका पेज 38 आप निकाल लें, इसमें इन्होंने लिखा है 31 मार्च, 2003 तक के बकाया 1,70,740 आवेदनों में से अब 65,899 आवेदन ही शेष रहे हैं । मतलब करीब 66 हजार बाकी, सब को दे दिए, कौन से? 31 मार्च, 2003 तक, एक तरफ तो आप यह बात कह रहे हैं और दूसरी तरफ आप यह बात कह रहे हैं इसी में नीचे 81 में पेज वही 38, वर्ष 2003 के शेष रहे लगभग सभी 66 हजार आवेदकों को, शेष रहे लगभग सभी, लगभग सभी का मतलब यही 66 हजार ऊपर वाले, यही हुआ, 31 मार्च तक, 31 मार्च तक आपने तो 31 मार्च तक के 66 हजार बाकी बता रखे हैं, 31 मार्च नहीं कहा है यहां, वर्ष 2003 शब्द प्रयोग किया है, वर्ष 2003 तक के शेष रहे लगभग सभी 66 हजार आवेदकों को डिमाण्ड नोट अप्रैल से अक्टूबर, यह डिमाण्ड नोट देना शुरू करेंगे अप्रैल से अक्टूबर, 2008 तक की अवधि में जारी कर मार्च, 2009 तक कनेक्शन दे दिए जाएंगे । अक्टूबर तक तो यह डिमाण्ड नोटिस जारी करेंगे ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): यह बोल चुके हैं आप। (व्यवधान) पुराना कागज आपके हाथ में आ गया, यह सारी बात आप बोल चुके हैं ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): दुबारा बोल देते हैं ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अपने यहां परम्परा है कि एक बार जो बात आ जाए सदन में उसको दुबारा नहीं कहा जाता है, बाकी तो बोलो चाहे आप चार बार बोलो ।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): आपने पूरी नहीं की एक बार कहने से, एक बार में ही पूरा कर देते तो दुबारा बोलना नहीं पड़ता ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): आप तो यह चाहते हैं कि इनका प्रभावशाली भाषण न हो ।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): नहीं, आप तो इनका प्रभावशाली भाषण करवाओ ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): मैं इसलिए बोल रहा हूं कि आप जो चाहते हैं कि आप लोग रिकार्ड को देखें कि एक ही तरह का वह टेप चला हुआ आए, यह नहीं है यह ।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): अब आप इनका प्रभावशाली भाषण करवाओ ।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): माननीय सदस्य, तगारामजी किस्सा सुनाने की कह रहे हैं ।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): वही पुराने वाला क्या?

श्री उपाध्यक्ष: बीच में नहीं माननीय सदस्य । (व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्रीजी से यह जानना चाहता हूं । (व्यवधान) मैं आपसे यह कह रहा हूं कि ऊपर तो 31 मार्च, 2003 लिखा है, नीचे खाली वर्ष 2003 लिखा है, यह वर्ष 2003 का अभिप्राय क्या है, मतलब 31 मार्च तक का आपके या 31 दिसम्बर?

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): 31 मार्च तक है । 31 मार्च, 2003 तक के हम वित्तीय वर्ष 2008-09 में कनेक्शन दे देंगे ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): वित्तीय वर्ष 2008-09 के अक्टूबर, 2008 तक आप डिमाण्ड नोटिस जारी करेंगे, कनेक्शन कब देंगे, कनेक्शन तो आप मार्च, 2009 में देंगे?

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): मार्च, 2009 से पहले दे देंगे, आपको इसमें चिंता क्या है, नहीं देंगे उस समय आप बोलना, 2009 के मार्च तक दे देंगे । वित्तीय वर्ष तो अब 1 अप्रैल से लगेगा न ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): उस टाइम में आपका और हमारा क्या होगा पता नहीं, मार्च, 2009 में आप और मैं क्या होंगे उसका पता नहीं है ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): यह सब चीजें वित्तीय वर्ष से चलती हैं। आपका क्या होगा, हमारा क्या होगा, क्या होगा? (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): 'तक' का मतलब आप समझते हैं न 'तक' है वह ।

श्री उपाध्यक्ष: पहले-पहले देने की कोशिश करेंगे ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): 2009, सब जगह 2009 की बात की है, अब 2009 की बात...

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): यूपीए की सरकार ने कहा है किसानों के ऋण माफ करने के लिए 60 हजार करोड़ रुपए की व्यवस्था की जाएगी, तब तक चुनाव हो जाएंगे ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इन्होंने अभी कहा कि यह जो 66 हजार कनेक्शन हैं वह 31 मार्च, 2003 तक है, इन्होंने नीचे लिखा है वर्ष, 2004 से अब तक बिजली कम्पनियों को लगभग 60 हजार आवेदन प्राप्त हुए हैं, वर्ष 2004 का कब से मान रहे हैं, क्योंकि 31 मार्च से लेकर 31 दिसम्बर, 2003 तक के कनेक्शन हैं वह कहां गए? वह इन 60 हजार में तो शामिल नहीं हो सकते फिर क्यों यह 60 हजार कनेक्शन वर्ष 2004 में बताए हैं । इसका मतलब 1 अप्रैल से 31 दिसम्बर, 2003 तक के कनेक्शन हैं उनका क्या होगा, उनका क्या होगा, इसका तो मलब समझाओ, उनका क्या होगा, उनका आप बता दें ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इन्होंने स्पेशल कैटेगिरी कनेक्शन के नाम से आवेदन लिए । आप बता दें वह आवेदन उन लोगों ने कब किए? जिस समय आवेदन किए स्पेशल कैटेगिरी में उस समय आपकी क्या कण्डीशन थी, क्या शर्तें थीं? क्योंकि अगर जनरल कनेक्शन के हिसाब से उनको कनेक्शन देना है तो वह स्पेशल में क्यों अप्लाई करे? स्पेशल का मतलब जनरल कनेक्शन से महंगे कनेक्शन, उन कनेक्शनों का पैसा ज्यादा लगेगा, आपके उनके टैरिफ में भी अंतर होगा। तो आपने स्पेशल कैटेगिरी के लिए जो आवेदन किया और लोगों ने जो पैसा जमा कराया वह कब जमा कराया, कौनसी तारीख को कब जमा कराया और उनको कितना समय हो गया, इतना समय हो गया जब कि आपने जिस समय आवेदन मांगे थे स्पेशल कैटेगिरी में उस समय आपने जरूर कुछ न कुछ कहा होगा कि हम निश्चित समय

(श्री हेमाराम चौधरी)

अवधि के अंदर इनको कनेक्शन दे देंगे। अगर ऐसा नहीं था तो फिर जनरल के हिसाब से अगर होता तो वह स्पेशल में क्यों आते? स्पेशल का मतलब ही यह है कि उसको आउट ऑफ टर्न, आउट आफ प्रायोरिटी उनको कनेक्शन देना है । यह मैं नहीं कहता कि उनको हाथोंहाथ देते ही मिल जाए लेकिन कोई न कोई आपने टाइम जरूर उसमें कहा होगा, घोषणा की होगी, उसके हिसाब से लेकिन आपने उनसे आवेदन तो ले लिए उनके हिसाब से पैसा जमा करा लिया लेकिन आज दिन तक उनके कनेक्शन का पता ही नहीं । अब तो सब बात कर रहे हैं लेकिन इतने दिन क्यों नहीं किया, इतने दिन आपने क्यों लटकाए रखा, इसका आप जवाब दें, उस समय जरूर दें यह मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं क्योंकि आपने कनेक्शन के आवेदन ले लिए...(व्यवधान) बस एक और निवेदन करूं, मैंने पहले कहा है कि लम्बा नहीं कहूंगा ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एस सी को आउट आफ प्रायोरिटी, मतलब ऑन डिमाण्ड कनेक्शन देने का प्रावधान है और ट्राइबल सब प्लान एरिया में एस.टी. को भी देने का है। जब एस.सी. को है और एस.टी. को ट्राइबल सब प्लान एरिया में तो है लेकिन बाकी जगह जो एस.टी. के लोग हैं, माननीय मंत्रीजी, आप तो नागौर से हैं, पर पश्चिमी राजस्थान के बाड़मेर में एस.टी. में वहां भील कम्यूनिटी है और मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि भील कम्यूनिटी एस सी कम्यूनिटी से भी ज्यादा गरीब है। मतलब एस सी में मेघवाल हैं और दूसरे हैं तो वहां उनसे वह ज्यादा कमजोर कम्यूनिटी है । चाहे आप एजूकेशन के हिसाब से देख लें, चाहे आप सोशली देख लें, किसी भी दृष्टि से माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह तो आप भी फलौदी से हैं तो भीलों की वहां क्या स्थिति है, अब भीलों को आप जनरल के साथ रख रहे हो और एस सी को आप उस तरफ तो भीलों को भी आप एस सी को जैसे आउट आफ टर्न देते हैं उनको भी उसमें आउट आफ टर्न दो, टी.एस.पी. एरिया में जैसे आप देते हैं, आदिवासी मीणा को देते हैं । इनके लिए भी आप करते हो तो यह मेरे खयाल से ठीक होगा, उनके साथ न्याय होगा ।

श्री उपाध्यक्ष: जिनके वोट ज्यादा हैं उनका ध्यान ज्यादा दिया जाता है ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): भीलों के काफी हैं, लेकिन वे गरीब हैं, वे अभी पोलिटिकली अवेक नहीं हैं । इसलिए जिस दिन वे

(श्री हेमाराम चौधरी)

पोलिटिकली अवेक हो जाएंगे, इसलिए आप इस पर भी ध्यान दें । इसलिए मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा क्योंकि आप सभी जल्दी में हैं, पर जिन बिन्दुओं की तरफ मैंने आपका ध्यान आकर्षित किया है उन पर आप जवाब देने की कृपा करें ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय श्री लक्ष्मीनारायणजी दवे ।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): पहले ऊर्जा मंत्रीजी का करा दें, क्योंकि ज्यादा बिजली पर चर्चा हुई है ।

श्री उपाध्यक्ष: सहायता मंत्रीजी कम बोलेंगे । कम चर्चा हुई तो वे कम बोलेंगे । (व्यवधान)

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज इस सदन में पक्ष और प्रतिपक्ष की तरफ से 32 माननीय सदस्यों ने भाग लिया और अपने रचनात्मक और आलोचनात्मक विचार प्रकट किये । जिन लोगों ने अकाल और बिजली पर चर्चा की मैं उन तमाम माननीय सदस्यों को अपनी तरफ से धन्यवाद प्रेषित करता हूं ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह राजस्थान में एक तरह की परिणति है, राजस्थान का 3,42,239 वर्ग किलोमीटर भूभाग है जिसमें अधिकांश रेगिस्तानी भूभाग है । इस राजस्थान में 1959-60, 1973-74, 1975-76, 1976-77, 1990-91, 1993-95, इन वर्षों के अलावा राजस्थान में निरन्तर किसी न किसी भूभाग पर या सम्पूर्ण राजस्थान में अकाल की छाया मण्डराती रही है ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान की जैसी भौगोलिक परिस्थिति है और भारत के अन्य प्रांतों की भौगोलिक परिस्थिति और राजस्थान की भौगोलिक परिस्थिति अलग है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान में पिछले 100 साल में 40 साल अकाल पड़ा और अकाल की इस विषम परिस्थिति में राजस्थान का किसान, वो धरती पुत्र हर वर्ष खरीफ की फसल के पहले एक नयी उमंग के साथ, नये जोश के साथ में खेत में अपनी फसल को बोता है और जब अकाल की छाया मंडराने लगती है, जब फसल तैयार खड़ी होती है और बारिश नहीं होती है तो अकाल से प्रभावित क्षेत्र होता है, फसलें नष्ट होती हैं।

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

मानीय उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान के अंदर 75 प्रतिशत कृषक हैं जो वर्षा पर आधारित फसलों पर निर्भर हैं। राजस्थान के अंदर 2001 की जनगणना के अनुसार राजस्थान राज्य की जनसंख्या 564.73 लाख है और ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग 432.68 लाख हैं और शहरी क्षेत्र के 132.5 लाख हैं । जनसंख्या का लगभग 77.12 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है । राजस्थान के अधिकांश 77 प्रतिशत लोग गांवों में निवास करते हैं और राजस्थान प्रदेश मूलतः कृषि प्रधान है, दूसरा पशुपालक और तीसरा मिनरल प्रदेश के नाम से जाना जाता है ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान के अंदर 2003 के अंदर पशु गणना हुई, उस पशु गणना के आधार पर 491.96 लाख पशुधन राजस्थान में है । या तो राजस्थान में कृषक खेती करते हैं या पशुपालक हैं और पशु आधारित अपने जीवन का यापन करते हैं ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं राजस्थान की जैसी परिस्थिति है, राजस्थान की जैसी भौगोलिक परिस्थिति है यहां का किसान नयी उमंग, नये जोश के साथ में हर उम्मीद के साथ में खरीफ की फसल बोता है और राजस्थान का किसान लगातार पिछले कई वर्षों से राजस्थान की स्थापना के पूर्व वर्षो से राजस्थान के अंदर अकाल प्रभावित राजस्थान अधिकांश क्षेत्रों में रहा है ।

1996 का अकाल, 1956 का अकाल, 1956 का ऐसा दुर्भिक्ष हुआ माननीय उपाध्यक्ष महोदय, खेजड़ी जिसे संस्कृत में समी कहते हैं उनके छिलके उतारकर हमारे गांव का रहने वाला किसान, गांव का रहने वाला मजदूर उसको पीसकर अपना जीवन-यापन किया, यह आपको ध्यान है ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, खेजड़ी की महिमा के बारे में जिन दो माननीय सदस्यों ने आज जो चर्चा की है, आज चर्चा इस बात की की जानी चाहिए, आलोचना और सकारात्मक बात के साथ, आज लगातार इस राजस्थान के अंदर जो दुर्भिक्ष पड़ता रहा, अकाल पड़ता रहा, बाढ़ की स्थिति आती रही, शीतलहर, पाला और लू की जो स्थिति हुई जिसके कारण राजस्थान बर्बाद होता रहा, किसान की फसलें नष्ट होती रहीं। तो इसके स्थायी समाधान के बारे में, स्थायित्व लाने के बारे में किसान के लिए ऐसी व्यवस्था की जाए। आज हम चंद्रमा पर जाने की बात करते हैं। आज वैज्ञानिक इक्कीसवीं सदी में

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

जाने की बात करते हैं, जब किसान की फसल नष्ट हो जाती है और फसल नष्ट होने के कारण लगातार अकाल की विभीषिका के कारण शीतलहर और पाले के कारण राजस्थान के किसान की आर्थिक स्थिति जर्जर हो जाती है । तो आज चर्चा इस बात की होनी चाहिए कि अकाल की जो स्थिति है यह पाला और शीतलहर से किसान प्रभावित होता है इसका स्थायी समाधान और इसके स्थायी पहलू आगे रखा जाए इसके बारे में निश्चित रूप से सकारात्मक सुझाव आने चाहिए ।

मैं दो माननीय सदस्य, नोहर से आने वाले माननीय सदस्य और पीलीबंगा से आने वाले माननीय सदस्य ने जो चर्चा की मैं उन्हें धन्यवाद देना चाहता हूं । उन्होंने खेजड़ी के बारे में, उन्होंने केर के बारे में कहा, मुझे आज याद है 1990 के अंदर हमारी विधान सभा के पूर्व सदस्य पूनमचंदजी विश्नोई हुआ करते थे। पूनमचंदजी विश्नोई जिस हिसाब से राजस्थान के पश्चिमी भाग में राजस्थान की स्थिति का जो वर्णन पेश करते थे, खेजड़ी के महत्व के बारे में बताते थे, केर के महत्व के बारे में, केर, सांगरी के बारे में बताते थे जिस हिसाब से वे चित्रण करते थे वास्तव में आज उसके बारे में ध्यान देने की आवश्यकता है ।

प्रतिपक्ष के नेता महोदय ने बताया कि राजस्थान में अकाल के अंदर 4309 गांवों को अभावग्रस्त घोषित किया है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, घोषित करने के लिए गिरदावरी की जाती है । आपका यह था कि अभावग्रस्त घोषित करने से पहले भारत सरकार की टीम आती है, भारत सरकार की टीम आकर उसका आकलन करती है और उसके बाद में सहायता के बारे में, पैकेज के बारे में जो आपके मंत्री महोदय हैं, सूखा तो घोषित किया, सहायता नहीं मांगी ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि एक अप्रैल से नरेगा पूरे राजस्थान में लागू होने जा रहा है और राजस्थान में हमारे पास सीआरएफ का पैसा है, अकाल का पैसा है खर्च करने के लिए । जब पैसा हमारे पास है तो भारत सरकार को हमने पैकेज के लिए उनसे मांग नहीं की । हमने उनसे मांग की है कि राजस्थान का यह प्रभावित क्षेत्र है इसमें शीतलहर और पाला पड़ा है और शीतलहर और पाला, जो अफेक्टेड कैलेमिटी है उस कैलेमिटी के अंदर भारत सरकार परिवर्तन कर उस कैलेमिटी

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

में शीतलहर और पाला को सम्मिलित किया जाए । इसके लिए नहीं किया है। अभावग्रस्त जो गांव हैं माननीय प्रतिपक्ष के नेता को जानकारी देना चाहता हूं राजस्थान में 4309 गांव हैं जो 9.1.2008 को अधिसूचना जारी कर राजस्थान में अफेक्टेड एरिया की धारा 3 व 4 के द्वारा इन्हें घोषित किया गया।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं और जानकारी भी देना चाहता हूं कि राजस्थान के अंदर हमने पहले मार्च के अंदर हमने जो सीलिंग की थी हमने एक लाख लेबर की सीलिंग की थी । उसके बाद में ...(व्यवधान)

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज इतनी गम्भीर चर्चा बिजली और अकाल पर हो रही है और माननीय मंत्री महोदय बहुत गम्भीर रूप से इसका जवाब भी दे रहे हैं । प्रतिपक्ष में इस समय कुल मिलाकर 7 माननीय सदस्य हैं इनमें से 6 माननीय सदस्य एक समुदाय विशेष के हैं जो किसान से, जमीन से जुड़े हुए हैं और एक खारची से आने वाले माननीय सदस्य इसलिए बैठे हैं कि माननीय मंत्री महोदय पाली से आये हैं तो निश्चित रूप से इनकी बात को सुनकर आप कुछ कहेंगे ।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): इसी विश्वास के साथ कि सही आकलन कराएंगे गिरदावरी का ।

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं फिर भी इनके नेता माननीय अशोक गहलोत कहते हैं कि मैं किसान हूं, किसान की पीड़ा होती तो समझते यहां पर कुछ बोलते, कुछ सुनते । आज यह बैठे हैं किसान के पुत्र और किसान के बेटे...(व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): सभी पूर्व मुख्य मंत्री एक भी नहीं है ।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान के 12 जिले उनको अभावग्रस्त उनके अजमेर जिले को 699 ऐसे कुल 4309 गांव हैं उन्हें अभावग्रस्त घोषित किया गया । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि जनवरी 2008 में एक लाख श्रमिक सीमा रखी जिसमें 44 हजार श्रमिकों को रोजगार, फरवरी 2008 के लिए 1.30 लाख श्रमिक सीमा रखी, 0.66 हजार श्रमिकों को रोजगार, मार्च, 2008 के लिए 1.50 लाख श्रमिक सीमा रखी गई और माननीय उपाध्यक्ष

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

महोदय, मैं आपको जानकारी देना चाहता हूं कि 29.2.2008 तक तमाम पूरे राजस्थान के लोगों को श्रमिकों को भुगतान कर दिया गया है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपसे निवेदन करना चाहूंगा, पाले और शीतलहर के चर्चा हुई, राजस्थान विधान सभा के इस पवित्र सदन में पाले और शीतलहर पर चर्चा में भाग लिया गया, माननीय सदस्यों ने मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, माह फरवरी, 2008 में राजस्थान में पाले और शीतलहर से किसानों की फसलें नष्ट की जानकारी प्राप्त होते ही सबसे पहले त्वरित मूल्यांकन के लिए हमने आदेश प्रसारित किये । जिला कलक्टर और डिवीजनल कमिश्नर को और प्रारम्भिक आकलन...(व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): त्वरित जो ग्राम सेवकों वालों में समझौता हुआ है और उसको एक साल से भी ज्यादा समय हो गया, त्वरित, वही त्वरित, त्वरित वर्ड का मतलब मैं समझा नहीं, वही त्वरित वर्ड है या दूसरा है ?

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): बात बाड़मेर में धरने पर बैठे थे वही त्वरित है...(व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): धरने पर बैठा था तो मुझे दर्द था तब बैठा था, आप भी बैठ कर दिखाओ न । थोड़ा आप भी किसानों के प्रति दर्द हो तो कुछ आप भी कर लो न।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): जरूरत ही नहीं हमारे ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष):

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): इनको परेशान करेंगे, धरने पर बैठने की नौबत ही नहीं आएगी । यह करने वाले तो कुछ न्य्हाल हैं नहीं । कतई देने वाले तो कुछ हैं नहीं । धरने पर बैठने की नौबत नहीं आएगी।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): प्रारम्भिक आकलन के लिए 15 फरवरी, 2008 को शीतलहर और पाले से प्रभावित कृषकों के लिए सहायता पैकेज की घोषणा की, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा, गत वर्ष ओलावृष्टि भी हुई, ओलावृष्टि में पिछले कई वर्षों तक यह जो बैठे हैं, प्रतिपक्ष के लोग, इन्होंने एक धेला भी ओलावृष्टि में नहीं दिया, शीत लहर और पाले की बात करते हैं, शीत लहर और पाला में भी, 15 अप्रैल, 2002 की बात कर रहा हूं, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, उस वक्त डेगाना से आने वाले माननीय सदस्य ने तत्कालीन समय में...(व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): उपाध्यक्ष महोदय, यह... (व्यवधान) ओलावृटि में जो भी भुगतान हुआ है सीआरएफ के पैसों से हुआ है। सीआरएफ का पैसा तो केन्द्र देता है ।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): सीआरएफ किसी की बपौती नहीं है, स्टेट का पैसा है ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): स्टेट का पैसा है तो आपने कहां से दिया, आप कह रहे हो इन्होंने नहीं दिया ।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): स्टेट का पैसा है ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): हां, स्टेट का पैसा है, केन्द्र से आता है तो आपने कौन सी जेब से दिया है ?

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): आपने क्यों नहीं दिये, हमने तो सीआरएफ के दिये, आपने क्यों नहीं दिये, एक टका भी नहीं दिया।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): इनके नहीं दिये, तब ही तो धरने पर बैठे थे ।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 2002 में शीतलहर और पाले पर इस पवित्र सदन पर चर्चा हुई, डेगाना से आने वाले माननीय सदस्य ने भी मांग रखी, और उस वक्त तत्कालीन जो अकाल राहत मंत्री गुलाब सिंहजी शक्तावत थे, इनको अंगूठा बताया, कह दिया, कोई शीतलहर और पाला के अन्दर, इस केलेमिटी में, हम कोई मदद नहीं कर सकेंगे, आज तक आपने इतने वर्षों तक शीतलहर और पाला पर एक पैसा नहीं दिया । मैं धन्यवाद देना चाहता हूं राजस्थान की यशस्वी मुख्य मंत्रीजी को कि किसानों के हित के अन्दर किसानों की परिस्थिति को जाना, शीतलहर और पाला से प्रभावित जो फसलें नष्ट हुई हैं उसका त्वरित आकलन कराने के लिए जिला कलक्टर को कहा और फरवरी में जो यह घटना घटित हुई और 15 फरवरी को यहां पर पैकेज की घोषणा की। और पैकेज की घोषणा भी माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जो सीआरएफ के नार्म्स हैं, उन नार्म्स के भी बियोंड जाकर राहत के पैकेज की घोषणा हुई ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूं कि जहां सीमांत कृषकों को अधिकतम एक हेक्टेयर और लघु एवं वृहत कृषकों को अधिकतम दो हेक्टेयर पर कृषि आदान अनुदान निम्न रहे, देने का तय किया गया, असिंचित फसल के लिए तीन हजार रुपये प्रति हेक्टेयर और सिंचित फसल डीजल इंजन से सिंचित 6 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर। जब कि सीआरएफ

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

के नार्म्स में मात्र 4 हजार रुपये है। इसी तरह बिजली के कुओं को नहर से सिंचित पर 4 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर और बोई गई फसल 50 प्रतिशत से अधिक खराबा होने पर लघु और सीमांत कृषकों के लिए 4 माह का बिजली का बिल माफ करने का। इसी तरह, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जिन गांवों में 50 प्रतिशत से भी ज्यादा नुकसान होगा, उन गांवों को अभावग्रस्त घोषित किया जाकर भू राजस्व स्थगित और उनके साथ में अल्पकालीन सहकारी ऋणों को दीर्घकालीन ऋणों में परिवर्तित किया जाएगा। और प्रभावित 50 प्रतिशत से अधिक खराबा वाले काश्तकार सिंचाई विभाग के द्वारा लिये जाने वाले आबियाना माफ भी करने का निर्णय किया गया। इसके साथ में, मैं माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जो नोशनल शेयर जो सीआरएफ के नार्म्स में नहीं है, नोशनल शेयर्स में जो किसान है जो लघु और सीमांत काश्तकार में आता है उनके लिए भी इसमें प्रावधान रखा गया है । इसके साथ में जो खातेदार नहीं है और खातेदार से अगर 5 रुपये के स्टाम्प पर जो खातेदार किसान खेती करने के लिए 5 रुपये के स्टाम्प पर एग्रीमेंट करता तो इस तहसीलदार की एक कमेटी जिसमें ग्रुप सचिव और पटवारी इस कमेटी में निर्णय करेंगे कि यह वास्तव में इस खेत के खातेदार से इस किसान ने कल्टीवेशन के लिए जमीन ली है तो उसको भी लघु और सीमांत कृषक का फायदा दिया जाएगा । पहली बार राजस्थान में, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, लघु और सीमांत के अलावा इससे भी बढ़ कर हमने वृहत कृष्कों को भी दो हेक्टेयर तक राहत पहुंचाने की व्यवस्था की है ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पाला और जो वृहत कृषक हैं उनको मैक्सिमम दो हेक्टेयर तक और यह पहली बार हुआ है बृहत कृषकों के लिए । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं नवीनतम घोषित मापदण्ड जो हैं 27 जून, 2007 के अनुसार सीआरएफ के अन्तर्गत पाले और शीतलहर को एफेक्टेड केलेमिटी में शामिल नहीं किया गया। और माननीय मुख्य मंत्रीजी ने 31.1.2008 और 12.2.2008 को दो पत्र भारत सरकार के गृह मंत्री को लिखे, स्वयं जाकर उनसे चर्चा की। और माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अच्छा तो यह तो, परसराम जी मदेरणा ने एक पाती लिखी सोनिया गांधीजी को और यह बात कही कि राजस्थान के अन्दर यह जो पाला और शीतलहर से जो प्रभावित हुए हैं उन्हें अनुदान दिया जाए । मैं, उपाध्यक्ष महोदय, आपसे निवेदन करना चाहता हूं हम राजस्थान के किसानों का संकट जो लगातार बढ़ता जा रहा है उसको मिटाने के लिए अच्छा तो यह होता कि

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

आज प्रतिपक्ष के नेता हैं। हमें तो बड़ी उम्मीद थी कि किसान हैं, गुढामालानी के रहने वाले हैं, पश्चिमी क्षेत्र के हैं जहां लगातार अकाल से प्रभावित क्षेत्र रहा है, शीतलहर से प्रभावित क्षेत्र रह है, इच्छा शक्ति प्राप्त कर, हिम्मत संजो कर सोनिया गांधी से मिलते, मन मोहन सिंहजी से मिलते और भारत के गृह मंत्री से मिल कर...(व्यवधान) शीतलहर और पाला को इस एफेक्टेड केलेमिटी के अन्दर शामिल कराते तो हम मानते कि वास्तव में किसानों के आप हितेषी हैं।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यहां पर इस पवित्र सदन में शीत लहर और पाले पर चर्चा हुई, पाला पर चर्चा में भी मैं एक संकल्प यहां पर प्रस्तुत किया, प्रतिपक्ष के तमाम सदस्य वाक-आउट कर गये, मैंने भारत के गृह मंत्री को 1.3.2008 को पत्र लिखा। पत्र लिख कर आग्रह किया कि राजस्थान की जनता चाहती है, राजस्थान की साढे पांच करोड़ जनता, 75 परसेंट रहने वाले, राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्र की जनता, राजस्थान का किसान आज चाहता है कि शीत लहर और पाला में यह राजस्थान की भावना है, इस संकल्प के द्वारा आपको हम भेज रहे हैं, शीतलहर और पाला को एफेक्टेड केलेमिटी में आप शामिल करें । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बड़े कष्ट के साथ, बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि भारत के गृह मंत्री का पत्र आया...(व्यवधान) अभी पिलानी से आने वाले माननीय सदस्य ने कहा कि सीआरएफ के अंदर शीतलहर और पाला को ले लिया गया है । यह गृह मंत्री मंत्रीजी का पत्र मुख्य मंत्रीजी के पास आया, मुख्य मंत्रीजी के पास यहां पत्र मिला और उस पत्र में भारत के गृह मंत्री ने बिलकुल ही इन्कार किया, कहा कि ट्वैल्व फाइनेंस कमीशन के अन्दर आप बात करें । (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): एक मिनट । आपकी बीजेपी की सरकार वहां पर थी, एनडीए की सरकार थी । उस समय क्या इसको सीआरएफ ग्राउंड पर लिया हुआ था?

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): आपने मांगा क्या? आपने मांगा क्या?

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): यह बात सही है कि इसको सफल करने के लिए हम प्रयास करें लेकिन जो बात आपकी सरकार ने वहां की नहीं और अब आप कह रहे हो...... (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): अब यह घड़ियाली आंसू बहाना बंद करो और सही काम करो ।

श्री सांवर लाल (सिंचाई मंत्री): आपकी सरकार के कार्यकाल में कभी चिट्ठी लिखी क्या? आपके मुख्य मंत्रीजी ने मांग की कभी भारत सरकार से?

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): हमारे वक्त में ऐसा कोई पाला पड़ा ही नहीं.... (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): आपका पुराना कुछ नहीं है, सब मिलकर करो ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): किसानों की और कांग्रेस की राशि मिलती है ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): बीकानेर से आने वाले सदस्य ने मांगा....

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): किसान और कांग्रेस तो एक है । आपकी राशि नहीं मिलती है, आप सोचो । आप लोग नहीं करते हो । (व्यवधान) आप किसानों के बिलकुल विरोधी हैं ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): उपाध्यक्ष महोदय, आपका पराया क्या है जब सब किसानों के पक्ष में बोल रहे हो तो आप अच्छी सी बात के लिए संकल्प पारित करवाने के लिए रात क्यों कर रहे हो? (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): काल और कांग्रेस की राशि भी एक है।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): उपाध्यक्ष महोदय, जब कोई विवाद नहीं है.....

श्री सुरेन्द्रपाल सिंह टीटी (राज्य मंत्री, कृषि): कल्ला साहब, गहलोत साहब उस खेत्र में गये न उत्तर की तरफ पांच साल में पहली बार, चार दिन रहे और चारों दिन ही वो पाला डालकर सब कुछ खतम करके आ गये । मेहरबानी उनको यहीं रख लो, हमें तो मारने के लिए उधर गये थे । आप उस ट्रेक को देख लो ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): गंग केनाल का सुधार भी तो कांग्रेस ने ही किया और किसने किया?

श्री सुरेन्द्रपाल सिंह टीटी (राज्य मंत्री, कृषि): पांच साल में वो गये और उन चारों दिनों में ही.... (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): उपाध्यक्ष महोदय, विवाद से अच्छा है जब प्रतिपक्ष के माननीय सदस्य किसानों के प्रति इतने उदार हैं तो आप आगे चलकर के कहो न और प्रस्ताव पास करो ।

श्री उपाध्यक्ष: जवाब सुनिये ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): हम केन्द्र सरकार पर पूरा दबाव बनाये हुए हैं कि किसानों को मदद करो ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): ... आपकी चलती नहीं है, दबाव बनाओ, आपकी कोई नहीं मानेगा । (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: सुनिये शांति से ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): आपकी बहुत चलती है तो फिर आपको संसदीय सचिव क्यों बनाया, आगे मंत्री बनते न । (व्यवधान) क्या क्या यह ले ली आपने ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): यह विषय आपका नहीं है आप तो... (व्यवधान)

श्री सांवर लाल (सिंचाई मंत्री): केन्द्र में सरकार पर दबाव मत बनाओ, सोनियाजी पर बनाओ तब वह दिल्ली वाली सरकार सुनेगी । हम तो जा रहे हैं, आप भी... (व्यवधान) लेकिन टाइम ही नहीं मिला ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, बैठिये । बैठिये ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): आप अपने स्थान से बोलें ।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, किसानों के बहुत बड़े नेता वयोवृद्ध नेता जिन्हें हृदय से मैं भी सम्मान करता हूं परसरामजी मदेरणा, उन्होंने सोनिया गांधीजी, माननीय मनमोहनजी को पत्र प्रेषित किया । अगर उस वरिष्ठ नेता, राजस्थान के बड़े किसान, किसानों के हमदर्द हैं उन्होंने पत्र लिखा और उस पत्र को अगर वो काग्नीजेंस लेते तो उनका भी सम्मान होता नहीं तो उस वरिष्ठ नेता का बहुत बड़ा अपमान इन्होंने किया है ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): ..... सोनिया गांधीजी ने उनको रिप्लाई दी है और उन्होंने यह आश्वस्त किया है कि केन्द्र सरकार को राजस्थान की स्थिति के बारे में बतायेंगे और सहायता के लिए उनको कहेंगे । क्या बात है, आपको मालूम तो है नहीं ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): अभी तो पता ही नहीं सोनिया गांधी को राजस्थान की स्थिति । अभी तो सोनिया गांधी को राजस्थान की स्थिति का पता ही नहीं है ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ऑन ए पाइंट आफ आर्डर । ऑन ए पाइंट ऑफ आर्डर सर ।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): संसदीय सचिव महोदय, आप खड़े होकर के बात करें तो ज्यादा अच्छा रहेगा, बैठे-बैठे बात नहीं करें ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्रीजी का ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूं कि हमारे यहां नियमों में प्रावधान है कि जो सदन के सदस्य नहीं हैं उनके बारे में कोई बात नहीं की जाए चाहे वो सोनिया गांधीजी हों, चाहे परसरामजी मदेरणा हों । उनके बारे में कोई भी बात.....

श्री रामकिशोर मीणा (श्रम एवं नियोजन मंत्री): उनके गुण गाये जा सकते हैं, उनका विरोध नहीं किया जा सकता ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): .....कोटेड-अनकोटेड और जो माननीय सदस्य यहां सदन में मौजूद नहीं हैं उनके बारे में भी कोई इस तरह की बात नहीं की जाए इसलिए इनको माननीय मंत्रीजी को बता दें कि उनको कोट नहीं करें ।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): मैं विरोध नहीं कर रहा हूं, उनको सम्मान से बात कर रहा हूं । ऐसे नेता, वयोवृद्ध नेता जिनका मैं तहेदिल से सम्मान करता हूं और उनकी बात नहीं मानना, राजस्थान प्रदेश के किसानों के हित की उन्होंने बात की, उम्मीद तो थी प्रतिपक्ष के नेता और ये बी. डी. कल्ला साहब भी जाते ।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): हमको लेकर के जाओ, हम जाएंगे केन्द्र सरकार के वहां । हम चले चलेंगे ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): हम चलेंगे 10 तो ।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): राजस्थान के किसानों ने आपको यहां नहीं भेजा क्या? एक-एक काश्तकार आयेगा आपको बुलाने के लिए?

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, गत वर्ष राजस्थान के पश्चिमी बाड़मेर में कवास में भीषण बाढ़ की स्थिति हुई, जन-धन की हानि हुई, लोग बेघर हो गये, उन परिस्थितियों में राजस्थान की सरकार ने, राजस्थान के मुख्य मंत्री ने 3284 करोड़ रुपये के सहायता पैकेज

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

के लिए भारत सरकार से मांग की पर एक फूटी कौड़ी भी नहीं दी । 100 करोड़ भी कहा कि यह अगली योजना में रखेंगे । एक फूटी कौड़ी नहीं दी । कितने संवेदनशील हैं ये?

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि महाराष्ट्र, विदर्भ के अन्दर एक साल अकाल पड़ा और उस एक साल अकाल के अन्दर 1500 किसानों ने आत्महत्याएं कीं । हमारे तो राजस्थान के ये बहादुर किसान, यहां के रहने वाले लगातार 100 साल में से 40 साल अकाल पड़ा परन्तु ये बहादुर किसान नई उमंग नई ज्योति से खड़ा होता है । वहां पर बहुत बड़ा पैकेज दिया गया । यहां पर ऐसी त्रासदी हुई, भारत के प्रधानमंत्री को आकर उस त्रासदी में सम्मिलित, उन लोगों के साथ सम्मिलित होकर संवदेना प्रकट करने का समय नहीं मिला और पांच पैसे उन्होंने नहीं दिये । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सीआरएफ के नार्म्स में बाढ़ के समय जो आधारभूत सम्पत्तियां हैं उन सम्पत्तियों के पुनरोद्धार के लिए हमने भारत सरकार से मांग की, उनसे निवेदन किया कि बाढ़ के कारण जो हमारी परिसम्पत्तियां हैं वो जो नष्ट हो गई हैं उनके पुनरोद्धार के लिए, उनकी मेंटीनेंस के लिए, उनकी वापस तैयारी के लिए हमें जो समय सीमा दी है 30 दिन और 45 दिन, यह समय सीमा आप हटाओ । 30 दिन और 45 दिन में वापस पुनरोद्धार की कार्यवाही नहीं हो सकती । इसलिए इसमें समय की आवश्यकता है । यह प्रेक्टिकल बात हमने की । हमने यहां से पत्र लिखा, मेरे पूर्व जो अकाल राहत मंत्री थे उन्होंने भी पत्र लिखा और राजस्थान की यशस्वी मुख्य मंत्रीजी ने भी एक पत्र लिखा पर वाजिब मांग को मानने के लिए भारत सरकार तैयार नहीं है । इसके साथ में, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि उन्होंने इस हिसाब से किसानों के साथ में, उस गांव और गरीब के साथ में, उस अकुशल श्रमिक के साथ में इकोनामिक कोस्ट जो प्रस्तावित की है इस प्रस्ताव में अभी जो वर्तमान में है 4.77 रुपये प्रति किलो के हिसाब से मजदूर को गेहूं दिया जाता परन्तु इकोनामिक कोस्ट के हिसाब से यह कोस्ट 13 रुपये पड़ेगी जो उन मजदूरों की कमर तोड़ देगा । इसलिए भी हमने भारत सरकार से आग्रह किया है कि यह जो आपने इकोनॉमिक कोस्ट लगाई है इसमें आप संशोधन करें । इसके साथ में हमने 40 प्रतिशत मैटेरियल कम्पोनेंट के लिए भी भारत सरकार से आग्रह किया है, भारत सरकार इस पर गौर करे । मैं तो प्रतिपक्ष के नेता से आग्रह करना

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

चाहता हूं कि आप किसानों के हितैषी, प्रतिपक्ष के नेता किसानों की पैरवी करते हैं। राजस्थान का किसान जब समझेगा जब आप शीतलहर और पाला के अन्दर इस अफेक्टेड केलेमिटी में इस शीतलहर और पाला को आप सम्मिलित करायेंगे । यह जो राजस्थान के हित में, राजस्थान के पुनरोद्धार के लिए आप 40 प्रतिशत कम्पोनेंट्स के लिए और इकोनामिक कोस्ट जो उन्होंने लगाई है इसमें परिवर्तन कर हमारी मांग है कि एसजीआरवाई के तहत हो । जो पहले 4.40 रुपये प्रति किलो के हिसाब से गेहूं हम मजदूरों को देते थे उस हिसाब से वो कोस्ट रखी जाए ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी भारत सरकार ने कहा कि बहुत बड़े पैकेज की बात हुई, अभी 13 दिन में 34 किसानों ने विदर्भ के अन्दर खुदकुशी की । सड़क यह परिणाम है कि वो जो किसान जो पश्चिमी भारत के अन्दर, दक्षिणी भारत के अन्दर करीबन 6 हजार किसानों ने आत्महत्या की है भारत सरकार के इन नीतियों के कारण । आज महंगाई आसमान छू रही है, आज किसानों के लिए जिस हिसाब से गेहूं का आयात ज्यादा कोस्ट देकर, ज्यादा भुगतान कर और यहां के किसान को उचित मूल्य प्राप्त नहीं हो रहा है तो यह किसानों के साथ बहुत बड़ा धोखा किया जा रहा है ।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): मंत्री महोदय, अपन तो राजस्थान की चिन्ता कर लें देश की छोड़कर । अपने यहां के बच जाएं जो जाने वाले हैं, इसके बारे में कुछ बात हो तो ज्यादा बढ़िया है ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): आपकी जन्म पत्री बताई जा रही है ।

(समय : 21.00 बजे)

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): बाड़मेर कवास में राजस्थान सरकार के लिए पुनर्वास हेतु मगरा में 453 आवास बनाकर कब्जा दिया जा चुका है एवं 617 मकान बनाये जा रहे हैं, उनको अलाटमेंट कर दिया गया है और 289 आबंटियों को कब्जा दिया जा चुका है ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मलवा गांव के प्रभावित परिवारों को पुनर्वास के लिए 110 आवासों का निर्माण किया जा रहा है एवं 38 को कब्जा दिया जा चुका है ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक मार्च, 2008 से अभावग्रस्त क्षेत्र में जितनी भी गौशालाएं हैं, 12 जिले हैं, इनमें जो रजिस्टर्ड गौशालाएं हैं, उनको

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

अनुदान देने का जो गायें हैं, बड़े पशु हैं, उनको 18 रुपये की जगह 20 रुपये तथा जो छोटे पशु हैं जिनको पहले 9 रुपये देते थे, उनको 10 रुपये देने का एक मार्च, 2008 से निर्णय किया है ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसी तरह 15 मार्च, 2008 से पशु शिविर, चारा डिपो, पशु आहार की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गई है और तमाम जिला कलक्टर्स को हमने पत्र लिखकर निवेदन किया है कि जिस क्षेत्र के अन्दर आपको चारा डिपो की आवश्यकता है, पशु आहार की जितनी व्यवस्था है, उसके हिसाब से आप हमें लिस्ट दें और जहां माननीय सदस्यों ने चारा डिपो की बात की, जहां व्यक्तिगत रूप से भी आप हमें बतायेंगे कि वह गांव अभावग्रस्त है, तत्काल वहां पर चारा डिपो की यदि आवश्यकता है तो हम खोलने की व्यवस्था कर देंगे । 11 जनवरी, 2008 से राजस्थान के अन्दर इन गांवों के अन्दर अकाल राहत कार्य प्रारम्भ कर दिये गये ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, असहाय सहायता वितरण, एक मार्च, 2008 से 15 रुपये प्रति बच्चा प्रतिदिन और 20 रुपये प्रति वयस्क प्रतिदिन 60 दिन तक देने के लिए हमने निर्णय किया है और अगर कुछ ऐसी परिस्थिति है, विशेष परिस्थिति है तो हम इसको बढ़ाकर 90 दिन भी कर सकते हैं ।

पशु आहार पर अनुदान ढाई रुपये प्रति किलो, एक दिन में दो किलो पशु आहार है । हम अपनी तरफ से प्रयास कर रहे हैं, वित्त विभाग को हमने भेजा है कि ढाई रुपये के स्थान पर इसको पांच रुपये कर दिया जाये ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं प्रतिपक्ष के नेताओं को बताना चाहूंगा कि कांग्रेस काल में संवत् 2056 में फरवरी माह से अकाल राहत कार्य शुरू हुए थे, इसी तरह संवत् 2058 में मई माह में प्रारम्भ हुए थे और भारतीय जनता पार्टी की सरकार में संवत् 2061 में माह दिसम्बर में और संवत् 2062, 2063 और 2064 में माह जनवरी में कार्य प्रारम्भ कर दिये गये हैं ।

बिजली गिरने से मृत्यु के बारे में माननीय प्रतिपक्ष के नेता ने जो जानकारी दी है, इसकी जांच करा दूंगा। और राज्य सरकार की तरफ से अगर हमारे उस पैरामीटर में वास्तव में बिजली गिरने से मृत्यु हुई तो एक लाख रुपये उनको देने की व्यवस्था की जायेगी।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, शीतलहर और पाला, राजस्थान की जैसी स्थिति है, इसके अलावा हमने राजस्थान के तमाम सांसद महोदयों को और

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

अन्य प्रदेशों के नौ मुख्य मंत्रियों और अकाल राहत मंत्रियों को भी पत्र लिखा। हमने उनसे आग्रह किया कि राजस्थान की जैसी स्थिति है, भौगोलिक परिस्थिति है, जहां लगातार कई वर्षों से पाला और शीतलहर से यहां के किसान प्रभावित होते रहे हैं । इसी तरह से पंजाब में ही होता है लेकिन पंजाब में अकाल की स्थिति नहीं होती है । हरियाणा में भी है तो वहां पर इस तरह की स्थिति नहीं होती है । मात्र राजस्थान में होती है । इसलिए हमने आग्रह किया है, मैं प्रतिपक्ष के नेताओं से भी आग्रह करूंगा कि जो राजस्थान के किसानों की भावना है, राजस्थान के आम-अवाम की भावना है, इस इफेक्टिव केलेमिटी में शीतलहर और पाला को भी शामिल किया जाये ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि यह अकाल राहत के काम 31 मार्च तक रहेंगे । मजदूरों की जो श्रमिक सीमा थी, उससे भी बढ़कर हमने श्रमिक सीमा दी है । पशु शिविर, चारा डिपो की व्यवस्था की है और जहां जिस जिले के अन्दर अकालग्रस्त और अभावग्रस्त गांव हैं तो वहां उस जिले में, 12 जिलों में रजिस्टर्ड गौशालाएं हैं, उनको भी हमने अनुदान देने का एक मार्च से निर्णय लिया है । मैं पूरे सदन से आग्रह करूंगा और विशेषकर प्रतिपक्ष के नेताओं से कि इस केलेमिटी को इफेक्टिव केलेमिटी में शामिल करने के लिए आप भी अपने प्रभाव का उपयोग करें और राजस्थान में इसके स्थाई समाधान के लिए, अकाल की स्थाई समस्या के निदान के लिए, आलोचनात्मक और रचनात्मक बातें हैं, पर स्थाई समाधान के लिए आप और हम सब को मिलकर एक ऐसा समाधान करना है, ऐसी व्यवस्था सोचनी है जिससे राजस्थान में अकाल, बाढ़ और यह शीतलहर और पाला की स्थिति से हमारे किसान प्रभावित न हों। और मैं आशा करता हूं कि राजस्थान की यशस्वी मुख्य मंत्रीजी ने जो किसानों के हितों की बात कर जो निर्णय लिया है आपदा प्रबन्धन के अन्दर, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 2003-2004 में 649 गांवों को अभावग्रस्त घोषित किया गया था। और इसी तरह से 2004-2005 में हमने परिसम्पतियों के लिए 93 करोड़ रुपये व्यय किये हैं । इसी तरह से राहत कार्यों के अन्तर्गत स्थाई परिसम्पतियों के निर्माण के लिए 48.94 करोड़ रुपये राज्य मद से हमने वहन किया । 2005 में अतिवृष्टि और बाढ़ में सड़क, तालाब और बांधों के पुनरूद्धार के लिए हमने 45 करोड़ रुपये की राशि उपलब्ध कराई है । इसी तरह से 1,201 गांवों को अभावग्रस्त घोषित कर राहत गतिविधियां संचालित की हैं ।

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 2005 और 2006 में राज्य सरकार ने 15,778 गांवों को अभावग्रस्त घोषित किया है । अब मैं क्योंकि सभी माननीय सदस्य...

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): नहीं नहीं, आप तो हमें पूरी बात अच्छी तरह से समझाओ ।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 4,309 गांवों को अभावग्रस्त घोषित किया गया, इसमें 11.1.2008 को इनको अभावग्रस्त घोषित किया गया और इसमें एक लाख श्रमिक सीमा का पहले मैंने बता दिया है । मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह भी एक समस्या है अकाल की, शीतलहर की और पाले की, इसके स्थाई समाधान के लिए सभी सदस्यों को मिलकर हमें प्रयास करना चाहिए । मैं आशा करता हूं कि इसके स्थाई समाधान के लिए हम ज्यादा प्रयास करेंगे।

श्री उपाध्यक्ष: धन्यवाद । श्री गजेन्द्र सिंहजी, ऊर्जा राज्य मंत्री ।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): उपाध्यक्ष महोदय, उपाध्यक्ष महोदय...

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): माननीय मंत्री महोदय, पाली जिले में जो गिरदावरी हुई है, उसके बारे में आपने कुछ नहीं फरमाया ।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): आज की जो स्थिति है पाले की, उसके बाद में क्या आंकलन होकर इसकी क्या स्थिति आई है, यह तो बताने का कष्ट करें ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): आप तो 75 प्रतिशत केन्द्र से दिलवाने की हां करो तो कोई सरकार की तरफ से प्रस्ताव आये स्थाई समाधान के लिए ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, माननीय सदस्य, बिराजिये ।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): उपाध्यक्ष महोदय, आज की स्थिति क्या है पाले की, यह तो पता लगे । यह तो पता लगे ।

श्री उपाध्यक्ष: जवाब दे रहे हैं ये । बिजली वाले जवाब दे रहे हैं । यह बिजली से सम्बन्धित मामला है माननीय सदस्य ।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): बिजली के बाद तो छुट्टी है उपाध्यक्ष महोदय कल तक की ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): उपाध्यक्ष महोदय, करेंगे भी क्योंकि चुनाव है, कुछ न कुछ संशोधन भी करेंगे, पर हमारे कहने से नहीं हो रहा है ।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): उपाध्यक्ष महोदय, हमारे सुझावों का तो ध्यान रखना आप ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, माननीय सदस्य, बिराजिये ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): उपाध्यक्ष महोदय, वक्तव्य देने की बात पर व्यवस्था दी थी आसन की तरफ से, ईसबगोल जीरे का तो नाम ही नहीं लिया मंत्रीजी ने ।

श्री उपाध्यक्ष: अब आपने भी चर्चा नहीं की कोई खास ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): नहीं नहीं, चर्चा की थी मैंने । की कैसे नहीं, मैंने की थी ।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): उपाध्यक्ष महोदय, जीरा और ईसबगोल पाली जिले में पूरी तरह नष्ट हो गया है, उसके बारे में जिक्र नहीं हुआ । हमने चर्चा की थी उस पर ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): आपने उस पर व्यवस्था दी थी... (व्यवधान) हमने दो मिनट की बात की थी और मंत्रीजी उस पर अपना वक्तव्य देंगे, आप ईसबगोल और जीरे का जो नुकसान हुआ है, उसके बारे में आज वक्तव्य की बात के लिए आसन से व्यवस्था हो गई और अब इन्होंने अपने वक्तव्य में उसका नाम भी नहीं लिया, ईसबगोल जीरे का तो कम से कम नाम तो लो ना । कुछ भी नहीं करोगे तो वैसे कह दो ना ।

श्री उपाध्यक्ष: जवाब दे रहे हैं ।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): मंत्रीजी, अपने जिले में भी जीरा ईसबगोल नष्ट हो गया है ।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): खरीफ के खराबे के बाद आज की जो स्थिति है माननीय मंत्री महोदय, जो पाले के कारण फसल नष्ट हो गई पूरे राज्य में, उसके बाद में आप जो कुछ करने जा रहे हैं, यह बात भी आपने कहीं कही है, आपने पैकेज की बात फरमाई, वह एक अलग बात है ।

श्री उपाध्यक्ष: बहुत विस्तृत रूप से कह दिया । हम जो कर रहे हैं, वह बता दिया आपने ।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप भी इस बात से विदित हैं कि गिरदावरी की जाती है, गिरदावरी की जांच 25 प्रतिशत आर.आई. करता है, 10 प्रतिशत उपखण्ड अधिकारी करता है, कलक्टर भी इसकी जांच करता है, टैस्टिंग के रूप में मुआयना भी करता है तो तीन-चार बार इसकी जांच होकर फिर गिरदावरी की जाती है । आप भी अच्छी तरह भली-भांति परिचित हैं और मैं तमाम सदस्यों को आश्वस्त करता हूं कि गिरदावरी की जो प्रक्रिया है, उस व्यवस्था में प्रक्रिया में किसी तरह कोई गड़बड़ी नहीं होगी और निश्चित रूप से गिरदावरी रिपोर्ट आते ही, जैसा कि आपने कहा है, वहां उस हिसाब से राहत की व्यवस्था उस सी.आर.एफ. के नोर्म्स के आधार पर की जायेगी ।

श्री उपाध्यक्ष: श्री गजेन्द्र सिंहजी, ऊर्जा राज्य मंत्री ।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अगर क्राप कटिंग की रिपोर्ट विपरीत आ गई फिर क्या जवाब देंगे, सरकार क्या जवाब देगी उस वक्त? क्राप कटिंग की रिपोर्ट अगर विपरीत आ गई, जीरा और ईसबगोल नष्ट बता दिया तो क्या जवाब देगी?

श्री उपाध्यक्ष: स्थान ग्रहण कीजिये । (व्यवधान)

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने आज बोलने की अनुमति दी, आपको मैं धन्यवाद देना चाहता हूं और सब माननीय सदस्यों ने चर्चा के दौरान जो सुझाव दिये उनको भी धन्यवाद देना चाहूंगा । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा और मैं जो भी बिजली के दौरान जो भी, ऊर्जा के दौरान जो भी विषय मैं बोलूंगा मैं बिलकुल एक्चुअल, फैक्चुअल फीगर्स और जो चीज, मैं कभी कोई चीज कागज लेकर मैं बोलता हूं तो मैं पूरा वैरीफिकेशन करके बोलता हूं। कम बोलता हूं पर जब बोलता हूं तो एक्चुअल फीगर्स लेकर बोलता हूं। और आप ऊर्जा मंत्री खुद रह चुके हैं तो या तो विपक्ष के माननीय सदस्य यह चैलेंज देवें कि यह फीगर्स मेरे गलत हैं और अगर फीगर्स सही हैं तो सफेद को सफेद और काले को काला कहें, उसमें इससे ज्यादा और कुछ नहीं चाहता हूं । अगर आप एक मानस बना लो कि जीरो मार्क्स देने हैं वह आपकी मर्जी है। और मुझे बहुत गर्व है कि जो हमने कार्य, जो हमने प्रयास किये हैं, ठोस प्रयास किये हैं ऊर्जा विभाग के अंदर, शायद हमें सौ में से सौ नहीं मिले, लेकिन हमने बहुत अच्छा काम करके एक डिस्टिंक्शन तो हमने जरूर लिया है । राजस्थान, उपाध्यक्ष महोदय, (व्यवधान) मैं आपको बताऊंगा, आप थोड़ा सा धैर्य रखें । (व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): डिस्टिंक्शन कैसे हुआ, ताली तो दो आदमियों ने ही बजाई, डिस्स्टिंक्शन कैसे हुआ? (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: बता रहे हैं, बोलने के बाद, जवाब देने के बाद ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान एक तरह से बहुत हैंडीकेप्ड स्टेट है फ्राम द प्वाइंट आफ व्यू कि पानी बहुत गहरा है और क्षेत्रफल बहुत बड़ा है। और जो एनर्जी किसानों को हमने देनी पड़ती है एग्रीकल्चर को, जो बिजली हम दस रुपये में खरीद रहे हैं और नब्बे पैसे में हम दे रहे हैं, वह लगभग पचास प्रतिशत हमारी बिजली हम किसानों को दे रहे हैं। लेकिन जैसे वेस्ट बंगाल है वहां पर दो प्रतिशत देते हैं, महाराष्ट्र में 20 प्रतिशत देते हैं। तो जो फाइनेंशियल बर्डन है वह हमारे ऊपर आ रहा है, जो बिजली का कंजम्प्शन है वह हमारे ऊपर आ रहा है तो यह एक दूसरे प्रदेश जैसी सामान्य स्थिति राजस्थान की नहीं है । हमारी सरकार जब 2003 दिसम्बर में आई तो ऊर्जा विभाग का जहां मामला है हमें एक कांटों का ताज हमने इनहरेट किया । पिछली सरकार बिजली की नाराजगी के ऊपर एक बहुत हद तक जनता ने बहुत अपना आक्रोश जताया । कई धरने थे, दो सौ धरने हुए और 2003 में, उपाध्यक्ष महोदय, पीक डिमांड थी 3289 मेगावाट की और 2008 के अंदर यही 5600 मेगावाट पीक डिमांड हो गई । आश्चर्य की बात यह है कि कांग्रेस सरकार के पांच वर्ष के अंदर बिजली की जो सप्लाई इन्होंने स्टेप अप की थी, मतलब जो बढ़ाई थी सप्लाई पांच साल के दरम्यान, वह केवल सात प्रतिशत थी और हमारी सरकार ने चार साल के अंदर 32 प्रतिशत सप्लाई ज्यादा दी है और हमारे कार्यकाल के अंत तक यह चालीस प्रतिशत को क्रास कर जायेगी । अब यह गम्भीरता का विषय यों है कि एक तरीके से कंजम्प्शन बढ़ने का मतलब यह है कि हमने कनेक्शन दिये, हमने बिजली की एक्ससेबिलिटी दी लोगों को और राजस्थान की खुशहाली जिसको कहते हैं न कि एक इकोनोमिक फेक्टर, यह बिजली का कंजम्प्शन इतना होना एक इकोनोमिक फेक्टर है राजस्थान की खुशहाली और ...

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): यह इंडीकेटर है ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): यह इंडीकेटर है पर हमारी गलती यह हुई उपाध्यक्ष महोदय, कि हम यह इतना हमारा ग्रोथ फोरकास्ट नहीं कर पाये। और कांग्रेस की सरकार थी जिस समय, तो बिजली की कमी नहीं थी? इनकी सरकार थी तो क्या व्यवस्था थी बिजली की? क्या बिजली का विभाग

(श्री गजेन्द्र सिंह)

बहुत टाप कंडीशन में था जो हमारे पर आरोप लगाये जा रहे हैं और बिजली की शार्टेज हमने इनहरेट करी और एक पावर प्रोजेक्ट जिसका इन्होंने, गिराल का टेण्डरिंग किया था, उसके अलावा यह पाइप लाइन में कुछ नहीं छोड़ गये। और अब मैं माननीय प्रतिपक्ष के नेता से भी पूछना चाहूंगा कि पावर प्रोजेक्ट क्या सब एक साल में लग जाता है, छह महीने में लग जाता है क्या, दो साल में लग जाता है? एक ग्रीन फील्ड प्रोजेक्ट को चार साल लगते हैं, तो हमारा इम्तिहान तो अभी आयेगा, चार साल के बाद ही तो आयेगा हमारा इम्तिहान ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): आपने अपने टाइम में कोई प्रोजेक्ट सेंक्शन करके शुरू करके पूरा किया है तो एक का ही नाम बता दें। आपके गिराल और धौलपुर का है, यह तो हमारे टाइम शुरू हो गया था काम आपने उसमें क्या किया? वह भी कहां चल रहे हैं, कितना उत्पादन दे रहे हैं...

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): बच्चा जन्मते ही हल नहीं जोतता । उपाध्यक्ष महोदय, बच्चा जन्म लेने के तुरन्त बाद हल नहीं जोत सकता ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): उपाध्यक्ष महोदय, बिजली की समस्या पूरे देश में है । जो हिमाचल जैसे प्रदेश हैं, उत्तरांचल जैसे, जिनके पास खूब बिजली है वह भी सर्दियों में बिजली खरीदते हैं । तो यह नहीं है कि समस्या नहीं है । बिजली की समस्या, हम तो कम से कम, हमारी जो कटौती हो रही है, हम अख़बार में निकालते हैं, सब को बताते हैं, आप नोएडा में जाइये, वह बताते नहीं हैं कि कितने घंटे उनकी लोड शेडिंग हो रही है । दस दस, ग्यारह-ग्यारह घंटे बिजली की शेडिंग होती है । अभी मैं बम्बई गया था उपाध्यक्ष महोदय, वहां पर होली के बाद में बम्बई को छोड़ कर पूरे महाराष्ट्र के अंदर बारह घंटे बिजली की कटौती शुरू करेंगे गर्मियों में । तो मैं यह कहता हूं कि राजस्थान हमारे आसपास के हरियाणा, यूपी, पंजाब सब प्रदेश देख लें आप, मैं छाती ठोक कर बोलूंगा कि हम मच बैटर आफ हैं उन स्टेट से। यह समस्या जब आई, हमारी इतनी इकोनोमिक ग्रोथ हुई, पीछे यह पावर प्रोजेक्ट छोड़ कर नहीं गये तो हम क्या करते, हम जनता को कनेक्शन कह देते कि साहब बिजली नहीं है, हम कनेक्शन नहीं देंगे या किसानों को कह देंगे कि तीन घंटे बिजली देंगे, बिजली हमारे पास नहीं है? कांग्रेस सरकार कोई प्रोजेक्ट

(श्री गजेन्द्र सिंह)

छोड़कर नहीं गई । हमने बिजली हमारे चार साल के कार्यकाल में 3100 करोड़ की बिजली खरीदी और कांग्रेस सरकार ने पांच साल में केवल 477 करोड़ की खरीदी । दस रुपये में खरीद कर नब्बे पैसे में दी और यह कहते हैं कि किसान हितैषी हैं, कैसे किसान हितैषी हो । इसके अलावा...

श्री कालीचरण सर्राफ (शिक्षा मंत्री): 2600 करोड़ की बिजली आपसे ज्यादा दी, बोलो ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): अब यह सप्लाई, उपाध्यक्ष महोदय, सप्लाई की बात करते हैं तीन-चार घंटे की, उपाध्यक्ष महोदय, जब इतनी बिजली खरीदी, जब इतनी बिजली हमने सप्लाई दी तो क्या हवा में उड़ जाती है बिजली, कहां गई और मैं...

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): यह घनश्यामजी पी गये । (व्यवधान)

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): चोरी भी अगर हुई तो राजस्थान के लोगों ने, उपभोक्ता ने कंज्यूम करी, कोई हरियाणा के लोगों ने नहीं ली, या तो हमारे उपभोक्ता ने ली, हमारे किसान को, हमारे सिटीजन को मिली । उड़ गई क्या?

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): यह एडमिट कर रहे हो चोरी हुई । यह एडमिट कर रहे हो? आप यह एडमिट कर रहे हो चोरी हुई । आपने जनरेशन का काम नहीं किया है इसलिए आपको बिजली खरीदनी पड़ी है । (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: यह तो आप कह रहे हो, यह तो आप कह रहे हैं ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): यह चूंकि आप कह रहे हो कि चोरी हुई पर वह बात...(व्यवधान)

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान का किसान धरती माता का सपूत है और उसके लिए लांछन लगा रहे हैं, यह बर्दाश्त नहीं किया जायेगा इस सदन में ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): आपने तो बिजली की लाइन लगा दी थी, खूब पैदा कर दी थी?

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): केवल काश्तकारों का +++

श्री जुबेर खान (रामगढ़): आप तो इतने हट्टे-कट्टे हो, आपका खून तो किसी ने नहीं चूसा । इतने हट्टे-कट्टे कैसे रह जाते ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): उपाध्यक्ष महोदय, मैं मेरे पद से इस्तीफा देने को तैयार हूं अगर कोई मुझे यह प्रूव कर दे कि पांच-छह घंटे में बिजली कम मिली है । सीएमआरआई रीडिंग है, इसका हिसाब होता है, आडिट होती है । ऐसे कैसे बोल देते हैं कि तीन-चार घंटे हमें बिजली मिल रही है । डूंगरगढ़ से पधारने वाले माननीय सदस्य ने आरोप लगाया, कभी कहते हैं तीन घंटे, कभी कहते हैं पांच घंटे, कभी कहते हैं दो घंटे, इनका माइंड स्थिर नहीं है बिलकुल, 220 केवी का आपका सब-स्टेशन इस महीने के एन्ड में तैयार होगा ताकि आप लोगों की सप्लाई अच्छी हो, उसके बाद भी आरोप लगा रहे हैं आप।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): अन्न नहीं खा रहे । अन्न नहीं खा रहे..(व्यवधान)

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): मैं आपको सच बता रहा हूं, सही बता रहा हूं, लाइट इतनी ही मिल रही है, मैं गलत बात नहीं कहता । मंत्री महोदय, मैं गलत बात नहीं कहता, लाइट इतनी ही मिल रही है, आप किसी से पता करवा लें ।

एक माननीय सदस्य: यही तो कहते हो, आरोप लगाया था... (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: आपको बीच में डिस्टर्ब करने की आवश्यकता नहीं है ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मैं सदन को एक और चीज बताना चाहूंगा कि यह जो...

श्री जुबेर खान (रामगढ़): प्यार से बताओ, प्यार से ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): आप लोगों ने भी बहुत झटके दिये हैं । वह आपके महिपालजी जो हैं न, उन्होंने कहा कि बेबी मिनिस्टर हैं । अब रिछपालजी, मैं बेबी जैसा तो लगता नहीं हूं और तागड़ी में बैठ जाऊं तो ऐसे तीन महीपालजी बैठाने पड़ेंगे ।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): यह तो आपके जोधपुर का मामला है ।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): आपने कहा प्यार से बोलो, आप प्यार करने लायक हो भी नहीं ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन को एक और चीज बताऊंगा कि हमारी जो बिजली की जो समस्या आई, जनवरी से पहले राजस्थान को सेंट्रल गवर्नमेंट ने रिकानाइज किया एक साल से कटौती रहित स्टेट था, हम चार स्टेटस में थे बेस्ट फोर, उसका कागज भी मेरे पास में है । सेंट्रल गवर्नमेंट का डिक्लीयरेशन है । जो समस्या आई अभी आई सर्दियों के अंदर जनवरी के अंदर मैं आपको बताना चाहूंगा कि केन्द्र सरकार ने हमारे साथ कैसा सौतेला व्यवहार किया । आज हमारे कितनी सुंदर धरती के हमारे जो कोटा के अंदर इतने बड़े-बड़े सरोवर हैं, इतने जंगलात है वहां पर एटोमिक पावर के प्लांट्स लगाए हुए हैं। और हमारा जो शेयर था उसके अंदर जो हमारे राजस्थान में हम इनको इंस्फ्रास्ट्रक्चर दे रहे हैं, सब कुछ दे रहे हैं । इनकी जो पहली यूनिट जो है 220 मेगावाट मिलती थी, वह जीरो हो गई और दूसरी यूनिट में माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 220 मेगावाट जो कि हमारे लगभग दो गिराल के बराबर थी इन्होंने उसको सट-डाउन किया है मेंटीनेंस के लिए अप्रैल,2007 के अंदर, अप्रैल 2007 के अंदर उसको मेंटीनेंस के लिए सट-डाउन किया है । हमें बिजली नहीं मिली उसकी पूरी सर्दी के अंदर । इसके अलावा हमारी गैस 8-9 दिनों के लिए इन्होंने काट ली धौलपुर के अंदर ओएनजीसी ने, सेंट्रल यूनिट्स का जितना फैलियर हुआ है मैं आपको आंकड़े दूंगा कि जो सेंट्रल यूनिट्स का फैलियर हुआ है। कभी रिहान डाउन हो गई, सिंगरोली डाउन हो गई, हमारे कंट्रोल में तो है नहीं। तो हमारा जो कोटा मिलना चाहिए, वह हमें नहीं मिला। और माननीय सिरोही से पधारने वाले माननीय सदस्य आपको यह बताना चाहूंगा कि खाली चश्मे पहनने से विद्वान नहीं हो जाते हैं। यह जो आपने अनलोकेटेड कोटा की बात की है मैं आपको बताना चाहूंगा कि या तो आप अपना होम वर्क अच्छी तरह से नहीं करते हैं। मैं आपको बताना चाहूंगा कि 28 प्रतिशत जो था वह हमारी बीजेपी सरकार सेंटर में थी हमें मिलता था 28 प्रतिशत अनलोकेटेड कोटा, इसको घटा कर इन्होंने 11 प्रतिशत कर दिया जुलाई, 2007 फिर माननीय मुख्य मंत्रीजी जाकर के प्रधानमंत्री से मिली और फिर उसको बढ़कर इन्होंने 19 प्रतिशत कर दिया। तथा इसके अलावा हम... (व्यवधान).

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): आपने जो कोट किया है, मैंने 19 ही कोटा किया है, मैंने कौनसा 29 कोटा किया है?

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): आपने कहा था 28 नहीं था, कभी आपने अपने भाषण में आपने बोला 28 प्रतिशत नहीं था, आप रिकार्डिंग सुन लीजिए...

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): आप सुनते तो हो नहीं, ध्यान तो कहीं और रहता है आपका ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): सब सुनते हैं ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, माननीय सदस्य ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम जब बिजली ओवर ड्रोल करते हैं ग्रिड से तो उसकी रेट केन्द्र सरकार ने 7 रुपये 45 पैसे रखे थे, अब इन्होंने उसको बढ़ाकर के 10 रुपए कर दिये । हमारे जितने भी बाय लेटरल एग्रीमेंट्स हुए थे वेस्ट बंगाल से, दूसरे स्टेट्स से उन्होंने उसको डिसआनर कर दिया। क्योंकि उनको 10 रूपये के अंदर बिजली ग्रिड में उनको मिल रही थी और उन्होंने एक रुपए हमें पेनेल्टी दे दिया, अब दस रुपए जब हमने पूछा क्यों बढ़ाया? तो उन्होंने कहा कि 10 रुपये पर यूनिट हमने इसलिए बढ़ाया है कि जो-जो क्षेत्र अपना पावर प्रोडक्शन नहीं कर रहे हैं वह ग्रिड से क्यों ड्रा करें? लेकिन हमारा टेंथ फाइव ईयर प्लान के अंदर माननीय मुख्य मंत्रीजी को प्रधान मंत्रीजी काम्पलीमेंट किया था पिछले साल कि Rajasthan was amongst the three states जिसने टेंथ फाइव ईयर प्लान में अपना जनरेशन फुलफिल किया । अपना जनरेशन फुलफिल किया टेंथ फाइव ईयर प्लान के अंदर तो यह जितना भी कारण मैंने आपको बताया है हमारी जो शोर्टेज हुई है बिजली की....

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री):...(व्यवधान). क्यों धमका रहे हैं वहां बैठे-बैठे?

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य आपस में बातचीत नहीं ।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): नहीं, नहीं हम इनसे डरने वाले नहीं हैं साहब, न ही हमारा खानदान डरने वाला है और पहले प्राब्लम नहीं है, इस जीवन में भी नहीं है, पिछले में भी नहीं है...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, माननीय सदस्य ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जैसे वह जो चूडी बाजार में चूडी फंस जाती है, वह नीडल फंस जाती है, एक ही यह चीज है कि जनरेशन में कुछ नहीं किया, जनरेशन में कुछ नहीं किया । मैं हर

(श्री गजेन्द्र सिंह)

साल सुनता आ रहा हूं । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कांग्रेस की सरकार के समय में यह जो निम्नलिखित जो प्रोजेक्ट्स हैं यह इन्होंने प्रोडक्शन किया एसटीपीएस की यूनिट 2, 3, 4, 5, 250 मेगावाटx4=1000 मेगावाट, केटीपीएस की यूनिट-6, 195 मेगावाट, रामगढ़ की 75 मेगावाट और इन्होंने विंड से पवन ऊर्जा से 111 मेगावाट इनके पांच साल के कार्यकाल के अंदर 1371 मेगावाट का प्रोडक्शन हुआ । बताइए इससे ज्यादा एक मेगावाट भी हुआ है तो बताइए, यह बिल्कुल सत्य आंकड़े हैं, बिलकुल सही है इसके अलावा अब मैं माननीय उपाध्यक्ष महोदय थोड़ा समय लेकर कहूंगा कि हमारा गिराल नम्बर-1 125 मेगावाट अब सही चल रहा है, धौलपुर की तीन इकाइयां हैं 330 मेगावाट की हमारी सही चल रही हैं और बायोमास और विंड के अंदर हमारे कार्यकाल में 500 मेगावाट का प्रोडक्शन हुआ है यानी आज की तारीख में हम 1000 मेगावाट को टच कर रहे हैं ।

इसके अतिरिक्त इसी वर्ष माननीय उपाध्यक्ष महोदय और जब मैं जो प्रोजेक्ट्स के नाम लूंगा कोटा संभाग के नजदीक जो माननीय सदस्य जिस एरिया से हैं आप जाकर के देखिए कि कोटा थर्मल के अंदर क्या एक यूनिट तैयार होने जा रही है, सूरतगढ़ में क्या तैयार होने को जा रही है, छबड़ा के अंदर तैयार हो रही है कि नहीं हो रही है? यह कोई, हम कोई इनको ऐसी ग़लतफ़हमी में डालकर नहीं कर रहे हैं माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 2008, इस 2008 के अंदर आपके मैं एक दो महीने आगे पीछे भी ले रहा हूं फोर डिले 2008 के अंदर आपकी गिराल नम्बर-2 जून के अंदर 125 मेगावाट का प्रोडक्शन शुरू हो जाएगा । इसके अतिरिक्त छबड़ा नम्बर-1 और 2 500 मेगावाट आ जाएगी, एसटीपीएस यूनिट नम्बर-6 250 मेगावाट आ जाएगी, केटीपीएस यूनिट नम्बर-7 195 मेगावाट आ जाएगी, विंड और बायोमास से हमारे नैक्स्ट फाइनेंसियल ईयर में 500 मेगावाट हमारा प्रोडक्शन हो जाएगा और जलीपा और कपुडी के अंदर जो वेस्ट पावर के जो प्रोजेक्ट्स हैं माननीय प्रतिपक्ष के नेता बाड़मेर के रहने वाले हैं। इनको यही नहीं मालूम है कि बाड़मेर में पावर प्रोजेक्ट्स का क्या हो रहा है? मतलब बाड़मेर पश्चिम राजस्थान का पावर हाउस बनने वाला है, इनको मालूम ही नहीं है कि अपने डिस्ट्रिक्ट में क्या हो रहा है? आपको मैं माननीय उपाध्यक्ष महोदय के माध्यम से आपको सूचना देना चाहूंगा कि 270 मेगावाट आपके जलीपा कपुडी की पहली और दूसरी इकाई इस वर्ष शुरू हो जाएगी । मेरी आज ही बात हुई है

(श्री गजेन्द्र सिंह)

और बरसिंहसर की 250 मेगावाट इस साल शुरू हो जाएगी और मरूधर पावर की 135 मेगावाट इस साल शुरू हो जाएगी बीकानेर में तो 2225 मेगावाट 2008 में आ जाएगी । इनका आप टोटल लेते हो तो 3180 मेगावाट हमारा 2008 के अंत तक हमारे कार्यकाल के अंदर हमारी प्रोडक्शन हो जाएगी । इनसे ढाई गुणा ज्यादा, अब आप इसमें माननीय उपाध्यक्ष महोदय कोई एक भी डाउटेबल मैटर है क्या? सब हो रहे हैं, ठोस सबूत है हमारे पास...

श्री उपाध्यक्ष: कहां कर रहे हैं? डाउट नहीं कर रहे हैं इसमें ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): इसके अतिरिक्त हमारी पोलिसी इनकी पोलिसी जैसे नहीं है। इन्होंने अपने कार्यकाल में इनके जितने भी प्रोजेक्ट्स आए लास्ट के अंदर आये इन्होंने अपना ही सोचा और जब इनकी सरकार गई तो उस समय यह फिर भी बिजली की जो शोर्ट-फाल छोड़कर गए। हम हमारे क्षेत्र के लिए हम दूरदृष्टि के मार्फत हमने यह प्लान किया है कि सरकार कोई भी आये राजस्थान को हम इस साल आत्मनिर्भर बनाएंगे और इसको अगले साल सरप्लस बनाएंगे । आपके माध्यम से मैं इस हाउस को यह बताना चाहूंगा कि वेस्ट पावर की 800 मेगावाट की जो यूनिट्स हैं वह अगले साल प्रोडक्शन में हर दो-ढाई महीने में एक-एक यूनिट आकर के 800 मेगावाट अगले साल प्रोडक्शन हो जाएगा, कालीसिंध के 1200 मेगावाट का कार्य एक महीने के अंदर शुरू होने वाला है। और छबड़ा-3 और 4 का अगले दो तीन महीने के अंदर उसका भी काम शुरू हो जाएगा। मेरे कहने का मतलब है उसके अलावा कवाई के अंदर एक हजार मेगावाट का एमओयू साइन हो गया है और वह 1000 मेगावाट भी आपका आ जाएगा। आरएपीपी की दो यूनिट्स अब आनी हैं तो राजस्थान के अंदर चार हजार मेगावाट का जो पावर प्रोडक्शन है वह आपके 2009 के अंदर आपके आ जाएगा, चाहे कोई भी सरकार आये । हम दूरदृष्टि की वजह से...(व्यवधान) अब माननीय उपाध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्रीजी ने खुद राजस्थान को काग्रेच्युलेट किया, मैं वहां था मीटिंग के अंदर, कि टैंथ फाइव ईयर प्लान में राजस्थान ने अपना कोटा फुलफिल कर दिया है। सिरोही से पधारने वाले माननीय सदस्य आप सरदारजी से मिलकर के आइए वहां पर, उनसे पूछिए उन्होंने काम्पलीमेंट किया कि नहीं राजस्थान को टैंथ फाइव ईयर प्लान के लिए। और माननीय प्रधानमंत्रीजी से मिलकर के आइए आप। और जो 11वां फाइव ईयर प्लान है जो अप्रैल में शुरू हुआ, पांच साल के

(श्री गजेन्द्र सिंह)

फाइव ईयर प्लान में विदिन टू ईयर हम 70 प्रतिशत हमारा कोटा फुलफिल कर लेंगे । कोयला की शोर्टेज जो हमारे देश में आ रही है, गैस की भी शोर्टेज है, मेरा यह सोचना है कि राजस्थान का भविष्य है वह हमारे लिग्नाइट के ऊपर है । लिग्नाइट के हमारे खुद के भंडार है और जो फिटहेट जो माइनिंग हो रही है और जो वहीं पर प्लांट लग रहा है। वो एक बहुत अच्छी चीज हो रही है और हमारी सरकार यह गर्व के साथ कह सकती है कि पहला मेगावाट बिजली का राजस्थान में लिग्नाइट का हमने निकाला है गिराल-वन का। और भविष्य में मेरी यह सोच है कि अब पूर्वी राजस्थान में पावर प्रोजेक्ट्स आपके खूब आ रहे हैं पश्चिमी में आ रहे हैं सूरतगढ़ उत्तर में है। अब मेरा यह सोचना है कि अगली जो प्लानिंग है वो होनी चाहिए बांसवाड़ा और दक्षिणी राजस्थान के लिए जहां पर खूब पानी है और उससे बेलेंस आ जाएगा । सोलर के अन्दर राजस्थान को फर्स्ट प्राइज फोर सोलर एनर्जी वर्क्स हमें दो महीने पहले मिला था । उपाध्यक्ष महोदय, अब जहां तक एग्रीकल्चर कनेक्शन की बात है मैं आपके माध्यम से यह बताना चाहूंगा कि कांग्रेस सरकार ने प्रतिवर्ष जितने कनेक्शन दिये हमने उससे डबल दिये तो क्या गुनाह किया हमने? हमने डबल दिये फिर भी ये कहते हैं कि हमने कुछ नहीं किया ।

श्री उपाध्यक्ष: और ज्यादा मांग रहे हैं ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): हमने 1,70,740 पेंडिंग एप्लीकेशंस थी और ये जो एप्लीकेशंस हैं हम इन एप्लीकेशंस को 31 मार्च, 2003 की जितनी भी एप्लीकेशंस हैं हम उन सब को बिजली के कनेक्शन इस वित्तीय वर्ष 2008-09 में दे देंगे । स्पेशल कनेक्शन कोई भी नहीं रहेगा और डोमेस्टिक कनेक्शन पिछली सरकार ने 7 लाख 61 हजार कनेक्शन पांच साल में दिये थे और हम चार साल में 10 लाख 51 हजार कनेक्शन दे चुके हैं । हमने बासठ हजार नर्सरी स्पेशल हरा चारा कनेक्शन को जनरल कैटेगरी में हम ले आए । हम पचास करोड़ रुपये प्रतिवर्ष उसका वहन कर रहे हैं ताकि वो उनको अफोर्ड कर सकें खेती । अब टेरिफ की बात करूं माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कि मैं आपको एक बहुत ही इंट्रेस्टिंग डाक्युमेंट बताना चाह रहा हूं कि मीटर्ड कनेक्शन के अन्दर पचास पैसे से लेकर इन्होंने नब्बे पैसे कर दिये अस्सी प्रतिशत बढ़ा दिया इन्होंने करीबन चार साल के अन्दर और...

श्री मंगलाराम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): मंत्रीजी, शहीद कोटा?

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): शहीद का बताऊंगा अभी आपको। फ्लेट का है वो 37 रुपये ...

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): बाबा रामदेवजी ने जो आपको निर्देश दिये हैं न उनकी पालना पूरी करायेंगे ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): 37 रुपये 50 पैसे से इन्होंने इसको बढ़ा कर 85 रुपये करके 128 प्रतिशत बढ़ा दिया था । हमारी सरकार ने नियामक आयोग ने जो आर्डर्स दिसम्बर, 2004 में निकाले थे उसके बावजूद हमने टेरिफ हमारे चार साल के कार्यकाल में एक नया पैसा नहीं बढ़ने दिया और हमारे कार्यकाल में हम बढ़ने नहीं देंगे । (व्यवधान) 2010 तक नहीं बढ़ने देंगे और आज की तारीख तक हमने सब्सिडी, हमने जो एक्स्ट्रा टेरिफ जो वहन किया है, उपाध्यक्ष महोदय, हमने 1,114 करोड़ रुपये रेट नहीं बढ़ाने की वजह से हमने वो अतिरिक्त भार सरकार ने सहा है। और ये जो डाक्युमेंट है उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान पॉवर सैक्टर रिफार्म्स कंसलटिंग असाइनमेंट ये कांग्रेस सरकार का निकाला हुआ है । इनका यह प्रस्ताव था कि ये 2007 के अन्दर किसानों की रेट 2.20 रुपये होगी, ये इनका प्लान था । (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री):...(व्यवधान) हस्ताक्षर किस-किस ने किये? वर्ल्ड बैंक के साथ किसने हस्ताक्षर किये...(व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): यह धोखा किसानों के साथ किया।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): इसको टेबल कराया जाए, इस पत्र को।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): यह किसानों की मौत का परवाना है...(व्यवधान) आज हित की बात करते हो।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): ...(व्यवधान) यह राजस्थान की प्रापर्टी है...(व्यवधान) किसानों के हित में या...(व्यवधान) जो भी है राजस्थान की जनता को अवगत कराया जाए ।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): ...(व्यवधान) किसानों की हत्या कर देते ये तो।

श्री सांवर लाल (जल संसाधन मंत्री): इस संबंध में कोई ये अपने विचार व्यक्त करना चाहें तो करें न ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): करिये आप ।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): बोलती बंद है सब की।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): बोलो न।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ...(व्यवधान) 2.10 रुपये लेना चाहते थे । यह करतूत है आपकी।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): अभी कोई नहीं बोलेगा ।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): ये +++ किसान विरोधी हैं...(व्यवधान) किसान को गरीब के अलावा कुछ नहीं देखना चाहते हैं ये ।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): इनके पास बोलने के लिए शब्द नहीं हैं ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): मैंने तो उस समय ही ठीक नहीं कहा था ।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): यह ठीक कहा था ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): मैंने तो उस समय ही विरोध किया था ।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): आप किसान नेता हो ऐसा मत बोलो ।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): ये स्वीकार कर रहे हैं कि कांग्रेस वाले ही प्रस्ताव लाये थे परन्तु भगवान ने अच्छा किया कि राजस्थान की जनता ने भारतीय जनता पार्टी को जिताया ।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): ...(व्यवधान) प्रस्ताव नहीं लाये ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): ...(व्यवधान) ये तो बहुत बुरा हुआ हमें तो पता ही नहीं था ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): पैसा तो आपने भी चुकाया है।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): यह मामला बड़ा गम्भीर है हमें तो पता ही नहीं था कि आप अन्दर ही अन्दर इस तरह कर रहे थे ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ऊर्जा मंत्रीजी ने कांग्रेस की असलियत...(व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): हम तो सोच रहे थे कि आप किसानों को कोई लाभ दे रहे हो अन्दर ही अन्दर आपने तो काटने का काम कर दिया ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): ...(व्यवधान) प्रतिपक्ष के नेता आप कुछ तो कहो।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): फंस जाओगे मत बोलो। +++ कुछ भी नहीं बोलेंगे ।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति): उपाध्यक्ष महोदय, आप स्वयं देख लें यह कांग्रेस सरकार ने समझौता किया था 70 पैसे से लेकर 2007 तक 2.20 रुपये प्रति यूनिट किसानों से लेंगे । हम 90 पैसे ही ले रहे हैं । आप खाना चाहते थे क्या किसानों को? जो बोल रहे हैं, किसने किया समझौता? राजस्थान के किसानों का सारा का सारा हित गिरवी रख दिया और आज आप बिजली पर बोल रहे हैं ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): पैसा तो आपने भी बढ़ाया है आपकी कंपनियों ने...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): क्षमा याचना करो । क्षमा याचना करो।

श्री सांवर लाल (जल संसाधन मंत्री): जनता के बीच में जाओगे, किसानों के बीच में...(व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): +++ किसानों के हितैषी +++ से डूब मरो ।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इस घटना को लेकर कांग्रेस को सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी चाहिए और श्वेत पत्र जारी करना चाहिए ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): आप कह रहे थे...(व्यवधान) ये तो आपके दादा-परदादा निकले ।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति): आप वापस राज में इसलिए आना चाहते हो कि किसान से 2.20 रुपये लूट लेना चाहते हो । नहीं लेने देंगे 2010 तक हम रहेंगे और 90 पैसे ही लेंगे किसान से ।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): आप संयमजी, मत बोलो फंस जाओगे कल की तरह ।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): 120 तो जीत गये अब हमारी जान क्यों खा रहे हो? इससे पेट नहीं भरा क्या?

एक माननीय सदस्य: किसान हितैषी पार्टी है कांगेस पार्टी ।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): मेरी सलाह है मेरे मित्र हो, फंस जाओगे मत बोलो ।

एक माननीय सदस्य: किसानों की हितैषी है और किसान के हित में फैसला करेगी कांग्रेस पार्टी ।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): भला इसी में है कि बैठ जाओ ।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): घनश्यामजी, 120 में तो आपकी ये हालत हो गयी और इससे ज्यादा अगर जिताओगे तो क्या हालत होगी इसलिए इससे ही काम चला लो ।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): मेरा यह कहना है कि जुबेर खानजी, संयमजी, बैठ जाओ नहीं तो फंस जाओगे कल की तरह ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): आपकी कंपनियों ने पैसे नहीं बढ़ाये ।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): कल की तरह फंस जाओगे ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): पैसा बढ़ाया है राजस्थान की जनता का पैसा उन कंपनियों को दे रहे हो ।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): नहीं बढ़ाया । नहीं बढ़ाया क्यों असत्य बोलते हो ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): आपने कहा, एग्रीकल्चर में पैसा नहीं बढ़ाया, आपकी कंपनियों ने बढ़ाया है पैसा । ये इस राजस्थान की जनता का पैसा इन कंपनियों को दे रहे हो आप...(व्यवधान) पैसा बढ़ाया है आपकी कंपनियों ने ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): सुनिये सिरोही से आने वाले माननीय सदस्य राजस्थान की सरकार .... एक मिनट ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): आपकी कंपनियों ने...(व्यवधान) किसानों के पैसे बढ़ाये कि नहीं बढ़ाये आप तो इस बात का जवाब दो और ये आप कंपनियों को सब्सीडाइज्ड कर रहे हो...(व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): ये पैसा किसानों को ही तो दे रहे हैं किसानों के लिए ही बजट का पैसा खर्च कर रहे हैं और कोई तस्करी में खर्च हो रहा है क्या, किसानों के लिए हो रहा है ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): सिरोही से आने वाले माननीय सदस्य आपने बिलकुल सही कहा कंपनियों ने पैसा बढ़ाया नियामक आयोग ने पैसा बढ़ाया और 1,044 करोड़ रुपये राजस्थान की सरकार अपनी

(श्री राजेन्द्र राठौड़)

जेब से दे रही है ताकि किसान और उपभोक्ताओं से वहन नहीं हो तो क्या आप इसके विरोधी हो?

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): नहीं ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): हमें नहीं देना चाहिए न?

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): आपको डर है कि वो किसान आपको निकाल कर सड़क बाहर फेकेगा इसलिए आपने यह सब्सिडाइज्ड किया है इसलिए किया है ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): आप विरोधी हो न... (व्यवधान) यह राजस्थान की लोककल्याणकारी सरकार है।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): अगर आप में दम था, आप में दम था तो अपनी कंपनियों को पैसा बढ़ाने से रोकते आप । आप कंपनियों को पैसा बढ़ाने से रोकते । आपने राजस्थान की जनता का पैसा उन कंपनियों को लाभ पहुंचाने के लिए इतने करोड़ रुपये खर्च किये।

श्री सांवर लाल (जल संसाधन मंत्री): आप गलतफहमी के शिकार हो।

श्री अर्जुन लाल जीनगर (गंगरार): हम गरीबों को पैसा देने से... (व्यवधान) क्योंकि हम किसान के हितैषी हैं हम किसानों के हितैषी हैं ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): आपकी सरकार थी आपके अधिकारी बैठे हुए हैं...(व्यवधान) क्यों नहीं रोका आपकी कंपनियों को क्यों नहीं रोका?

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): नियामक आयोग ने कुछ नहीं किया।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): आपको रोकना चाहिए था कंपनियों को ।

श्री अर्जुन लाल जीनगर (गंगरार): आप किसानों के विरोधी हैं सीधी बात करो न आप किसानों के विरोधी हो ।

श्री सांवर लाल (जल संसाधन मंत्री): अभी भी आपको बड़ी तकलीफ हो रही है अगर राजस्थान की सरकार ने किसानों की मदद कर दी।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): रेट बढ़ाने के लिए आपने किया... (व्यवधान) दस रुपये की रेट आयी है...(व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): आज 12 सौ करोड़ रुपये...(व्यवधान) कंपनियों को...(व्यवधान)

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान का...(व्यवधान) किसान प्रत्येक जान चुका है इन कांग्रेसियों की धोखेबाजी, चालबाजियों को । यह केवल भ्रामक प्रचार है किसान के साथ धोखा करना चाहते हैं राजस्थान की भारतीय जनता पार्टी अब यह धोखे के जाल में नहीं आने देगी राजस्थान की जनता को ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): सामने जब फौजी लड़ने के लिए तैयार नहीं हो तो इस तरह से हमला नहीं करना चाहिए ये तैयार ही नहीं है लड़ने के लिए ।

श्री उपाध्यक्ष: आप कंक्लूड कीजिये आपको कोई घोषणा करनी हो तो करके कंक्लूड कर दीजिये आप बहुत हो गया...(व्यवधान) आप कंक्लूड करिये।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): आप कह रहे हो पर मेरी क्या भावना थी, मेरी तो भावना किसानों के साथ थी कि नहीं थी ।

श्री सांवर लाल (जल संसाधन मंत्री): (व्यवधान) समस्या तो यह आ रही है ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): आप मेरे को कह रहे हो ना बार बार ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): आपको नहीं कह रहे हैं उनको कह रहे हैं (व्यवधान) आप तो धरने पर बैठे थे किसानों के लिये ।

एक माननीय सदस्य:...(व्यवधान) लेकिन आपके साथ अन्याय हो रहा है ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): मेरे साथ कोई अन्याय नहीं हो रहा है ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ...(व्यवधान) आपकी सुनवाई नहीं हुई ।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): ...(व्यवधान) आप कौनसी सुन रहे हो, आप भी तो नहीं सुन रहे हो । सत्ता में अंधे हो रहे हो, आप भी तो नहीं सुन रहे हो । आप तो सुनो, आप भी नहीं सुन रहे हो । आप भी सत्ता में

(श्री हेमाराम चौधरी)

अंधे हो रहे हो, हम भी सत्ता में अंधे हो गये थे । जब अंधे हो जाओगे तो उसको तो रास्ता जनता ही दिखायेगी ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): उपाध्यक्ष महोदय, जब सामने वाले फौजी हथियार डाल देते हैं तो फिर लड़ाई नहीं लड़नी चाहिये ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ...(व्यवधान) सरकार घोषणा करे कि हम किसानों के हितैषी हैं और राजस्थान के किसानों को मुफ्त बिजली देंगे । करो घोषणा आप, आज राजस्थान का किसान पाले से पीड़ित है, तकलीफ में है, 1500 करोड़ रुपये की फसल का नुकसान हुआ है । यह सरकार अगर किसानों की हितैषी है तो आगे बढ़ कर घोषणा करनी चाहिये कि हम किसानों को मुफ्त बिजली देंगे ।

श्री सांवर लाल (जल संसाधन मंत्री): .... (व्यवधान) किसान तकलीफ में है तो कांग्रेस पार्टी की वजह से तकलीफ में है । आज भी दिल्ली में बैठे हो पाले से निपट सकते हैं।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, माननीय सदस्य ।

श्री अर्जुन लाल जीनगर (गंगरार): कांग्रेस पार्टी की नीति की वजह से किसान पीड़ित है ।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): कांग्रेस की परिणति है किसान को दुःखी करना ।

श्री अर्जुन लाल जीनगर (गंगरार): ...(व्यवधान) आपकी नीति से परेशान है काश्तकार तो । भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने 126 करोड़ रुपये दिये हैं ।

एक माननीय सदस्य: ...(व्यवधान) क्या आप राजस्थान के किसानों को मुफ्त बिजली देंगे ।

श्री अर्जुन लाल जीनगर (गंगरार): +++

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): .. (व्यवधान) पाला पीड़ित समस्या को देखते हुए किसानों को मुफ्त में बिजली दिलाओ, घोषणा करो आप, घोषणा करो आप ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): आप भी घोषणा कराओ मुआवजा देने की केन्द्र से फिर यह करेंगे ।

श्री सांवर लाल (जल संसाधन मंत्री): ...(व्यवधान) जो घोषणा कर रखी है उससे ही संतुष्ट है किसान ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ...(व्यवधान) अगर आप किसान का भला चाहते हो तो घोषणा करो । 1500 करोड़ रुपये का किसानों को नुकसान हुआ है । यह सरकार घड़ियाली आंसू बहा रही है । (व्यवधान) 430 करोड़ रुपये सीआरएफ का... (व्यवधान) उसको दबा कर बैठी है यह सरकार ।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): आप केन्द्र से मुआवजा दिलवाने की वकालत कराओ उसके बाद बिजली की बात करो । कहां 2.30 कहां 90 पैसे ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, माननीय सदस्य बैठिए ।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): उपाध्यक्ष महोदय, इतने लोक हितकारी निर्णय हुए आज इस फर्क को आप महसूस नहीं कर पाये कि एक तरफ 30 एचपी से 45 एचपी की तक की मोटर लगा कर किसान बिजली पैदा करके अपने खेतों को सींच रहा है वहीं दूसरी ओर आप 5 एचपी की तुलना, आप कुछ समझाइए इसमें (व्यवधान) आप एक एईएन तक नहीं लगा पाये दो-दो सालों के संघर्ष के बाद 33 केवी चालू नहीं करा पाये आप क्या बात करते हैं ।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य बैठिए । आप कन्क्लूड कीजिए ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): 5 साल बिजली की रेट नहीं बढाना, मुद्रा स्फीति को देखा जाये 5 प्रतिशत, इस साल भी देखा जाये तो एक्चुअली पांच साल में हमने 25 प्रतिशत बिजली सस्ती की है आप इकनोमिक फैक्टर को देखें । उपाध्यक्ष महोदय, डीजल की रेट केन्द्र सरकार ने कितनी बढ़ा दी, पेट्रोल की कीमत बढ़ा दी, गैस की कीमत बढ़ा दी, कोयले की की कीमत बढ़ा दी, इन्होंने कोयले की कीमत बढ़ाई लेकिन हमने फिर भी इतना सब होने के बावजूद हमने किसान के ऊपर कुछ भी नहीं डाला ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): .. (व्यवधान) सैस लगाया है । एक हजार करोड़ रुपया 5 साल में राजस्थान के किसान से सैस के रूप में वसूल किया है और रिडको नाम की कम्पनी को बिना ब्याज दर के लोन दिया । यह किसानों के पैसे से राज्य सरकार ने काम किया ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): +++ दस्तखत करके गये थे भूल गये क्या?

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): क्या भूल गये, क्या भूल गये डीजल । डीजल पर सैस किसने लगाया? किस सरकार ने लगाया डीजल पर सैस?

श्री युनूस खान (यातायात मंत्री): ...(व्यवधान) किसान मर गया और सब मजदूर मर गया । आपको रो रहा है ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): राजस्थान के निर्माण के बाद यह पहली सरकार है जिसने राजस्थान में डीजल पर 50 पैसा प्रति लीटर सैस लगाया है।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य अब कुछ अंकित नहीं होगा । माननीय सदस्य बैठिए।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): ×××

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य बैठिए ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): उपाध्यक्ष महोदय, एक स्कीम लांच की गई जिसका नाम राजीव गांधी विद्युतीकरण योजना । नाम तो बहुत बढ़िया था, लेकिन उस स्कीम के बारे में मैं बताना चाहूंगा कि सदन के माननीय सदस्यों को इसके बारे में पूरी जानकारी नहीं है । यह स्कीम भारत निर्माण का Time Bound Plan for Rural Infrastructure by Government of India in partnership with State Governments and Panchayati Raj Institutions, यह 2005 में लांच की गई। और राजीव गांधी जो योजना है इसको भी 2005 में लांच किया गया । इसका उद्देश्य था 2012 तक सब घरों में हम बिजली पहुंचायेंगे । हमारे राजस्थान की जो भौगोलिक स्थिति है, जो हमारी ढाणियां हैं, 16 हजार करोड रुपये का हमारा खर्चा होगा यदि हम हर घर में बिजली पहुंचायेंगे जो कि इस स्कीम का उद्देश्य है । इन्होंने सैंक्शन किया 1091 करोड़। हमारी 90 हजार ढाणियां हैं जिनको विद्युतीकृत करना है । इन्होंने 6600 ढाणियां एप्रुव की । इन्होंने हर गांव जो कि डि-इलेक्ट्रिफाई या अन इलेक्ट्रिफाई है उसको इन्होंने साढ़े 6 लाख रुपये दिये और दूसरे गांवों को तंत्र मजबूर करने के लिये एक लाख रुपया दिया । जब हम गांवों में जाते है तो कहते हैं राजीव गांधी स्कीम में हमोर घर में तो बिजली आयेगी । उनको कौन समझाये कि यह स्कीम तो बिलकुल ही बोगस है । इसके अलावा मैं आपको यह बताना चाहूंगा.. (व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़): साढे 1900 रुपये जो लाखों लोगों ने जमा करा रखे हैं उनको कनेक्शन क्यों नहीं दे रहे हैं ।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): 1900 में कनेक्शन नहीं होगा ।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): जिन लोगों ने साढ़े 1900 रुपये डोमेस्टिक कनेक्शन के लिये जमा करा रखे हैं उनको कनेक्शन क्यों नहीं दे रहे हैं?

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): केन्द्र सरकार 1500 रुपये दे रही है । (व्यवधान)

राजीव गांधी के सर मढ़ कर, पहले विद्युतीकरण होता था या नहीं? इस योजना से पहले गांवों में ढाणियों में विद्युतीकरण होता था या नहीं होता था? और इन गांवों को कम से कम 20 घंटे से ज्यादा बिजली मिलेगी । इसके अलावा जहां यह टी एंड डी लोसेज और चोरी की बात है, यह जो टी एंड डी लोसेज के जो फीगर है आडिटेड फीगर्स हैं, सेन्ट्रल इलेक्ट्रिसिटी अथोरिटी आकर इसको वेरीफाई करती है । उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन को यह बताना चाहता हूं कि कांग्रेस सरकार टी एंड डी लोसेज को लगभग 34 प्रतिशत से 43 प्रतिशत तक ले आई थी अपने कार्यकाल के अंदर। जब हमने सम्भाला तो 43 प्रतिशत से आज हम 32 प्रतिशत पर ले आए । उपाध्यक्ष महोदय, अभी यह जो कोहरा पड़ा था पूरा नोर्दन ग्रिड कोलेप्स हो गया था, हरियाणा, पंजाब, यूपी, हमारा ग्रिड इतना स्ट्रोंग है, हमारा तंत्र ट्रांसमिशन का इतना मजबूत है कि सिवाय भिवाड़ी के अलावा राजस्थान के अंदर कोई भी असर नहीं पड़ा। हम अभी 400 केवी के सब स्टेशन अभी भीलवाड़ा, हिण्डौन, बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर और अजमेर में बनाने वाले हैं जिससे हमारा यह जो रिकार्ड उत्पादन होने वाला है तो यह कम से कम तंत्र को मजबूत कर देंगे और हमारी बिजली का फ्लो है वह एफीशियंट हो जाएगा। जहां 33 केवी के सब-स्टेशन हैं कांग्रेस की सरकार के कार्यकाल में 614 बने, हमारे कार्यकाल में मुझे पूरी आशा है 1000 हम कम्पलीट कर देंगे।

आखिर में आपके माध्यम से यह बोलना चाहूंगा कि हमने 4743 कर्मचारी हमारे विभाग में लिए हैं, पिछली सरकार ने खाली 246 लिये थे । हमारे जो नये नोर्म्स है, हम जैसे 33 केवी सब-स्टेशन बनाएंगे तो हम 6 एम्पलाई वहां लगा देंगे, अगर 132 बनेगा तो 14 लगा देंगे, 220 केवी का बनेगा तो 24 लोग लगा देंगे, 400 का बनेगा तो 30 लोग लगा देंगे । हमारे जो कर्मचारी, जैसे हमारे सब-स्टेशन आयेंगे, ओटोमेटिकली हम बढ़ाते जाएंगे ।

कृषि नीति का हमने बहुत सरलीकरण किया है और 15 साल वाले जो कनेक्शन वापस रिकनेक्शन चाहते थे हमने उनको दे दिये । जो पोल सिस्टम,

(श्री गजेन्द्र सिंह)

हमने हटाकर हार्सपावर का सिस्टम किया है और हमने किसानों के प्रति हर दिशा में, हर संबंध में हमने पूरे तरीके से हमारी पूरी सहानुभूति दी है ।

अब मैं आखिर में एक ही चीज कहूंगा कि रिकार्ड जनरेशन, रिकार्ड कनेक्शन, रिकार्ड सप्लाई, नौ प्राइस हाइटेक, टी एंड डी लोसेज नीचे लाना, ग्रामीण गांवों को शहरों के समान बिजली देना और एग्रीकल्चर पालिसी को सिम्पलीफाई करना और नौ प्राइस राइज अब आप बताइये, मैंने आपको पावर प्लांटस की भी डिटेल दे दिये हैं, मैंने सब फीगर्स के डिटेल दे दिये हैं । (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: धन्यवाद । सदन की बैठक सोमवार दिनांक 17 मार्च, 2008 के प्रातः 11.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है ।

(तदनन्तर सदन की बैठक 21.53 बजे सोमवार, दिनांक 17 मार्च, 2008 के प्रातः 11.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई)